साहित्य अमृत

मासिक

वर्ष-२२ अंक-१२ । पृष्ठ ८४ | आषाढ-श्रावण, संवत्-२०७४ | जुलाई २०१७

संस्थापक संपादक

स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

पूर्व संपादक

स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

संपादक

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

प्रबंध संपादक

श्यामसुंदर

संयुक्त संपादक

डॉ. हेमंत कुकरेती

कार्यालय

४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क

एक अंक —₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६, कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय

मोदी सरकार के तीन साल... ४

प्रतिस्मृति

लाल पान की बेगम/ *फणीश्वर नाथ 'रेणु'* ९

आलेख

पर्यावरण संरक्षण एवं विकास, दोनों जरूरी/ *दीनानाथ तिवारी* १४

स्वातंत्र्य युद्ध : पुनरावलोकन क्यों ?/ *रुद्रदत्त चतुर्वेदी* २६

बुद्ध का महापरिनिर्वाण/ *रमेश चंदर* ३३

त्रिया चरित्रम्/ *ज्योत्स्ना 'प्रवाह'* ४४

हिंदी गद्य साहित्य में बंगाल के रचनाकार/ *सुनीता शर्मा* ५८

कहानी

अपना ईश्वर/ *पूरन सरमा* १६

दो बाँके/ *आनंद शर्मा* २३

लौटा दो सावन/ *जनकदेव जनक* २८

रोशनी के साए/ *सुधीर निगम* ३९

गोबरधन/ *मनोज श्रीवास्तव मोक्षेंद्र* ५४

लघुकथा

मोबाइल की आत्मकथा/ *लता कादंबरी* ५७

कबाड़ बीनता बचपन/ *लता कादंबरी* ६०

कमल/ *लता कादंबरी* ७६

कविता

शेष कितने दिन/ *बी.एल. गौड़* २२

भीगे सावन की पुरवाई/ *सुखवीर सिंह राणा* २५

धूप-छाया का सहज खेल/ *चिराग राजा* ३२

दर्पण तुम मेरा बनो/ *कुमार गौरव अजीतेंदु* ३५

बहुत बड़ा नहीं था मेरा सपना/ *राजू कुमार विद्यार्थी* ४३

भोर रँगीली, शाम रँगीली/ *कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'* ६१

नेह भरी एक पाती/ *मालिनी गौतम* ७१

राम झरोखे बैठ के

भ्रष्टाचार के किले की प्रेरक कथा/ *गोपाल चतुर्वेदी* ३६

भाषा-प्रयोग

रूप-रचना पर आधारित हिंदी क्रियाओं का सम्यक् विधान/ *बदरीनाथ कपूर* २०

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व

ध्वन्यार्थ/ *सरोज पाठक* ४६

व्यंग्य

एक डॉक्टर की कथा/ *शशिकांत सिंह 'शशि'* ५०

साहित्य का विश्व परिपार्श्व

नंगा राजा/ *जॉन मेन्युअल* ६२

यात्रा-संस्मरण

अथश्री जूनागढ-डाकोर तीर्थयात्रा कथा/ *प्रेमपाल शर्मा* ६४

लोक-साहित्य

निमाड़ मालवा अंचल की माँड़ना लोककला/ *सुधा तैलंग* ७२

बाल-संसार

जगह/ *दया दीक्षित* ७४

घ

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ७७

वर्ग-पहेली ७८

साहित्यिक गतिविधियाँ ७९

संपादकीय

मोदी सरकार के तीन साल, विपक्ष में बेचैनी क्यों?

मई में मोदी सरकार के तीन साल पूरे होने का लेखा-जोखा पिछले एक माह से चर्चा का विषय है। टी.वी. पर और पत्र-पत्रिकाओं में भी इसी की चर्चा है। सरकार ने अपनी उपलब्धियों को जनता को बतलाने के लिए भिन्न-भिन्न नामों से और भिन्न-भिन्न समय में कई बड़े कार्यक्रम बनाए हैं। जहाँ तक विरोधी दलों का सवाल है, उनका तो यही कहना है कि सब लफ्फाजी है, चुनाव के समय मोदी सरकार ने जो वादे किए थे, उनमें से कोई पूरा नहीं किया है, केवल पुराने कार्यक्रमों की ब्रैंडिंग और पैकेजिंग है। विरोधियों के अनुसार मार्केटिंग में प्रधानमंत्री माहिर हैं और उनके द्वारा जनता को धोखे में रखा जा रहा है। उत्तर प्रदेश में हार के बाद विरोधी दल इस कोशिश में हैं कि किसी प्रकार कोई गठबंधन हो जाए, ताकि दो साल के बाद, यानी २०१९ के आम चुनाव में मोदी को टक्कर दी जा सके। इसलिए मोदी सरकार की तथाकथित असफलताओं को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की चेष्टा उसी रणनीति का भाग है। कुछ विशेषज्ञों ने अपनी दृष्टि और अपने विश्लेषण के अनुसार अपने-अपने क्षेत्रों के बारे में तटस्थ शोधार्थी के रूप में सरकार की क्या सफलताएँ हैं, और कहाँ क्या खामिया हैं, उनका प्रस्तुतीकरण किया है। हम समझते हैं कि सरकार को ऐसे आकलनों पर ध्यान देना चाहिए। राजनीति में किसी प्रकार की आलोचना हो, सही या गलत, झुठलाने का प्रयत्न स्वाभाविक है, इस प्रवृत्ति से बचना चाहिए। यहाँ पर अलग-अलग विभागों के कार्यक्रमों या मंत्रालयों के कार्यकलापों के विश्लेषण में जाना संभव नहीं और न ही आवश्यक है। अकसर उपलब्धियाँ भी बढ़ा-चढ़ाकर बताई जाती हैं। मंत्रालयों के लिए आवश्यक है कि वे इस प्रकार के आलेखों, शोध-पत्रों के प्रस्तुतीकरण का विवेचन करें, ताकि कार्यक्रमों में जिन शिथिलताओं को सही पाया जाए, उनको तुरंत दुरुस्त करने की शुरुआत हो। इसीलिए समय-समय पर बाहर की एजेंसियों से आकलन कराना आवश्यक होता है, ताकि कमियों और कमजोरियों की अनदेखी न हो सके, वरन् शीघ्रताशीघ्र कमियों को दूर करने की प्रक्रिया प्रारंभ की जा सके। हम कभी आत्मप्रवचंना में न रहें। कार्यक्रम के चलते संशोधन करना कई बार संबंधित अधिकारियों को नहीं भाता है। वे उसे नापसंद करते हैं, क्योंकि कहीं यह सवाल खड़ा न हो जाए कि शुरू से इन कमियों को ध्यान में क्यों नहीं रखा गया और इसके लिए कौन जिम्मेदार है। वाहवाही लूटने की इच्छा से राजनेता भी इसमें भागीदार हो जाते हैं। सुशासन लाना इस प्रकार संभव नहीं है। इस प्रक्रिया को आत्मनिरीक्षण और नैतिक उत्तरदायित्व का अभिन्न अंग माना जाना चाहिए। यह एक सैद्धांतिक प्रश्न है, जिसकी अवहेलना नहीं होनी चाहिए।

नीति आयोग : भूमिका, विकास व योजनाओं का आकलन

इन सब बातों को देखने के लिए संभवत: नीति आयोग सक्षम है। देश में जब योजना आयोग की शुरुआत हुई थी, तब योजना आयोग इस प्रकार की जिम्मेदारी निभाता था, जो कभी अपने उच्च अधिकारियों को जमीनी हकीकत जानने के लिए देश के राज्यों में भेजता था, अथवा निष्पक्ष व्यक्तियों से एक वैज्ञानिक आकलन करवाता था। जो भी हो, इस प्रकार की पहल आज की परिस्थितियों में पुन: आवश्यक है। पहले योजना आयोग को एक 'एक्स्ट्रा कंस्टीट्यूशनल' अथॉरिटी कहकर उसकी आलोचना की जाती थी। इसका प्रावधान संविधान में नहीं था, यद्यपि आजादी की लड़ाई के दौरान इस प्रकार की संस्था की वकालत अलग-अलग विद्वानों और राजनेताओं द्वारा होती रहती थी। सुभाष बाबू जब कांग्रेस के अध्यक्ष थे, पं. नेहरू के नेतृत्व में विशेषज्ञों की एक प्लालिंग कमेटी बनाई गई थी। उसने कई विषयों पर अच्छी रिपोर्ट बनाई थी। सन् बयालीस के आंदोलन तथा राजनीतिक उथल-पुथल के कारण वह काम ठप्प हो गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने संसद् में एक प्रस्ताव के द्वारा योजना आयोग की स्थापना की थी। यह समझ में नहीं आता है कि संविधान सभा ने योजना आयोग को संविधान का अंग क्यों नहीं बनाया। योजना आयोग की स्थापना के समय और उसके बाद भी कई राज्यों तथा कुछ अर्थशास्त्रियों को इस बात की शिकायत रही कि योजना आयोग केवल केंद्र का आयोग है, उसके गठन में राज्यों की राय नहीं ली गई है। कुछ लोगों का यह भी मत है कि यह संघीय ढाँचे पर कुठाराघात है। धीरे-धीरे, विशेषतया नेहरू के उपरांत राज्यों में यह भावना फैलने लगी कि योजना आयोग एक परामर्शदात्री संस्थान न होकर सीधे कार्यपालिका के बहुत से काम भी अपने हाथ में ले रहा है। यू.पी.ए. के समय में तो योजना आयोग ने बहुत से मंत्रालयों के अधिकार अपने हाथ में ले लिये और मंत्रालयों की एक प्रतिस्पर्धी संस्था जैसा बन गया। राज्यों के मुख्यमंत्री प्रतिवर्ष दिल्ली आते, कितनी धनराशि राज्य को उपलब्ध होगी, उस पर विचार-विमर्श होता था। योजना आयोग के उपाध्यक्ष इतने शक्तिशाली हो गए थे कि वे कैबिनेट की बैठकों में भाग लेते थे। जब किसी राज्य का मुख्यमंत्री आता तो उपाध्यक्ष को गुलदस्ता देते समय की उनकी फोटो छपती थी। राज्यों का यह भी कहना था कि योजना आयोग को राज्यों की स्थानीय समस्याओं और वास्तविकताओं की कोई जानकारी नहीं है, इससे राज्यों के लिए कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। कुछ राज्यों ने 'राज्य योजना आयोग' भी कायम किए थे, किंतु शनै:-शनै: वे भी रस्मी हो गए। एक बात अवश्य थी कि योजना आयोग के उद्देश्य कम-से-कम व्याख्यायित

किए गए थे, किंतु कभी उनके अनुसार कार्य नहीं हो सका। 'नीति आयोग' के उद्देश्यों, कार्यक्षेत्र तथा कार्यप्रणाली के विषय में अभी तक पूरी जानकारी नहीं है। राज्य सरकारों के मुख्यमंत्री नीति आयोग के कुछ कार्यक्रमों से जुड़े हुए हैं, यह भी समाचार-पत्रों से पता चलता है। ऐसा फिर भी नहीं लगता कि सब राज्यों के द्वारा उसकी स्वीकारोक्ति हो गई है। अच्छा होगा कि नीति आयोग के विषय में विस्तृत सूचना उपलब्ध कराई जाए। जैसा कि सुझाव दिया गया है कि नीति आयोग को मूल्यांकन को दायित्व हो, ताकि योजनाओं और स्कीमों की सफलता के अतिरेक के दावों से बचा जा सके। वास्तविक स्थिति जनता के सामने आए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोऑपरेटिव फेडरेलिज्म यानी सहकारी संघीय अवधारणा की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि राज्यों को विकास कार्यों में सहभागिता का एहसास हो। संभवत: प्रधानमंत्री की एक महत्त्वपूर्ण पहल योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना का मंतव्य यही है। नीति आयोग का पूरा नाम है National Institution for Transforming India। तदनुरूप इसके कार्यकलाप भी होने चाहिए। 'सबका का साथ, सबका विकास' का जो नारा प्रधानमंत्री ने दिया है, उसको सार्थक बनाने में नीति आयोग का वांछनीय सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

मोदी आज देश के अप्रतिम नेता

पिछले तीन वर्षों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एन.डी.ए. सरकार ने जनमानस पर अपनी छाप छोड़ी है। हर प्रकार की आलोचनाओं के बावजूद अब नरेंद्र मोदी के विरोधी भी यह मानने लगे हैं कि उनके जोड़ का कोई अन्य नेता देश में नहीं है। आजकल सरकार की लोकप्रियता जानने के लिए मीडिया जो सर्वेक्षण कराती है, उनके अनुसार यदि आज चुनाव कराए जाएँ तो पूरे समर्थन के साथ पुन: मोदी की ही सरकार आएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने देश में एक आशावादिता और सक्रियता का वातावरण उत्पन्न किया है। मई २०१७ के पहले जनता में जो नैराश्य का वातावरण था, वह अब नहीं है। जनता को आभास हो रहा है कि अच्छे दिनों के आगमन का नारा कोई शाब्दिक इंद्रजाल नहीं है, सरकार उस दिशा में कार्यरत है। यह काम इतना आसान नहीं है, क्योंकि पिछले दशकों में जो प्रशासनिक शिथिलता, भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाई-भतीजावाद, असामाजिक तत्त्वों तथा भाँति-भाँति के माफियाओं को जो संरक्षण मिला है, उसको दूर करके ही सबके विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। नरेंद्र मोदी की सर्वहित केंद्रित स्कीमों ने जनता के हर वर्ग में विश्वास पैदा किया है। 'उज्ज्वला' कार्यक्रम को लें तो उसने महिलाओं के सशक्तीकरण में अभूतपूर्व योगदान किया है। यही बात 'जनधन योजना' के बारे में कही जा सकती है। प्रधानमंत्री ने युवा वर्ग में एक विशेष उत्साह और सक्रियता पैदा की है। उससे उन्होंने एक अनूठा तादात्म्य स्थापित किया है, क्योंकि किसी भी देश का भविष्य युवा वर्ग द्वारा ही निर्मित होता है। विदेशों में भी इस बात का मान होता जा रहा है कि भारत में अब दृढ निश्चयी और मजबूत नेतृत्व उभरा है, जिसकी स्वीकारोक्ति भारत में है।

चुनावी मशीनें और विरोधी दल

उत्तर प्रदेश के चुनावों के बाद विरोधी दलों को एहसास हो गया कि मोदी का मुकाबला निकट भविष्य में संभव नहीं है, अत: कुछ और रणनीतियाँ बनाई जानी चाहिए। पहल बसपा अध्यक्ष मायावती ने की और शोर मचाना शुरू किया कि जिन मशीनों के द्वारा चुनाव कराया गया है, वे मशीनें खराब हैं, अत: अब मतपत्र से चुनाव होना चाहिए। यही माँग केजरीवाल ने भी की। उसके बाद कांग्रेस और अन्य दलों ने भी यह माँग उठाई। वे भूल गए कि जब वे जीते, तब भी यही मशीनें थीं। दूसरा, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि कई राज्यों में मतदान केंद्रों पर कैसे बाहुबली कब्जा कर लेते थे, फर्जी वोट डाले जाते थे और दलितों तथा गरीब तबके के मतदाताओं को मतदान केंद्र पर पहुँचने से रोका जाता था तथा उनके वोट कोई और ही डालता था। इसीलिए ई.वी.एम. मशीनों की व्यवस्था की गई। मशीनों के कारण ही भाजपा ने उत्तर प्रदेश में इतनी बड़ी जीत दर्ज की, इस शिकायत को लेकर सब कांग्रेस के नेतृत्व में राष्ट्रपति तक गए। चुनाव आयोग आश्वस्त करता रहा कि चुनावी मशीनों के साथ छेड़छाड़ संभव नहीं है। फिर भी भविष्य के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि बटन दबाने के बाद मतदाता स्वयं सात सेकंड के लिए देख सकेगा कि उसका मत उसी प्रत्याशी के पक्ष में गया है, जिसे वह देना चाहता है।

केजरीवाल ने फिर भी दिल्ली विधानसभा में एक दिन का विशेष सत्र बुलाकर व्यर्थ जनता के धन का अपव्यय किया। वहाँ आप के एक इंजीनियर सदस्य द्वारा एक बड़ा नाटक किया गया। कहीं से एक मशीन लाकर यह दिखाया गया कि कैसे छेड़छाड कर उससे एक पक्षीय मतदान कराया जा सकता है। अन्य विरोधी दलों के पर्यवेक्षक, जो वहाँ गए थे, उन्होंने कहा कि जो प्रदर्शन हुआ, उससे शक पैदा होता है। चुनाव आयोग ने विस्तार के साथ पुन: बताया कि उनकी मशीनों में कितनी सावधानियाँ बरती जाती हैं। कई बार गहन जाँच होती है, किसी गड़बड़ी की कोई गुंजाइश नहीं होती है। इस प्रकार की आशंकाएँ बेबुनियाद हैं। चुनाव आयोग ने चुनौती के रूप में कहा कि सभी दलों के प्रतिनिधि चुनाव आयोग के दफ्तर में एक निश्चित दिन आएँ, और चार घंटे तक जो भी जोड़-तोड़ कर एकपक्षीय मतदान कराकर दिखाएँ। कांग्रेस, बसपा तथा अन्य विरोधी दलों ने पहले कहा भी कि वे उस दिन निश्चित रूप से आएँगे, पर बाद में उन्होंने भी अपने आप को उससे अलग कर लिया। वे आश्वस्त हो ही गए कि चुनाव आयोग की चुनावी मशीनें ठीक हैं और आयोग निष्पक्षता से कार्य कर रहा है। वास्तव में तो वे सब केवल मोदी विरोध की आग को फूँक मारने की कोशिश कर रहे थे। केवल आप पार्टी ने कहा कि चार घंटे का समय काफी नहीं है और वे नहीं आएँगे। यह तो 'जल गई, पर रस्सी की ऐंठन नहीं गई' वाली बात हुई। वास्तव में जनता को गुमराह करने के लिए और मोदी सरकार पर कीचड़ उछालने के लिए ही स्वाँग रचा गया था।

महागठबंधन की तलाश

विरोधी दलों, खासकर कांग्रेस को २०१९ के आम चुनावों में सफलता की आशा तो शायद नहीं है। इसलिए विरोधी दलों को अभी से २०१९ के अंगूर खट्टे नजर आ रहे हैं। लालूजी की डींगों के बावजूद उन्होंने फिर

भी एक और अवसर तलाशा कि शायद इस प्रकार का गठबंधन मोदी को पराजित करने के लिए संभव हो सके। वह था, डी.एम.के. के वरिष्ठ नेता का ९३वाँ जन्मदिवस। राहुल भी चेन्नई पहुँचे और विरोधी दलों के नेता भी। जो आयोजन किया गया, उसमें स्वास्थ्य की दृष्टि से करुणानिधि का पहुँचना तो असंभव था। उनके पुत्र स्टालिन, जो द्रमुक के कार्यकारी अध्यक्ष हैं, उनको मोदी विरोधी अभियान में मुख्य दायित्व उठाने का आह्वान किया गया। जयललिता की मृत्यु के बाद अन्ना द्रमुक दो धड़ों में बँट गया है, यद्यपि सरकार उसी की है। आयोजन में मोदी और भाजपा को जी भर कोसा गया तथा तीन साल की सरकार की तथाकथित असफलताओं और मोदी की तानाशाही का राग अलापा गया। 'चेन्नई विलाप' के बाद भी उनको कोई आशा की किरण नजर नहीं आई, फिर भी वाम दलों के कहने से आंध्र में एक और आयोजन किया गया तथा मोदी सरकार की पोल खालने का ऐलान कर दिया गया। वहाँ भी वही घिसी-पिटी बातें दोहराई गईं। आंध्र के आयोजन में अखिलेश यादव भी पहुँचे, जो चेन्नई नहीं जा सके थे। यूपी के ये दोनों नेता वहाँ मौजूद थे। वहाँ अपने मन की भड़ास निकाली। हाँ, राहुल गांधी ने चौंकानेवाली एक बात कही कि वे अब 'गीता' और 'उपनिषद्' पढ़ रहे हैं, ताकि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा का असली चेहरा जनता के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। यह एक खुशखबरी है, बहुत-बहुत बधाई। पर एक सुझाव है कि वे यदि अपने परनाना पं. जवाहरलाल नेहरू की लिखी 'भारत की खोज,' जो उन्होंने ३० साल के राजनीतिक अनुभव के बाद लिखी थी, उसे पहले अच्छी तरह पढ़ें तो शायद वेद, उपनिषद्, गीता और भारत की अविरल सांस्कृतिक परंपरा का प्रारंभिक परिचय हो जाएगा और गीता या उपनिषदों का महत्त्व ठीक से समझ सकेंगे। समाचार-पत्रों में खबर आई है कि राहुल गांधी आराम और जगह परिवर्तन के लिए इटली में नानी के पास जा रहे हैं, संभवत: गीता और उपनिषदों का अध्ययन वहाँ से प्रारंभ हो।

भावी राष्ट्रपति की खोज

कांग्रेस सुर्खियों में कैसे रहे, किसी तरह उसका नेतृत्व दिखाई पड़े, उसके लिए अवसर की खोज निरंतर रहती है। जुलाई में राष्ट्रपति और अगस्त में उपराष्ट्रपति के चुनाव होने हैं। इसके लिए अटकलबाजियाँ चल रही हैं। कांग्रेसी तो चाहते हैं कि वह सदैव नेतृत्व में रहे। विरोधी पक्ष के नेतागण कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से विचार-विमर्श के लिए मिल रहे हैं। दोपहर के खाने पर मिले विरोधी पक्ष का कहना है कि राष्ट्रपति के चुनाव के बारे में सरकार पहले आम राय से इनका चुनाव करे, अगर आम राय नहीं बनती है तो वे अपना एक प्रत्याशी खड़ा करेंगे। भाजपा सरकार ने बातचीत के लिए अपने तीन मंत्री नामांकित किए। राष्ट्रपति के चुनाव का कार्यक्रम तय हो गया है। वैसे चुनावी गणित एन.डी.ए. के पक्ष में है और एन.डी.ए. ने बिहार के राज्यपाल रामनाथ कोविंद को अपना प्रत्याशी बनाया है। देखना यह है कि कांग्रेस के नेतृत्ववाला विरोधी पक्ष किसको बलि का बकरा बनाता है। कई नाम उछाले जा रहे हैं, जैसे मीरा कुमार, गोपाल कृष्ण गांधी आदि-आदि।

क्या भारत की अवधारणा एक परिवार तक सीमित

अगले राष्ट्रपति के चुनाव संबंधी बैठकों के सिलसिले में सोनिया गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी भारत की अवधारणा के मूल तत्त्व को दूषित कर रहे हैं, उसको तोड़-मरोड़ रहे हैं, अतएव सबको संगठित होकर उसको बचाना है। भारत की अवधारणा संविधान की प्रस्तावना में निहित है। उसके साथ अब कोई खिलवाड़ संभव नहीं है। आपातकाल में जो होना था, वह हो गया। प्रश्न एक ही है कि हम भारत की अवधारणा को किस प्रकार व्याख्यायित करते हैं, संविधान को विशद दृष्टिकोण से अथवा आइडिया ऑफ इंडिया, केवल एक परिवार के रूप में देखते हैं। आइडिया ऑफ इंडिया एक परिवार के वर्चस्व के रूप में अब देश को स्वीकार नहीं है। भारत की अवधारणा लोकतांत्रिक है, एक परिवार तक सीमित नहीं है।

उ.प्र. विभाजन का नया प्रयास

एन.डी.ए. सरकार को चैन से न बैठने दिया जाए, इसलिए एक और शोशा छोड़ा जा रहा है। जून के दूसरे सप्ताह में मेरठ में एक तथाकथित गैर-राजनीतिक सम्मेलन किया गया। समाचारों के अनुसार यह एक अज्ञात संस्था 'मेरठ शोषित मुक्ति वाहिनी' द्वारा आयोजित किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष थे राष्ट्रीय लोकदल के नेता और पूर्वमंत्री डॉ. मेराजुद्दीन अहमद। इस गैर-राजनीतिक कहे जानेवाले आंदोलन में भाजपा को छोड़कर सब राजनीतिक दल सम्मिलित हुए थे। मुख्य वक्ता थे जनता दल (एकी) के महासचिव के.सी. त्यागी और उन्होंने गोरखालैंड की तर्ज पर आंदोलन करने का आह्वान किया। आंदोलन में सब वक्ताओं ने उ.प्र. के विशाल प्रदेश होने को उसके पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार ठहराया, अतएव उ.प्र. के विभाजन की माँग उठाई जाएगी। त्यागी ने तो यहाँ तक कहा कि साधारण आंदोलन से काम नहीं बनेगा, उसके लिए कुरबानी देनी होगी। सात जुलाई को मेरठ कमिश्नरी (मंडल) के सामने दस हजार लोग धरना देकर अनशन करेंगे। वहाँ उ.प्र. के विभाजन के लिए संकल्प-पत्र पर हस्ताक्षर कराए जाएँगे। अध्यक्ष ने कहा कि जब तक २२ करोड़ आबादी के प्रदेश के चार टुकड़े नहीं होंगे, विकास होना असंभव है। मायावती पहले इन मुद्दे पर मुखर थीं, पर अब चुप हैं। इन दिनों मेरठ मंडल का क्षेत्र पहले से ही संवेदनशील बना हुआ है। सहारनपुर में जातीय दंगों और भीम सेना के कारण उत्तेजना व्याप्त है। स्थानीय प्रशासन ने वहाँ मायावती की सभा करने की इजाजत देकर बड़ी गलती की। प्रशासन और खुफिया तंत्र भी असावधान रहे। उनका इरादा वातावरण को और गरमाने का है, ताकि प्रशासनिक व्यवस्था चरमरा जाए। अत: पहले से सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कोशिश यह है कि एक तीर से दो शिकार हों—योगी आदित्यनाथ उ.प्र. सरकार और नरेंद्र मोदी केंद्र सरकार, दोनों के विरुद्ध इस क्षेत्र में जनभावनाओं को उत्तेजित कर किसी-न-किसी तरह भड़काया जाए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की निगाह २०१९ के आम चुनाव तक सीमित नहीं है। विरोधी दलों की खिसियाहट है कि २०१९ का चुनाव जीवन-मरण का प्रश्न बन गया है। प्रधानमंत्री २०२२ की बात करते हैं। उनकी दृष्टि एक दूरदर्शी राजनेता की है। २०२२ में १५ अगस्त को हम सब

भारतीय स्वाधीनता दिवस की हीरक जयंती मनाएँगे। नरेंद्र मोदी का स्वप्न एक नए भारत का है, जिसका वाहक होगा देश का युवा वर्ग। नए भारत का उदय उनका स्वप्न है और संकल्प भी। १५ अगस्त पर श्रीअरविंद की जन्मतिथि है। १९४७ में ऑल इंडिया रेडियो को अपने संदेश में श्रीअरविंद ने कहा था कि यह केवल एक संयोग नहीं है, इसमें एक निहित अर्थ है। पांडिचेरी (अब पुदुचेरी) जाने के पहले अपने एक बयान में श्रीअरविंद ने एक तरह से भविष्यवाणी की थी कि परमशक्ति ने भारत की स्वाधीनता निश्चित कर दी है, भारत स्वतंत्र होकर रहेगा, अतएव सक्रिय राजनीति को छोड़कर उन्होंने अपने लिए मानव कल्याण का नया क्षेत्र चुना। २०२२ की १५ अगस्त को श्रीअरविंद की १५०वीं जयंती होगी। संभवत: नए भारत के उदय का संदेश और संकल्प का प्रारंभ भी तभी हम देख सकेंगे। हम आशा करते हैं कि भारत सरकार अवसर के अनुकूल उसका आयोजन भी भव्य रूप में करना चाहेगी। इसीलिए अत्यावश्यक है कि देशवासी बिखराव और अलगाववादी प्रवृत्तियों से बचें। देश में हजारों समस्याएँ हैं, उनका निराकरण सरल नहीं है। उन समस्याओं से जूझने के लिए देश की पूरी शक्ति को एकजुट करना आवश्यक है।

कृषि और किसानों की समस्या जटिल होती जा रही है। उसकी ओर समग्रता से विचार करके निस्तारण के रास्ते खोजने होंगे। कर्ज की माफी पर्याप्त समाधान नहीं है। उसके दुष्परिणाम भी हैं। पूर्व में कांग्रेस सरकार कर्ज माफी का अभियान चला चुकी है, पर कोई नतीजा नहीं निकला। इस स्तंभ में समय-समय पर हम ध्यान दिलाते रहे हैं। किसानों की आत्महत्या का सिलसिला कर्ज माफी से नहीं रुकेगा। भारत में कृषि के अर्थशास्त्र और गाँवों की बिखरती सामाजिक अवस्था का अध्ययन करना होगा। स्थानाभाव के कारण अधिक लिखना अभी संभव नहीं है। दूसरी समस्या है बढ़ती हुई बेरोजगारी, अतएव सरकारी और गैर-सरकारी, दोनों क्षेत्रों में वैज्ञानिक रूप से व्यवसाय के नए साधन खोजने हैं। तीसरी बात जो कहना चाहेंगे कि देश में कानून व्यवस्था को मजबूत बनाया जाए। कानून को अपने हाथ में लेने की प्रवृत्ति को सख्ती से रोकना होगा। कानून और शांति व्यवस्था को केवल संकुचित राजनैतिक दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। असामाजिक तत्त्वों द्वारा गौरक्षा के नाम पर तरह-तरह की जो गुंडागर्दी हो रही है, उस पर काबू पाना अत्यंत आवश्यक है। उससे देश और विदेश में मीडिया द्वारा भ्रांतियाँ फैलाई जा रही हैं। भारत एक सहिष्णु देश है, इस छवि को किसी प्रकार से मलिन नहीं होने देना चाहिए— यदि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नए भारत के स्वप्न और संकल्प को साकार देखना चाहते हैं।

देश की राजनीति कितनी अधोगति को प्राप्त कर चुकी है, नित्यप्रति की घटनाएँ और समाचार इस बात के प्रमाण हैं। नए-नए घोटालों और भ्रष्टाचार के समाचार आ रहे हैं। प्रशासन में भ्रष्टाचार के मामले लोगों के सामने उजागर हो रहे हैं। पुलिस तथा व्यवस्था तंत्र के अन्य अंगों की असामाजिक गुटों से साँठगाँठ है। राजनीति पैसे की चेरी हो गई है। राजनीति ने पिछले साठ-सत्तर वर्षों में कदाचार की परिभाषा ही बदल दी है। ऐसा लगता है कि राजनीति ने देश को भू-माफिया, शिक्षा माफिया, शराब माफिया, लकड़ी (टिंबर) माफिया, खनन माफिया, ड्रग माफिया आदि-आदि को सौंप दिया है। पहाड़ से लेकर नदियों और समुद्रतट तक खनन माफियाओं ने कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा है। माफिया अपने को कानून से ऊपर समझता है, क्योंकि उनके लिए रेत और बालू सोना उगलते हैं। उत्तर प्रदेश का एक मंत्री प्रजापति, जो अब जेल में है, इसका जीता-जागता उदाहरण है। बदलती राजनैतिक सत्ता को कैसे अपने कब्जे में किया जा सकता है, नोएडा अॅथोरिटी का पूर्व चीफ इंजीनियर यादव सिंह इसका एक अन्य उदाहरण है। चाहे बसपा हो या समाजवादी दल, अधिकारियों और राजनेताओं की मिलीभगत ही इस स्थिति के लिए उत्तरदायी है। राजनीति बेशर्म भी है। कोई भी आरोप हो, राजनेता यह कहकर मूँछों पर ताव देते हैं कि यह सब राजनीति से प्रेरित है, इसमें कोई तथ्य नहीं है। जब न्यायालय हरकत में आता है तो कुछ आशा की किरण दिखाई देती है। चारा घोटाले के मामले में अब सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के कारण बिहार के दो मुख्यमंत्रियों लालूप्रसाद यादव और जगन्नाथ मिश्र को दो अन्य मामले में फिर अदालत का मुँह देखना पड़ रहा है। एक केस में तो पहले सजा हो ही चुकी है। बिहार को ही लें तो वहाँ के स्वास्थ्य मंत्री के खिलाफ पद दुरुपयोग के तरह-तरह के मामले सामने आए हैं। एक पेट्रोल पंप लेने के लिए फर्जी दस्तावेज के इस्तेमाल के कारण उनको नोटिस मिला है। जमीनों की खरीद-फरोख्त के आरोप भी हैं। लालूजी की सुपुत्री मीसा, जो संसद् सदस्य भी हैं, उनके और उनके पति के खिलाफ आयकर विभाग ने काररवाई शुरू की है। सत्ता के रुआब में नियमों को तोड़-मरोड़कर सेल कंपनियाँ खोलकर उन पर संपत्ति इकट्ठा करने का आरोप है।

हरियाणा में वाड्रा के जमीन खरीद-फरोख्त के मामले की एक न्यायिक जाँच हुई थी। उसकी रिपोर्ट अभी उच्च न्यायालय के आदेश से गोपनीय रखी गई है। अपने एक साक्षात्कार में कहा कि विभागीय अधिकारियों ने बताया कि चूँकि वे सोनिया गांधी के दामाद हैं, तो यह मान लिया गया उनके रुतबे के कारण एक नई कॉलोनी बनाने की उनके पास तकनीकी और वित्तीय क्षमता होगी ही। तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता की मृत्यु के बाद शशिकला और उनके परिवारवालों ने सत्ता हथियाने की कोशिश की। अन्ना द्रमुक की शशिकला जनरल सेक्रेटरी बन गईं। प्रदेश में अपनी मरजी का मुख्यमंत्री बनवा दिया, जिस सदस्य को जयललिता ने दो बार स्थानापन्न बनाया था, सत्ता और धन के इस लोभ ने एक नया खेल खिला दिया। शशिकला अब भ्रष्टाचार और अपनी आय से अधिक संपत्ति के पुराने मुकदमे में चार साल की सजा काट रही हैं। एक प्रकार से मृत्यु जयललिता के प्रति दयावान हो गई। एक टी.वी. चैनल पर एक पुराने मामले में, जो यूपीए सरकार के समय का था, सी.बी.आई. की छापेमारी और काररवाई को अभिव्यक्ति के अधिकार पर कुठाराघात कहा जा रहा है। कुछ लोग सरकार पर देश में एक डर का वातावरण पैदा करने का आरोप भी लगा रहे हैं। आखिर फैसला तो न्यायालयों द्वारा ही होगा। उसका इंतजार क्यों नहीं किया जाता? भ्रष्टाचार के आरोप और प्रत्यारोप राजनीति को खोखला बना रहे हैं। जनता में

राजनीति के प्रति एक प्रकार की वितृष्णा पैदा हो रही है, जो चुनावी लोकतंत्र के लिए अत्यंत हानिकर है।

एक भूला-बिसरा साहित्यकार

एक साहित्य-प्रेमी और उनकी देन की कुछ चर्चा करना चाहेंगे। रेवतीलाल शाह न केवल गुणग्राही व्यक्ति थे, बल्कि स्वयं भी अभूतपूर्व गुणी थे। २९ नवंबर, १९३४ को राजस्थान के झुंझनू में जनमे तथा २५ जनवरी, २००३ को उनका निधन कोलकाता में हुआ। उन्होंने बिड़ला इंजीनियरिंग कॉलेज पिलानी से इलेक्ट्रॉनिक्स में एम.ई. की उपाधि प्राप्त की। मूलत: वैज्ञानिक रहते हुए उन्होंने विज्ञान, गणित और तकनीक पर उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने वैज्ञानिक के नाते तीन पुस्तकों का प्रणयन किया। १९९६ में एक पुस्तक के लिए उनको राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। वैज्ञानिक होने के साथ-साथ उन्हें साहित्य से बहुत प्रेम था। वे हिंदी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, बँगला, पंजाबी एवं राजस्थानी भाषाओं के ज्ञाता थे। साहित्य को क्षेत्रीय भाषाओं में नहीं बाँधा जा सकता। हमें उनका परिचय उनकी मृत्यु के बाद उनकी उपलब्धियों और बहुआयामी व्यक्तित्व से हुआ था, यानी 'फिराक और फिराक का चिंतन' नामक उनकी पुस्तक से। संभवत: इस पुस्तक का जिक्र इस स्तंभ में हुआ भी था। उसके उपरांत उनके कुछ पत्रों और संस्मरणों का एक संकलन 'संवेदना के विविध आयाम' देखने को मिला। रेवतीलाल शाह का स्वयं का व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी इस पुस्तक के नाम से व्याख्यायित किया जा सकता है। उनकी पैठ जितनी फिराक गोरखपुरी, इकबाल, फैज, उमर खय्याम, रूमी, हाफिज, मीर, गालिब, इकबाल के साहित्य में थी, उतनी ही पैठ और रुचि गीता, उपनिषद, कामायनी या शैव दर्शन में भी थी। उन्होंने हरि प्रसाद मुखर्जी के 'रामायण खुला चोखे' का बँगला से हिंदी में अनुवाद किया था। उनकी मित्रता अपने समय के प्राय: सभी शायरों और हिंदी के लब्धप्रतिष्ठित कवियों व विद्वानों से थी। समय-समय पर इन महानुभावों ने उनके विषय में जो उद्‌गार व्यक्त किए, उनसे रेवतीलाल शाह का व्यक्तित्व एवं जीवनदर्शन उजागर होता है। उनका बहुत सा लेखन इधर-उधर बिखरा पड़ा है। प्रयास चल रहा है कि विद्वानों की सहायता से उनका अप्रकाशित साहित्य धीरे-धीरे पाठकों को उपलब्ध हो सके। इस सिलसिले में हमें हाल में उनकी तीन पुस्तकें देखने को मिलीं। एक में उमर खय्याम की चुनिंदा रुबाइयाँ हैं, मूल फारसी से भावानुवाद। दूसरी पुस्तक में संकलित हैं मिर्जा गालिब के चुनिंदा खत, चुनिंदा शेर, मूल उर्दू एवं भावानुवाद। तीसरे संकलन में हैं हाफिज शीराजी की कुछ चयनित गजलें, मूल फारसी एवं भावानुवाद। बहुतों ने मिर्जा गालिब तथा उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद किया है, जिसे पढ़ने में आनंद मिलता है। हर एक की अपनी-अपनी दृष्टि होती है। रेवतीलाल शाह का प्रयास अपनी एक सहृदय अध्येता की दृष्टि से है। तीनों संकलनों में मूल फारसी एवं उर्दू रचनाओं को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया है। हर संकलन से उदाहरण देना कठिन है। हाफिज शीराजी की एक गजल, जो हमें विशेषतया पसंद आई, उसको उद्धृत करना चाहेंगे। शायद सुधी पाठकों को भी पसंद आए। शीराजी की गजल का अनुवाद इस प्रकार है—

चुनने को इक फूल गया था उषा बेला, मैं उपवन में
पड़ा सुनाई मुझे अचानक, बस आर्तनाद इक बुलबुल का

मुझ जैसे वो भी खोई थी किसी फूल ही के वियोग में
सारे उपवन में शोर मचा था, केवल उसके रोदन का

लगातार मैं धूम रहा था उस उपवन की क्यारी में
सोच रहा था उस बुलबुल की और फूल की प्रेम कहानी

आर्त्तनाद ने उस बुलबुल के, कुछ ऐसा दिल पर असर किया,
हालत ऐसी बिगड़ी मेरी, बस कुछ सहनशक्ति ना शेष रही गई,

फूल अनेकों इस उपवन में खिलते ही रहते हैं, लेकिन
बिना चमन के काँटों के इक फूल किसी को नहीं मिला

फूल संग में हैं काँटों के, अरु प्रेम दीवानी बुलबुल है
ना इसमें परिवर्तन कोई, ना उसमें परिवर्तन है

सुख की आशा मत रख 'हाफिज' इस नील गगन की चालों से
दोष हजारों हैं इसमें, गुण नाममात्र के लिए नहीं हैं

रेवतीलाल शाह की पुस्तकों को संपादित करने का कार्य कर रहे हैं, उनके छोटे भाई प्रमोद शाह नफीस। उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र तथा अन्य प्रबुद्धजन। प्रमोद शाह कलकत्ता विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक हैं। वे पेशे से चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं। वे स्वयं एक शायर भी हैं। उन्होंने बहुत सी गजलें और नज्में लिखी हैं। 'जुस्तजू' और 'सूफीमत : एकता का पैगाम' नामक दो संकलन उल्लेखनीय हैं। इनके लेख देश की अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। कोलकाता आकाशवाणी, दूरदर्शन, डिसकवरी चैनल आदि पर समय-समय पर उनकी वार्त्ताएँ आती हैं। कुछ वर्षों पूर्व उन्होंने एक अत्यंत श्रमसाध्य कार्य किया था। वह था तीन खंडों में प्रकाशित संकलन 'Thorgths on Religious Politics in India' (१८५७-२००८), जिसका विस्तृत संज्ञान इस सतंभ में लिया गया था। वह पुस्तक भारतीय राजनीति के शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

रेवतीलाल शाह की उपरोक्त पुस्तकों के प्रकाशक हैं—शैली पब्लिकेशन प्रथम तल, १४, चाँदनी चौक स्ट्रीट, कोलकाता-७

प्रकाशन सुंदर है, मूल्य केवल सत्तर और अस्सी रुपए।

अक्तूबर में भगिनी निवेदिता की १५०वीं वर्षगाँठ है। स्वामी विवेकानंद की शिष्या होकर वे पूर्णतया भारतमयी हो गईं। अपनी लेखनी द्वारा और अनेक प्रयासों से भारत के नवजागरण में उल्लेखनीय योगदान किया। भगिनी निवेदिता की १५०वीं वर्षगाँठ से संबंधित आयोजन जगह-जगह हो रहे हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व तथा उनके विशद संपर्क तत्कालीन भारतीय नेताओं विषयक सामग्री साहित्य अमृत में प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा। अगर सितंबर में उनके संबंध में विद्वानों से अच्छे आलेख प्राप्त होंगे तो उनका स्वागत होगा।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

(त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी)

लाल पान की बेगम

• फणीश्वर नाथ 'रेणु'

''क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या?''

बिरजू की माँ शकरकंद उबालकर बैठी मन-ही-मन कुढ़ रही थी अपने आँगन में। सात साल का लड़का बिरजू शकरकंद के बदले तमाचे खाकर आँगन में लोट-लोट कर सारी देह में मिट्टी मल रहा था। ''चंपिया के सिर भी चुड़ैल मंडरा रही है···आध-आँगन धूप रहते जो गई है सहुआइन की दुकान छोवा-गुड़ लाने, सो अभी तक नहीं लौटी; दीया-बाती की वेला हो गई। आए आज लौट के जरा!'' बागड़ बकरे की देह में कुकुरमाछी लगी थी, इसलिए बेचारा बागड़ रह-रहकर कूद-फाँद कर रहा था। बिरजू की माँ बागड़ पर मन का गुस्सा उतारने का बहाना ढूँढ़कर निकाल चुकी थी। पिछवाड़े की मिर्च की फूली गाछ! बागड़ के सिवा और किसने कलेवा किया होगा! बागड़ को मारने के लिए वह मिट्टी का छोटा ढेला उठा चुकी थी कि पड़ोसिन मखनी फुआ की पुकार सुनाई पड़ी, ''क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या?''

''बिरजू की माँ के आगे नाथ और पीछे पगहिया हो तब न; फुआ!''

गरम गुस्से में बुझी नुकीली बात फुआ की देह में धँस गई और बिरजू की माँ ने हाथ के ढेले को पास ही फेंक दिया···बेचारे बागड़ को कुकरमाछी परेशान कर रही है! आ-हा, आय···आय! हर्र-र-र-र! आय-आय!

बिरजू ने लेटे-ही-लेटे बागड़ को एक डंडा लगा दिया। बिरजू की माँ की इच्छा हुई कि जाकर उसी डंडे से बिरजू का भूत भगा दे, किंतु नीम के पास खड़ी पनभरियों की खिलखिलाहट सुनकर रुक गई। बोली, ''ठहर, तेरे बप्पा ने बड़ा हथछुट्टा बना दिया है तुझे। बड़ा हाथ चलता है लोगों पर। ठहर!''

मखनी फुआ नीम के पास झुकी कमर से घड़ा उतारकर पानी भरकर लौटती पनभरनियों में बिरजू की माँ की बहकी हुई बात का इनसाफ करा रही थी—''जरा देखो तो इस बिरजू की माँ को! चार मन पाट (सूट) का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते! इनसाफ करो! खुद अपने मुँह से आठ दिन पहले से ही गाँव की अली-गली में बोलती फिरी है, हाँ, इस बार बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बिठाकर बलरामपुर का नाच दिखा लाऊँगा। बैल अब अपने घर है, तो हजार गाड़ी मँगनी मिल जाएँगी। सो मैंने अभी टोक दिया, नाच देखनेवाली सब तो औन-पौन कर तैयार हो रही हैं, रसोई-पानी कर रही हैं। मेरे मुँह में आग लगे, क्यों मैं टोकने गई! सुनती हो, क्या जवाब दिया बिरजू की माँ ने?''

मखनी फुआ ने अपने पोपले मुँह के होंठों को एक ओर मोड़कर ऐंठती हुई बोली निकाली—'अर-रें-हाँ-हाँ! बि-र-रज्जू की मैं···या के आगे नाथ औ-र्र पीछे पगहिया न हो, तब्ब ना-आ-आ!'

जंगी की पुतोहू बिरजू की माँ से नहीं डरती। वह जरा गला खोलकर ही कहती है, ''फुआ-आ! सरवे सित्तलमिंटी (सर्वे सेटलमेंट) के हाकिम के बासा पर फूलछाप किनारीवाली साड़ी पहन के यदि तू भी भंटा की भेंटी चढ़ाती तो तुम्हारे नाम से भी दु-तीन बीघा धनहर जमीन का परचा कट जाता! फिर तुम्हारे घर भी आज दस मन सोनाबंग पाट होता, जोड़ा बैल खरीदता! फिर आगे नाथ और पीछे सैकड़ों पगहिया झूलती।''

जंगी की पुतोहू मुँहजोर है। रेलवे स्टेशन के पास की लड़की है। तीन ही महीने हुए गौने की नई बहू होकर आई है और सारे कुर्मा टोली की सभी झगड़ालू सासों से एकाध मोरचा ले चुकी है। उसका ससुर जंगी दागी चोर है, सी-किलासी है। उसका खसम रंगी कुर्मा टोली का नामी लठैत। इसीलिए हमेशा सींग खुजाती फिरती है जंगी की पुतोहू!

बिरजू की माँ के आँगन में जंगी की पुतोहू की गला-खोल बोली गुलेल की गोलियों की तरह दनदनाती हुई आई। बिरजू की माँ ने एक तीखा जवाब खोजकर निकाला, लेकिन मन मसोसकर रह गई। गोबर की ढेरी में कौन ढेला फेंके।

जीभ के झाल को गले में उतारकर बिरजू की माँ ने अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी, ''अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मूड़ी मरोड़कर चूल्हे में झोंकती हूँ! दिन-दिन बेचाल होती जाती है!···गाँव में तो अब ठेठर-बैसकोप का गीत गानेवाली पतुरिया पुतोहू सब आने लगी हैं। कहीं बैठके 'बाजे न मुरलिया' सीख रही होगी ह-र-जा-ई-ई! अरी चंपि-या-या-या!''

जंगी की पुतोहू ने बिरजू की माँ की बोली का स्वाद लेकर कमर पर घड़े को सँभाला और मटककर बोली, ''चल दिदिया, चल! इस मोहल्ले में लाल पान की बेगम बसती है! नहीं जानती, दोपहर-दिन और चौपहर-रात बिजली की बत्ती भक्-भक् कर जलती है!''

भक्-भक् बिजली-बत्ती की बात सुनकर न जाने क्यों सभी खिलखिलाकर हँस पड़ीं। फुआ की टूटी हुई दंत-पंक्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली—''शैतान की नानी!''

बिरजू की माँ की आँखों पर मानो किसी ने तेज टॉर्च की रोशनी डालकर चौंधिया दिया।···भक्-भक् बिजली-बत्ती! तीन साल पहले सर्वे

कैंप के बाद गाँव की जलन-डाही औरतों ने एक कहानी गढ़ के फैलाई थी, चंपिया की माँ के आँगन में रातभर बिजली-बत्ती भुक-भुकाती थी! चंपिया की माँ आँगन में नाकवाले जूते की छाप, घोड़े की टाप की तरह।···जलो, जलो! और जलो! चंपिया की माँ के आँगन में चाँदी जैसे पाट सूखते देखकर जलनेवाली सब खलिहान पर सोनोली औरतें धान के बोझों को देखकर बैंगन का भुरता हो जाएँगी।

मिट्टी के बरतन से टपकते हुए छोवा-गुड़ को उँगलियों से चाटती हुई चंपिया आई और माँ के तमाचे खाकर चीख पड़ी—''मुझे क्यों मारती है ए-ए-ए! सहुआइन जल्दी से सौदा नहीं देती है—एँ-एँ-एँ-एँ!''

''सहुआइन जल्दी सौदा नहीं देती की नानी! एक सहुआइन की ही दुकान पर मोती झरते हैं, जो जड़ गाड़कर बैठी दुई थी। बोल, गले पर लात देकर कल्ला तोड़ दूँगी हरजाई, जो फिर कभी, 'बाजे न मुरलिया' गाते सुना! चाल सीखने जाती है, टीशन की छोकरियों से।'' बिरजू की माँ ने चुप होकर अपनी आवाज अंदाजी कि उसकी बात जंगी के झोंपड़े तक साफ-साफ पहुँच गई होगी।

बिरजू बीती हुई बातों को भूलकर उठ खड़ा हुआ था और धूल झाड़ते हुए बरतन से टपकते गुड़ को ललचाई निगाह से देखने लगा था। दीदी के साथ वह भी दुकान जाता तो दीदी उसे भी गुड़ चटाती जरूर! वह शकरकंद के लोभ में रहा और माँगने पर माँ ने शकरकंद के बदले···

''ए मैया, एक उँगली गुड़ दे-दे!'' बिरजू ने तलहथी फैलाई, ''दे न मैया, एक रत्ती भर!''

''एक रत्ती क्यों, उठाके बरतन को फेंक आती हूँ पिछवाड़े में; जाके चाटना। नहीं बनेगी मीठी रोटी!···मीठी रोटी खाने का मुँह होता है।'' बिरजू की माँ ने उबले शकरकंद का सूप रोती हुई चंपिया के सामने रखते हुए कहा, ''बैठ के छिलके उतार, नहीं तो अभी···।'' दस साल की चंपिया जानती है, शकरकंद छीलते समय कम-से कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकालकर गालियाँ देगी।··· ''पाँव फैलाकर क्यों बैठी है उस तरह, बेलज्जो!'' चंपिया माँ के गुस्से को जानती है।

बिरजू ने इस मौके पर थोड़ी सी खुशामद करके देखा, ''मैया, मैं भी बैठकर शकरकंद छीलूँ?''

''नहीं!'' माँ ने झिड़की दी, ''एक शकरकंद छीलेगा और तीन पेट में! जाके सिद्धू की बहू से कहो, एक घंटे के लिए कड़ाही माँगकर ले गई तो फिर लौटाने का नाम नहीं। जा जल्दी!''

मुँह लटकाकर आँगन से निकलते-निकलते बिरजू ने शकरकंद और गुड़ पर निगाह दौड़ाई। चंपिया ने अपने झबरे केश की ओट से माँ की ओर देखा और नजर बचाकर चुपके से बिरजू की ओर एक शकरकंद फेंक दिया।···बिरजू भागा।

''सूरज भगवान् डूब गए। दीया-बत्ती की वेला हो गई। अभी तक गाड़ी···''

चंपिया बीच में ही बोल उठी, ''कोयरी टोले में किसी ने गाड़ी नहीं दी मैया! बप्पा बोले, माँ से कहना सब ठीक-ठीक करके तैयार रहे। मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी लाने जा रहा हूँ।''

सुनते ही बिरजू की माँ का चेहरा उतर गया। लगा, छाते की कमानी उतर गई घोड़े से अचानक। ''कोयरी टोले में किसी ने गाड़ी मँगनी नहीं दी! तब मिल चुकी गाड़ी! जब अपने गाँव के लोगों की आँखों में पानी नहीं तो मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी का क्या भरोसा! न तीन में, न तेरह में! क्या होगा शकरकंद छीलकर! रख दे उठाके!···यह मर्द नाच दिखाएगा! बैलगाड़ी पर चढ़कर नाच दिखाने ले जाएगा। चढ़ चुकी बैलगाड़ी पर, देख चुकी जी भर नाच···पैदल जानेवाली सब पहुँचकर पुरानी हो चुकी होंगी।''

बिरजू छोटी कड़ाही सिर पर औंधाकर वापस आया, ''देख दिदिया, मलेटरी टोपी! इसपर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होता।''

चंपिया चुपचाप बैठी रही, कुछ बोली नहीं, जरा सी मुसकाई भी नहीं। बिरजू ने समझ लिया, मैया का गुस्सा अभी उतरा नहीं है पूरी तौर से।

मढ़ैया के अंदर से बागड़ भगाती हुई बिरजू की माँ बड़बड़ाई—''कल ही पंचकौड़ी कसाई के हवाले करती हूँ राक्षस तुझे! हर चीज में मुँह लगाएगा। चंपिया, बाँध दे बगड़ा को। खोल दे गले की घंटी। हमेशा टुनुर-टुनुर! मुझे जरा नहीं सुहाता है!''

टुनुर-टुनुर सुनते ही बिरजू को सड़क से जाती हुई बैलगाडियों की याद हो आई। अभी बबुआन टोले की गाड़ियाँ नाच देखने जा रही थीं, ''झुनुर-झुनुर बैलों की झुनकी, तुमने सु···''

''बेसी बक-बक मत करो!'' बागड़ के गले से झुनकी खोलती बोली चंपिया।

''चंपिया, डाल दे चूल्हे में पानी! बप्पा आवे तो कहना कि अपने उड़नजहाज पर चढ़कर नाच देख आएँ! मुझे नाच देखने का शौक नहीं!···मुझे जगाइयो मत कोई! मेरा माथा दु:ख रहा है।''

मढ़ैया के ओसारे पर बिरजू ने फिसफिसा के पूछा, ''क्योंकर दी, नाच में उड़नजहाज भी उड़ेगा?''

चटाई पर कथरी ओढ़कर बैठती हुई चंपिया ने बिरजू को चुपचाप अपने पास बैठने का इशारा किया, मुफ्त में मार खाएगा बेचारा!

बिरजू ने बहन की कथरी में हिस्सा बाँटते हुए चुक्की-मुक्की लगाई। जाड़े के समय इस तरह घुटने पर ठुड्डी रखकर चुक्की-मुक्की लगाना सीख चुका है वह। उसने चंपिया के कान के पास मुँह ले जाकर कहा,

''हम लोग नाच देखने नहीं जाएँगे?···गाँव में एक पंछी भी नहीं है। सब चले गए।''

चंपिया को अब तिलभर भी भरोसा नहीं। संझा तारा डूब रहा है। बप्पा अभी तक गाड़ी लेकर नहीं लौटे।···एक महीना पहले से ही मैया कहती थी, 'बलरामपुर के नाच के दिन मीठी रोटी बनेगी; चंपिया छींट की साड़ी पहनेगी, बिरजू पेंट पहनेगा, बैलगाड़ी पर चढ़कर···'

चंपिया की भीगी पलकों पर एक बूँद आँसू आ गया।

बिरजू का भी दिल भर आया। उसने मन-ही-मन इमली पर रहनेवाले जिन बाबा को एक बैंगन कबूला, गाछ का सबसे पहला बैंगन, उसने खुद जिस पौधे को रोपा है!···जल्दी से गाड़ी लेकर बप्पा को भेज दो, जिनबाबा।

मढ़ैया के अंदर बिरजू की माँ चटाई पर पड़ी करवटें ले रही थी। ''उँह, पहले से किसी बात का मंसूबा नहीं बाँधना चाहिए किसी को।'' भगवान् ने मंसूबा तोड़ दिया। उसको सबसे पहले भगवान् से पूछना है, यह किस बात का फल दे रहे हो भोला बाबा। अपने जीते उसने किसी देवता-पित्तर की मान-मनौती बाकी नहीं रखी। ''सर्वे के समय जमीन के लिए जितनी मनौतियाँ की थीं···ठीक ही तो! महाबीरजी का सेट तो बाकी ही है। हाय रे देव!···भूल-चूक माफ करो महावीर बाबा! मनौती दूनी करके चढ़ाएगी बिरजू की माँ!'' बिरजू की माँ के मन में रह-रहकर जंगी की पुतोहू की बातें चुभती हैं, भक्-भक् बिजली-बत्ती!··· ''चोरी-चमारी करनेवाले की बेटी-पुतोहू जलेगी नहीं! पाँच बीघा जमीन क्या हासिल की है बिरजू के बप्पा ने, गाँव की भाईखौकियों की आँखों में किरकिरी पड़ गई है। खेत में पाट लगा देखकर गाँव के लोगों की छाती फटने लगी; धरती फोड़कर पाट लगा है; बैसाखी बादलों की तरह उमड़ते आ रहे हैं पाट के पौधे! तो अलान तो फलान। इतनी आँखों की धार भला फसल सहे। जहाँ पंद्रह मन पाट होना चाहिए, सिर्फ दस मन पाट कटा, पर तौल के ओजन हुआ रब्बी भगत के यहाँ।···

''इसमें जलने की क्या बात है भला!···बिरजू के बप्पा ने तो पहले ही कुर्मा टोली के एक-एक आदमी को समझा के कहा था, जिंदगी भर मजदूरी करते रह जाओगे। सर्वे का समय आ रहा है, लाठी कड़ी करो तो दो-चार बीघे जमीन हासिल कर सकते हो। सो गाँव की किसी पुतखौकी का भतार सर्वे के समय बाबू साहेब के खिलाफ खाँसा भी नहीं। बिरजू के बप्पा को कम सहना पड़ा है। बाबू साहेब गुस्से से सरकस नाच के बाघ की तरह हुमड़ते रह गए। उनका बड़ा बेटा घर में आग लगाने की धमकी देकर गया। आखिर बाबू साहेब ने अपने सबसे छोटे लड़के को भेजा। बिरजू की माँ को 'मौसी' कहके पुकारा—'यह जमीन बाबूजी ने मेरे नाम से खरीदी थी। मेरी पढ़ाई-लिखाई उसी जमीन की उपज से चलती है।' और भी कितनी बातें।

खूब मोहना जानता है उत्ता जरा-सा लड़का। जमींदार का बेटा है कि···''चंपिया, बिरजू सो गया क्या? यहाँ आ जा बिरजू, अंदर। तू भी आ जा चंपिया!···भला आदमी आए तो एक बार आज।''

बिरजू के साथ चंपिया अंदर चली गई।

''ढिबरी बुझा दे···बप्पा बुलाएँ तो जवाब मत देना। खपच्ची गिरा दे।''

''भला आदमी रे, भला आदमी। मुँह देखो जरा इस मर्द का। बिरजू की माँ दिन-रात मंझा न देती रहती तो ले चुके थे जमीन! रोज आकर माथा पकड़ के बैठ जाएँ, मुझे जमीन नहीं लेनी है बिरजू की माँ, मजूरी ही अच्छी।'' जबाब देती थी बिरजू की माँ खूब-सोच समझ के। ''छोड़ दो, जब तुम्हारा कलेजा ही थिर नहीं होता है तो क्या होगा! जोरू-जमीन जोर के, नहीं तो किसी और के!···''

बिरजू के बाप पर बहुत तेजी से गुस्सा चढ़ता है। चढ़ता ही जाता है। बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबरगनेश घरवाला उसे मिला। कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने। कोल्हू के बैल की तरह खटकर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ, कभी एक पैसे की जलेबी भी लाकर दी है उसके खसम ने! पाट का दाम भगत के यहाँ से लेकर बाहर-ही-बाहर बैल-हट्टा चले गए। बिरजू की माँ को एक बार नमरी लोट देखने भी नहीं दिया आँख से···। बैल खरीद लाए। उसी दिन से गाँव में ढिंढोरा पीटने लगे, बिरजू की माँ इस बार बैलगाड़ी पर चढ़कर जाएगी नाच देखने!···दूसरे की गाड़ी के भरोसे नाच दिखाएगा।···

अंत में उसे अपने-आप पर क्रोध हो आया। वह खुद भी कुछ कम नहीं! उसकी जीभ में आग लगे। बैलगाड़ी पर चढ़कर नाच देखने की लालसा किस कुसमय में उसके मुँह से निकली थी, भगवान् जानें! फिर आज सुबह से दोपहर तक, किसी-न-किसी बहाने उसने अठारह बार बैलगाड़ी पर नाच देखने जाने की चर्चा छेड़ी है। 'लो, खूब देखो नाच! वाह रे नाच। कथरी के नीचे दुशाले का सपना!···कल भोरे पानी भरने के लिए जब जाएगी, पतली जीभवाली पतुरिया सब हँसती आएँगी, हँसती जाएँगी।' सभी जलते हैं उससे, हाँ भगवान् दाढीजार भी!···दो बच्चों की माँ होकर भी वह जस-की-तस है। उसका घरवाला उसकी बात में रहता है। वह बालों में गरी का तेल डालती है। उसकी अपनी जमीन है। है किसी के पास एक घूर जमीन भी अपनी इस गाँव में! जलेंगे नहीं, तीन बीघे में धान लगा हुआ है, अगहनी। लोगों की बिखदीठ से बचे, तब तो।

बाहर बैलों की घंटियाँ सुनाई पड़ीं। तीनों सतर्क हो गए। उत्कर्ण होकर सुनते रहे।

''अपने ही बैलों की घंटी है, क्यों री चंपिया?''

चंपिया और बिरजू ने प्राय: एक ही साथ—''हूँ-ऊँ-ऊँ!''

''चुप!'' बिरसू की माँ ने फिसफिसाकर कहा, ''शायद गाड़ी भी है, घड़खडाती है न?''

''हूँ-ऊँ-ऊँ!'' दोनों ने फिर हुँकारी भरी।

''चुप! गाड़ी नहीं है। तू चुपके से टट्टी में छेद करके देख तो आ चंपी! भाग के आ, चुपके-चुपके!''

चंपिया बिल्ली की तरह हौले-हौले पाँव से टट्टी के छेद से झाँक आई, ''हाँ मैया, गाड़ी भी है।''

बिरजू हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसकी माँ ने उसके हाथ पकड़कर सुला दिया, ''बोले मत!''

चंपिया भी गुदड़ी के नीचे घुस गई।

बाहर बैलगाड़ी खोलने की आवाज हुई। बिरसू के बाप ने बैलों को जोर से डाँटा, ''हाँ-हाँ! आ गए घर! घर आने के लिए छाती फटी जाती थी!''

बिरजू की माँ ताड़ गई, जरूर मलदहिया टोली में गाँजे की चिलम चढ़ रही थी, आवाज तो बड़ी खनखनाती हुई निकल रही है।

''चंपिया-ह!'' बाहर से ही पुकारकर कहा उसके बाप ने, ''बैलों को घास दे दे, चंपिया-ह!''

अंदर से कोई जवाब नहीं आया। चंपिया के बाप ने आँगन में आकर देखा तो न रोशनी, न चिराग, न चूल्हे में आग।...बात क्या है। नाच देखने, उतावली होकर पैदल ही चली गई क्या!

बिरजू के गले में खसखसाहट हुई और उसे रोकने की पूरी कोशिश भी की, लेकिन खाँसी जब शुरू हुई तो पूरे पाँच मिनट तक वह खाँसता रहा।

''बिरजू! बेटा बिरजमोहन!'' बिरजू के बाप ने पुचकारकर बुलाया, ''मैया गुस्से के मारे सो गई क्या?...अरे अभी तो लोग जा ही रहे हैं।''

बिरजू की माँ के मन में आया कि कसकर जवाब दे, 'नहीं देखना है नाच! लौटा दो गाड़ी!'

''चंपिया-ह! उठती क्यों नहीं? ले, धान की पँचसीस रख दे।'' धान की बालियों का छोटा झब्बा झोंपड़े के ओसारे पर रखकर उसने कहा, ''दीया बालो!''

बिरजू की माँ उठकर ओसारे पर आई, ''डेढ़ पहर रात को गाड़ी लाने की क्या जरूरत थी? नाच तो अब खत्म हो रहा होगा।''

ढिबरी की रोशनी में धान की बालियों का रंग देखते ही बिरजू की माँ के मन का सब मैल दूर हो गया।...धानी रंग उसकी आँखों से उतरकर रोम-रोम में घुल गया।

''नाच अभी शुरू भी नहीं हुआ होगा। अभी-तभी बलरामपुर के बाबू की कंपनी गाड़ी मोहनपुर होटल बँगला से हाकिम साहब को लाने गई है। इस साल आखिरी नाच है। पँचसीस टट्टी में खोस दे, अपने खेत का है।

''अपने खेत का?'' हुलसती हुई बिरजू की माँ ने पूछा, ''पक गए धान?''

''नहीं, दस दिन में अगहन चढ़ते-चढ़ते लाल होकर झुक जाएँगी सारे खेत की बालियाँ।...मलदहिया टोली पर जा रहा था, अपने खेत में धान देखकर आँखें जुड़ा गईं। सच कहता हूँ, पँचसीस तोड़ते समय उँगलियाँ काँप रही थीं मेरी!''

बिरजू ने धान की एक बाली से एक धान लेकर मुँह में डाल लिया और उसकी माँ ने एक हलकी डाँट दी, ''कैसा लुक्कड़ है तू रे!...इन दुश्मनों के मारे कोई नेम-धरम जो बचे!''

''क्या हुआ, डाँटती क्यों है?''

''नवान्न के पहले ही नया धान जुठा दिया, देखते नहीं?''

''अरे, इन लोगों का सबकुछ माफ है। चिरई-चुरमुन हैं ये लोग!''

''दोनों के मुँह में नवान्न से पहले नया अन्न न पड़े।''

इसके बाद चंपिया ने भी धान की बाली से दो धान लेकर दाँतों तले दबाया, ''ओ! इतना मीठा चावल।''

''और गमकता भी है न दिदिया?'' बिरजू ने फिर मुँह में धान लिया।

''रोटी-पोटी तैयार कर चुकी क्या?'' बिरसू के बाप ने मुसकराकर पूछा।

''नहीं!'' मान भरे सुर में बोली बिरजू की माँ, ''जाने का ठीक-ठिकाना नहीं...और रोटी बनती है!''

''वाह! खूब हो तुम लोग!...जिसके पास बैल है, उसे गाड़ी मँगनी नहीं मिलेगी भला? गाड़ीवालों को भी बैल की कभी जरूरत होगी।...पूछूँगा। तब कोयरी टोलावालों से।...ले; जल्दी से रोटी बना ले।

''देर नहीं होगी!''

''अरे, टोकरी भर रोटी तो तू पलक मारते बना लेती है, पाँच रोटियाँ बनाने में कितनी देर लगेगी!''

अब बिरजू की माँ के होंठों पर मुसकराहट खुलकर खिलने लगी। उसने नजर बचाकर देखा, बिरजू का बप्पा उसकी ओर एकटक निहार रहा है।...चंपिया और बिरजू न होते, मन की बात हँसकर खोलते देर न लगती। चंपिया और बिरजू ने एक-दूसरे को देखा और खुशी से उनके चेहरे जगमगा उठे।

''मैया बेकार गुस्सा हो रही थी न!...''

''चंपी! जरा धैलसार में खड़ी होकर मखनी फुआ को आवाज दे तो।''

''फुआ-आ! सुनती हो फुआ! मैया बुला रही है।''

फुआ ने कोई जवाब नहीं दिया, किंतु उसकी बड़बड़ाहट स्पष्ट सुनाई पड़ी, ''हाँ, फुआ को क्यों गुहारती है? सारे टोले में बस एक फुआ ही तो बिना नाथ-पगहियावाली।''

''अरी फुआ!'' बिरजू की माँ ने हँसकर जवाब दिया, ''उस समय बुरा मान गई थी? नाथ-पगहियावाले को आकर देखो, दोपहर रात में गाड़ी लेकर आया है! आ जाओ फुआ, मैं मीठी रोटी पकाना नहीं जानती।''

फुआ खाँसती-खाँसती आई, ''इसी से घड़ी-पहर दिन रहते ही कुछ पूछ रही थी कि नाच देखने जाएगी क्या? कहती, तो मैं पहले से ही अपनी अँगीठी यहाँ सुलगा जाती।''

बिरजू की माँ ने फुआ को अँगीठी दिखला दी और कहा, ''घर में अनाज-दाना वगैरह तो कुछ है नहीं। एक बागड़ है और कुछ बरतन-बासन। सो रातभर के लिए यहाँ तंबाकू रख जाती हूँ। अपना हुक्का ले आई हो न फुआ?''

''फुआ को तंबाकू मिल जाए, तो रात भर क्या, पाँच रात बैठकर जाग सकती है।'' फुआ ने अँधेरे में टटोलकर तंबाकू का अंदाज किया।...''ओ-हो! हाथ खोलकर तंबाकू रखा है बिरजू की माँ ने! और एक वह सहुआइन! राम कहो! उस रात को अफीम की गोली की तरह एक मटर भर तंबाकू रखकर चली गई गुलाब-बाग मेले और कह गई कि डिब्बा भर तंबाकू है।''

बिरजू की माँ चूल्हा सुलगाने लगी। चंपिया ने शकरकंद को मसलकर गोले बनाए और बिरजू सिर पर कड़ाही औंधाकर अपने बाप को दिखलाने लगा, ''मलेटरी टोपी! इसपर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होगा।''

सभी ठठाकर हँस पड़े। बिरजू की माँ हँसकर बोली, ''ताखे पर तीन-चार मोटे शकरकंद हैं, दे दे बिरजू को चंपिया, बेचारा शाम से ही···''

''बेचारा मत कहो मैया, खूब सचारा है!'' अब चंपिया चहकने लगी, ''तुम क्या जानो, कथरी के नीचे मुँह क्यों चल रहा था बाबू साहब का!''

''ही-ही-ही।''

बिरजू के टूटे दूध के दाँतों की फाँक से बोली निकली, ''बिलैक-मारटिन में पाँच शकरकंद खा लिया! हा-हा-हा।''

सभी फिर ठठाकर हँस पड़े। बिरजू की माँ ने फुआ का मन रखने के लिए पूछा, ''एक कनवाँ गुड़ है। आधा दूँ फुआ?''

फुआ ने गद्‌गद होकर कहा, ''अरी शकरकंद तो खुद मीठा होता है, इतना क्यों डालेगी?''

जब तक दोनों बैल दाना-घास खाकर एक-दूसरे की देह को जीभ से चाटें, बिरजू की माँ तैयार हो गई। चंपिया ने छींट की साड़ी पहनी और बिरजू बटन के अभाव में पैंट पर पटसन की डोरी बँधवाने लगा।

बिरजू की माँ ने आँगन से निकल गाँव की ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा की, ''ऊँहूँ, इतनी देर तक भला पैदल जानेवाले रुके रहेंगे?''

पूर्णिमा का चाँद सिर पर आ गया है।···बिरजू की माँ ने असली रूपा का मंगटीक्का पहना है आज, पहली बार। ''बिरजू के बप्पा को हो क्या गया है, गाड़ी जोतता क्यों नहीं, मुँह की ओर एकटक देख रहा है, मानो नाच की लाल पान की···''

गाड़ी पर बैठते ही बिरजू की माँ की देह में एक अजीब गुदगुदी लगने लगी। उसने बाँस की बल्ली को पकड़कर कहा, ''गाड़ी पर अभी बहुत जगह है।···जरा दाहिनी सड़क से गाड़ी हाँकना।''

बैल जब दौड़ने लगे और पहिया जब चूँ-चूँ करके घरघराने लगा तो बिरजू से नहीं रहा गया, ''उड़नजहाज की तरह उड़ाओ बप्पा।''

गाड़ी जंगी के पिछवाड़े पहुँची। बिरजू की माँ ने कहा, ''जरा जंगी से पूछो न, उसकी पुतोहू नाच देखने चली गई क्या?''

गाड़ी रुकते ही जंगी के झोंपड़े से आती हुई रोने की आवाज स्पष्ट हो गई। बिरजू के बप्पा ने पूछा, ''अरे जंगी भाई, काहे कन्ना-रोहट हो रहा है आँगन में?''

जंगी घूर ताप रहा था, बोला, ''क्या पूछते हो, रंगी बलरामपुर से लौटा नहीं, पुतोहिया नाच देखने कैसे जाए। आसरा देखते-देखते उधर गाँव की सभी औरतें चली गईं।''

''अरी टीशनवाली, तो रोती है काहे!'' बिरजू की माँ ने पुकारकर कहा, ''आ जा झट से कपड़ा पहनकर। सारी गाड़ी पड़ी हुई है। बेचारी!···आ जा जल्दी।''

बगल के झोंपड़े से राधे की बेटी सुनरी ने कहा, ''काकी, गाड़ी में जगह है? मैं भी जाऊँगी।''

बाँस की झाड़ी के उस पार लरेना खवास का घर है। उसकी बहू भी नहीं गई है। गिलट का झुनकी-कड़ा पहनकर झमकती आ रही है।

''आ जा! जो बाकी रह गई हैं, सब आ जाएँ जल्दी!''

जंगी की पुतोहू, लरेना की बीवी और राधे की बेटी सुनरी, तीनों गाड़ी के पास आईं। बैल ने पिछला पैर फेंका। बिरजू के बाप ने एक भद्‌दी गाली दी, ''साला! लताड़ मारकर लँगड़ी बनाएगा पुतोहू को!''

सभी ठठाकर हँस पड़े। बिरजू के बाप ने घूँघट में झुकी दोनों पुतोहुओं को देखा। उसे अपने खेत की झुकी हुई बालियों की याद आ गई।

जंगी की पुतोहू का गौना तीन ही मास पहले हुआ है। गौने की रंगीन साड़ी से कड़वे तेल और लठवा-सिंदूर की गंध आ रही है। बिरजू की माँ को अपने गौने की याद आई। उसने कपड़े की गठरी से तीन-मीठी रोटियाँ निकालकर कहा, ''खा ले एक-एक करके। सिमराहा के सरकारी कूप में पानी पी लेना।''

गाड़ी गाँव से बाहर होकर धान के खेतों के बगल से जाने लगी। चाँदनी, कार्तिक की!···खेतों से धान के झरते फूलों की गंध आती है। बाँस की झाड़ी में कहीं दुद्धी की लता फूली है। जंगी की पुतोहू ने एक बीड़ी सुलगाकर बिरजू की माँ की ओर बढ़ाई। बिरजू की माँ को अचानक याद आई, चंपिया, सुनरी, लरेना की बीवी और जंगी की पुतोहू, ये चारों ही तो गाँव में बैसकोप का गीत गाना जानती हैं।···खूब!

गाड़ी की लीक धान-खेतों के बीच होकर गई। चारों ओर गौने की साड़ी की खसखसाहट जैसी आवाज होती है।···बिरजू की माँ के माथे के मंगटीक्के पर चाँदनी छिटकती है।

''अच्छा, अब एक बैसकोप का गीत तो गा तो चंपिया! डरती है काहे? जहाँ भूल जाओगी, बगल में मास्टरनी बैठी ही है।''

दोनों पुतोहुओं ने तो नहीं, किंतु चंपिया और सुनरी ने गला खखारकर साफ किया। बिरजू के बाप ने बैलों को ललकारा, ''चल भैया! और जरा जोर से!···गा रे चंपिया, नहीं तो मैं बैलों को धीरे-धीरे चलने को कहूँगा।''

जंगी की पुतोहू ने चंपिया के कान के पास घूँघट ले जाकर कुछ कहा और चंपिया ने धीमे से शुरू किया, ''चंदा की चाँदनी···''

बिरजू को गोद में लेकर बैठी उसकी माँ की इच्छा हुई कि वह भी साथ-साथ गीत गाए। बिरजू की माँ ने जंगी की पुतोहू की ओर देखा, धीरे-धीरे गुनगुना रही है वह भी। कितनी प्यारी पुतोहू है! गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गंध निकलती है। 'ठीक ही तो कहा है उसने! बिरजू की माँ बेगम है, लाल पान की बेगम! यह तो कोई बुरी बात नहीं। हाँ, वह सचमुच लाल पान की बेगम है!'

बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आखों को केंद्रित करने की चेष्टा करके अपने रूप की झाँकी ली, लाल साड़ी की झिलमिल किनारी, मंगटीक्का पर चाँद।···बिरजू की माँ के मन में अब कोई लालसा नहीं। उसे नींद आ रही है।

पर्यावरण संरक्षण एवं विकास, दोनों जरूरी

• **दीनानाथ तिवारी**

अनादिकाल से देश में पर्यावरण की चेतना से पंचमहाभूत (यानी आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी) को साधने का प्रयास किया गया। सदैव से पर्यावरणीय संतुलन को प्रकृति पर निर्भर पाया गया। तेजी से बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगीकरण एवं बदलती कृषि-व्यवस्था के अंधाधुंध विकास के फेर में लोगों ने धरती का पर्यावरण बिगाड़ दिया है। शुरुआत विकसित देशों ने की, परंतु विनाश की कीमत सभी को अदा करनी पड़ रही है। प्रकृति की रक्षा भारतीय संस्कृति से ही संभव है।

वायु एवं जल प्रदूषण, भूमि-क्षरण एवं उत्पादकता में कमी, मरुस्थलीकरण, निर्वनीकरण, जैविक विविधता का क्षरण एवं पारिस्थितिकी ह्रास से पर्यावरण को भारी नुकसान हुआ है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक पर्यावरण नुकसान के चलते हर साल भारतीय अर्थव्यवस्था को ८० अरब डॉलर की चपत लगती है। टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए देश को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन पर ध्यान देना होगा तथा तकनीकी ज्ञान, नीतिगत दखल तथा ग्रीन जी.डी.पी. इंडेक्स विकसित करना होगा।

सुखद बात यह है कि विश्व स्तर पर राष्ट्रों ने सतत विकास का २०३० एजेंडा अपनाया है तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने हेतु पेरिस समझौता २०१५ के अंतर्गत विश्व के तापमान को २ सेंटीग्रेड से कम रखने का निश्चय किया है।

शुद्ध प्राणवायु जीवन के लिए अनिवार्य है, परंतु वायु प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष लगभग ७० लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण मरते हैं तथा करोड़ों बीमार पड़ते हैं। बच्चों पर इसका सबसे अधिक कुप्रभाव पड़ता है। वायु प्रदूषण में कमी लाने हेतु निम्न प्रयास आवश्यक हैं—

१. सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, न्यूक्लीयर ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाना तथा २०२२ तक १७५ गेगाबाट उत्पादन की क्षमता विकसित करना।

२. बायो-इथानाल, बायोडीजल के उत्पादन एवं उपभोग में वृद्धि। हाईब्रिड वाहनों के प्रचलन को बढ़ावा देना।

३. ईको फ्रेंडली या ग्रीन वाहनों का प्रचार-प्रसार, ताकि सल्फर, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम हो सके।

जाने-माने वानिकी विकास के पुरोधा, पर्यावरणविद् एवं वनवासियों के सहायक। अब तक वनों, वनवासियों, पर्यावरण एवं पर्यटन स्थलों आदि पर १०४ पुस्तकें प्रकाशित। इनकी पुस्तकें 'वनों का मनमोहक संसार' 'संस्टेनबिलिटी,' 'जट्रोफा एवं बायोडीजल' तथा 'मेडिसिनल प्लांट्स' का अनुवाद कई विदेशी तथा देसी भाषाओं में भी उपलब्ध। विभिन्न देशों, संस्थाओं, एकेडमियों द्वारा प्रदत्त ३० पुरस्कार, जिसमें 'अल्कन पुरस्कार' १० लाख डॉलर का कनाडा द्वारा शामिल है। गरीबी, भुखमरी, बीमारी, बेकारी, अशिक्षा तथा शोषण समाप्त करने हेतु पिछड़े क्षेत्रों में कार्यरत।

४. देश में दो लाख इलेक्ट्रिक बसें चलाने की तैयारी।

५. घर में होनेवाले प्रदूषण में कमी लाने हेतु गैस चूल्हों, सौर चूल्हे तथा जट्रोफा के तेल से खाना बनाने एवं पानी गरम करने की व्यवस्था।

स्वच्छता अपनाकर हम प्रदूषण दूर कर सकते हैं। कहा भी गया है—

कि स्वच्छता विश्व को दिया
प्रकृति से मिला वरदान है,
कि मनुष्य को मिले दो हाथ
जानवरों को पूँछ, पक्षियों को चोंच
स्वच्छता के लिए

निर्मल, अविरल जल जीवन का प्रतीक है। धरती में जीवन की उत्पत्ति से लेकर सभ्यताओं के विस्तार तक हर संरचना की नींव में जल है। प्रकृति ने पृथ्वी पर जीवों के अनुपात में जल संसाधन सौंपे हैं। इनके कुशल प्रबंधन से ही इन्हें आनेवाली पीढ़ियों के लिए सहेजा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय संस्था वाटरएड की रिपोर्ट के अनुसार भारतवर्ष में ६.३ करोड़ लोगों को स्वच्छ पानी नहीं मिल रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण देश को बेहद खराब मौसम (बाढ़, सूखा, प्रदूषण आदि) का सामना करना पड़ेगा। जल संरक्षण एवं सदुपयोग हेतु निम्न प्रयास

आवश्यक हैं—

१. जल संसाधन का समन्वित विकास हो।

२. देश की प्रमुख नदियों, जैसे गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी आदि को स्वच्छ, निर्मल एवं अविरल बनाना।

३. नदियों को जोड़ना, ताकि अधिक पानी को सूखेवाले क्षेत्र में पहुँचाया जा सके।

४. सीवेज एवं औद्योगिक इकाइयों से निकलनेवाले दूषित जल का शोधन एवं दोबारा उपयोग।

५. बाढ़ के जल को रोककर जमीन में डालना।

६. अत्याधुनिक तकनीकी के जरिए सिंचाई करके पानी की बरबादी को रोकना।

७. समुद्रीय द्वीपों में खारे जल का शोधन करके उपयोग में लाना।

जल का संरक्षण एवं सदुपयोग आवश्यक है, तभी कहा गया है—

बिन पानी सूनी सब दुनिया,
इस धरती का जीवन पानी।
बूँद-बूँद हर वक्त बचाओ,
है अनमोल बूँद भर पानी।

वनों में २९६ गेगाटन कार्बन इकट्ठा है तथा वे अधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड शोषित करने की क्षमता रखते हैं। विश्व की ७५ प्रतिशत से अधिक जैविक विविधता वनों में पाई जाती है। विश्व का ७५ प्रतिशत शुद्ध जल फॉरेस्टेड वाटरशेड एवं वेटलैंड से प्राप्त होता है। ये भूमि एवं जल का संरक्षण करते हैं तथा पर्यावरण के संरक्षण में अत्यंत सहायक हैं।

वन विश्व के लिए वातानुकूलन तथा पृथ्वी के लिए आवरण का काम करते हैं। ये जल को संचय करते हैं, भूमिक्षरण को रोकते हैं, सूखा, अकाल तथा बाढ़ की विभीषिका से मुक्ति दिलाते हैं एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करके सतत विकास को बढ़ावा देते हैं।

विश्वभर में वनक्षेत्र में कमी से वर्षा का पैटर्न बदला है। निर्वनीकरण से आर्द्रता, प्रभाव तथा जलधारण क्षमता में कमी आई है। निर्वनीकरण से नदियों में अधिक बाढ़ आने लगी है। इससे अपरदन बढ़ा है और नदियाँ गाद से भर गई हैं। जल-ग्रहण क्षेत्र में वनस्पतियों की क्षति से नदियों की जलमात्रा तथा गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हुई है। पर्वतों पर अधिक वृक्ष कटाई से भूस्खलन में वृद्धि होती है। जैविक विविधिता के ह्रास से आपदाओं के प्रति पर्यावरण की सुभेदता बढ़ती है।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए वन-वृद्धि हेतु निम्न प्रयास आवश्यक हैं—

• राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार देश के एक तिहाई क्षेत्र को वनों/वृक्षों से आच्छादित करना।

• कृषि-वानिकी को बढ़ावा देना, ताकि खेती को जलवायु स्मार्ट बनाया जा सके।

• वनवासियों को वन प्रबंधन में भागीदार बनाना, ताकि अवैध वन कटाई पर रोक लग सके तथा गरीबी, भुखमरी एवं शोषण का अंत हो सके।

• वन-उद्योगों में रोजगार सृजन की अपार क्षमता है। सही नीति अपनाकर तथा समुचित व्यवस्था द्वारा प्रतिवर्ष वन-कार्यों में लगभग ५० लाख लोगों को अतिरिक्त रोजगार देना संभव है।

• इको-टूरिज्म की माँग लगातार बढ़ रही है। इसकी समुचित व्यवस्था द्वारा २०२२ तक हम अंतराल के क्षेत्रों को भी विकसित कर सकते हैं।

वन विनाश को रोककर ही पर्यावरण संरक्षण संभव है—

कटी सघन वृक्षावली, मिटी चैन की ठाँव।
पंथी-पंछी खोजते, व्याकुल ठंडी छाँव॥
प्रबल ग्रीष्म के दाह को द्रुमदल देते रोक।
वन-उपवन शीतल रहें, वनचर रहें अशोक॥

कचरा प्रबंधन पर्यावरण संरक्षण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि यह काम सही तरह किया जा सके तो शहरों को साफ-सुथरा रखने के साथ पर्यावरण की रक्षा का लक्ष्य भी हासिल किया जा सकता है और रोजगार के अवसर भी पैदा किए जा सकते हैं। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि मौजूदा जीवनशैली ऐसी हो गई है कि अब कहीं अधिक कचरा पैदा हो रहा है। कचरा निस्तारण को हमें अभियान के रूप में अपनाना होगा। भारत सरकार ने 'पर्यावरण दिवस' अर्थात् पाँच जून २०१७ से चार हजार शहरों में ठोस एवं तरल कचरे को अलग-अलग एकत्र करने और निष्पादित करने का अभियान शुरू करने का निर्णय लिया है। इसे सफल बनाने की जिम्मेदारी सबकी है—

प्रकृति का 'चर्चा' तत्त्व का
कि कूड़े-कचरे गंदगी, कबाड़ का
मिट्टी हो धरती बनाना, और
कार्बन डाइऑक्साइड का
पेड़ों के पत्तों से प्राणवायु बनना।

पर्यावरण संरक्षण हेतु स्वच्छ भारत अभियान, स्मार्ट शहर योजना एवं मच्छरों के खिलाफ हाई-टेक जंग शुरू की गई है। अभी ९५ प्रतिशत मलेरिया प्रभावित इलाकों में देश की आबादी रहती है। चिकनगुनिया एवं डेंगू के मामले भी बढ़ रहे हैं। स्मार्ट मास्किटो डेसिर्टा सिस्टम का प्रयोग आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, विशाखापटनम और तिरुपति में किया गया। मच्छरों एवं मलेरिया से छुटकारा दिलाकर ही हम भारत को एक विकसित एवं सुरक्षित देश की श्रेणी में लाने में सफल होंगे।

उत्थान सेंटर फॉर सस्टेनबल डेवलपमेंट एंड पॉवर्टी एलिवेशन
१८-ए, ऑक्लैंड रोड
इलाहाबाद (उ.प्र.)
दूरभाष : ०७२७५६६६६६६

कहानी

अपना ईश्वर

• पूरन सरमा

जाड़े की ठंडी रात। पूरा गाँव अँधेरे में डूब चुका था। बीच-बीच में दूर से कुत्तों के भौंकने का स्वर सुनाई दे जाता था। मुकुंद खाना खाने के बाद चारपाई पर पड़ा लगातार सोच रहा था।

उसके बूढ़े माता-पिता बगल के कमरे में मुकुंद के कारसेवा में जाने को लेकर चिंतित बैठे थे। मैंने जाकर मकान की कुंडी बजाई तो दरवाजा मुकुंद ने खोला।

मोहक मुसकान के साथ मुझसे बोला, ''आओ दद्दा, मैं तो आपको ही याद कर रहा था।''

मैं बोला, ''क्यों क्या बात है?''

तब तक मुकुंद दरवाजा बंद कर मुझे अंदर तिबारे में अपनी चारपाई के पास ले आया। मैं भी चारपाई पर टिक गया। मुकुंद भी चारपाई के दूसरे सिरे पर बैठ गया। दीपक के हलके प्रकाश में मुकुंद के चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक मुझे स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

मुकुंद बीस वर्ष का डील-डौल में मजबूत साहसी युवक है। अभी उसने इसी वर्ष बी.ए. उत्तीर्ण किया है तथा माता-पिता को आस बँधी है कि जल्दी ही कोई नौकरी ढूँढ़कर वह उनकी आशाओं को साकार कर पाएगा।

मैंने कहा, ''सुना है मुकुंद, तुम कारसेवा में जाओगे?''

''हाँ, जाऊँगा दद्दा, प्रभुभक्ति के लिए मैं यह अवसर नहीं छोड़ूँगा।''

''मुझे तुम्हारी भक्ति पर आपत्ति नहीं है, मुकुंद। मैं तो तुम्हारे ईश्वर-प्रेम की प्रशंसा करता हूँ। वही तो सबकी पार लगाता है। लेकिन भीड़ इतनी होगी, पता नहीं कब, क्या भगदड़ मच जाए और मामला बिगड़ जाए।'' मैंने कहा।

वह उठा, पानी का गिलास भरकर लाया और मुझे थमाकर बोला, ''भगदड़ मच जाए तो क्या हो जाएगा, दद्दा। लाखों लोग जा रहे हैं। मैंने बचपन से ही प्रभुभक्ति का पाठ सीखा है। यह प्रभु ही तो हैं, जो सबकी नैया पार लगाते हैं।''

''मानता हूँ मुकुंद, मैं भी आस्तिक हूँ। लेकिन भैया, तुम्हारे मन में जो दया, धर्म और प्रेम की लौ जल रही है, वह भक्ति का मूल है। बाकी तो व्यर्थ का भटकाव है। कारसेवा की बजाय तुम फिर कभी चले आना मंदिर निर्माण का काम देखने। तुम्हारे माता-पिता वृद्ध हैं, उनकी देखभाल करना तुम्हारा दायित्व भी है। यदि उन्हें कुछ हो गया तो क्या होगा?''

''अभी तुम्हारे पिता की पेंशन ही तुम्हारा सहारा है। तुम्हारी नौकरी का कोई ठिकाना नहीं है।'' मैंने समझाया।

मुकुंद ने मेरे हाथ से पानी का खाली गिलास लेकर चारपाई के नीचे सरका दिया तथा मुझे आश्वस्त करता हुआ बोला, ''दद्दा, आप भी क्या सोच रहे हैं। मुझे प्रभुभक्ति पर विश्वास है, कुछ भी नहीं होगा। यदि यह मौका मैं चूका तो ठीक नहीं होगा।''

सुपरिचित व्यंग्यकार। अब तक चौदह व्यंग्य-संग्रह, एक उपन्यास 'समय का सच' एवं बाल साहित्य की करीब बीस पुस्तकों का प्रकाशन; 'कन्हैयालाल सहल पुरस्कार' के साथ-साथ अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।

''लेकिन तुम बहुत भोले हो, समझते नहीं। यह सब राजनीति है। तुम्हें असलियत को समझना चाहिए। कल भगवान् न करे, तुम्हें कुछ हो जाए तो तुम्हारे माता-पिता का तो बुढ़ापा बिगड़ जाएगा।'' मैं बोला।

मुकुंद ने हँसने को हलका सा मुँह खोला और बोला, ''आप चिंता मत करिए। हो सके तो अम्माँ-बापू को समझाइए। वे खामख्वाह चिंता में डूबे हुए हैं।''

''उन्हीं की चिंता का खयाल दिला रहा हूँ मुकुंद तुम्हें। जिस जत्थे के साथ तुम जा रहे हो, वे सब राजनीति से प्रेरित हैं। तुम ठहरे निरे भावुक और भोले, धार्मिक भावनाओं से भरे जोशीले युवक। हालात को समझने में भूल कर रहे हो। मान लिया, कारसेवा प्रभु की है, लेकिन इस भीड़-भाड़ में कुछ हो जाए तो अनर्थ हो जाएगा।'' मैंने समझाया।

तभी उसके अम्माँ-बापू भी वहीं आ गए। उसके बापू का खाँसी-दमा से दम घुटा जा रहा था। वे मुझे संबोधित करके बोले, ''निरंजन, इसे समझाओ। ईश्वर तो सब जगह है। यदि ये चला जाएगा तो हमारा क्या होगा?''

''लेकिन बापू, मैं दस दिन बाद तो लौट आऊँगा। जा तो देश में ही रहा हूँ, कोई विदेश तो जा नहीं रहा।'' उसने सहजता से हँसते हुए कहा।

उसकी अम्माँ ने रुआँसा होकर कहा, ''मुकुंद, मेरे बच्चे! तुम नासमझ और नादान हो। जमाने की नब्ज को नहीं पहचानते। हमारा कहा मानो और जाने का कार्यक्रम मत बनाओ।''

मुकुंद ने फिर बहुत ही सहजता से कहा, ''अम्माँ, इतनी डर क्यों रही हो, तुम्हीं ने तो मुझे प्रभुभक्ति का पाठ पढ़ाया है तथा इसी भक्ति के सहारे जीवन यात्रा पूरी करने का हौसला दिया है और आज तुम ही मुझे विचलित कर देना चाहती हो।''

मुकुंद कारसेवक बनकर प्रभु के लिए कुछ श्रमदान करने का मानस

बहुत ही दृढता से बना चुका था, इसलिए उसने फिर कहा, ''बापू, क्या भूल गए आप ?''

''बिना पूजा-पाठ के भोजन नहीं करने का मार्ग भी आप ही ने बताया। जिस प्रभु ने हमें यह सब दिया है, यदि उसे ही भूल जाएँगे तो फिर यह कैसी भक्ति हुई ? मैं वहाँ जाकर प्रभु के दर्शन करके धन्य हो जाऊँगा।''

''लेकिन वहाँ कारसेवा का मतलब दूसरे संप्रदाय के पूजा-स्थल को गिराने के लिए कारसेवा का प्रयोजन निश्चित किया गया है।''

''दूसरे के पूजा स्थलों को तोड़ने का तो प्रश्न ही नहीं। वे भी ईश्वर ही हैं। ईश्वर-अल्लाह एक समान। फिर झगड़ा कैसा ?'' मुकुंद ने कहा।

''लेकिन झगड़ा यही तो है। राजनेता तथा धर्मगुरु कारसेवा के नाम पर राजनीति कर रहे हैं। वहाँ गए और कोई दंगा-फसाद हो गया तो आना मुश्किल हो जाएगा।'' मैंने उसे फिर समझाना चाहा।

तभी बाहर से सरपंच साहब ने आवाज लगाई, ''मुकुंद, क्या सो गए ?''

वह प्रसन्नता से दरवाजा खोलने को भागा तथा दरवाजा खोलकर सरपंच साहब को भी भीतर ले आया। सरपंच साहब मुझे देखकर बोले, ''अरे निरंजनजी, आप कैसे ? मुकुंद को समझाने आए होंगे। अरे भाई, गाँव से तीन बसें जानी हैं। वे नहीं गईं तो सारा मामला चौपट हो जाएगा।मैंने तो अपनी पार्टीवालों को तीन गाड़ियाँ भरकर कारसेवक लाने की 'हाँ' भरी है। फिर भगवान् का काम है। धर्म के लिए भी जीवन में कुछ करना चाहिए। मुकुंद की भावनाएँ तो शुरू से वैसे भी धार्मिक रही हैं।''

''लेकिन सरपंच साहब, यह धर्म है या राजनीति ?''

''राजनीति और धर्म को अलग नहीं किया जा सकता। फिर मंदिर के लिए कार सेवा करना राजनीति नहीं हो सकता।'' वे बोले।

मैंने कहा, ''यह चालाकी और धूर्तता है। इसकी आड़ में राजनेता अपनी रोटी सेंक रहे हैं। सीधे-सादे उत्साही युवकों को बहकाकर उनकी युवा चेतना को काठ मार रहे हैं। नई पीढ़ी की इसी ऊर्जा को यदि सही दिशा दी जाए तो पूरे देश के दिन फिर जाएँ। लेकिन लोकतंत्र में वोट की राजनीति ने बेचारी जनता को सदैव आगे कर अपना उल्लू सीधा किया है।''

''आप प्रगतिवादी लगते हैं, जो सिवाय पारंपरिक सोच के आगे की नहीं सोचते। आपको पता है, अपने धर्म के लिए हर वर्ग व संप्रदाय एक हो रहा है और एक हम हैं, जो पीछे हट जाते हैं। लेकिन आप तो विरोधी दल के होने से हमारी नीतियों के पक्ष में कैसे बोलेंगे ?'' सरपंच साहब तैश में आ चुके थे।

मुकुंद के बापू ने खाँसते हुए कहा, ''सरपंचजी, नाराज मत होइए। हो सके तो निरंजन की बात को समझ लें। निरंजन ठीक ही तो कहता है कि धर्म व राजनीति दोनों अलग हैं। जबकि राजनेता वोट बैंक तैयार करने की राजनीति कर रहे हैं।''

''राजनीति···राजनीति···आप लोग जानते भी हैं, राजनीति होती क्या है ?'' सरपंच फिर थोड़ा ऊँची आवाज में बोले।

मैंने कहा, ''मैं जानता हूँ सरपंच साहब। राजनीति बहुत ही घटिया चीज है। थूककर चाटने तथा कथनी-करनी में फर्क करने का फलसफा है, जिसे कुछ व्यवसायियों ने धंधे का रूप दे दिया है।'''

सरपंच साहब ने मेरी ओर से मुँह फेर लिया तथा मुकुंद से मुखातिब होकर बोले, ''मुकुंद, सुबह तैयार रहना। आठ बजे चल देंगी बसें। वही मैदानवाले हनुमानजी के मंदिर पर आ जाना। मैं अभी चलूँ। हमारे यहाँ तो निरंजनजी जैसे लोग भी तो हैं, जो भगवान् के पुण्य कार्य में भी आड़े आते हैं। चंदे के नाम पर भी फूटी कौड़ी नहीं दी, उल्टे जनता को बहकाते फिरते हैं।'' यह कहकर वे चले गए।

मैंने मुकुंद को देखा और कहा, ''मैं भी चलता हूँ। मुकुंद हो सके तो तुम अपना यह छप्परवाला गरीबखाना मत छोड़ना। हमारा तो यह दौलतखाना है। माता-पिता की सेवा से बढ़कर नहीं है कारसेवा।''

मुकुंद बोला कुछ नहीं। मेरे पीछे-पीछे आया। मेरे बाहर आ जाने के बाद चुपचाप दरवाजा बंद करके चला गया। मैं भी अपने घर लौट आया। लेकिन मन मुकुंद के भोलेपन को लेकर उद्विग्न था।

दूसरे दिन मुकुंद कारसेवा के लिए चला गया। उसके मन में भक्ति का उत्साह था तथा प्रभु के दर्शनों की अभिलाषा भी। उसने जब वहाँ का नजारा देखा तो उसकी आँख प्रसन्नता से भर उठी। उसे लगा कि कितने लाख लोग हैं, जो अपनी ईश्वर-भक्ति के लिए दूर-दराज से यहाँ चले आए थे। लेकिन उसे हैरानी इस बात की थी कि वहाँ पुलिस के प्रतिबंध क्यों लगाए हुए थे। उसने सरपंच साहब से पूछा भी, ''लेकिन सरपंच साहब, मंदिर-निर्माण के कार्य में यह पुलिस क्यों आई है ?''

''अभी ये बातें तुम नहीं जानोगे, मुकुंद। समय आने पर सब समझ जाओगे। हम भगवान् की पूजा-अर्चना करेंगे तथा कारसेवा के लिए निर्माण-स्थल की ओर भी जाएगे।'' सरपंच ने उसे दिलासा दिया।

दो दिन यों ही बीत गए। लेकिन उसकी परेशानियाँ इस मध्य बढ़ती रहीं। वहाँ लगाए प्रतिबंधों से उसका माथा ठनक रहा था। फिर चुपचाप लोग जो बातें करते, वह सुनकर उसकी समझ में मामला आने लगा था कि लोग अपने मंदिर-निर्माण के लिए दूसरों के पूजा-स्थल हटा देना चाहते हैं।

यह उसकी समझ से परे था। जब ईश्वर समान है तो यह खाई कैसी ? दूसरे के पूजा-स्थलों को तोड़ने की इजाजत इनसानी धर्म भी नहीं देता, फिर यह साजिश और समाज में यह बाँट क्यों की जा रही है ?

कारसेवा के दिन तक तो उसकी समझ में सारा माजरा आ गया था। लोगों ने सारे प्रतिबंध तोड़कर उस दिशा में जाना प्रारंभ कर दिया था, जहाँ जाना वर्जित था। वह घबराया, हाँफता सा लोगों को रोकने को दौड़ पड़ा और चीखा, ''नहीं···इधर कोई नहीं जाएगा। मंदिर उधर बन रहा है।''

दौड़कर सरपंच उसके पास पहुँचे और बोले, ''पागल हो गए, मुकुंद।

चलो यहाँ से। कारसेवा करने आए हो या भगवान् के काम में बाधा डालने?''

''लेकिन यह गलत है।''

''यह गलत नहीं है। यह मंदिर की भूमि है। इस पर मंदिर ही बनना चाहिए। सारे पुराने निर्माण गिराकर नया निर्माण किया जाना है।''

''नहीं सरपंच साहब, सारे पूजा-स्थल इनसान के हैं। उन्हें तोड़ना इनसानियत को तोड़ना है।'' मुकुंद बोला।

तभी गोली चलने की आवाज आई। सरपंच साहब ने कहा, ''चलो हट जाओ यहाँ से। पुलिस ने फायरिंग शुरू कर दी है।''

''नहीं, मैं नहीं हटूँगा। जब तक सारे लोग यहाँ से नहीं हट जाएँगे, मैं भी नहीं हटूँगा।''

तभी एक गोली आई और उसके दाईं टाँग को चीरकर निकल गई। मुकुंद धड़ाम से वहीं गिर गया। सरपंच उसे उठाकर दौड़े। उधर सैकड़ों लोग पुलिस की गोली के शिकार होकर घायलावस्था में चीत्कार कर रहे थे।

एंबुलेंस घायलों को लेकर अस्पताल की तरफ दौड़ पड़ीं। मुकुंद के पाँव से काफी खून निकल जाने से वह अचेतावस्था में था। प्राथमिक उपचार करके उसे पलंग पर लिटा दिया गया था। सरपंच चिंतामग्न पास ही खड़े थे। वे परेशान हो रहे थे कि वह उसके माता-पिता के पास जाकर क्या जवाब देंगे?

कारसेवा में पुलिस फायरिंग के परिणामस्वरूप तथा कारसेवा को रोक देने के कारण उधर देरभर में दंगे भड़क उठे। दंगे की यह आग मुकुंद के गाँव को भी नहीं छोड़ पाई तथा उसके कच्चे फूसवाले घर में लगी आग में झुलसकर उसके माता-पिता ने दम तोड़ दिया। सारा गाँव उजाड़ बस्ती में बदल गया। इनसान इनसान के खून का प्यासा हो गया था। बर्बरता और हिंसा के नंगे नाच ने समूचे गाँव की सभ्यता को निगल लिया था।

पंद्रह दिन बाद जब लौटकर वह गाँव आया तो मुकुंद का दिल धड़क उठा। उसका घर जलकर राख हो गया था। गाँव उजड़कर श्मशान बन गया था। एक पड़ोसी ने बताया कि दंगे में लगी आग में उसके माता-पिता इस कदर झुलस गए थे कि उन्हें बचाया नहीं जा सका। वे ही नहीं, गाँव में दोनों ही वर्गों के आठ दूसरे लोग भी जान से हाथ धो बैठे थे। मुकुंद की आँखों के आगे अँधेरा छा गया और वह धम्म से वहीं गिर पड़ा।

मुझे मालूम चला कि मुकुंद आ गया है तो मैं दौड़कर उसके पास पहुँचा, वैद्यजी उसकी नब्ज देख रहे थे। मैं उसे अपने घर ले आया। धीरे-धीरे वह ठीक होने लगा।

एक दिन वह मेरे पास आकर बोला, ''दद्दा, अब मुझे अपने घर जाने दो। मैं कब तक बोझ बना रहूँगा?''

''बोझ कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ, पड़ोसी हूँ, तुम्हारे साथ जो बीती है, वह तो तुम ही जानते हो, मुकुंद। हम लोग तुम्हें सहानुभूति तो दे ही सकते हैं।''

''सही कह रहे हैं दद्दा आप। अब मुझे घर जाने दीजिए।''

''लेकिन घर पर तो छप्पर भी नहीं है, रहोगे कैसे?''

''सब धीरे-धीरे करूँगा दद्दा, खुद ही।''

बहुत समझाया उसे, नहीं माना। वह अपने घर चला गया। माता-पिता की स्मृतियाँ वहाँ फिर जीवंत हो गईं। उसे बहुत पछतावा था कि उसने उनका कहा नहीं माना, उसी का परिणाम था यह सब।

वह चुपचाप चबूतरे पर बैठ गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। रह-रहकर मेरी बातें उसे याद आ रही थीं। तभी सरपंच साहब उधर से निकले और मुकुंद को देखकर बोले, ''मुकुंद ठीक तो हो?''

''ठीक, देख नहीं रहे। बिना छप्पर के मकान में बैठा हूँ, कुछ करिए।''

''क्या करूँ, पंचायत के पास तो कोई बजट है नहीं, वरना मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करता।''

''लेकिन मुझे काम दिलवा दीजिए, मैं मेहनत करके घर बना लूँगा।''

''काम मिलता कहाँ है, मुकुंद। फिर तुम तो बी.ए. पास हो। मेहनत-मजदूरी कर नहीं पाओगे।''

मुकुंद बोला, ''आप उसकी चिंता न करिए। मैं सब कर लूँगा, मैं तो लुट गया, सरपंच साहब।'' यह कहकर वह रो पड़ा।

सरपंच बोले, ''रोओ मत मुकुंद, सब ठीक हो जाएगा। होनी को कौन टाले। तुम कोई बुरे काम में तो गए नहीं थे। अब तुम्हारा पैर गोली से अलग खराब हो गया, कैसे क्या कर पाओगे? यह चिंता की बात तो है, लेकिन प्रभु सब ठीक करेंगे।''

वह रोता हुआ बोला, ''प्रभु तो सब ठीक करेंगे ही, लेकिन आप भी तो मुझे सँभालिए अभी। आपके कहने से ही तो गया था मैं कारसेवा में।''

''लेकिन मैं तुम्हें कोई गलत जगह थोड़े ही ले गया था। प्रभुभक्ति में जाना तुम्हारी अपनी रुचि भी थी। माना तुमने बहुत खोया है, पार्टी तुम्हारे लिए कुछ करेगी।'' सरपंच साहब ने कहा।

वह बोला, ''लेकिन कब?''

''थोड़ा समय लगेगा, मुकुंद। सब ठीक हो जाएगा।'' यह कहकर वे खिसक लिये।

वह फिर घुटनों में मुँह देकर फफक-फफककर रो पड़ा। तभी गाँव का रमजान उसके पास आया और बोला, ''उठो मुकुंद!'' मेरे साथ घर चलो। मैं तुम्हें काम दूँगा। मेरे धंधे में लिखने-पढ़नेवाले की जरूरत है।''

मुकुंद ने सिर उठाकर देखा तो बोला, ''रमजान भाई आप?''

''हाँ मैं! चलो देर मत करो। हमें लोग बाँटने में लगे हैं। तुमने असलियत को समझ लिया। तुम्हारा प्रभु तो तुम्हारे मन के भीतर है तथा मंदिर तुम्हारे घर में, फिर यह भटकाव कैसा? मेरा अल्लाह मेरे पास है, हम दीवारों के लिए कब तक लड़ेंगे। जो तुमने खोया है, वह कोई नहीं देगा। सारी विपदाएँ अकेले ही झेलनी होती हैं, फिर क्यों फरेबों के चक्कर में आएँ?''

मुकुंद उठा और रमजान के साथ चल दिया। उसे पछतावा था तो इसी बात का कि उसे ये बातें पहले क्यों नहीं समझ में आ पाईं। सच्ची कारसेवा तो यह है कि हम अपने ईश्वर को अपने में पा लें।

१२४/६१-६२, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राजस्थान)
दूरभाष : ०९८२८०२४५००

रूप-रचना पर आधारित हिंदी क्रियाओं का सम्यक् विधान

• बदरीनाथ कपूर

आज से कोई सौ वर्ष पहले वैयाकरण पं. कामता प्रसाद गुरु ने अपने हिंदी व्याकरण में हिंदी क्रियाओं के शिष्ट रूपों और प्रयोगों का विवेचन-विश्लेषण करने के लिए अंग्रेजी व्याकरण की काल-पद्धति अपनाई थी। जो या जैसा विवेचन-विश्लेषण हुआ, उससे वे स्वयं भी संतुष्ट न थे। अंग्रेजी व्याकरण में वर्तमान तथा भविष्यत् कालों के भेद-प्रभेदों में जैसी समानता या समरूपता थी, वैसी हिंदी क्रियाओं के कालों के भेद-प्रभेदों में न दिखी। परिणामत: गुरु ने 'हिंदी व्याकरण' की भूमिका में लिखा कि 'वह दिन हिंदी के लिए बड़े गौरव का होगा, जब संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् हिंदी को एक स्वतंत्र भाषा समझकर अष्टाध्यायी और महाभाष्य के मिश्रित रूप में उसका व्याकरण लिखेंगे।' 'हिंदी व्याकरण' की भूमिका में गुरु ने यह रहस्य भी प्रकट किया कि वे स्वयं हिंदी क्रियाओं का विवेचन संस्कृत की लकार-पद्धति के आधार पर करना चाहते थे; परंतु ऐसा न कर सकने के कई कारण भी उन्होंने गिनाए।

गुरुजी के बाद हिंदी व्याकरण की कमान आचार्य पं. किशोरी दास वाजपेयी ने सँभाली। वाजपेयीजी संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् भी थे और उन्होंने हिंदी को एक स्वतंत्र भाषा भी माना था। उनके अनेक निर्णायक अभिमत स्वागत योग्य हैं, कुछ निष्कर्ष चमत्कृत करनेवाले भी हैं और कुछ हवाई ऊहाएँ भी। परंतु लकार-पद्धति के अनुरूप हिंदी क्रियाओं के वर्णन-विवेचन की ओर वे प्रवृत्त नहीं दिखे।

भाषा का सम्यक् ज्ञान, शिक्षण-प्रशिक्षण तथा प्रसार-प्रचार सरलता और त्वरित गति से हो, इसके लिए क्रियाओं का विवेचन किसी स्पष्ट और बोधगम्य पद्धति पर होना आवश्यक है। भाषा की गतिशीलता और निर्वहण-क्षमता में क्रियाएँ ही अग्रसर तथा मुखर होती हैं।

हिंदी क्रियाओं के संबंध में चिंतन-मनन करने का मेरा स्वभाव सा पिछले कुछ वर्षों से बन गया था। किसी क्रिया-पद्धति की सर्जना की कोई बात तो मेरे मन में नहीं थी, परंतु विभिन्न आधारों पर क्रिया रूपों के भेद-प्रभेद अवश्य करता रहता था। एक दिन मन में आया कि वाक्यों में प्रयुक्त किसी विशिष्ट क्रिया के विभिन्न, विशेषत: प्राथमिक या मूल रूपों की सूची बनाई जाए। 'आना' क्रिया सामने थी, उसके निम्न आठ रूप सामने आए—आ, आता, आया, आना, आए, आएगा, आइए और आइएगा। पहला रूप धातु है और शेष रूप उस धातु में प्रत्ययों के योग से बने कृदंत रूप हैं। इन सभी रूपों की सही पहचान के लिए व्याकरणिक नामों की आवश्यकता अनुभूत हुई। पहले एक-दो नाम वर्तमानकालिक कृदंत (आता के लिए) या भूतकालिक कृदंत (आया के लिए) अवश्य थे, परंतु ये भ्रामक थे। इसलिए नए सिरे से सभी के नाम इस प्रकार रखे—क्रियामूल या धातु (आ के लिए), ताकृदंत (आता के लिए), आकृदंत (आया के लिए), नाकृदंत (आना के लिए), एकृदंत (आए के लिए), एगाकृदंत (आएगा के लिए), इएकृदंत (आइए के लिए) और इएगाकृदंत (आइएगा के लिए)। सुविधा के लिए कृदंतों के नाम उनमें लगनेवाले प्रत्ययों से जोड़े गए हैं। ये सभी रूप क्रियापद के रूप में स्वतंत्र रूप से अर्थात् वाक्य के एकल या एकपदीय इकाई के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इनके अतिरिक्त चार ऐसी क्रियाएँ हैं, जिन्हें मूल क्रिया (अथवा कुछ अवसरों पर सहायक क्रिया) कहते हैं, जो स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं तथा चार कृदंत क्रियारूपों के साथ भी प्रयुक्त होती हैं। ये चार कृदंत क्रियारूप हैं—ताकृदंत, आकृदंत, नाकृदंत और इएकृदंत। मात्र 'चाह' एक क्रियामूल (धातु) से बना इएकृदंत 'चाहिए' इस वर्ग में आता है। 'चाहिए' के अतिरिक्त अन्य इएकृदंतों के साथ सहायक क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता। आना, पढ़ना, और चाहना क्रियाओं के क्रियारूपों तथा मूल क्रियाओं के रूप में एकपदीय और द्विपदीय क्रियापदों का विवरण दिया जा रहा है। इन्हें आधारभूत क्रियापदों की संज्ञा दी गई है।

क्रियामूल (धातु)	आ	पढ़	चाह	एकपदीय क्रियापद
ताकृदंत	आता	पढ़ता	चाहता	
आकृदंत	आया	पढ़ा	चाहा	
नाकृदंत	आना	पढ़ना	चाहना	
एकृदंत	आए	पढ़े	चाहे	
एगाकृदंत	आएगा	पढ़ेगा	चाहेगा	
इएकृदंत	आइए	पढ़िए	चाहिए	
इएगाकृदंत	आइएगा	पढ़िएगा	चाहिएगा	

सुपरिचित कोशकार एवं लेखक वैज्ञानिक परिभाषा कोश, अंग्रेज़ी-हिंदी पर्यायवाची कोश, शब्द-परिवार कोश, हिंदी अक्षरी, लोकभारती मुहावरा कोश, परिष्कृत हिंदी व्याकरण, सहज हिंदी व्याकरण, मीनाक्षी हिंदी-अंग्रेज़ी कोश, मीनाक्षी अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, नूतन पर्यायवाची कोश, लिपि वर्तनी और भाषा, हिंदी व्याकरण की सरल पद्धति, आधुनिक हिंदी प्रयोग कोश, बृहत् अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, व्यावहारिक अंग्रेज़ी-हिंदी कोश, मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश, व्याकरण-मंजूषा, हिंदी प्रयोग कोश आदि। कई सम्मान तथा अनेक पुस्तकें उ.प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत हैं।

मूलक्रिया—है
मूलक्रिया—था
मूलक्रिया—हो
मूलक्रिया—होगा

ताकृदंत + है	आता है	पढ़ता है	चाहता है
ताकृदंत + था	आता था	पढ़ता था	चाहता था
ताकृदंत + हो	आता हो	पढ़ता हो	चाहता हो
ताकृदंत + होगा	आता होगा	पढ़ता होगा	चाहता होगा
आकृदंत + है	आया है	पढ़ा है	चाहा है
आकृदंत + था	आया था	पढ़ा था	चाहा था
आकृदंत + हो	आया हो	पढ़ा हो	चाहा हो
आकृदंत + होगा	आया होगा	पढ़ा होगा	चाहा होगा
नाकृदंत + है	आना है	पढ़ना है	चाहना है
नाकृदंत + था	आना था	पढ़ना था	चाहना था
नाकृदंत + हो	आना हो	पढ़ना हो	चाहना हो
नाकृदंत + होगा	आना होगा	पढ़ना होगा	चाहना होगा
इएकृदंत + है			चाहिए है
इएकृदंत + था			चाहिए था
इएकृदंत + हो			चाहिए हो
इएकृदंत + होगा			चाहिए होगा

द्विपदीय क्रियापद

'हिंदी क्रियाओं की रूप-रचना' के प्रथम प्रकरण में उक्त आधारभूत क्रियापदों का रचना-संबंधी पूर्ण विवरण दिया गया है। पाठकों के लिए ध्यान रखने की बात बस इतनी सी है कि उन्हें आठ क्रियामूली कृदंतों की पहचान ठीक से करनी है और उनके नाम स्मरण रखने हैं। पूरा विधान या ढाँचा इन आठ क्रियारूपों और चारों मूल क्रियाओं की नींव पर आप सरलता से खड़ा कर लेने में अल्प समय में ही समर्थ होंगे।

दूसरे प्रकरण में आधारभूत क्रियापदों को विकारी आधारभूत और अविकारी आधाभूत दो वर्गों में बाँटा गया है। अट्ठाइस में से चौबीस क्रियापद विकारी हैं और चार अविकारी हैं। अविकारी आधारभूत क्रियापदों में विकार नहीं होता। अविकारी क्रियापद हैं—क्रियामूल (धातु), एकपदीय नाकृदंत, इएकृदंत और इएगाकृदंत। शेष विकारी हैं। द्विपदीय नाकृदंत भी विकारी है। विकारी क्रियापदों की चार कोटियाँ लिंग-वचन के आधार पर बनाई गई हैं। ये कोटियाँ हैं—पुंलिंग-एकवचन कोटि, स्त्रीलिंग-एकवचन कोटि, पुंलिंग-बहुवचन कोटि, स्त्रीलिंग-बहुवचन कोटि। इस संबंध में नियमों का उल्लेख हुआ है। विकारी क्रियापदों को पुन: दो वर्गों में बाँटा गया है। उनमें से एक कर्ता-अनुगामी क्रियापदों का है, जो सदा कर्ता के लिंग-वचन के अनुरूप अपनी कोटि निर्धारित करेगा। इस वर्ग के क्रियापदों का कर्ता सदा परसर्ग से रहित रहता है। और दूसरा वर्ग है उन क्रियापदों का, जिनका कर्ता सदा परसर्ग से युक्त होता है तथा जो या तो परसर्ग रहित कर्म के लिंग-वचन के अनुरूप कोटि अपनाएगा अन्यथा पुंलिंग-एकवचन कोटि का वरण करेगा। किन क्रियारूपों का कर्ता 'ने' परसर्ग ग्रहण करता है, और किनका 'को' परसर्ग ग्रहण करता है, इस बात का स्पष्ट उल्लेख है। अविकारी आधारभूत क्रियापद कर्ता-अनुगामी है।

तीसरे प्रकरण में संयुक्त क्रियाओं की रूप-रचना पर विचार हुआ है। मुख्य क्रिया यहाँ किसी एक अर्थात् निश्चित रूप में रहती है और संयोज्य क्रिया सभी आधाररूप क्रियापदों का रूप ग्रहण करेगी। किस-किस संयोज्य क्रिया के साथ मुख्य क्रिया किस रूप में अथवा किस-किस रूप में रहेगी, विस्तार से वर्णन है। संयुक्त क्रिया कर्ता-अनुगामी है या कर्मादि-अनुगामी, इस पर प्रकाश डाला गया है।

चौथा प्रकरण बृहत् संयुक्त क्रियापदों की रूप-रचना का है, जिनमें दो या दो से अधिक संयोज्य क्रियाओं का योग रहता है। समझने की बात इतनी सी है कि हर संयोज्य क्रिया मुख्य क्रिया के रूप में पूर्व निर्धारित विशिष्ट क्रियारूप (तीसरे प्रकरण में उल्लिखित) ग्रहण करेगी और अंतिम संयोज्य क्रिया आधारभूत क्रियापदों के रूप में होगी।

अंतिम पाँचवें प्रकरण में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य के क्रियापदों की रूप-रचना के आधार पर स्पष्ट और सरल पहचान बताई गई है। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य क्रियापदों की सरल पहचान की दो शर्तें हैं। पहली यह कि 'जाना' या 'बनना' में से कोई संयोज्य क्रिया अवश्य होनी चाहिए और दूसरी यह कि 'जाना' संयोज्य क्रिया के साथ मुख्य क्रिया आकृदंत होगी और 'बनना' संयोज्य क्रिया के साथ मुख्य क्रिया रूप में ताकृदंत या आकृदंत होगी। वाच्य से संबद्ध अन्य अनेक तथ्यों का भी विस्तार से वर्णन मिलेगा।

इस प्रकार हिंदी क्रियाओं के कितने रूप-रूपांतर दृष्टिगोचर होते हैं, उन्हें थोड़े से प्रयास से और अल्प समय में जाना जा सकता है। अब तक जिन हिंदी क्रियाओं के अगणित रूपों का आर-पार नहीं सूझता था, वे अब मुट्ठी में हैं। यह भी कहा जा सकता है कि देखने-सुनने में विकराल और भयावह लगनेवाला क्रियाओं का फैलाव आँवले की तरह हथेली पर सामान्य आकार-प्रकार का दिखने लगता है।

कुछ वर्षों से मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि क्रियापद के सहारे वाक्य का (अनुमानित) ढाँचा खड़ा किया जा सकता है। हिंदी क्रियाओं की रूप-रचना का लेखन-कार्य पूर्ण होते-होते मेरा यह दृढ विश्वास हुआ है कि कर्ता और कर्म की सही तथा निर्णायक पहचान का एकमात्र साधन 'क्रिया' का रूप ही है।' 'क्रिया' के रूप से ही अब यह भी जान सकते हैं कि वाक्य का कर्ता परसर्ग से युक्त है या परसर्ग से रहित। और यदि वह परसर्ग से युक्त है तो किस परसर्ग से। आप क्रिया के रूप से यह भी जान सकते हैं कि वह कर्ता-अनुगामी है या कर्मादि-अनुगामी। इसी प्रकार यह भी जान सकते हैं कि क्रिया कर्तृवाच्य से संबद्ध है, कर्मवाच्य से संबद्ध है या भाववाच्य से।

उक्त तथ्यों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हुआ कि हिंदी क्रिया-प्रधान भाषा है, अंग्रेजी या संस्कृत की तरह कर्ता-प्रधान भाषा नहीं। स्वाभाविक है कि पद्धतियों की विभिन्नता के कारण रचनागत विभेद भी गहन होंगे। प्रश्न उठता है कि हमने संस्कृत और अंग्रेजी की कर्ता, कर्म आदि की परिभाषाएँ अपनाने की भूल तो नहीं

की? इसे सुखद संयोग ही कहिए कि दस-बारह वर्ष पूर्व प्रकाशित 'नवशती हिंदी व्याकरण' में कर्ता, कर्म, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य आदि की जो नई परिभाषाएँ सुझाई गई थीं, वे क्रिया-आधारित निकलीं और आज उनकी सहायता से क्रियाओं का प्रस्तुत ढाँचा तैयार करने में विशेष सहायता मिली है।

अंत में अपने आदरणीय पाठकों से निवेदन है कि प्रस्तुत विवेचन-विश्लेषण है तो नियमबद्ध, परंतु है कर्ता, कर्म आदि की नवीन पारिभाषाओं पर आधारित, जो पुरानी परिभाषाओं, धारणाओं तथा मान्यताओं से यथेष्ट भिन्न है। इसे नवीन परिभाषाओं से ही जाँचें-परखें, पुरानी परिभाषाओं के आधार पर नहीं। मेरा ऐसा विश्वास है कि पाठकों को अपने अधिकतर प्रश्नों का उत्तर उसमें उल्लिखित नियमों से मिल जाना चाहिए।

शब्दलोक, ४७, लाजपत नगर, माल्दिया
वाराणसी-२२१००२ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०७२७५०५६६७१

कविता

शेष कितने दिन

• बी.एल. गौड़

आज फिर से लौट आए
वे विगत के दिन
पर तभी मन पूछ बैठा
शेष कितने दिन।

सज-सँवरकर साथ आईं
पूनमी रातें
याद फिर आने लगीं वे
अनकही बातें
शेष जीवन के लिए जो
अब धरोहर हैं
जिनके बिना कारा बने हैं
शेष जितने दिन।

रोज कहता है सवेरा
भूल बीता कल
आज पर अधिकार तेरा
धुंध में है कल
आज को मत छोड़ पगले
फिर न लौटेगा
बाँह फैला और कर ले
प्रीति-आलिंगन।

अलविदा उसने कहा पर
सुन न पाए हम
काश बन पाता समय
हर चोट का मरहम
भूल हम जितना चुके हैं
याद ज्यादा है
याद के बिन जी सकें अब
है नहीं मुमकिन।

संन्यासी हो गया सवेरा
संन्यासी हो गया सवेरा
जोगन पूरी शाम हुई
छली रात झूठे सपनों ने
यों ही उमर तमाम हुई।

मन ने नित्य उजाले देखे
अंतरमन के दर्पण में
कर लें दूर अँधेरे हम भी
सोचा बार-बार मन में
हमने मन की करी चिरौरी
पर यही कोशिश रही अधूरी
मयखाने से जब गुजरी
हर कोशिश नाकाम हुई।

मटकी दूध कलारिन लेकर
मयखाने से जब गुजरी
होश में आए पीनेवाले
पल भर में हाला उतरी
इक पल ऐसा लगा कि उसने
आकर मदिरा हाथ छुई
पीनेवालों की नजरों में
बेचारी बदनाम हुई।

यों तो मिलीं हजारों नजरें
पर न कहीं वह नजर मिली
चाहा द्वार तुम्हारे पहुँचूँ
पर न कहीं वह डगर मिली
तुम कहते याद न हम आए
हम कहते कब बिसरा पाए
सारी उमर लिखे खत इतने
स्याही कलम तमाम हुई।

सोचा अब अंतिम पड़ाव पर
हम भी थोड़ी सी पी लें
मन में सुधियाँ जाम हाथ में
अंत समय जी भर जी लें
प्याला अभी अधर तक आया
साकी तभी संदेशा लाया
जाम आखिरी पी लो जल्दी
देखो दिशा ललाम हुई।

बी-१५९, योजना विहार
दिल्ली-९२

दो बाँके

• आनंद शर्मा

सदन में सन्नाटा छाया हुआ था। मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री की भिड़त देखने के लिए दोनों पक्षों के समर्थक जैसे साँस रोके बैठे थे। सदैव कानफाड़ शोरगुल से गुंजरित रहनेवाले सदन में आज मरघट जैसा सन्नाटा पसरा हुआ था।

पूर्व मुख्यमंत्री, जो वर्तमान में नेता प्रतिपक्ष थे, गरजते हुए बोले, ''माननीय मुख्यमंत्रीजी, आपकी सागर बाँध परियोजना में जबरदस्त भ्रष्टाचार हुआ है। मेरा आरोप है कि बाईस सौ करोड़ रुपए की इस परियोजना में पैंसठ करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है। इसमें से दस करोड़ रुपए आपको पहुँचाए गए हैं।''

पूर्व मुख्यमंत्री की पार्टी के समर्थक विधायकों ने जबरदस्त हर्षध्वनि की।

मुख्यमंत्री ने अपनी स्वर-लाठी तानी—''मेरे भ्रष्टाचार का तो आपके पास प्रमाण नहीं होगा। लेकिन माननीय नेता प्रतिपक्ष, मेरे पास सीएजी की रिपोर्ट है, जिसमें साफ कहा गया है कि आपके समय में सड़क बनाने के तीन हजार करोड़ रुपए की परियोजना में जमकर घपला हुआ है। सीएजी ने इस रिपोर्ट में एक सौ करोड़ रुपए का घपला बताकर आपको कठघरे में खड़ा किया है। आपके पास कितना पैसा पहुँचा, आप स्वयं जानते हैं।''

मुख्यमंत्री की पार्टी के विधायकों ने जबरदस्त हर्षध्वनि की।

नेता प्रतिपक्ष गरजे—''माननीय मुख्यमंत्रीजी, रिपोर्ट आपके पास है और सरकार भी आपकी है। आप जैसे चाहें, जाँच करवा लें। आरोप सिद्ध हो जाने पर मैं राजनीति से संन्यास ले लूँगा। आप मुझ पर आरोप लगाकर वन विभाग के घोटाले से बच नहीं सकते। सीएजी की ताजा रिपोर्ट मेरे पास है। गुपचुप चंदन के पेड़ कटवाकर आपने पूरे सौ करोड़ रुपए का घोटाला किया है।''

प्रतिपक्षी विधायकों ने जबरदस्त हर्षध्वनि की।

मुख्यमंत्री मुसकराए—''माननीय, आपके आरोप लगाने से पहले ही मैंने इसके लिए जाँच समिति गठित कर दी है। रिपोर्ट आते ही कठोर काररवाई की जाएगी। बड़े से बड़ा व्यक्ति भी बच नहीं पाएगा। लेकिन आप तो यह बताएँ कि आपने छह कंपनियों को आउट ऑफ लॉ जाकर माइनिंग लीज कैसे दे दी? नीलाम करने पर राज्य को डेढ़ सौ करोड़ रुपए की आमदनी होती। आपने दस करोड़ रुपए लीज राशि लेकर उन्हें बेशकीमती खानें अलॉट कर दीं। है कोई जवाब आपके पास? कितना पैसा मिला था आपको?''

जाने-माने पत्रकार एवं लेखक। विभिन्न विधाओं की दस पुस्तकें प्रकाशित तथा आधा दर्जन पुस्तकें प्रकाशनाधीन। छोटे-बड़े दो दर्जन से अधिक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त।

इस बार बारी मुख्यमंत्री समर्थक विधायकों के हर्षध्वनि करने की थी।

नेता प्रतिपक्ष ने हवा में मुट्ठी लहराते हुए उत्तर दिया—''मेरे पास तो कोई पैसा नहीं पहुँचा। लेकिन आपकी सरकार आ जाने के बाद आप तो उनकी लीज रद्द कर सकते थे। लेकिन नहीं की। मेरे पास पक्की जानकारी है कि उन कंपनियों ने आपको पैसा पहुँचा दिया था। भ्रष्टाचार हुआ तो आप उनकी लीज रद्द करके दिखाएँ।''

सदन विपक्षी विधायकों की हर्षध्वनि से गूँज उठा। सत्ता पक्ष उत्सुकता से मुख्यमंत्री की ओर देख रहा था। देखें, मुख्यमंत्री इस दाँव का क्या तोड़ निकालते हैं।

उत्तर में मुख्यमंत्री भी गरज उठे—''शासन सँभालने के बाद सबसे पहले यही फाइलें निकलवाकर 'लॉ डिपार्टमेंट' के 'ओपीनियन' के लिए भिजवाई थीं। उसकी राय थी कि लीज रद्द करने पर कंपनियाँ हाईकोर्ट चली जाएँगी। फैसला होने तक स्टे तो अधिकांश प्रकरणों में मिल ही जाता है। वे तो स्टे लेकर आराम से खनन करके माल कमाती रहेंगी, जबकि सरकार को पैरवी करने के लिए लाखों रुपए खर्च करने पड़ेंगे। मैं मितव्ययता का पक्षधर हूँ। स्वयं को सरकारी खजाने का ट्रस्टी मानता हूँ। आपकी तरह उड़ाता-लुटाता नहीं हूँ। इसलिए उनकी लीज रद्द न करके सरकार को लाखों रुपयों के नुकसान से बचा लिया।''

इसपर सत्ता पक्ष के विधायकों की हर्षध्वनि होनी ही थी।

आरोपों-प्रत्यारोपों का सिलसिला थमते न देख सदन के अध्यक्ष ने उकताए स्वर में कहा, ''आप दोनों इस सदन के वरिष्ठ और माननीय सदस्य हैं। व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप लगाकर सदन का कीमती समय नष्ट कर रहे हैं। अनेक विधायक अपने क्षेत्र की समस्याएँ उठाना चाहते हैं।'' फिर चुटकी लेते हुए बोले, ''आप दोनों की भड़ास पूरी न निकली हो तो कृपया मेरे कक्ष में पधारें। वहाँ आप दोनों को अपनी-अपनी बात

कहने का पूरा मौका मिल जाएगा। निर्णय हो जाने पर कृपया सदन को अवगत कराने का कष्ट करें।''

अध्यक्ष के निर्णय पर दोनों पक्षों के विधायकों ने जबरदस्त हर्षध्वनि की। दोनों ओर खुसफुसाहट चल रही थी—'मुकाबला बराबर का रहा। कोई भी कमजोर नहीं पड़ा। टक्कर काँटे की रही।'

अध्यक्ष के कक्ष में नेता प्रतिपक्ष का अभिवादन करते हुए मुख्यमंत्री ने मृदु स्वर में कहा, ''मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ, फिर आप मुझसे नाराज क्यों हैं?''

पूर्व मुख्यमंत्री ने तल्ख स्वर में कहा, ''आपके शासन में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है। इस कारण नेता प्रतिपक्ष का दायित्व निभाते हुए आपको कठघरे में खड़ा करना मेरा वैधानिक अधिकार है। आपसे मेरी कोई व्यक्तिगत नाराजगी नहीं है।''

एक-दूसरे का हाथ थामे दोनों नेताओं ने सदन में प्रवेश किया। नेता प्रतिपक्ष को सम्मानपूर्वक उनकी सीट पर बिठाकर मुख्यमंत्री मुसकराते हुए अपनी सीट पर जा बैठे। सदन में परिणाम जानने का उत्कंठाजनित सन्नाटा छा गया था। नेता प्रतिपक्ष बोले, ''राजनीति में मतभेद तो होते हैं, लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। सत्ता और प्रतिपक्ष एक-दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। सत्ता की गलतियों को सामने लाना प्रतिपक्ष का दायित्व है, अधिकार है। मुख्यमंत्रीजी के साथ सौहार्दपूर्ण चर्चा के बाद हमारे अधिकांश मतभेदों का उन्होंने निराकरण कर दिया है।

मुख्यमंत्री मोहिनी मुसकान बिखेरते हुए बोले, ''भ्रष्टाचार का क्या रोना। यह सब तो चलता ही रहता है। आप तो यह बताएँ कि आपका स्वास्थ्य कैसा है? पता चला है कि डॉक्टर्स ने आपको बाईपास सर्जरी की सलाह दी है। वैसे तो यह ऑपरेशन मुंबई या दिल्ली में भी आराम से हो जाता है, लेकिन हमारे लिए आपका जीवन अमूल्य है। आप अमरीका में ऑपरेशन क्यों नहीं करवाते? मैं सारी व्यवस्था कर दूँगा। इलाज का सारा खर्च सरकार वहन करेगी।''

नेता प्रतिपक्ष के तेवर सामान्य हो गए। ''आपकी कृपा है, जो मेरा इतना खयाल रखते हैं।''

''इसमें कृपा जैसी कोई बात नहीं। यह तो मेरा दायित्व है।'' मुख्यमंत्री के होंठों पर मधुर मुसकान छलक रही थी, ''मुझे यह भी पता चला है कि आपके पोते ने आई.आई.टी. में एडमिशन के लिए अप्लाई किया था। उसका एडमिशन हुआ या नहीं?''

''नहीं हो पाया।''

''अरे, आपने बताया ही नहीं। मेरे वहाँ संपर्क हैं। मैं कह दूँगा। एडमिशन हो जाएगा।''

''आपकी अति कृपा होगी।'' नेता प्रतिपक्ष के आभारी स्वर में किंचित् कातरता भी परिलक्षित हो रही थी। ''आपके द्वारा मेरे निकम्मे पोते का भविष्य सँवर जाएगा। मैं यह उपकार कभी नहीं भूलूँगा।''

मुख्यमंत्री ने उनके दोनों हाथ अपनी हथेलियों में भरते हुए मृदु स्वर में कहा, ''यह कहकर आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं। जैसे वह आपका पोता, वैसे ही मेरा भी तो है।''

गद्‌गद नेता प्रतिपक्ष ने तनिक शंकित स्वर में पूछ लिया, ''लेकिन आपने मेरे घोटालों की जाँच के लिए जो आयोग गठित किया है, उसका क्या होगा?''

मुख्यमंत्री खिलखिलाकर हँस पड़े, ''मुझसे वरिष्ठ होने के कारण मैं आपको नादान कहने की धृष्टता तो नहीं कर सकता। आप चिंतित न हों। आजादी के बाद से अब तक सैकड़ों जाँच आयोग गठित हो चुके हैं। क्या उनका कोई नतीजा निकला? क्या किसी भी राजनेता या प्रशासनिक अधिकारी को कठघरे में खड़ा किया जा सका है? इनका गठन किया ही जाता है—मामले को लटकाने के लिए। सरकार की छवि भी साफ-सुथरी बनी रहे और पूर्व मुख्यमंत्री पर कोई आँच भी न आने पाए। कल आप पुनः मुख्यमंत्री बन सकते हैं। आप भी अपनी छवि बनाए रखने के लिए मेरे खिलाफ जाँच आयोग बैठाएँगे, लेकिन इरादा मुझे जेल भेजने का थोड़े ही रहेगा।''

अब नेता प्रतिपक्ष भी खिलखिलाकर हँस पड़े, ''राजनीति में जनता को मूर्ख बनाने और अपनी राजनीति की दुकान चलाए रखने के लिए ऐसे नाटक तो करने ही पड़ते हैं।''

एक-दूसरे का हाथ थामे दोनों नेताओं ने सदन में प्रवेश किया। नेता प्रतिपक्ष को सम्मानपूर्वक उनकी सीट पर बिठाकर मुख्यमंत्री मुसकराते हुए अपनी सीट पर जा बैठे। सदन में परिणाम जानने का उत्कंठाजनित सन्नाटा छा गया था। नेता प्रतिपक्ष बोले, ''राजनीति में मतभेद तो होते हैं, लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए। सत्ता और प्रतिपक्ष एक-दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। सत्ता की गलतियों को सामने लाना प्रतिपक्ष का दायित्व है, अधिकार है। मुख्यमंत्रीजी के साथ सौहार्दपूर्ण चर्चा के बाद हमारे अधिकांश मतभेदों का उन्होंने निराकरण कर दिया है। मैं उनके उत्तरों से संतुष्ट हूँ, लेकिन भविष्य में मतभेद नहीं होंगे, इसका वादा नहीं कर सकता। वे सरकार चलाएँ। मैं नेता प्रतिपक्ष के नाते उन्हें कठघरे में खड़ा करने का प्रयास करता रहूँगा। हमारे मतभेद मनभेद का कारण नहीं बनेंगे, यह वादा करता हूँ।''

उत्तर देने के लिए मुख्यमंत्री खड़े हुए। होंठों पर मुसकान छलकाते हुए बोले, ''राज्य की राजनीति में नेता प्रतिपक्ष ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका मैं सर्वाधिक सम्मान करता हूँ। अपनी साफ-स्वच्छ छवि के साथ वे विशाल हृदय भी रखते हैं। हमारी सौहार्दपूर्ण चर्चा में मैंने उन्हें सुना। उन्होंने भी मुझे धैर्यपूर्वक सुना। अधिकांश आरोप सुनी-सुनाई चर्चाओं पर आधारित थे। मेरा सौभाग्य है कि मैं उनकी अधिकांश शंकाओं का समाधान करने में सफल रहा। उनका भी औदार्य है कि उन्होंने भी मेरा पक्ष जानकर अधिकांश आरोपों से मुझे मुक्त कर दिया। कुछ मुद्दों पर वे अब भी असंतुष्ट हैं। सरकार को कठघरे में खड़ा करते रहने की बात कह रहे हैं। मैं इसका स्वागत करता हूँ। वे भी जानते हैं कि सरकार चलाते समय पूरी सावधानी बरतने पर भी गलतियाँ हो ही जाती हैं। मैं उनसे अनुरोध करता हूँ कि सरकार की गलतियाँ सामने लाकर हमें भूल सुधार का अवसर प्रदान करते रहें। प्रतिपक्ष सत्ता के हाथी पर अंकुश का काम

करता है। वे अपने अंकुश को दृढता से थामे रहें। सरकार को सही मार्ग पर चलाने के लिए नियंत्रित करते रहें। मैं उनकी वरिष्ठता को प्रणाम करते हुए उनके स्वस्थ-दीर्घायु जीवन की कामना करता हूँ।''

दोनों पक्षों की समवेत हर्षध्वनि शांत होने पर एक निर्दलीय विधायक उठा—''अध्यक्षजी, मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष में समझौता हो जाने से मुझे प्रसन्नता हुई। स्कूल में भगवती चरण वर्मा की एक कहानी पढ़ी थी, 'दो बाँके।' अपने-अपने वर्चस्व के लिए एक-दूसरे को लाश में बदलने की भीषण कामना के साथ वे अमीनाबाद के पुल पर कदम-दर-कदम एक-दूसरे को ललकारते हुए आगे बढ़ रहे थे। दोनों के शागिर्द नारों के द्वारा उनका हौसला बढ़ा रहे थे। बीच पुल पर उन दोनों ने पंजा लड़ाया। दोनों ही टक्कर के बाँके थे। कोई भी प्रतिपक्षी का पंजा टस-से-मस नहीं कर पा रहा था। टक्कर बराबर की थी। एक ने पूछा, 'उस्ताद, झगड़ा क्या है?' दूसरे बाँके ने कहा, 'पुल के इधर का इलाका मेरा है।' पहले ने उत्तर दिया, 'पुल के उधर का इलाका मेरा है।' दूसरे बाँके ने कहा, 'पुल के उधर के इलाके से

मेरा कोई लेना-देना नहीं है।' पहले बाँके ने भी कह दिया, 'पुल के इधर के इलाके पर तो मैंने कभी दावा किया ही नहीं। हम मिल-जुलकर रहें। अपने-अपने इलाके के लोगों को लूटते रहें।' पंजा छूट गया। दोनों बाँके सीना फुलाए अपने-अपने शागिर्दों में आ मिले। प्रचारित कर दिया कि जोड़ बराबर की छूटी। बस, ऐसा ही कुछ नजारा आज सदन में देखने को मिला। कुछ देर पहले मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष एक-दूसरे पर गरज-बरस रहे थे। एक-दूसरे को पछाड़ने की भरपूर जोर आजमाइश कर रहे थे। लेकिन अध्यक्ष के कक्ष में दोनों बाँकों के बीच बँटवारे का समझौता हो गया। अब वे दोनों एक-दूसरे की प्रशंसा कर रहे हैं। नकली बाँकों की लड़ाई का परिणाम ऐसा ही निकलता है।''

सदन में एक बार फिर सन्नाटा छा गया था।

६४५, किशोर कुंज, किशनपोल बाजार
जयपुर-३०२००१
दूरभाष : ०९४६२३१२२२२

भीगे सावन की पुरवाई

गीत

• सुखवीर सिंह राणा

ठंडी नन्हीं बूँद हवा में घुल-मिल पूरब से आई,
लोग इसी को कहते हैं, भीगे सावन की पुरवाई।

भीगा-भीगा यह सावन तो हर सावन में आता है,
तपती धरती सूखी खेती सबकी प्यास बुझाता है।
छोटी बदली थोड़ा पानी सहज फुहारें बरसाती,
हरित आवरण वनस्पति से सारी धरती ढक जाती।
शाम घनों के संघर्षण में मोर ने पंखी फैलाई,
लोग इसी को कहते हैं, भीगे सावन की पुरवाई।

चतुर्मास का राजा सावन सबको अच्छा लगता है,
भीग-भीगकर भिगो-भिगोकर प्यार समूचा लगता है।
खेल-खेल में भ्रमर तितली राग जगाते तन-मन में,
लिपट गई रस भरी लताएँ तरुवर के संग उपवन में।
किसी हिरण की उद्दंडता से भीगी हिरणी शरमाई,
लोग इसी को कहते हैं, भीगे सावन की पुरवाई।

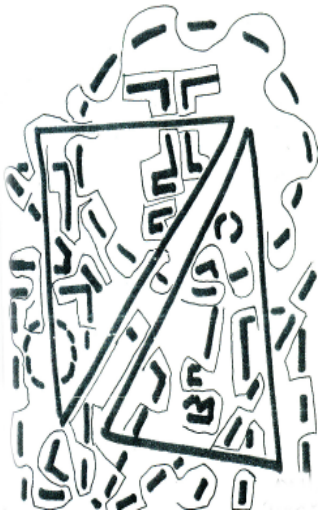

घुमड़-घुमड़ती गरज घोरती काली-काली घनी घटा,
धवल-धवल बगलों की पाँखें बिखराती बेजोड़ छटा।
अंध प्यार की मारी सरिता मचल गई खो जाने को,
तोड़ चली सब सीमाएँ सागर में लय हो जाने को।
हरी-भरी धरती का कण-कण लेता है जब अँगड़ाई,
लोग इसी को कहते हैं, भीगे सावन की पुरवाई।

कभी-कभी उन्मत्त फुहारें उलटा-पुलटा कर जातीं,
ठंडी-ठंडी रातों में भी जलन तपन सी भर जाती।
जिसकी चोली भीग गई है सावन की बरसातों में,
गुप्प घटा में भी टोहती चाँद को भीगी रातों में।
गगन घोर में मचल-मचल कवि-कलम पुरानी इतराई,
लोग इसी को कहते हैं, भीगे सावन की पुरवाई।

२ सी/१२७७ दयाल कॉलोनी
सहारनपुर (उ.प्र.)

आलेख

स्वातंत्र्य युद्ध : पुनरावलोकन क्यों?

• रुद्रदत्त चतुर्वेदी

स्वतंत्रता के महायज्ञ में,
चले प्रवीर, चली सतियाँ।
तलवारों की स्रुवाकरों में,
मुंडों की थी आहुतियाँ॥

हृदय-हृदय में हवनकुंड था,
क्रांति ज्वाल विस्फुरित हुई।
स्वतंत्रता की महान् देवी,
हो प्रसन्न अवतरित हुई॥

स्वतंत्रता संग्राम का १६०वाँ पुण्य पर्व देश में और विशेष रूप से साहित्य-जगत् में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। क्यों न मनाया जाए, उपरोक्त पंक्तियाँ बताती हैं कि आजादी कितने बलिदानों के बाद आई है। भले ही कुछ लोग कहें, और सच भी है कि सारा देश भ्रष्ट हो गया है। इससे अच्छा तो अंग्रेजी राज था, परंतु सच यह है कि ऐसा कहनेवालों को 'आराम' अधिक प्यारा है। उन्हें उन्मुक्त गगन में उड़ान भरनेवाले पंछी की अपेक्षा सोने का पिंजरा अधिक पसंद है।

प्रश्न उठता है कि इन सबके स्मरण का उद्देश्य क्या है? सब घटनाओं को याद करके हम नई पीढ़ी को यह बताना चाहते हैं कि वे आज यदि इतने सुखी, संपन्न, मुखर और चिंतन के लिए मुक्त हैं तो उसके पीछे त्याग और बलिदान की एक लंबी शृंखला है। उस युग में, राजा की रानियों के जमाने में प्रचलित कहावत, 'जो देखेगा, उसकी आँख और जो बोलेगा, उसकी जीभ निकाल ली जाएगा।' सच में चरितार्थ होती थी उस युग में, न आज की तरह अखबार था और न टी.वी.। तब कल्पना करें कि स्वतंत्रता की चेतना, योजना और परिणति में कितना, कितनों का भगीरथ प्रयास रहा होगा, वह भी इतने बड़े भू-भाग पर, जो तब बर्मा से लेकर अफगानिस्तान तक फैला था।

नई पीढ़ी कल्पना करे जेल के उस भोजन की, जिसके आटे में मिट्टी मिलाकर क्रांतिकारियों को रोटियाँ दी जाती थीं, शिकायत करने पर कहा जाता था कि आप तो भारत की मिट्टी से प्यार करते हैं, फिर शिकायत कैसी? फिर कल्पना करें कि जाड़े की रातों में ठंड से बचने के लिए क्रांतिकारी शहीद अखबार जोड़कर चादर की तरह ओढ़कर सोते थे। कथित देशद्रोह के नाम पर पेड़ों से लटकाकर फाँसी (छोटे गरीब लोगों को) दी जाती थी और राजा-महाराजा, सेनापतियों को उनके ओहदे के अनुसार गोली या तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया जाता था। कैसी कठिनाई के थे वे दिन? नई पीढ़ी किसी एक जाड़े की रात अखबार ओढ़कर अथवा दो दिन भूखे रहकर देख ले। यही है उद्देश्य, नई पीढ़ी

जाने-माने लेखक। पत्र-पत्रिकाओं में शताधिक लेख प्रकाशित। 'गीतामृत पदावली' संपादित ग्रंथ, 'वेदामृत' (वेद की ऋचाओं का पद्यानुवाद)। सत्यमेव इंडिया डॉट कॉम वेवसाइट पर भी सामग्री उपलब्ध।

को आजादी की लड़ाई के दिनों को स्मरण कराने का।

एक उद्देश्य और भी है, इस स्वतंत्रता संग्राम के पुनरावलोकन और पुनर्मूल्यांकन का, किसी विद्वान् ने कहा है कि 'युद्ध में सबसे पहले हत्या सत्य की होती है', जो सच है। महाभारत के महायोद्धा सुयोधन-दुर्योधन और सुशासन-दुशासन बना दिए गए। अंग्रेज भला क्यों चूकते—स्वतंत्रता के युद्धों को गदर (छोटे उद्देश्य, निहित स्वार्थ के लिए लड़ी गई लड़ाई) नाम दे दिया और उस युद्ध को, जिसमें गरीब से अमीर तक राजा से संन्यासी तक और हिंदू-मुसलिम, कथित ऊँच-नीच सभी वर्गों के सदस्यों ने लड़ाई लड़ी थी, उसे उपनिवेशवादी शासन ने केवल पुराने सामंतों, धर्मांध ब्राह्मणों और डूबते मुगल साम्राज्य का गठजोड़ सिद्ध करने का प्रयास किया। यह सौभाग्य का विषय है कि साहित्य और इतिहास दोनों के समवेत एवं वस्तुनिष्ठ प्रयासों से एक कथित सुसंस्कृत अंग्रेज कौम का असली चेहरा सामने आता जा रहा है और सत्य के आलोक में युवा पीढ़ी इस देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वरूप से परिचित होती जा रही है।

जन-जन परिचित हो रहा है कि यह लड़ाई मात्र गाय और सुअर की चरबी के कारतूसों के लिए नहीं लड़ी गई थी, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक आग थी और इस संग्राम ने बीसवीं सदी की आजादी की लड़ाई को प्रेरणा एवं ऊर्जा प्रदान की थी।

अंग्रेज इतिहासकारों का कथन है कि यह धर्म के लिए की गई बगावत थी। अंग्रेजों की एक सोची-समझी नीति थी और इस स्वतंत्रता संग्राम में हिंदू-मुसलिम एकता से सीख लेकर उन्होंने बीसवीं सदी में योजनाबद्ध तरीके से हिंदू-मुसलिम का विखंडन किया, जिसके परिणाम-स्वरूप देश का विभाजन हुआ, अन्यथा यह देश इंडोनेशिया की प्राचीन संस्कृति की भाँति अपने को मजबूती से जुड़ा हुआ पाता है।

राष्ट्रीय चेतना की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी' में एक पंक्ति हर बार इससे पूर्व आती है, 'बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।' तो कौन थे ये हरबोले और क्या था इनका योगदान प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में। यह हरबोले साधु-संन्यासी वेशधारी प्रचारक थे, जो गाँव-गाँव घूमकर

गीतों, भजनों के माध्यम से देश की जनता को अंग्रेजों के उत्पीड़न, लूट-खसोट और अत्याचारों से अवगत कराते थे और चेतना जगा रहे थे। इन्हीं ने वह पृष्ठभूमि तैयार की थी, जिसके चलते आजादी की इस लड़ाई को जनता का सक्रिय सहयोग मिला था।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रचारक सहयोग की कड़ी में वे अनाम क्रांतिकारी भी थे, जिन्होंने 'चपाती/रोटी वितरण' का कार्य किया। ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार की दृष्टि इस चपाती वितरण पर पड़ तो चुकी थी, परंतु वे अंत तक न जान सके कि इसके पीछे कौन था। मेरठ विद्रोह के बाद यह भेद खुला कि इस कार्य का उद्देश्य जन-जन को कथित सभ्य कौम अंग्रेजों के अत्याचारों से अवगत कराना था कि किस तरह देशवासियों से रोटी का टुकड़ा सुनियोजित तरीके से छीना जा रहा है और जन-साधारण को संभावित संग्राम के लिए सचेत व तैयार करना था। इस संबंध में गुड़गाँव (हरियाणा) के जिलाधीश द्वारा १९ फरवरी, १८५७ को दिल्ली आयुक्त को लिखा गया पत्र और विलियम एडवर्ड्स जिलाधीश बनारस और बदायूँ द्वारा लिखे गए पत्र इस योगदान पर प्रकाश डालते हैं।

इतिहास लेखक और विद्वान् झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे नाना साहब, बहादुरशाह जफर, अजीमुल्ला खाँ, मौलवी अहमदशाह जैसे अनेक बड़े और छोटे सेनानियों की वीरगाथा पर प्रकाश डाल चुके हैं और डालेंगे भी। परंतु उद्देश्य के अनुरूप इस लेख की विषयवस्तु 'इतिहास से सीख' के साथ समापन की ओर बढ़ना चाहूँगा।

सर्वप्रथम इस १६०वें वर्ष में स्वतंत्रता संग्राम की सार्थकता तब और होगी, जब उस काल का अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त किया गया साहित्य सस्ते दामों में पुन: प्रकाशित कराया जाए, ताकि सच जन-जन तक पहुँचे। पराजय के कारणों की सम्यक् विवेचना हो, ताकि भविष्य में यह राष्ट्र उससे सीख ले, जैसे अंग्रेजों ने १८५७ में बड़ी मुश्किल से पार पाई और सीख ली कि यदि हिंदू और मुसलमान एक रहे तो गाड़ी नहीं चलने की और उन्होंने फूट डालकर देश का विभाजन कराया।

अत: अब हम यह सीख लें कि अपने-अपने धर्म का पालन करते हुए राष्ट्रधर्म को ही सर्वोपरि मानेंगे। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में पराजय का प्रमुख कारण वीरश्रेष्ठ मंगल पांडे की चूक थी। यदि वे व्यग्रता में समय से पूर्व विद्रोह न करते तो खंड-खंडों में लड़ी गई पराजित लड़ाई एक साथ लड़ी जाती और हम ९० वर्ष पूर्व ही स्वतंत्र हो गए होते। परंतु इस देश का हिंदू और मुसलिम समुदाय आज तक भी जाति और जन्मना श्रेष्ठता से ऊपर उठकर सीख नहीं ले सका है। हम आज भी 'आठ कन्नौजिए नौ चूल्हे' वाली मानसिकता में जी रहे हैं। अति उत्साह के कारण अनेक स्थानों पर सैनिकों ने योजना के विपरीत हमला करके तात्कालिक जीत के साथ भारी धन-जन हानि और पराजय का मुँह देखा।

झाँसी की पराजय यदि किले का फाटक खोलनेवाले गद्दार के कारण हुई तो अजीमुल्ला दतिया के दीवान की गद्दारी का शिकार बने। बड़े राज्यों में हैदराबाद और ग्वालियर का सहयोग अंग्रेजों को प्राप्त था, जिसका परिचय 'खूब लड़ी मर्दानी' की 'अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी', पंक्तियों से मिलता है। ज्ञातव्य है कि सिकंदर से लेकर चीन के युद्ध तक इस देश की पराजय का प्रमुख कारण परंपरागत अथवा नवीन अस्त्रों के अभाव में लड़ी गई लड़ाइयाँ हैं। जहाँ बहुत से राजाओं-जमींदारों ने सत्ता, धन और उपाधि के लालच में अंग्रेजों का साथ दिया, वहीं सिखों ने मुगल सम्राटों द्वारा सिख गुरुओं के प्रति किए गए लगातार अमानुषिक अत्याचारों की स्मृति के कारण उसी मुगलिया सल्तनत के वंशज बहादुर शाह जफर (जिन पर अंतिम गुरु की कथित हत्या का आरोप था) का नेतृत्व होने के कारण अपने को इस स्वतंत्रता संग्राम से लगभग तटस्थ रखा।

इतिहास पुनर्मूल्यांकन में पूर्वग्रह (प्रेज्यूडिस) सत्यता सामने नहीं आने देते और अगर-मगर की परिकल्पनाएँ उसे दूषित करती हैं, अत: इनसे बचना होगा, ताकि इतिहास अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य सफल हो और राष्ट्र-रक्षा का मार्ग कभी अवरुद्ध न हो। साअ

सी-२१, देवरतन अपार्टमेंट
एच-पार्क, महानगर विस्तार
लखनऊ-२२६००६
दूरभाष : ९४५०९२७६७१

इस अंक के चित्रकार

सिद्धेश्वर

जाने-माने लेखक एवं चित्रकार। 'बूँद-बूँद सागर' (लघुकथा-संग्रह); 'इतिहास झूठ बोलता है' (कविता-संग्रह); 'ढलता सूरज-ढलती शाम' (कहानी-संग्रह); 'दहशतजदा' (उपन्यास-अंश) प्रकाशित। इसके अतिरिक्त कई पुस्तकों का संपादन किया। कई सम्मान व पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति वरीय टिकट परीक्षक (पूर्व मध्य रेलवे)।

साअ

सिद्धेश सदन
किड्स कार्मल स्कूल के बाएँ
द्वारकापुरी, रोड नं.-२, हनुमाननगर,
कंकड़बाग, पटना-८०००२०
दूरभाष : ९२३४७६०३६५

कहानी

लौटा दो सावन

• जनकदेव जनक

''चाँदनी!''

''हूँ!''

''श्रीनगर चलोगी, हम जम्मू-कश्मीर की खूबसूरत वादियों में स्वच्छंद विचरण करेंगे।'' आकाश ने यों ही उससे पूछ लिया।

''सच, तुम मुझे धरती का स्वर्ग दिखाओगे? तब तो बड़ा मजा आएगा!'' गाँव की लड़की के लिए जम्मू-कश्मीर तो एक सपना जैसा होता है। चाँदनी ने मारे खुशी के आकाश को अपने आगोश में भर लिया।

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं, इसलिए तो पूछ रहा हूँ। जब सियाचिन ग्लेशियर में तैनात रहता हूँ, वहाँ तुम्हारी बहुत याद आती है। खयालों में तुमसे बातें कर तुम्हारी देह की गरमी व गंध को महसूस करता हूँ।'' यकायक आकाश ने चाँदनी को उत्सुक देखकर भावावेश में चुहलबाजी की।

''देखो, एक तरफ पाकिस्तान और दूसरी तरफ चीन सरहद पर सीनाजोरी करते रहते हैं। वैसी विषम परिस्थिति में भला मेरी याद तुम्हें कैसे आएगी। मुझे झूठ-मूठ खुश करने के लिए तारीफों के पुल न बाँधो। कहीं ऐसा न हो कि उम्मीद की किरण जगाकर चुपचाप निकल जाओ।'' चाँदनी ने उसे उलाहना दिया।

''फिजूल बातें न सोचो, तुम मेरी जीने की चाहत हो। मेरी जिंदगी का खास मकसद हो। जब तक तुम मेरे दिल में रहोगी, सरहद पर दुश्मन मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।''

''आकाश, तुम कितने महान् हो। तुम्हारी इसी जिंदादिली पर मेरा तन-मन कुरबान है।'' इतना बोलते-बोलते चाँदनी का मन भावुक हो उठा। वह खिड़की से बाहर आसमान की ओर देखने लगी। आँखों में आए आँसुओं को उसने झट अपने आँचल की कोर से पोंछ लिया।

चाँदनी को अधीर देखकर आकाश भी स्तब्ध रह गया। उसने जम्मू-कश्मीर का प्रसंग बदलने के खयाल से उससे पूछा, ''नभ में क्या देख रही हो?''

''चाँद को देख रही हूँ, जो खिड़की से अंदर झाँक रहा है।''

''जानती हो, क्यों झाँक रहा है?''

''नहीं!''

''मैंने उसकी चाँदनी को कैद जो कर रखा है।'' इतना कहकर आकाश ने उसे अपने आलिंगनपाश में जकड़ लिया। दोनों एक-दूसरे की बाँहों में समाए पलंग पर निढाल पसर गए। नि:शब्द, चुपचाप! दिल की धड़कनों से आत्मसात् करते रहे।

छुट्टी खत्म होने के बाद आकाश ने चाँदनी के साथ श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया। रेलवे स्टेशन पर दोनों को छोड़ने के लिए आकाश की माँ गायत्री देवी और पिता सरपंच घनश्याम प्रसाद आए थे। उनका स्नेह व प्यार पाकर चाँदनी को ऐसा लगा, जैसे अपने मायके से ससुराल जा रही हो। चलने से पूर्व ट्रेन ने सीटी बजाई तो चाँदनी का कलेजा धक-धक करने लगा। अपने सास-ससुर से बिछुड़ना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। जब ट्रेन पटरी पर रेंगने लगी तो उसका मन अधीर हो उठा। खिड़की से बाहर हाथ निकालकर हिलाने लगी। उनसे अलग होते ही उसकी आँखें अचानक बरस पड़ीं।

''देखना आकाश बेटे, हमारी बिटिया रानी को किसी तरह की तकलीफ न हो। श्रीनगर पहुँचने के बाद फोन जरूर करना।'' ट्रेन से पीछे छूटती गायत्री देवी ने उसे चेतावनी के लहजे में कहा।

□

श्रीनगर पहुँचने के बाद आकाश अपनी दैनिक चर्या में लग गया। लेकिन जब भी उसे फुरसत मिलती, चाँदनी को साथ लिये जम्मू-कश्मीर की सैर कराता। चाँदनी का साथ पाकर वह काफी खुश था। हमेशा उसकी इच्छाओं का सम्मान करता था। उसे एहसास नहीं होने देता था कि गाँव छोड़कर शहर में आई है। अकसर शाम को वे किसी-न-किसी पार्टी में शामिल होते। वह अपने मित्र विंग कमांडर सरदार तेजपाल सिंह, लांस नायक अरबाज खान, उसकी बीवी नर्गिस बेगम, लेफ्टिनेंट विजय अरोड़ा और उसकी पत्नी विजया लक्ष्मी आदि से मिलवा चुका था। हालाँकि नई जगह और नए वातावरण में चाँदनी की स्वतंत्रता खत्म हो गई थी। वह बिना आकाश के एक कदम भी कहीं आ-जा नहीं सकती थी। अनजान लोगों के बीच उसे घुटन सी महसूस होती। खुलकर किसी मुद्दे पर बात भी नहीं कर पाती थी। पार्टियों में सब तरह के व्यंजनों के साथ मदिरा का इंतजाम रहता था। वहाँ खाने-पीने में उसे अटपटा लगता था। ऐसे में उसका मन कहता, कहाँ आकर फँस गए!

उसे बचपन से ही मांस और मदिरा के नाम से चिढ़ थी। उसकी गंध से भी उसे नफरत थी। संयोग से उसके ससुराल में भी ये चीजें वर्जित थीं। लेकिन श्रीनगर में तो ये चीजें अत्यावश्यक थीं। आकाश उन चीजों का

लेखक परिचय

सुपरिचित साहित्यकार। हिंदी-भोजपुरी में एक साथ लेखन। लेख, कहानी, नाटक, साक्षात्कार आदि देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। झारखंड सिने अवार्ड राँची २००८ में शामिल भोजपुरी फिल्म 'आजा हमार राजा' का सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखन पुरस्कार। संप्रति प्रभात खबर झरिया कार्यालय में उप संपादक।

सेवन करता और चाँदनी को भी कराता था।

अकसर आकाश उसे समझाता कि ठंड से बचने के लिए मांस और शराब जरूरी है। थोड़ा-थोड़ा लिया करो, धीरे-धीरे आदत पड़ जाएगी। आकाश के आग्रह को उसने कभी नहीं नकारा। थोड़ा-थोड़ा लेना शुरू किया। पहले तो उसे उल्टी होने लगती थी। मांस-मदिरा को छूते ही उसका जी मिचलाने लगता था। लेकिन दैनिक जीवन में नित्य उपयोग से सबकुछ बदल गया। अब उसे किसी के साथ जाम टकराने में शर्मिंदगी महसूस नहीं होती थी। आकाश नहीं भी रहता तो अकेली पार्टी अटैंड कर लेती थी या फिर विंग कमांडर तेजपाल सिंह को बुला लेती थी। अब पार्टियों में अनजाने लोग बेगाने नहीं लगते थे। लगता था कि वह उन्हें पहले से जानती है। अब पार्टी में खुलकर एन्जॉय करती। कभी-कभी तो इतना पी लेती थी कि घर लौटना भी मुश्किल हो जाता था। तब तेजपाल सिंह उसे घर पहुँचाता।

सरदार तेजपाल सिंह सियाचिन में तैनात सैनिकों के लिए खाना, रसद सामग्री आदि पहुँचाने का काम करता था। साथ ही उसके कार्यों में बीमार सैनिकों को अस्पताल तक पहुँचाना भी शामिल था। चाँदनी का पति मेजर आकाश और तेजपाल सिंह अच्छे मित्र थे। जब मेजर को काम से छुट्टी नहीं मिलती तो अकसर तेजपाल सिंह ही चाँदनी को जहाँ-तहाँ घुमा देता था।

आकाश भी उसके प्रति काफी लापरवाह हो गया था। पहले जैसा वक्त अब चाँदनी को नहीं दे पाता था। चाँदनी ने उसका लाभ उठाना शुरू कर दिया था। जब भी समय मिलता, तेजपाल सिंह को फोन कर बुला लेती थी। उसके साथ पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने निकल जाती। शुरू-शुरू में उसने वैष्णो देवी और अमरनाथ के दर्शन किए। उसके बाद पहलगाम, गुलमर्ग, सोनमर्ग आदि स्थलों को घूम-घूमकर देखा, जम्मू-कश्मीर की घाटियों में घूमना उसे अच्छा लगता था। वह सेब, नाशपाती, आड़ू, बादाम, अखरोट, अंगूर आदि बागों में विचरण करने पहुँच जाती। वहाँ काम करनेवाली कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, उर्दू और लद्दाखी भाषा-भाषी पुरुष-महिलाओं से बातें करती। उनकी बहुत सारी बातें उसे समझ में नहीं आती, फिर भी उनके चेहरे का हाव-भाव और भाव-भंगिमा से बातचीत का आशय समझ लेती थी।

अकसर आकाश जब भी सोशल साइट को खोलता। किसी-न-किसी पर्यटन स्थल पर चाँदनी के साथ तेजपाल की तसवीर साथ होती। पता नहीं क्यों, उसके मन में उन तसवीरों को देखने के बाद जलन सी महसूस होने लगी थी। वह मन-ही-मन पश्चात्ताप करता कि क्यों चाँदनी को घुमाने का जिम्मा तेजपाल सिंह को दिया। इन दृश्यों को देख-देखकर उसका मन उदास रहने लगा था। धीरे-धीरे आकाश के मन में चाँदनी के प्रति बेवफाई की चुभन महसूस होने लगी थी। उसके मन में आशंका होने लगी कि कहीं दोनों के बीच गुपचुप प्रेम का अंकुर तो नहीं फूट रहा है।

अचानक एक और तसवीर सोशल साइट पर दिखी। चाँदनी के छरहरे बदन पर डक गाउन जैकेट था, उसके सिर पर लाल रंग का स्कार्फ और गोल्डन फ्रेम में हलके गुलाबी कलर का ग्लासवाला चश्मा उसकी खूबसूरत आँखों पर मनोहारी लग रहा था। उस वक्त चाँदनी किसी गुड़िया से कम नहीं लग रही थी। वह अपनी वास्तविक उम्र से भी कमसिन और कुछ ज्यादा ही हसीन लग रही थी। पास में खड़ा तेजपाल उसे एक लाल गुलाब प्रेजेंट कर रहा था। यह देख यकायक आकाश के ऊपर वज्रपात हो गया। उसने मन-ही-मन फैसला कर लिया कि दोनों पर लगाम लगानी होगी। कहीं पानी सिर से ऊपर न बह जाए।

मेजर से प्रोन्नत होकर आकाश मेजर जनरल बन गया था। इस सुखद समाचार से उसका मन प्रफुल्लित था। वह चाहता था कि इसकी सूचना वह चाँदनी को फोन पर न देकर घर जाकर दे। वह जल्द से जल्द चाँदनी से मिलने के लिए बेकरार था।

इधर एक सप्ताह से तेजपाल सिंह छुट्टी पर था। अपने गाँव गया हुआ था। चाँदनी को मालूम हुआ कि शादी की पहली सालगिरह पर अपनी पत्नी को खुश करने गया है। तब वह सोचने लगी कि एक उसका पति है, जिसे काम से फुरसत नहीं मिलती। उसने कभी पत्नी की भावनाओं-इच्छाओं को नहीं जाना। उसने अपनी पहली शादी की सालगिरह आँसुओं में नहाकर मनाई थी। फूलों से सजी सेज सूनी रह गई थी। वह सारी रात पति की राह निहारती रह गई थी। छुट्टी नहीं मिलने का बहाना बनाकर आकाश घर नहीं पहुँच सका था। बीती बातें फिर से ताजा हो गई थीं। वह सोचने लगी, 'एक सतपाल सिंह है, जो पत्नी की भावनाओं की कद्र करता है। एक उसका पति है, जो अपने गुरूर में पत्नी को कुछ समझता ही नहीं।' चाँदनी का दिमाग यों ही खराब हो रहा था, तभी दरवाजे पर बूटों की आवाज सुनाई पड़ी। एक तो पहले से शराब का सेवन किया था, दरवाजा खोलने से पूर्व भी दो-चार घूँट पी लिये।

दरवाजा खुलते ही हवा के झोंके के साथ आकाश अंदर घुसा और चाँदनी को अपनी बाँहों में उठाकर नाचने लगा। नाचते हुए उससे बोला कि मेरा प्रमोशन हो गया है चाँदनी, प्रमोशन! आकाश अब मेजर से मेजर जनरल बन गया है। उसने खुशी में पागल चाँदनी के गालों व होंठों पर कई चुंबन जड़ दिए।

आकाश का स्पर्श पाकर भी चाँदनी के शरीर में न कोई स्पंदन, न ही रोमांच हुआ। वह किसी निष्प्राण जीव की तरह आकाश की बाँहों में पड़ी हुई थी। आकाश की तरक्की से उसे किसी तरह की खुशी नहीं हुई। उल्टा उसका स्पर्श पाकर चाँदनी का तन-बदन जल रहा था। वह प्रतिशोध की आग में जल रही थी। अचानक विद्युत् गति के साथ आकाश की बाँहों से छिटककर दूर हो गई। नफरत भरे लहजे में यकायक बोल उठी—

''मुझे छूना नहीं, अब तुम से नफरत सी हो गई है।''

''चाँदनी, अचानक तुम्हें क्या हो गया है। होश में तो हो?'' यकायक आकाश बीच में ही बोल पड़ा।

''हाँ-हाँ, मैं होश में हूँ, बेहोश नहीं।'' चाँदनी नशे में बके जा रही थी।

''लगता है चाँदनी, तुम बिल्कुल होश में नहीं हो। मैंने सोचा था कि अपनी तरक्की की खबर तुम्हें सुनाऊँगा तो तुम खुश होओगी। मेरे साथ नाचोगी, खुशी मनाओगी। मुझे ढेर सारा प्यार दोगी। लेकिन पता नहीं तुम्हें

क्या हो गया है?'' उसने शांत भाव से चाँदनी को समझाना चाहा।

''किसे प्यार देगी चाँदनी, पार्टियों में मेमिनों की जूतियाँ चाटनेवाले को, उनके गले में बाँहें डालकर नाचनेवाले को, जो मुझे भोग की वस्तु समझता है, अब भूल जाओ आकाश चाँदनी को।''

''बंद करो बकवास, तुम्हारी बातों को सुनकर मैं खुद पागल हो जाऊँगा। मैंने कभी तुम्हें भोग की वस्तु नहीं समझा। ऐसा घिनौना आरोप तुमने मुझ पर कैसे मढ़ दिया?'' आहत होकर आकाश ने उसे समझाने का प्रयास किया।

''सच कहा तो घिनौना हो गया। अब मैं तुम्हारे साथ एक पल भी नहीं रह सकती। तुमने मेरे साथ बहुत अन्याय कर लिया, अब और बरदाश्त नहीं करूँगी।'' नागिन की तरह फुफकारती हुई वह बोली।

''यू शटअप चाँदनी, एक लफ्ज भी आगे निकाला तो गरदन मरोड़कर रख दूँगा।'' यकायक आकाश का गुस्सा बेकाबू हो गया।

''तुम मुझे मारोगे, मारकर तो देखो, तेरा मुँह नोंच लूँगी।'' चाँदनी ने आँखें तरेरते हुए टेबल पर रखी शराब की बोतल को आकाश के ऊपर फेंककर मारा, जिससे आकाश का सिर फट गया। वह ठीक से सँभल भी नहीं पाया था कि चाँदनी ने घर के अन्य सामानों को उठा-उठाकर उसके ऊपर फेंकना शुरू कर दिया। पलभर में सारा कमरा बरतनों, काँच के टुकड़ों व अन्य चीजों से भर गया।

यकायक आकाश वे अपने स्थान से जंप किया और चाँदनी के पीछे पहुँचा। दो-चार थप्पड़ जड़ते हुए उसे पलंग पर ढकेल दिया। नशे में चूर चाँदनी औंधे मुँह गिरी तो फिर उठ नहीं सकी। आकाश दरवाजे को सटाकर बाहर निकल गया।

उस घटना के बाद आकाश घर तथा चाँदनी से दूर ही रहा। इतना दु:ख तो उसे कभी युद्ध के दौरान में भी नहीं हुआ था। दिसंबर का महीना था। सरहद पार से पाकिस्तानी सेना गोलीबारी कर रही थी। भारतीय जाँबाज भी जबाव देने में पीछे नहीं थे। सीमा पर तैनात आकाश की एके ४७ आग उगल रही थी। हाड़ कँपा देनेवाली ठंडी हवाएँ तेज हो गई थीं। भारी वर्षा के दौरान हिम स्खलन की आशंका ज्यादा बढ़ गई थी। वैसे स्थिति में उसे बार-बार चाँदनी की याद आ रही थी। वह जितनी बार उसका अपनी यादों से पीछा छुड़ाना चाह रहा था, उतना ही उसकी बेवफाई उसे बिच्छू की तरह डंक मारती रही। पता नहीं इसी उधेड़बुन में उसका मन गाँव की भूल-भुलैया में कब भटक गया, जब वह चाँदनी के शादी समारोह में शामिल होने गया था।

जब आकाश चाँदनी के घर पहुँचा तो वहाँ मातमी सन्नाटा पसरा हुआ था। जहाँ-तहाँ लोग झुंड के झुंड खड़े थे। आपस में शादी टूट जाने की बात बतिया रहे थे। कह रहे थे कि दो लाख रुपए के लिए बेचारी खामखाह दहेज की बलिवेदी पर जिंदा चढ़ा दी गई। लोग तो यही न कहेंगे कि लड़की भाग्यहीन है। अब उससे कौन विवाह करेगा। विवाह मंडप में चाँदनी दुलहन के वेश में अपनी सहेलियों के साथ गुमसुम बैठी हुई थी। वहीं उसकी माँ का रो-रोकर बुरा हाल था। उसके पिता शिवजी शर्मा माथे पर हाथ रखे एक कोने में मायूस बैठे थे। इतने समय में आकाश समझ गया कि लेन-देन को लेकर बरात वापस लौट गई है। अब चाँदनी बिन ब्याही रह जाएगी। कभी दोनों ने एक ही साथ बी.ए. तक पढ़ाई की थी। यकायक चाँदनी का मासूम चेहरा उसके सामने नाच उठा। जब कॉलेज में दोनों की मुलाकात हो जाती थी। दोनों पड़ोसी गाँव के रहनेवाले थे। दोनों का संबंध किताब-कॉपी के लेन-देन तक ही सीमित था।

तभी वह एक बूढ़े व्यक्ति के पास पहुँचा और कहा, ''काका, मैं चाँदनी से शादी करना चाहता हूँ। आप मेरी मदद करें।''

आकाश के निर्णय का सभी ने एक साथ स्वागत किया। उसका प्रस्ताव चाँदनी और उसके माता-पिता तक पहुँचाया गया। चाँदनी ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उसकी चुप्पी को लोगों ने स्वीकृति मान लिया। लेकिन उसके पिता शिवजी शर्मा ने एतराज किया। कहा कि लड़के के माता-पिता की अनुमति के बिना शादी नहीं हो सकती। चाँदनी कोई भेड़-बकरी नहीं है, जिसे बार-बार बलि का बकरा बनाया जाए।

तब आकाश ने इस घटना की सारी जानकारी मोबाइल से अपनी माँ को दी। साथ ही जल्द अपने पिता के साथ चाँदनी के घर पहुँचने को कहा। आकाश सरपंच घनश्याम प्रसाद और उनकी पत्नी गायत्री देवी का इकलौता पुत्र था। दो साल पूर्व उसकी नौकरी सेना में हुई थी। उसके विवाह के लिए कई प्रस्ताव आए थे, लेकिन उसने सबको नकार दिया था। आज बेटे की इच्छा जानकर माँ गायत्री देवी ने तुरंत इसकी सूचना सरपंच साहब को दी। दोनों अपनी मारुति से चाँदनी के घर के लिए रवाना हो गए।

हालाँकि सरपंच साहब के ओहदे व गरिमा से गाँव-जवार के लोग वाकिफ थे। ग्राम सभा में मामलों का निबटारा तो वे बखूबी कर लेते थे, बड़े-से-बड़े तथा छोटे-से-छोटे से मामले में उनका न्याय बेदाग रहता था। पंचायत उसकी प्रशंसा भी करती थी। लेकिन आज उनके दरबार में जो मामला आया था, वह खुद उनके पुत्र का था। लोग हैरत के साथ आकाश और चाँदनी के फैसले को दिल थामकर सुनने के लिए व्याकुल थे।

मारुति से उतरने के बाद दोनों सीधे मंडप में पहुँचे, जहाँ चाँदनी बैठी हुई थी। सरपंच साहब ने उससे पूछा, 'बेटी, मेरा पुत्र आकाश तुम्हारा हाथ माँग रहा है। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है?'

उत्तर देने के बजाय चाँदनी सरपंच साहब और गायत्री देवी के चरणों पर गिर पड़ी। दोनों ने उसे उठाकर गले से लगा लिया।

सरपंच साहब ने कहा, 'आज आकाश ने जो कदम उठाया है, उसकी हम कद्र करते हैं। पंडितजी मंत्रोच्चार शुरू कीजिए।'

बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी। अचानक जोरों की आवाज

के साथ आकाश जहाँ खड़ा था, ठीक उसके दस मीटर की दूरी पर हिम स्खलन हुआ। यकायक वह अपने खयालों से वापस लौटा। तभी उसी मोबाइल पर रिंग आया। उसने सेना के हेड ऑफिस का इमरजेंसी नंबर देखकर कॉल रिसीव किया। उधर से कहा गया कि सियाचिन ग्लेशियर में हिम स्खलन हुआ है, जिसमें जवानों के दबने की सूचना है। आकाश ने कहा कि मैं ग्लेशियर में हूँ और सुरक्षित हूँ। मेरे बगल में ही हिम स्खलन हुआ है। मलवे को हटाने के बाद मालूम होगा, कितने साथी उसमें फँसे हैं।

दूसरे दिन अखबारों के पन्नों पर हिम स्खलन में छह जवानों के दबने की खबर प्रकाशित हुई थी। सभी टी.वी. चैनलों पर भी यह खबर प्रसारित हो रही थी। बचाव कार्य में सेना के जवान और हेलीकॉप्टर लगे हुए थे। लेकिन कौन-कौन जवान हिम स्खलन में दबे हुए थे, इसकी खबर अभी प्रसारित नहीं हुई थी, जिससे जवानों के परिजन और अन्य लोगों में जानने की बेचैनी बढ़ गई थी।

चाँदनी ने जब टी.वी. पर यह खबर देखी तो उसके भी होश उड़ गए। इस नई मुसीबत ने उसकी दिल की धड़कनें बढ़ा दीं। तुरंत आकाश के मोबाइल पर कॉल किया। मोबाइल सेट पर रिंगटोन बजता रहा। उसने रिसीव नहीं किया। इससे उसकी व्याकुलता और बढ़ गई। उस रात की घटना याद कर उसे अपने आप पर शर्म आने लगी। जिस इनसान ने विपरीत परिस्थितियों में उसके घर की इज्जत को बचाया था। शराब के नशे में उसने आकाश पर न जाने क्या-क्या आरोप लगाए थे। शराब की बोतल से वार कर उसका सिर फोड़ दिया था। यह सब शराब के कारण ही हुआ। सारी बुराइयों की जड़ शराब है, पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। उसने संकल्प लिया कि अब वह शराब को छुएगी भी नहीं, ताकि आकाश तनाव मुक्त रह सके। उसने अलमारी में रखी शराब की बोतलों को निकाला और नाली में फेंक दिया। उसके दिल ने कहा कि न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

इस संकल्प से उसके मन का बोझ थोड़ा हलका हुआ। उसने सोचा कि आकाश उसे मिल जाए तो अपने किए की माफी माँग लूँ। उसने फिर उसे कॉल किया। रिंग होती रही, लेकिन उसने उठाया नहीं। 'कहीं हिम स्खलन में वह भी...' यह सोच-सोचकर उसकी रूह काँप उठी। तभी उसे आकाश की बताई एक बात याद आई। जब दूर संचार फेल हो जाए और संपर्क न हो तो तब सीधे हेड ऑफिस चले जाना। हेड ऑफिस की बात याद आते ही उसके पैरों में पंख लग गए। वहाँ जाने के लिए घर से पैदल ही निकल पड़ी। निराशा व हताशा में उसे यह भी विवेक नहीं रहा कि अपने चालक को बुला ले। चलते-चलते वह थक गई थी। एक चढ़ाई पर सैनिक वाहन की चपेट में आकर सड़क पर गिर पड़ी।

आषाढ़ का महीना बीत चुका था। सावन मास का प्रथम सप्ताह चल रहा था। प्रतिदिन रिमझिम बारिश होने लगी थी। भीषण गरमी से झुलसी प्रकृति रानी हरी-भरी हो गई थी। लगता था कि वह हरियाली की चुनरी ओढ़कर नव-नवेली दुलहन की तरह घूँघट काढ़े बैठी हो। आकाश में काले-काले बादल उमड़ रहे थे। उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देख चाँदनी अपने बाग में झूला झूलने निकल गई थी। जहाँ आम, कटहल, नीम, जामुन, महुआ, कदम आदि के पेड़ हवा में झूम रहे थे। पेड़ों पर बँधे झूले पर बैठी एक युवती कजरी गा रही थी। 'नाही अइले पिया निरमोहिया, सूनी लागे सेजरिया...', वहीं दूसरी सहेली, 'घिरि आए रे बदरिया, साजनवा आयो ना...' पर धीरे-धीरे थिरक रही थी।

सैनिक अस्पताल में चाँदनी के पर्स की तलाशी ली गई। उसमें एक विजिटिंग कार्ड मिला, जिसके आधार पर आकाश को घटना की सूचना दी गई। सूचना पाते ही आकाश अस्पताल पहुँचा। उसे लगा, चाँदनी के कारण ही उसकी जान बच गई, नहीं तो हिम स्खलन के दौरान सियाचिन गलेशियर में ही उसकी समाधि बन गई होती। अस्पताल में चाँदनी वार्ड तीन के पाँच नंबर बेड पर बेहोश पड़ी हुई थी। उसे साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। उसकी नाक में ऑक्सीजन की नली लगी हुई थी। डॉ. डी.के. वर्मा ने कहा कि कोई परेशानी की बात नहीं है। मरीज का एक छोटा सा ऑपरेशन होगा, तब साँस ठीक काम करने लगेगा।

दूसरे दिन ऑपरेशन के बाद चाँदनी को उसके बेड पर सुला दिया गया था। वह अनाप-शनाप कुछ बक रही थी। पास खड़ी नर्स ने आकाश को बताया कि मरीज को होश आने में लगभग दो घंटे लग सकते हैं।

चाँदनी को इस रूप में देखकर उसका मन भर आया। उसका दिल उससे बात करने के लिए बच्चों की तरह मचलने लगा। दो घंटे का एक-एक पल उसे कई वर्ष जैसा लगने लगा। वह अस्पताल की कैंटीन में आ गया। एक कोने में बैठकर समय बिताने के लिए कॉफी का ऑर्डर दिया। उसकी टेबल पर बैरा कॉफी की प्याली रख गया। एकाध चुस्की लेने के बाद उसका मन अशांत हो गया। चाँदनी की यादों में फिर बहक गया, जब वह चाँदनी से मिलने के लिए उसके मायके गया हुआ था।

आषाढ़ का महीना बीत चुका था। सावन मास का प्रथम सप्ताह चल रहा था। प्रतिदिन रिमझिम बारिश होने लगी थी। भीषण गरमी से झुलसी प्रकृति रानी हरी-भरी हो गई थी। लगता था कि वह हरियाली की चुनरी ओढ़कर नव-नवेली दुलहन की तरह घूँघट काढ़े बैठी हो। आकाश में काले-काले बादल उमड़ रहे थे। उमड़ते-घुमड़ते बादलों को देख चाँदनी अपने बाग में झूला झूलने निकल गई थी। जहाँ आम, कटहल, नीम, जामुन, महुआ, कदम आदि के पेड़ हवा में झूम रहे थे। पेड़ों पर बँधे झूले पर बैठी एक युवती कजरी गा रही थी। 'नाही अइले पिया निरमोहिया, सूनी लागे सेजरिया...', वहीं दूसरी सहेली, 'घिरि आए रे बदरिया, साजनवा आयो ना...' पर धीरे-धीरे थिरक रही थी। ठीक उसी समय मौसम ने अँगड़ाई ली। आसमान से बूँदाबाँदी होने लगी, तभी आकाश वहा पहुँचा। सहेलियों ने उसे पकड़कर चाँदनी के झूले पर बैठा दिया। चाँदनी लाजवंती की तरह लजाकर झूले से उतरकर भागना चाही थी। तभी सहेलियों ने उसे पकड़कर आकाश के बगल में बैठा दिया। ससुराल की सालियों के साथ उसकी हँसी-दिल्लगी चलती रही। हँसी-ठिठोली के बीच समय कब ठहर गया, उसे पता नहीं चला। दोनों को एकांतवास देने के लिए एक-एक कर

वहाँ से सहिलेयाँ रफूचक्कर हो गईं। बस चाँदनी के साथ आकाश रह गया था। इसी बीच एकाएक बिजली कौंधी और बादल गरजा। झमाझम पानी बरसने लगा। बादलों की गर्जना से भयभीत चाँदनी मारे डर के आकाश के सीने से चिपक गई। दोनों के वस्त्र भीगते जा रहे थे। चाँदनी के सुकोल अंगों का उभार दृष्टगोचर होने लगा था। इसी बीच आकाश ने चाँदनी से पूछा, 'कैसी हो चाँदनी ?'

''देखते नहीं सूखकर काँटा हो गई हूँ। कोई अपना रहे, तब न हाल चाल जाने।'' उसने तिरछी नजरों का बाण उस पर चलाया।

'चलो, बेगाना ही सही, अपनों का हक जताने तो कम-से-कम इस बारिश में आ गया, अब तो मुसकरा दो।' आकाश ने उसे अपने अंक में भरते हुए उसके होंठों को चूम लिया।

इसी बीच बैरा कॉफी की प्याली लेने पहुँचा। उसने आकाश से कहा कि ''साब, आपकी कॉफी तो ठंडी हो गई है, दूसरी ला दूँ।''

''ओह, नहीं-नहीं, रहने दो।'' आकाश अपने खयालों से वापस लौटा। और उसने घड़ी की ओर देखा। दो घंटे का समय पार हो चुका था। वह अस्पताल की ओर भागा।

चाँदनी होश में आ गई थी। जब आकाश उसके सामने जाकर खड़ा हुआ तो वह उसे एकटक देखने लगी। जैसे वर्षों से खोया हुआ उसका स्वर्ग यकायक मिल गया हो। आकाश को सकुशल देखकर उसकी आँखें नम हो गईं। उससे कुछ कहना चाह रही थी, 'आकाश, मुझे माफ करना। तुम्हें बहुत सताया है।' लेकिन होंठ कँपकँपाकर रह गए। पास रखी एक कुरसी पर आकाश बैठ गया। उसने चाँदनी का हाथ अपने हाथों में लेकर सहलाया। फिर माथे पर हाथ रखकर उसकी लटों से खेलने लगा। हाथों का स्पर्श पाकर मारे खुशी के चाँदनी की आँखें बरस पड़ीं।

सब्जी बगान, लिलोरी पथरा, झरिया-८२८१११
धनबाद (झारखंड)
दूरभाष : ०९४३१७३०२४४

कविता

धूप-छाया का सहज खेल

• चिराग राजा

रवि से परिणय

सुबह की प्रथम लालिमा में,
तुम्हारी स्मृति की झंकार।
स्नेही मुकुल के मधुकर की,
आशाओं को देती सार।

पथ-दर्शन को तेरे प्रिय,
निशा में स्तुति करूँ कान्हा की।
प्रात: भी तुमसे ही राधे,
हो अभिव्यक्ति अपराह्न की।

नित गगन का रवि से परिणय,
धूप-छाया का सहज खेल।
ज्यों प्रकृति की सुकुमारी से,
कुमार के अंतस का मेल।

छेड़ें वैजयंती-धारी,
अनुराग-बाँसुरी की तान।
कोकिल-सी रागिनी माया,
हृदय नगरी तक हो वितान।

अंतरंग प्रिय की अलकें,
ज्यों राधा-सौंदर्य महान्।
इस विस्तार में क्षितिज ठौर,
को क्या पाएँ कान्हा जान।

राधा मन जीतने निकली,
मोहक कृष्ण माखन लीला।
शैशव भुवन अनूप जिसमें,
सारगर्भित जीवन लीला।

भीषण अँधेरा लाते हैं

नभ के श्यामल आँचल में
इस खुले से शीतल महल में
पक्षी के कलकल कलरव में,
संध्या के मार्मिक नीरव में,
जब नक्षत्र उमड़ आते हैं,
भीषण अँधेरा लाते हैं।

द्युतिहीन सा हुए छायापथ,
जब चला ढूँढ़ने शशांक रथ।
कौमुदी आई व्रीड़ा लिये,
फिर छिप गई, निज पीड़ा लिये।
जब प्रणयी आते-जाते हैं,
भीषण अँधेरा लाते हैं।

निशि के बाद जब भोर आई,
वेदना दूजे छोर आई।
किंतु उषा के ज्योति पुंज में,
बने ओस वियोगी कुंज में।
जब प्रकृति कण हार जाते हैं,
भीषण अँधेरा लाते हैं।

मकान नं. ३-६९/१०
मुबारक नगर, निजामाबाद
तेलंगाना-५०३००३

बुद्ध का महापरिनिर्वाण

• रमेश चंदर

बुद्ध जीवन-यात्रा का ८०वाँ (४८३ ईसा पूर्व) बसंत देख चुके थे। यात्रा के पड़ाव में बुद्ध मगध साम्राज्य के राजगीर (राजगृह) के गृध्रकूट पर्वत पर साधना में लीन थे। मगध सम्राट् अजातशत्रु अपने महामात्य वर्षाकार के साथ बुद्ध की शरण में पहुँचा। अजातशत्रु बुद्ध के सामने बोल नहीं पा रहा था, क्योंकि उसे लगा कि बुद्ध को उसके द्वारा अपने पिता बिंबिसार को कारागार में डालने व बलात् राजसिंहासन हथियाने की जानकारी होगी ही और वे उससे नाराज होंगे। जब अजातशत्रु हिम्मत नहीं जुटा पाया तो उसके महामात्य वर्षाकार ने हिम्मत कर बुद्ध से अपने राजा की ओर से वैशाली को कैसे जीता जा सकता है, के बारे में सलाह माँगी। बुद्ध ने अजातशत्रु को कहा कि वैशाली को वह जीत नहीं पाएगा, क्योंकि वज्जी गणराज्य वैशाली के लोग उन्नति के संबंध में सात नियमों का पालन करते हैं। बुद्ध ने वज्जियों द्वारा माने जानेवाले सात नियमों का उद्घाटन किया और स्पष्ट बताया कि जब तक वज्जी लोग इन सात नियमों का पालन करते रहेंगे, वैशाली को जीतना असंभव है। वर्षाकार ने बुद्ध का आभार प्रकट किया और विदा ली।

महामात्य वर्षाकार के जाने के बाद बुद्ध ने आनंद को बुला राजगृह के आस-पास विहरते भिक्षुओं को इकट्ठा होने के लिए कहा और उन्हें धर्मोपदेश दिया। तत्पश्चात् भगवान् अंबलट्ठिका, नालंदा, पाटलिग्राम, कोटिग्राम, नादिका में धर्मोपदेश देते हुए वैशाली पहुँचे, जहाँ उन्होंने आम्रपाली के भोजन-दान के अनुरोध को स्वीकार किया। इसके बाद वेणु ग्राम होते हुए भगवान् वैशाली, फिर पिंडाचार पहुँचे और पिंडाचार से लौटते हुए वैशाली को लौट-लौटकर देखा और आनंद से कहा कि सुंदर व रमणीय है वैशाली और कहा कि उनका यह वैशाली दर्शन अंतिम है। तत्पश्चात् आनंद से हाल में घूमे स्थानों की चर्चा की और कहा कि उनके परिनिर्वाण का समय आ पहुँचा है। वैशाली के आस-पास जितने भी भिक्षु थे, उन्हें एकत्र करवाया और भगवान् ने धर्मोपदेश कहे, फिर उन्हें चौंकानेवाली खबर दी कि आज से तीन मास बाद उनके शास्ता परिनिर्वाण पाएँगे।

धर्म देशना के बाद आनंद व भिक्षु संघ के साथ भंडग्राम, अंबग्राम, जंबूग्राम, भोगनगर में भी धर्म कथा कहते हुए भगवान् पावा पहुँचे और चुंद के आम्रवन में विहार करने लगे। चुंद लुहार यह जानकर कि भगवान् उसके आम्रवन में विराजमान हैं, वहाँ पहुँचा और उनसे अगले दिन भोजन के निवेदन को स्वीकार करने के लिए कहा, जिसे बुद्ध ने स्वीकार कर लिया। चुंद ने भगवान् के भोग के लिए सूकर-मद्दव तैयार करवा भगवान् को भोजन की सूचना दी। चुंद का भोजन खाकर भगवान् को पेट दर्द ने घेर लिया। सामने बैठे चुंद को देख आनंद से भगवान् ने कहा कि बाद में कोई चुंद लुहार को उलाहना न दे। चुंद को कहा कि वह बड़ा भाग्यशाली है कि उसके शास्ता उसके पिंड पात का सेवन कर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। भीषण पीड़ा सहते हुए बुद्ध ने शांत भाव से आनंद से कुशीनारा चलने को कहा।

गोधूलि की वेला हो चुकी थी। मार्ग से हट भगवान् ने आनंद से शाल वन में ही दो शाल वृक्षों के बीच में लेटने के लिए स्थान बनाने के लिए कहा। बुद्ध उत्तर दिशा में सिर कर सिंह शैया से लेट गए। लेटे हुए भगवान् ने आनंद से कहा कि वे आज रात परिनिवृत्त होंगे। आनंद बुद्ध के ऊपर पंखा झलने लगा, किंतु बुद्ध ने उन्हें पंखा झलने से रोक दिया। आनंद ने सोचा कि संभवतः बुद्ध नहीं चाहते कि उनके सूर्यास्त के मनोहारी दृश्य में बाधा पड़े और वह भारी मन से वहाँ से दूर चला गया। खूँटी पकड़कर बिलख-बिलखकर रोने लगा। बुदबुदाने लगा कि आज वह अनाथ हो जाएगा, क्योंकि आज उसके अनुकंपक-मार्गदर्शक का परिनिर्वाण हो रहा है। अरे, अभी तो वह आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त भी नहीं कर पाया है और उसके पूर्व ही उसके शास्ता (मार्गदर्शक) विदा हो जाएँगे।

भगवान् ने भिक्षुओं को बुलाया और पूछा कि आनंद कहाँ है। एक भिक्षु ने कहा कि उसने आनंद को वृक्षों के पीछे रोते देखा है। भगवान् ने आनंद को बुलवाया और कहा, ''आनंद! मत शोक करो, मत रोओ। आनंद! दुःखी मत होओ। सभी धर्म अनित्य हैं। जन्म के साथ मरण, विकास के साथ ह्रास और मिलन के साथ बिछोह अपरिहार्य रूप से जुड़ा हुआ है। आनंद! मैं तुम्हारा आभारी हूँ कि तुमने मेरी इस धर्मयात्रा में अनेक वर्षों से मेरी सहायता की है। आनंद! थोड़ा सा और अभ्यास करो तो तुम भी जन्म-मृत्यु के बंधन काट सकोगे; दुःख से उबर सकोगे।'' फिर बुद्ध ने अन्य भिक्षुओं को, आनंद ने किस-किस प्रकार से सेवा की है, के बारे में बताया। बुद्ध के वचन सुन आनंद बहल गया

और आँसू पोंछ डाले।

आनंद ने बालबुद्धि से सोचा कि अगर आज की घड़ी किसी प्रकार टल जाए तो शायद भगवान् का परिनिर्वाण भी टल जाएगा और उसे फिर भगवान् की छाँव पूर्व की भाँति लंबे समय के लिए मिलती रहेगी। फिर आनंद ने आँसू पोंछकर भगवान् से कहा कि वह इस छोटी जगह कुशीनारा में परिनिवृत्त न होवें। आनंद ने कहा कि आपके लिए मिट्टी की झोंपड़ियों वाले छोटे से कस्बे कुशीनारा से बेहतर और भी बड़े नगर चंपा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कौशांबी, वाराणसी हैं। आनंद ने गिड़गिड़ाते हुए जिद की कि भगवान् बड़े नगर में परिनिर्वाण करें, जिससे अधिक-से-अधिक लोग आपके दर्शन कर सकें। आनंद को समझाते हुए भगवान् ने बताया कि भले ही कुशीनारा आज छोटा सा कस्बा है, परंतु पूर्व में यह महत्त्वपूर्ण नगर था और राजा सुदर्शन की कुशावती नामक राजधानी भी रहा है। भगवान् ने आनंद से कहा कि वह मल्लों को कहे कि आज रात के अंतिम प्रहर में उनके तथागत का परिनिर्वाण होगा और कहे कि वे पीछे अफसोस न करें कि उनके क्षेत्र में तथागत का परिनिर्वाण हुआ, परंतु वे अंतिम काल में उनका दर्शन न कर पाए।

आनंद कहे अनुसार चीवर पहन, पात्र ले कुशीनारा पहुँचे। कुशीनारा निवासी किसी काम से संस्थागार में पहले से ही जमा थे। वहीं आनंद ने मल्लों को भगवान् के परिनिर्वाण प्राप्त किए जाने की सूचना दी। कुशीनारावासी परिनिर्वाण की खबर सुनकर रोने लगे, बिलखने लगे। कोई कटे वृक्ष समान धड़ाम से गिरता था तो कोई बाल नोचता था; कोई दूसरे की बाजू पकड़कर रोता था तो कोई सिर पटक-पटककर रोता था। फिर सभी मल्ल लोग बुद्ध के पास शाल वन पहुँचे।

आनंद ने एक बार फिर परिनिर्वाण की घड़ी टालने का असफल प्रयास किया। सोचा कि यदि वह मल्लों को एक-एक करके भगवान् की वंदना करवाएगा तो भगवान् मल्लों से आनंदित भी होंगे और इस सबमें कदाचित् इतना समय लग जाए कि बिना परिनिर्वाण के यह रात बीत जाए। तब आनंद ने ऐसा ही किया और मल्लों से भगवान् की वंदना करवाई, परंतु उसके इस उपाय से रात्रि का प्रथम याम ही बीत सका।

उसी समय सुभद्र नामक परिव्राजक भी पहुँच गया और उसने आनंद से कहा कि वह सबके मार्गदर्शक, जो सब दु:खों का अंत करनेवाले हैं, के दर्शन करना चाहता है। आनंद ने यह समझ कि सुभद्र धर्म पिपासा के बहाने दिक् करने आया है, फफकते हुए उससे कहा कि बुद्ध से मिलने का यह समय उचित नहीं है। बुद्ध ने आनंद और सुभद्र की बातचीत सुन ली। बुद्ध ने सुभद्र को स्रोतापन्न पा आनंद से कहा कि वह सुभद्र को मिलने से न रोके, क्योंकि उनका जीवन तो संपूर्ण जगत् के हित के लिए है। बुद्ध ने सुभद्र के प्रश्नपूर्ण काश्यप, मक्खलि गोसाल इत्यादि को संबोधि मिली या नहीं के उत्तर में कहा कि पूर्ण काश्यप, मक्खलि गोसाल, अजित केशकंबिल, पकुध कच्चायन, संजय बेलट्ठिपुत्त और निगंठनाथ पुत्त को संबोधि मिली या नहीं मिली के जानने से बेहतर यह जानना है कि उसे संबोधि मिल सकती है या नहीं और कहा कि उसे संबोधि अवश्य मिल सकती है। बुद्ध ने सुभद्र को आष्टांगिक मार्ग की

आयकर कानून के विशिष्ट ज्ञान के साथ-साथ कानून की अन्य विधाओं (यथा संवैधानिक, विधि, उपभोक्ता कानून) में विशेष दखल। विधिक विषयों पर व्याख्यान देने के साथ-साथ लेख लिखते रहते हैं, जो समय-समय पर जानी-मानी विधि रिपोर्ट्स में प्रकाशित होते हैं। संप्रति भारत सरकार, आयकर विभाग में आयकर आयुक्त।

देशना दी। सुभद्र ने महामुनि बुद्ध का उपदेश सुन अपने पूर्व मत का परित्याग कर दिया। इस प्रकार बुद्ध ने उसे प्रवृज्या दे अपना अंतिम शिष्य बनाया। सुभद्र ने सोचा, उसके लिए उचित नहीं कि वह बुद्ध की निर्वाण-प्राप्ति को देखे। बुद्ध को अभिवादन करते ही वह बुद्ध के निर्वाण से पूर्व ही वहाँ से चला गया।

रात्रि का पूर्व भाग बीत जाने पर बुद्ध ने भिक्षुओं को पूछा कि यदि किसी को दु:ख आदि चार सत्यों के उनके दिए उपदेश के बारे में कोई शंका हो तो वे विश्वासपूर्वक कहें और अपने संशय दूर करें। अपने इन वचनों को बुद्ध ने तीन बार दोहराया। अनिरुद्ध ने बुद्ध से कहा कि किसी भी भिक्षु को उनके बताए चार सत्यों के बारे में कोई शंका नहीं, फिर भी वे सब हृदय से चिंतित हो रहे हैं कि वे उन्हें छोड़कर जा रहे हैं। बुद्ध ने उन भिक्षुओं का चित्त दृढ करने के लिए सस्नेह कहा कि 'युगपर्यंत रहने पर भी प्राणी का विनाश होता ही है, इसलिए पारस्परिक मिलन जैसी कोई स्थायी वस्तु नहीं।'' आगे बुद्ध ने कहा कि ''उन्होंने अपना और दूसरों का मार्ग पूरा कर लिया है, अत: अब और जीवित रहने का कोई लाभ नहीं, जिन्हें दीक्षित करना था, वे सब स्रोतापन्न हो धर्म मार्ग पर आरूढ़ हो गए हैं। जन्म है तो मृत्यु सुनिश्चित है। अत: मुक्ति प्राप्त करने के पथ पर परिश्रम कर आगे बढ़े, उनका धर्म भिक्षुओं की परंपरा से लोगों के बीच रहेगा। सभी संस्कार नाशवान हैं, अप्रमाद के साथ जीवन लक्ष्य को पूर्ण करो।'' और फिर आँखें मूँद लीं।

बुद्ध अपनी अंतिम बात कह चुके थे। बुद्ध प्रथम ध्यान से शुरू कर क्रम से चतुर्थ ध्यान में आए और फिर वहाँ से निकल नश्वर शरीर त्याग अनंत शून्य में अपार शांति अनुभव करने चले गए। पृथ्वी काँपी, शाल पुष्प बरसे। चंद्रमा ने दिन की सी चमक बिखेरी। उपवन निश्चेत हो गए, गोया सोये हों। कुछ भिक्षु जमीन पर लोटकर रोने और चिल्लाने लगे कि अब कौन उन्हें अपनी शरण में लेगा, तो कुछ शांत भाव से भगवान् की शिक्षाओं को दुहराने लगे।

अनिरुद्ध ने भिक्षुओं को समझाया और प्राणायाम करने को कहा। बाकी रात आनंद ने बुद्ध के जीवन के प्रसंगों की चर्चा की। बुद्ध के उपदेशों को याद करते-करते रात कब बीत गई, पता भी नहीं चला। बुद्ध के नश्वर शरीर की नाचते-गाते पुष्पगुच्छ अर्पित करते, संगीत वाद्य-बजाते इत्यादि प्रकार से चक्रवर्ती राजा के समान अंत्येष्टि की गई। कुछ दिनों तक मल्लों ने बुद्ध की शेष रही धातुओं की पूजा की।

बुद्ध की धातुओं को लेने के लिए सभी पड़ोसी राज्यों—मगध, वैशाली, कपिलवस्तु, रामग्राम, अलकप्प, वेद-दीप के राजा आ धमके।

राजा अपनी-अपनी दलीलें (यथा मेरे राज्य में तथागत का जन्म हुआ था या फिर कि बुद्ध ने मेरे राज्य में बुद्धत्व प्राप्त किया था इत्यादि) दे धातुओं पर एकाधिकार जमाने लगे। मल्लों ने बुद्ध की धातुओं के प्रति भक्ति तथा उसके 'उनके पास होने' का अभिमान करते हुए उन्हें देने से मना कर युद्ध करना पसंद किया। इन सात राज्यों की सेना से घिरा पाकर घोड़ों, हाथियों एवं दुंदुभियों की ध्वनि से कुशीनारा निवासी आक्रांत हो गए। निवासियों ने भी हिम्मत दिखाई और वे स्वयं युद्ध हेतु तत्पर व हथियारों से लैस हो गए। युद्ध हुआ ही जाता था कि द्रोण ब्राह्मण ने सभी को युद्ध से होनेवाली बरबादी व निरर्थकता से अवगत कराया और बताया कि किस प्रकार मल्लों का युद्ध उस महाकारुणिक मुनि, जिसने जीवनपर्यंत अहिंसा व करुणा का पाठ पढ़ाया, की शिक्षाओं के प्रति असम्मान दिखाना होगा। द्रोण ने बताया कि जो व्यक्ति तीरों से जीत लिये जाते हैं, वे फिर उठ खड़े हो सकते हैं, किंतु जो शांतिपूर्ण उपायों से जीते जाते हैं, उनका विचार नहीं बदलता है। अनेकों प्रकार से युद्ध की निरर्थकता के उदाहरण दे मल्लों को धातु देने के लिए राजी कर लिया। युद्ध टल गया। बुद्ध की धातुओं को मल्लों ने आठ भागों में बाँट एक भाग स्वयं के लिए रख शेष सात भाग युद्ध के लिए तत्पर हुए सात राजाओं को दे दिए। इस प्रकार मल्लों से सम्मानित हो सातों राजा लौटे और उन्होंने अपने-अपने नगर में उन पवित्र धातुओं को रखने के लिए कुल सात स्तूप बनवाए। द्रोण ब्राह्मण ने भी अपने देश में स्तूप बनाने की चाह से अपने हिस्से में कुंभ, जिसमें धातुएँ रखी थीं, लिया। पिप्पलीवन के मौर्यों ने बची हुई राख ली और इस प्रकार नवें व दसवें स्तूप बनवाए तथा बुद्ध मार्ग का स्मरण करने लगे।

डी-७२, सेक्टर-१२
नोएडा (उ.प्र.)
दूरभाष : ९८१८३८८००९

दोहे

दर्पण तुम मेरा बनो...

• कुमार गौरव अजीतेंदु

कहे अँगूठा, उँगलियो! आ जाओ सब यार।
गले लगाएँ लेखनी, शिक्षित हो परिवार॥

गेंदा हुआ गुलाब-सा, निखरा लगे स्वरूप।
अगहन को झुठला रही, प्रिया गुनगुनी धूप॥

ये गुड़हल क्यों दिख रहा, आज अधिक ही लाल।
लाजवंत से शीत ने, पूछ लिया क्या हाल॥

तारे जल्दी सो गए, जैसे आई रात।
चाँद ऊबता सोचकर, किससे अब हो बात॥

आप अगर स्वीकार लें, बाती का पदभार।
दीया बनने के लिए, मैं सहर्ष तैयार॥

मान गया मेरा हृदय, जब पत्थर की सीख।
दु:ख अपने अस्तित्व की, लगा माँगने भीख॥

कौन भक्त किसका यहाँ, किसको क्या परवाह।
मेरे देव सशक्त, सो सबको मुझसे डाह॥

इक गठरी में बाँधकर, अपनी-अपनी पीर।
चलो फेंक आएँ कहीं, मन हो रहा अधीर॥

बार-बार मुझसे कहे, गहराती ये रात।
सोजा साथी, चाँद से अब कल करना बात॥

मैं अब तक 'मैं' हूँ प्रिये, आप अभी तक 'आप'।
खोट भावना में कहीं, या कोई अभिशाप॥

कभी हठी शासक कभी आज्ञाकारी शिष्य।
वर्तमान की गोद में, लीला रचे भविष्य॥

इस समस्त ब्रह्मांड में, कहीं न ऐसी ठौर।
मातु-पिता की छाँव में, संतानें सिरमौर॥

अरे भई! अब क्यों भला स्वयं सँवारूँ केश।
अम्माँ-बाबा आ गए, मैं फिर बना विशेष॥

जीवन भर की संपदा, बचपन की वह आस।
माता कह दे तो पिता, ले आएँ आकाश॥

माँ से जब कहला दिया, तब चिंता निर्मूल।
उगवा आएँगे पिता, चंदा पर भी फूल॥

दर्पण तुम मेरा बनो, देखूँ, करूँ सिंगार।
इकलौता ये स्वप्न भी, हुआ नहीं साकार॥

शाहपुर, दानापुर (कैंट)
पटना-८०१५०३ (बिहार)
दूरभाष : ९६३१६५५१२९

राम झरोखे बैठ के

भ्रष्टाचार के किले की प्रेरक कथा

• गोपाल चतुर्वेदी

कुछ मानते हैं, कुछ नहीं मानते हैं। हर काम-धंधे का मंत्रालय एक अभेद्य किले के समान है। इसमें प्रवेश के विशेष गुर हैं और इनके पेशेवर गुरूकंटाल भी।

वह खुश है। आज पहला दिन है, जब उसे लग रहा है कि पेट्रोल पंप पाने के लिए उसकी भाग-दौड़-जुगाड़ और संबद्ध कमेटी के सदस्यों पर किए व्यक्तिगत निवेश सार्थक सिद्ध हुए हैं। उसे याद आता है कि मंत्री को पकड़ने में उसे कितनी कवायद करनी पड़ी थी। अपने निजी अनुभव से वह जानता है कि आदर्श एक ऐसा ढोल है, जो अंदर से जितना रीता होता है, उतनी ही जोर से बजता है। अब कोई उससे उसूल के उपदेश झाड़े तो वह तत्काल शक का शिकार होता है। कहीं यह सफेदपोश डकैत तो नहीं है? इक्कीसवीं सदी में इनकी संख्या में उल्लेखनीय इजाफा हुआ है। उसे लगता है कि अब जो जितनी काली करतूतें करता है, उतने ही लकदक कपड़ों में सजा हुआ है।

यह विशेषज्ञता का जमाना है। इसलिए हर मंत्रालय में काम करवाने को विशेषज्ञ संपर्क सूत्र हैं। कुछ ऐसों को बिचौलिया भी कहते हैं। इस शब्द से अपमान की बू आती है। ऐसे महानुभाव सम्मान के पात्र हैं। अफसर बदलें, मंत्री आएँ-जाएँ, इनको फर्क नहीं पड़ता है। इस चलताऊ व्यवस्था में इनकी हैसियतें टिकाऊ हैं। इनकी खासियत है कि ये किसी दल के सगे नहीं हैं। बस मंत्रालय विशेष से जुड़े हैं। प्रजातंत्र में सियासी दलों की सत्ता का क्या भरोसा? एक चुनाव में जीतें तो दूसरे में हारें। सत्ता की इस अस्थायी व्यवस्था में यदि कुछ स्थायी है तो यही विशेषज्ञ हैं। मंत्रालय के सचिव से लेकर बाबू तक, इनकी पहुँच है। कुछ इनकी तुलना ऊपरवाले से भी करते हैं। वह किसी को नजर आए, न आए, पर सृष्टि की जिम्मेदारी उसी के अदृश्य कंधों पर है। कुछ की मान्यता है कि इसी प्रकार कौन से महत्त्वपूर्ण निर्णय की फाइल के फूल खिलें या उसके पहले ही मुरझाएँ, यह इनकी इनायत पर निर्भर है।

वह पेट्रोल पंप पाने के चक्कर में एक सांसद के पत्र से लैस मंत्रालय की परिक्रमा कर रहा था। तभी एक परिचित ने उस पर कृपा की—''देखो भैया! आप इसी प्रकार एक से दूसरी सीट तक घूमते रहोगे। सब आपको आश्वासन देंगे। होना-जाना कुछ नहीं है। हमारे मित्र वर्माजी की यहाँ तूती बोलती है। हम उनसे आपको मिलवा देते हैं। शायद आपकी समस्या का हल निकल आए!''

अंधा क्या चाहे, दो आँखें। वह वर्मा के दर्शनार्थ उनके वसंत कुंज के शानदार आवास पर जा धमका। ऐसे व्यक्ति हमेशा व्यस्त पाए जाते हैं। वर्मा इस नियम के अपवाद क्यों बनते? आध घंटे बाद वह अवतरित हुए। तब सफारी सूट का जमाना था। हर प्रभावी व्यक्ति की भाँति वर्मा भी उसी में सजे थे। दीगर है कि कंधों और कमर के बीच एक गोलाकार उभार सी झाँकती उनकी तोंद दर्जी की कुशलता को चुनौती देती, बटनों के बंधन से मुक्ति को मचल रही थी। चपटी नाक के ऊपर टिके चश्मे के पीछे से उनकी आँखें सामने खड़े असामी की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाने में सक्रिय थीं। वर्मा ने बैठने का इशारा किया और परिचित से बोले, ''कहिए!''

उसने समस्या बताई। सांसद का पत्र उनके निरीक्षण को प्रस्तुत किया। ''ऐसे रुटीन पत्र तो मंत्री को आते ही रहते हैं,'' उन्होंने उसकी महत्ता पर पानी फेरा। फिर ढाढ़स भी बँधाया, ''पेट्रोल पंप सत्ताधारी दल अपनी पार्टी के वफादारों को देता है, आपकी राजनीति में रुचि है?'' उन्होंने जानना चाहा। वह क्या करता? उसने सच कबूला, ''रुचि तो नहीं है, पर पत्र सत्ता दल के सांसद का ही है।'' ''चलिए, इसी से काम चलाना पड़ेगा।'' फिर वह मतलब पर आए, ''खर्चे-पानी का एक लाख लगेगा। यदि आप देने को राजी हैं तो आगे कुछ किया जाए।'' उसने एक-दो दिन का समय माँगा। मरता क्या न करता। उसने पैसे जुटाए। परिचित को पकड़ा। एक-दो हजार उस पर न्योछावर किए। फिर उसके साथ सफारी सूट के घर जा धमका। उन्होंने नोटों के बंडल पर दृष्टि डाली। फोन घुमाया। एक पक्षीय संवाद सुनाई दिया, ''ठीक है सर! कल दस बजे हाजिर होते हैं।''

दूसरे दिन वह सफारी के पीछे-पीछे मंत्रीजी की प्रतीक्षा कक्ष में दस बजे से हाजरी बजा रहा था। दो घंटे बाद सफारी की बारी आई। वह सांसद का पत्र लेकर अंदर गया और दस मिनट बाद मुसकराता बाहर आ गया, ''हो गई फतह'' कहते हुए उन्होंने सांसद के पत्र पर मंत्रीजी के हस्ताक्षर दिखाए और उसे वहीं बैठा छोड़कर निजी सचिव के कक्ष में घुस लिये। वहाँ से लौटे तो मुसकान यथावत् थी। ''चलिए,'' कहकर वह बाहर निकले और बोले, ''काम तो हुआ समझिए, बस इतनी ही राशि और चाहिए। बाकी अधिकारी भी हैं। उन्हें भी हिस्सा देना है।'' वह निराश तो हुआ था, पर नाव में छेद हो ही चुका था, अब डूबने से क्या

फायदा? इतनी ही रकम में किनारे लगने के लालच ने प्रेरणा का काम किया। फिर उसने रकम जुटाई, कुछ उधार लेकर कुछ पत्नी के जेवर बेचकर। सफारी ने इस बार समय नहीं गँवाया। उसे साथ लेकर मंत्रालय तो गए, पर उसे 'जनपथ' की कॉफी शॉप में प्रतीक्षा करने का निर्देश देकर ये फुट लिये। वह लौटे तो उनके चेहरे की मुसकान पहले जैसी चिपकी हुई थी। उसे आभास हुआ कि जब यह घर से बाहर निकलते हैं तो हो न हो कोई उनके होंठ बाएँ-दाएँ बराबरी से खींचकर सिल देता है। यह भी संभव है कि अंदर कोई 'चिप' फिट हो, जो इस मशीनी मुसकान की नियंत्रक और जनक है। अंदर उल्लास या खुशी होना जरूरी नहीं है, पर प्रसन्नता के प्रतीक दाँत तो दिखना ही दिखना। आते ही उन्होंने कॉफी की माँग की, फिर उसे सूचित किया, ''आपका लाइसेंस मिलना तो तय है, बस संबद्ध कमेटी की औपचारिक मंजूरी की दरकार है। यही सप्ताह-दस दिन में हो जाना चाहिए। कमेटी में आठ-दस सदस्य हैं। उनको भी चढ़ावे का दस्तूर है। ज्यादा नहीं, एक लाख का खर्च है। कल-परसों तक प्रबंध कर दें, तो अगली बैठक में केस स्वीकृत हो जाएगा।''

किला भेदक की इस नई माँग से उसे दिल का दौरा पड़ते-पड़ते बचा। भ्रष्टाचार का किला है कि चक्रव्यूह? एक बार पैसा देकर अंदर घुसे तो जेब कटाकर ही बाहर निकासी संभव है। उसने बेमन से कॉफी-शॉप का बिल चुकाया। 'सफारी' तब तक चीज बॉल्स की एक प्लेट चट कर चुका था। चलते-चलते उसने चेताया, ''एक-दो दिन में आइए और हम यहीं बैठकर आपके पेट्रोल पंप पाने का उत्सव मनाएँगे।''

वह अवसाद के भँवर में डूबता-उतराता रहता, यदि हनुमान पर उसकी आस्था काम न आती। इस महानगर में मंदिर वह कहाँ खोजता? उसने कमरे में कुरसी पर बैठ, ध्यानमग्न होकर हनुमान चालीसा का पाठ किया। बाह्य स्थिति वैसी की वैसी रही। क्या बदलाव आता? सामने कीड़े का संघर्ष समाप्त तो नहीं, पर कम जरूर हो चुका है। कौन कहे, मकड़ी अपनी सफलता पर सफारी सी इतरा रही हो? एक पल को उसके मन में शंका आई, फिर खुद-ब-खुद आश्वस्ति भी आ गई। बजरंगबली की कृपा है, कार्य सिद्ध होकर रहेगा। उसने पत्नी को फोन मिलाकर भारतीय पुरुषों की मानसिकता के विपरीत आभार जताया।

सफारी के पीछे-पीछे वह भी विदा हो लिया, इस नए संकट का हल सोचते। अब बिक्री योग्य क्या वस्तु है? इतने आगे आकर पीछे भी कैसे लौटे? क्या गाँव की पुश्तैनी जमीन के बदले कर्ज ले? पर बैंक भी लोन आसानी से कहाँ देता है? उसे बेचने का विचार भी व्यर्थ है। कहाँ उसके लिए तत्काल ग्राहक मिलेगा? होटल पहुँचकर उसने पत्नी को फोन मिलाया। समस्या बताई। क्या मायके से कर्ज मिलेगा? पत्नी ने अपने पिता से बात की। उनकी गैस की एजेंसी और कपड़ों की दुकान है। संपन्न परिवार के गोदाम और मकान भी हैं। पचास-साठ हजार प्रति माह तो इन्हीं की आय है। कैश के लेन-देन से उन्हें क्या आपत्ति होती? दो-तीन लाख तो हारी-बीमारी के लिए घर के सेफ में पड़ा ही रहता है। उसकी दिक्कत दूसरी थी। उनके आगे हाथ फैलाकर वह आत्मसम्मान से समझौता कर रहा है।

भ्रष्टाचार के किले में प्रवेश ने उसे एक प्रकार से निर्वस्त्र कर दिया है। पहले सफारी से याचक बनकर, फिर अपने ससुर से। उन्होंने उसको इच्छित राशि अपने बेटे के हाथ मेरठ से दिल्ली भेज दी। काली कमाई की ऐसी होटल-डिलीवरी, क्या पता, तब के समय एक आम वारदात रही हो? साले ने जब पैर छूकर लिफाफा उसे सौंपा तो वह आत्मग्लानि से ऐसा ग्रसित था कि उससे आँख भी नहीं मिला पाया। जब तक उसे बैठने के लिए कहता, ''जल्दी घर पहुँचना है'' कहकर वह जा चुका था। उसने भ्रष्टाचार के दुर्ग के द्वारपाल को फोन मिलाया तो वह हमेशा की तरह व्यस्त थे, ''आज तो देर हो जाएगी, कल सुबह आ जाएँ।'' उसे शंका हुई कि वह उसे टाल तो नहीं रहे हैं?

सस्ते होटल के कमरे में मकड़ी के जाले में फँसे एक कीड़े पर उसकी दृष्टि पड़ी। वह और परेशान हो उठा। उसे महसूस हुआ कि मंत्रालय के मकड़जाल में कहीं सफारी ने उसे फँसा तो नहीं दिया? बस एक अंतर है। कीड़ा बिलबिला रहा है बाहर आने को। बिलबिला तो वह भी रहा है, पर बाहर आने को नहीं, काम सिद्ध होने को। नहीं तो वह कहीं का नहीं रहेगा। जमा पूँजी गँवाकर वह उधार में डूब चुका है। पेट्रोल पंप मंत्रालय के रेगिस्तान की मृग-मरीचिका तो नहीं है, जब तक वह पास पहुँचता है, वह दूर चली जाती है। कहीं सफारी का सफेद पोश ठग उसे ठग तो नहीं रहा है? बार-बार काम होने की बात करता है और फिर किसी नई वसूली की प्रक्रिया में उलझा देता है।

वह अवसाद के भँवर में डूबता-उतराता रहता, यदि हनुमान पर उसकी आस्था काम न आती। इस महानगर में मंदिर वह कहाँ खोजता? उसने कमरे में कुरसी पर बैठ, ध्यानमग्न होकर हनुमान चालीसा का पाठ किया। बाह्य स्थिति वैसी की वैसी रही। क्या बदलाव आता? सामने कीड़े का संघर्ष समाप्त तो नहीं, पर कम जरूर हो चुका है। कौन कहे, मकड़ी अपनी सफलता पर सफारी सी इतरा रही हो? एक पल को उसके मन में शंका आई, फिर खुद-ब-खुद आश्वस्ति भी आ गई। बजरंगबली की कृपा है, कार्य सिद्ध होकर रहेगा। उसने पत्नी को फोन मिलाकर भारतीय पुरुषों की मानसिकता के विपरीत आभार जताया। अलीगंज के मंदिर में कार्य-सिद्धि पर प्रसाद चढ़ाने का संकल्प लिया और बाहर निकल पड़ा पास के ढाबे में खाना खाने। क्या खाने और अवसाद का कोई सीधा रिश्ता है? ढाबे की दाल मखनी और नान खाकर भूख तो मिटी ही मिटी, दुश्चिंताएँ भी समाप्त हो गईं। कमरे की घुटन से बाहर की ताजी हवा के असर से कौन इनकार कर सकता है। उसे खयाल आया कि अगर मियाँ मजनू भी किसी ढाबे में खाते तो शायद 'लैला-

लैला' न चिल्लाते!

सुबह वह तैयार होकर सफारी के आवास पर जा धमका। अनिवार्य प्रतीक्षा के बाद वह व्यस्तता का दिखावा करते आए तो उसने ब्रीफकेस खोलकर लाख का लिफाफा उन्हें सौंपा। ''कब तक पंप का आदेश मिल पाएगा,'' उसने जानना चाहा। उन्होंने विश्वास की मुद्रा में उसे भरोसा दिया, ''बस अधिक-से-अधिक दस-पंद्रह दिन। सरकारी काम-काज में वक्त तो लग ही जाता है। वह तो हम पीछे पड़े हैं, वरना तो कितनी अर्जियाँ कूड़ेदान के हवाले हो जाती हैं, कितनी दीमक के।'' वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बने। साथ ही उन्होंने यह भी सलाह दी कि अब वह निश्चिंत होकर घर जाए, फोन पर संपर्क हमेशा संभव है। आराम से बैठिए घर पर, दौड़-भाग तो हम कर ही लेंगे।''

दिल्ली से लखनऊ पहुँचकर भी उसे चैन नहीं आया, जिसका पैसा फँसा हो, उसे चैन कहाँ? फोन पर संपर्क और आश्वासन से उसे आश्वस्ति नहीं हुई। वह ठीक दस दिन बाद दिल्ली जा धमका। सफारी ने उसे परंपरागत प्रतीक्षा के बाद दर्शन दिए और स्थिति समझाई, ''बैठक हो चुकी है। कार्य-वृत्त बनना है और आपको पत्र भेज दिया जाएगा, मंत्री की चिड़िया बनने के बाद।'' उनकी खामोशी से वह सहमा। कहीं फिर यह और पैसे की माँग न कर बैठे? ''अभी आठ-दस दिन और लगेंगे। पत्र आपके पास रजिस्टर्ड डाक से चला जाएगा।'' उन्होंने पत्र की समय सीमा बताई। ''यों यदि आप सप्ताह-दस दिन बाद आएँ तो आपको प्रतिलिपि दिलवा देंगे।'' वह उम्मीद लेकर आया था और उसी के साथ वापस लौट गया—घर के बुद्धू घर को आए की मुद्रा में। घर पहुँचकर भी वह उद्विग्न ही अधिक रहा। उसे बार-बार मृत्युदंड पाए कैदी का ध्यान आता। उसका वक्त कैसे कटता होगा? राम-राम करते दस दिन बीत ही गए। वक्त को कौन रोक पाया है?

वह फिर दिल्ली जा टपका। इस बार वह सशंकित था। कहीं सफारी फुर्र न हो लिया हो? क्या पता पंप आवंटन का पत्र बना भी कि नहीं? ऐसे लोग अकसर केवल बातों की कमाई खाते हैं। कौन कहे, सच क्या हो? वह अखबारों में कई 'फ्रॉड' और ठगी के किस्से पढ़ चुका था। वह इसी मनोस्थिति में बैठा था कि सफारी अपनी स्थायी मुसकान के साथ पधारे, ''चलिए, आपको एलॉटमेंट लेटर की कॉपी दिलवा दें।'' वह इस बार मंत्रालय के किले की कैंटीन में था। उसे वहाँ बैठाकर सफारी बाबू को बुलाने चले गए थे। वह लौटे तो बाकायदा पत्र की प्रतिलिपि लिये, बाबू के साथ। ''यही हैं लखनऊ के गुप्ताजी। इन्हीं के काम की मैं आपको याद दिलाता रहता था।'' जब बाबू ने लिफाफा उसे सौंपा तो सफारी ने निर्देशित किया, ''भाई गुप्ताजी! इन्हें मिठाई खाने के पैसे तो दीजिए'' और पाँच हजार रुपए उसे दिलवाकर ही माने। दूसरे के पैसे से लोग कुछ अधिक ही उदार हो जाते हैं। उसे लगा कि यह भेंट कुछ न्यायसंगत है। उसे यह भी लगा कि वर्तमान समय में वचन के पक्के सिर्फ बिचौलिये और चोर-हत्यारे हैं।

कुछ कम अक्लों की मान्यता है कि सरकार का किला अब तक सलामत सिर्फ चंद ईमानदार कर्मचारियों-अधिकारियों के कारण ही है। यू.पी. पुलिस के ऐसे ही किसी अधिकारी ने घटतौली की चिप का भंडा-फोड़ किया होगा। गुप्ताजी उदास हैं। घटतौली के सारे कलाकार एक मत हैं कि उनके साथ घोर नाइनसाफी हुई है। पंप ले-दे के ही पाया था तो उसकी आमदनी में बेजा दखल क्यों? सरकार का कर्तव्य है कि वह सदाचार के अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण न करे, भ्रष्ट बहुसंख्यकों के रहते हुए। जब से एफ.आई.आर. का सुना है, गुप्ताजी अस्पताल में हैं। उनका रक्तचाप अनियमित है। कभी खतरनाक स्तर तक बढ़ता है, कभी एकदम घटता है।

एक पंप ने उसका जीवन बदल दिया है। विज्ञान की प्रगति का वह आभारी है। वही शहर का ऐसा कोलंबस है, जिसने सर्वप्रथम घटतौली की चिप का प्रयोग किया है। इसी चिप का कमाल है कि पंप का मीटर भले दस लीटर दिखाए, गाड़ी में भरा कुल नौ लीटर ही जाता है। डीजल से लेकर पेट्रोल तक बचत ही बचत है। कोई उसके घर के सामने से सुबह या शाम गुजरे तो वहाँ भजन गूँजते हैं। ऐसों के घर में अकसर भजन, भ्रष्टाचार और सुरापान का सुखद सहअस्तित्व रहता है।

उसने करप्शन के किले में घुसकर एक ही पाठ पढ़ा है कि यही आदर्श जीवन पद्धति है। जब से उसकी दोगली आमदनी दुगुनी हुई है, उसने स्वयं ही माप-तौल विभाग से लेकर निरीक्षण पर पधारे तेल कंपनी के अधिकारियों की चढ़ावा राशि में यथोचित वृद्धि की है। उसे यकीन हो गया है कि भ्रष्टाचार देश की रगों में लहू की तरह दौड़ रहा है। यदि कहीं उसकी गति थमी तो प्रगति भी ठप न हो जाए?

कुछ कम अक्लों की मान्यता है कि सरकार का किला अब तक सलामत सिर्फ चंद ईमानदार कर्मचारियों-अधिकारियों के कारण ही है। यू.पी. पुलिस के ऐसे ही किसी अधिकारी ने घटतौली की चिप का भंडा-फोड़ किया होगा। गुप्ताजी उदास हैं। घटतौली के सारे कलाकार एक मत हैं कि उनके साथ घोर नाइनसाफी हुई है। पंप ले-दे के ही पाया था तो उसकी आमदनी में बेजा दखल क्यों? सरकार का कर्तव्य है कि वह सदाचार के अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण न करे, भ्रष्ट बहुसंख्यकों के रहते हुए। जब से एफ.आई.आर. का सुना है, गुप्ताजी अस्पताल में हैं। उनका रक्तचाप अनियमित है। कभी खतरनाक स्तर तक बढ़ता है, कभी एकदम घटता है। पेट्रोल पंप-मालिकों ने धमकी दी है कि यदि घटतौली की चिप के छापे बंद न हुए तो वे हड़ताल पर चले जाएँगे। वर्तमान विरोधी दल सदाचार के हिमायती हैं। वे हर भ्रष्टाचार के साथ हैं तो पेट्रोल पंप के मालिकों के समर्थन में क्यों न हों?

९/५, राणा प्रताप मार्ग
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४४८४३८

रोशनी के साए

• सुधीर निगम

कमरे के एक कोने में बाहरी वातावरण से असंपृक्त मास्टर रामविलास पुरानी आसनी पर बैठे थे। विचारों के प्राधान्य से उनका सिर कदाचित् बोझिल हो उठा तो उकड़ूँ बैठकर उन्होंने सिर झुका लिया, जो घुटनों के बीच थमा था।

''अजी सुंत हौ! का टेसन नाईं जइऔ?'' रुकमिन ने कमरे के बाहर से आवाज लगाई। उन्हें मालूम था कि आवाज सही कानों तक पहुँच गई होगी, पर असर कुछ देर में करेगी। पति की इसी लापरवाही का उलाहना देते हुए उन्होंने स्वगत कहा, 'जिंदगानी बीत गई हर छोटी-बड़ी बात की याद दिलाउत।'

पत्नी की हाँक की चोट से रामविलास विचारों की काल्पनिक दुनिया से टूटकर ठोस जमीन पर आ गिरे। कल्पना में अपने टूटे सपने संजोना उनका स्वभाव बन गया था। जब चारों ओर निराशा का अंधकार हो तो। उन्होंने विचारों को एकदम झटक दिया। प्रकृतस्थ होकर बोले, ''जाना काहे नहीं है, प्रकाश की माँ।''

उठते-उठते सोचने लगे कि ये स्त्रियाँ भी अजीब होती हैं, इनसान को आराम से दो क्षण एकांत में विचारों का सुख भी नहीं उठाने देतीं। खुद सदा कटु यथार्थ पर पैर टिकाए रहती हैं और चाहती हैं कि मर्द भी उनके साथ खड़ा रहे।

पत्नी के पास पहुँचते हुए पूछा, ''भला क्या टैम हुआ होगा?''

पति के सरोकार से रुकमिन के मन में उत्साह जगा। बोलीं, ''गंगादीन मील की छुट्टी करके दरवज्जे के सामने से कबको निकल चुको है। मतलब ये कि पाँच बजे भए बहुत देर हुइ चुकी है। आठ की गाड़ी है। टेसन हियाँ से पाँच मील दूर है। पैदल एक घंटा तो लगै जइऐ। टैम बचै तो टेसन पर थोड़ी आराम कर लियो।''

रामविलास ने अपने कपड़ों की ओर देखा। रुकमिन समझ गई। बोली, ''तुम हाथ मूँ धोबौ, हम अभई आईं।'' इतना कहकर वह पास की कोठरी में घुस गई।

कमरे के बाहर निकलकर रामविलास ने हाथ-मुँह धोया। फिर पैरों पर दृष्टि गई। सोचा स्टेशन तक पैदल जाने में धूल-घूसरित हो ही जाएँगे, वहीं धो लें तो ठीक रहेगा।

''आवौ'' कमरे के अंदर से आवाज आई।

मास्टर उसी ओर चल दिए। सोचा, इस बुढ़िया को कितना सिखाया पर जुबान पर बैठा फर्रुखाबादी बोली का रस जाता ही नहीं। उसकी संगत में उनकी खुद की बोली खिचड़ी हो गई है।

होली-दीवाली, शादी-ब्याह में पहनी जानेवाली इकलौती पोशाक—

सुपरिचित साहित्यकार। अब तक लगभग ३०० शोधपरक, ऐतिहासिक-पौराणिक कथा लेख, कहानियाँ व कविताएँ हिंदी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। कई कहानियाँ पुरस्कृत और प्रशंसित।

कुरता, धोती और अंगोछा लिये रुकमिन खड़ी थी। बिना कुछ कहे कपड़े पति की ओर बढ़ा दिए।

बड़ी श्रद्धा से मास्टर ने कपड़े पकड़े और एक ओर हटकर पहन लिए। सोचा, इन 'धरौआ', जैसा कि रुकमिन इन्हें कहती है, कपड़ों में भी अब कोई नयापन या चमक नहीं रह गई है। बस इतना ही है कि ये कहीं से फटे नहीं हैं।

ईंटों के ऊपर रखे बक्से के नीचे पड़ी चप्पलें निकालकर उन्होंने पहनीं और चलने को उद्यत हुए।

''जरा रुकिऔ,'' इतना कहकर रुकमिन चौके में गई। कुछ खटर-पटर किया और जब लौटी तो उसके हाथों में एक लोटा और कटोरी थी।

कटोरी आगे बढ़ाते हुए बोली, 'लेओ, मूँ जुठार के पानी पिऔ।''

रामविलास ने आश्चर्य से देखा कि कटोरी में गुड़ की एक डली रखी थी। कल रात डरते-डरते गुड़ माँगा था तो बुढ़िया साफ नट गई थी कि घर में गुड़ का एक कण भी नहीं है। वे मन ही मन हँसे। चीजों को दबाकर रखना और मौके पर निकालना औरतों की निराली कला होती है।

नि:संग भाव से मास्टर ने गुड़ की डली उठाकर मुँह में डाल ली। थोड़ी देर तक चुभलाई, फिर पत्नी के हाथ से लोटा ले लिया। मुँह ऊपर उठाकर लोटे से धार बाँध 'गड़गड़' करते हुए पानी पिया। पीकर लगा, जैसे आत्मा तृप्त हो गई हो।

पत्नी की ओर कृतज्ञ भाव से देखा और कहा, ''अच्छा, चलता हूँ।''

''दही मछरी।''

पत्नी की शुभकामनाएँ लेकर वे घर से बाहर निकल पड़े।

बासठ साल के मास्टर रामविलास किसी कोण से सत्तर से कम के नहीं दिखाई देते। आर्थिक अभावों ने उनकी कमर तोड़कर असमय ही उन्हें बूढ़ा बना दिया है। बासठ के तो अब हैं, बूढ़े तो वे कई साल पहले हो चुके थे।

रास्ते में संतराम की दुकान पड़ी। देखा तो कई स्मृतियाँ फूट पड़ीं।

संतराम उनका दोस्त था, उसकी बहुत बड़ी परचून की दुकान थी।

वे उसकी दुकान पर जाकर बैठते थे। संतराम का बेटा मोहन और उनका पुत्र प्रकाश घनिष्ठ मित्र थे। दोनों का एक-दूसरे के घर में आना-जाना था। पता नहीं किन क्षणों में संतराम ने मन-ही-मन तय कर लिया था कि अपनी बेटी सरिता की शादी प्रकाश के साथ ही करेगा। यह बात तो आरती के ब्याह के समय खुली।

मास्टर ने अपनी बेटी आरती के लिए एक लड़का देखा। बात बन गई तो लेन-देन और व्यवहार तय करने वे लड़केवालों के यहाँ गए। संतराम अनपेक्षित रूप से साथ गया। उसने वहाँ जाकर खूब धुएँ के बादल उड़ाए। वर पक्ष को लगा कि मास्टर के पास माल-मत्ता है। उसी के अनुरूप उन्होंने अपनी माँगें रखीं। संतराम स्वीकृति-सूचक सिर हिलाता रहा।

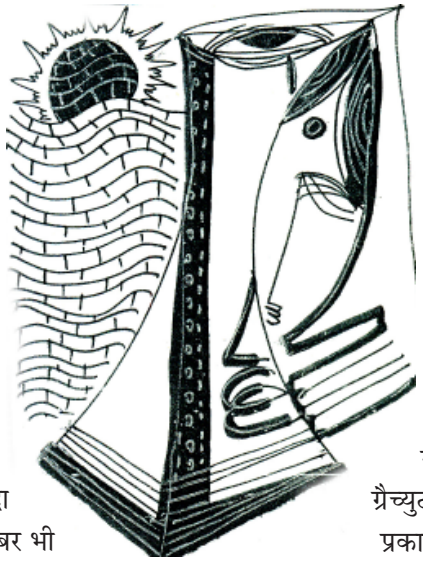

रामविलास ने फंड से अधिकतम पैसा निकाल लिया। एक साल बाद तो रिटायर होना ही था। थोड़ी जमा-पूँजी थी, उसे मिलाकर वर पक्ष की माँगें तो पूरी हो रही थीं, परंतु बरात के स्वागत, भोजन और साज-सज्जा का खर्च कैसे पूरा होगा, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

हताश हो संतराम से बात की। उसने कहा, ''क्यों परेशान होते हो भैया! आरती जैसी आपकी बेटी, वैसे ही मेरी। खाने-पीने का सारा जिम्मा मेरा, हलवाई मेरा, सारा सामान दुकान का। साज-सजावट का भार मैं मोहन पर डालूँगा, एक 'डेकोरेटर' उसका दोस्त है। सब हो जाएगा। वादा यह रहा कि किसी को इस बात की कानोकान खबर भी न होगी।''

पत्थर में जोंक लगी देख रामविलास को खटका हुआ था। पूछा, ''भाई, हम तुमसे उऋण कैसे हो पाएँगे? हमें अपनी हैसियत में रहने देते तो मेरी आत्मा पर बोझ तो नहीं रहता।''

संतराम ने कृत्रिम क्रोध से कहा, ''ऐ मास्टरजी, क्यों मुझे बेगाना बना रहे हो।''

रामविलास से फिर कुछ बोला न गया।

संतराम और मोहन ने सारा भार अपने ऊपर ले लिया। सरिता भी आरती के लिए तरह-तरह के कीमती उपहार लाई। घर के कामों में लगी रही। उसी प्रफुल्ल वातावरण में जब सरिता और प्रकाश आमने-सामने पड़ जाते तो बात करते ही हँसने का कोई न कोई विषय उन्हें मिल ही जाता। ऐसे ही किसी क्षण को पकड़कर संतराम ने मास्टर से कहा, ''देखो तो, कैसी सीता-राम की जोड़ी लग रही है।''

रामविलास संतराम के भाव समझकर सनाका खा गए। उसकी सहायता का निहितार्थ उनकी समझ में आ गया, पर मौके की नजाकत देखकर वे चुप रहे। आरती का ब्याह धूमधाम से संपन्न हो गया और वह विदा होकर ससुराल चली गई।

''ऐ बुड्ढे! मरना है क्या, जो बीच सड़क पर चल रहा है?'' बगल से ताँगा काटते हुए ताँगेवाला चिल्लाया।

उन्हें पता ही नहीं चला कि कब फुटपाथ पर चलते-चलते वे सड़क पर आ गए। वे परेड की मुरगी-बाजार वाली सड़क पर मुड़े। इस सड़क पर फुटपाथ नहीं बचा है। वहाँ मुरगी के व्यापारियों ने कब्जा कर रखा है। वे दुकानों के किनारे-किनारे चलने लगे। जाली के कठघरों में बंद मुरगियाँ पंख फड़फड़ा रही थीं। रामविलास की स्मृतियाँ भी पंख फड़फड़ाती उनके साथ चलने लगीं।

प्रकाश एम.ए. फाइनल में था। परीक्षा निकट आ गई थी। उसने माँ-बाप को अंतिम चेतावनी दी कि दो दिन के अंदर छह माह की बकाया फीस न भरने पर उसे परीक्षा में नहीं बैठने दिया जाएगा। घर में रुपए न थे और न ही इतनी शीघ्र कोई प्रबंध हो सकता था। संतराम दे सकता था, पर मास्टर अपने होनहार बेटे को उसके पास गिरवी नहीं रखना चाहते थे। जब कुछ न सूझा तो रुकमिन ने अपनी सोने की दो चूड़ियाँ दे दीं और कहा कि उन्हें बेचकर फीस भर दो।

मास्टर ने एतराज किया तो रुकमिन ने कहा, ''अरे, अपने परकास पै तो ऐसी सैकड़ों चूड़ियाँ निछावर हैं। वौ बनौ रय बस...।'' माँ ने अपनी प्रत्याशाएँ प्रकट नहीं की थीं।

परीक्षा निपट गई। मई में परिणाम आ गया। प्रकाश ने प्रथम श्रेणी पाई थी। उधर मास्टरजी भी सेवानिवृत्त हो गए। एक महीने बाद फंड का शेष पैसा, ग्रैच्युटी, बीमा आदि का भुगतान हो गया। पेंशन नहीं थी।

प्रकाश नौकरी की कोशिश जोर-शोर से कर रहा था। इसी बीच कोलकाता से एक प्राइवेट फर्म में नौकरी के लिए बुलावा आया। पहले साक्षात्कार होना था। प्रकाश को इस पद पर चुने जाने की पूरी उम्मीद थी। पिता को भी पुत्र पर पूरा भरोसा था। तय हुआ कि प्रकाश इस हिसाब से कोलकाता जाए कि नौकरी मिलने पर तत्काल 'ज्वॉइन' कर ले। अत: अपने पहनने के पूरे कपड़े, अन्य सामान और एक माह का जरूरी खर्च लेकर प्रकाश जाने को प्रस्तुत हुआ।

संतराम, सरिता और मोहन विदा करने आए। मोहन तो ताँगा लेकर आया था। उसी पर दोनों जन स्टेशन गए।

विचारों में डूबते-उतरते रामविलास स्टेशन पहुँचे। पुल पार कर प्लेटफॉर्म पर आए। पस्त हो गए थे, सो नल से पानी पिया, मुँह धोया। नल ऊँचाई पर लगा हुआ था, अत: पैर धोने की सुविधा नहीं थी, इसलिए अँगोछे से पैर झाड़ भर लिये।

स्टेशन की घड़ी में सात बजे थे। अगर गाड़ी टाइम से आए तो अभी एक घंटा और बाकी था। वे एक बेंच पर बैठ गए। पत्नी की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर फिर स्मृतियों के पृष्ठ पलटने लगे।

एक दिन प्रकाश का तार आया था कि उसे नौकरी मिल गई है। पति-पत्नी ने ईश्वर को धन्यवाद दिया। बेटी की शादी के बाद सत्यनारायण की कथा नहीं करा पाए थे। दोनों अवसरों को मिलाकर कथा का औचित्य

और बढ़ गया। कथा में संतराम का पूरा परिवार और पड़ोसी आए थे। इसी बहाने सबको सूचना प्राप्त हो गई कि प्रकाश को कोलकाता में नौकरी मिल गई है। लोगों ने सोचा कि नौकरी कोलकाता में है तो अच्छी ही होगी।

स्कूल खुल गए थे। रामविलास ने दौड़-धूप कर चार ट्यूशन पकड़ लिये। पैसा अच्छा था, पर उन्हें छह घंटे घर के बाहर ट्यूशन पढ़ाने में व्यतीत करने पड़ते थे। इससे रुकमिन को परेशानी होने लगी। मोहल्ले के लोग भी कहते कि जब लड़का कमा रहा है तो मास्टरजी को इस उम्र में खटने की क्या जरूरत है?

एक दिन रुकमिन ने टोक ही दिया, ''काए, तुमैं टूसन करन की का जरूरत है? अब तौ हमारो लल्ला कमाउन वारो हुइ गओ है।''

''ठीक है, वह कमानेवाला हो गया है, पर क्या हम लोगों को पता है कि वह कौन सी नौकरी कर रहा है, उसे कितना वेतन मिल रहा है, घर आने की बारी कब आएगी। आज तीन महीने हो गए हैं, उसकी एक भी चिट्ठी आई! ऐसे में मैं खुद हाथ-पैर न चलाऊँ तो थोड़ी बहुत जो जमा-पूँजी है, वह भी खत्म हो जाएगी।''

यह पहला मौका था जब रुकमिन चुप हो गई थी। इसका अर्थ यह था कि वह भी किसी सीमा तक बेटे को दोषी मानती थी।

हर रविवार को रामविलास अपने मित्र संतराम के घर जाते थे। वहाँ उनकी खूब खातिरदारी होती थी। सरिता तक आग्रह करके उन्हें खिलाती थी। एक रविवार ऐसा भी आया, जो रामविलास पर आघात करने के लिए अपनी नियति में वज्र छिपाए था। जब वे संतराम के घर पर पहुँचे तो बैठक में अकेला संतराम बैठा था। अन्य दिनों की तरह उनके पहुँचने के निश्चित समय पर मोहन और सरिता उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहे थे। मित्र के चेहरे पर अजनबीपन था। फिर भी वे बैठ गए।

अचानक संतराम ने पूछा, ''रामविलास, प्रकाश कब वापस आ रहा है?''

प्रश्न और संबोधन दोनों रूखे और अप्रत्याशित थे। सदैव 'भैया' कहनेवाला संतराम उन्हें उनके ठेठ नाम से पुकार रहा है। रामविलास बात की तह तक न पहुँच सके, अत: चुप रहे।

संतराम ने शुष्क कंठ से फिर कहा, ''कल मोहन के नाम प्रकाश का पत्र आया था। उसने कोलकाता में शादी कर ली है। जब से सुना है, सरिता रोए मरी जा रही है। इतना बड़ा धोखा। यही संस्कार दिए थे तुमने अपने लाड़ले को।''

अपने पुत्र की शादी की अप्रत्याशित सूचना और वह भी गैरों से पाकर रामविलास सन्न रह गए। उन्हें लगा कि जैसे उनके हृदय में बंदर का घाव हो गया हो। खैर, संतराम जैसे स्वार्थी को अच्छा सबक मिला, पर सरिता का क्या दोष है!

रामविलास ने साहस करके कहा, ''संतरामजी, मैं बेटी सरिता से कुछ बात करना चाहता हूँ। जरा दो मिनट के लिए बुला दें।''

मास्टर की अतिरिक्त नम्रता से प्रभावित हुए बिना संतराम ने कहा, ''अब किसी और नाटक की जरूरत नहीं है।''

रामविलास ने दृढता से कहा, ''एक बात सुन लो संतराम, मैं सरिता से बिना मिले नहीं जाऊँगा। यह मेरे जीवन-मरण का प्रश्न है।''

कुछ देर सन्नाटा व्याप्त रहा। सरिता जैसे यह वार्त्तालाप सुन रही हो, इसलिए स्वत: आ गई। उसके एक हाथ में पानी का गिलास था। रामविलास की ओर मुखातिब होकर सहजता से कहा, ''नमस्ते ताऊजी, लीजिए पहले पानी पीजिए।''

रामविलास ने उसके हाथ से गिलास लेकर दो घूँट पानी पिया और गिलास मेज पर रखते हुए कहा, ''जीती रहो बेटी। मुझे एक बात सच-सच बता दो तो मेरे दिल की फाँस निकल जाएगी।''

''पूछिए ताऊजी।'' सरिता उनके पास ही बैठ गई।

''बेटी, क्षमा करना, मुझे ऐसा प्रश्न पूछना पड़ रहा है, पर मजबूर हूँ। क्या प्रकाश ने तुमसे शादी करने का कोई वादा किया था?''

''नहीं तो! यह किसने कहा?''

''क्या प्रकाश के विवाह कर लेने से तुम्हें कोई दु:ख हुआ है?''

''हाँ ताऊजी, हुआ। मैंने क्या-क्या सपने देख रखे थे। प्रकाश की शादी होगी तो हम लोग खूब धमाल करेंगे, भाभी आएगी तो उसे तंग करेंगे। मुझे नेग मिलेगा, पर ताऊजी, मुझे तो यह सोचकर रोना आता है कि आप पर और ताईजी पर शादी की बात से क्या गुजरेगी!''

मास्टर ने देखा कि संतराम भन्नाया हुआ अंदर जा रहा है।

उन्हें अवसर मिल गया। पूछा, ''बेटी और क्या लिखा था प्रकाश ने पत्र में।''

''मोहन भैया के लिए लिखा है कि यदि वह नौकरी करना चाहे तो कोलकाता चला आए। और जब तक यहाँ है, आप लोगों की खैर-खबर लेता रहे। लिखा था कि कुछ परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि मालिक की बेटी से अचानक शादी करनी पड़ी। आप लोगों को कोई सूचना या निमंत्रण देने का अवसर ही नहीं मिला। इसी शर्म के कारण वे आपको पत्र नहीं लिखते। लिखा है, कुछ महीने बाद आपको ऐसी खुश खबरी देंगे कि आप उनके सब अपराध भूल जाएँगे।''

प्लेटफॉर्म पर अचानक चहल-पहल बढ़ जाने से रामविलास वर्तमान में आ गए। पूछने पर पता चला कि 'राजधानी' आ रही है। प्रकाश को लानेवाली 'हावड़ा मेल' तो लेट है। 'राजधानी' आई और सुख के दिनों की तरह थोड़ी देर रुककर चली गई। मास्टर के विचार पुन: अतीत की मुँड़ेर पर जा बैठे।

दूसरे दिन जब संतराम का नौकर आया तो रामविलास का माथा ठनका। उसने एक लिफाफा दिया और चला गया। मास्टर ने धड़कते दिल से लिफाफा खोला। उसमें दो बिल रखे थे। एक तो संतराम द्वारा बेटी की शादी में दिए गए सामान का था, दूसरा साज-सज्जावाले का था। रामविलास समझ गए कि उनका दोस्त घटते पानी में मछली मार रहा है। वे यह भी कह सकते थे कि सामान तो बगैर माँगे भेजा गया था, फिर पैसे किस बात के?

दूसरे दिन बैंक से रुपए निकालकर दोनों बिलों का खुद जाकर भुगतान कर दिया और संतराम से रसीद ले ली।

रुकमिन ने जब यह खबर सुनी तो उसके ऊपर एक और गाज गिरी। प्रकाश की शादी की अप्रत्याशित खबर से वह उबर न पाई थी कि संतराम ने अपना रंग दिखा दिया। उन्होंने खाट पकड़ ली। रामविलास उनकी तीमारदारी में लग गए। इसी कारण चार में से तीन ट्यूशनें छूट गईं। यह बात रुकमिन के लिए और घातक सिद्ध हुई। एक-एक दिन काटना भारी हो गया, पर समय को कौन बाँध पाया है, व्यतीत होता चला गया। कुछ महीनों बाद प्रकाश की चिट्ठी आई कि उसकी पत्नी आकांक्षा ने दो जुड़वाँ पुत्रियों को जन्म दिया है। इस समाचार से रुकमिन हरी हो उठी। उसकी आधी बीमारी दूर हो गई।

इधर समस्याओं ने मुँह और ज्यादा फाड़ दिया था। जो कुछ पैसा बचा था, रुकमिन की बीमारी में खर्च हो गया। एक ट्यूशन के सहारे घर की गाड़ी खिंच रही थी।

अचानक प्रकाश की एक और चिट्ठी आ गई। पिछले पत्र को आए नौ महीने भी नहीं हुए थे, तो संतान के संबंध में तो कोई समाचार नहीं हो सकता था। दोनों ऊहापोह में पड़ गए। तत्काल पत्र खोलने का कोई साहस नहीं कर सका। खैर, चिट्ठी तो खोलनी ही थी। प्रकाश ने लिखा था कि कोलकाता से उसका तबादला दिल्ली हो गया है। वह सपरिवार हावड़ा मेल से अमुक तारीख को दिल्ली जाएगा। कानपुर स्टेशन पर वह तथा आकांक्षा माता-पिता के दर्शन करना चाहते हैं। आकांक्षा गर्भवती है, अत: रुकना संभव न होगा। वे लोग फिर कभी आएँगे।

रामविलास जानते थे कि यह 'फिर' कभी नहीं आएगा। बहू के गर्भवती होने की बात सुनकर रुकमिन गद्‌गद हो गई। बोली, ''मास्टरजी, लिख के धल्लेओ, अबकी लड़िकइ हुइअै।''

कुछ देर अपने में मग्न रहने के बाद रुकमिन फिर बोली, ''न होय तौ टेशन पै जाइकै मिल लीजौ। जा बहाने बेटा, बहू और पोतिन को देख लिऔ। फिर वासे तो हमारी हालतौ नाईं छिपी है। जाई आँगन मयं बड़ो भओ हय।''

रामविलास पत्नी का इशारा समझ गए, पर बोले कुछ नहीं। कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। अंत में उन्हीं को बोलना पड़ा, ''नहीं रुकमिन, मैं अपना दुखड़ा लेकर मिलने नहीं जा पाऊँगा।''

पिता का स्वाभिमान बेटे के सामने हाथ फैलाने से रोक रहा था। पर बीमार पत्नी की जिद के आगे वे थोड़ा झुके। सिर्फ मिलने के लिए स्टेशन जाना स्वीकार कर लिया।

रामविलास ने घोषणा सुनी कि 'हावड़ा मेल' दस मिनट के भीतर आनेवाली है। यह सुनकर कोई उत्साह नहीं जागा। यों भी बीमार पत्नी के आग्रह पर बेटे से मिलने आए थे।

सोचने लगे, हम पुत्र को पालते-पोसते हैं, शिक्षा की डोर से बाँधकर उसे पतंग की तरह महत्त्वाकांक्षाओं के आकाश में ऊँचा उठाते हैं। फिर एक अनजान कन्या विवाह रूपी पेंच डालकर वह पतंग काट ले जाती है। माता-पिता के हाथ में रह जाती है पतंग से बिछुड़ी डोर। ममता का सारा जोर लगाने पर भी उस डोर से कटी पतंग वापस नहीं पाई जा सकती। रुकमिन उसी डोर से कटी पतंग खींचना चाहती है, क्योंकि पतंग का निर्माण करते समय, हर माँ की तरह उसने भी आशा का एक दुमछल्ला उस पतंग से चिपका दिया था।

धड़धड़ करती 'हावड़ा मेल' प्लेटफॉर्म पर आकर रुकी। यात्री चढ़ने-उतरने लगे। भागम-भाग मच गई। चारों ओर जैसे जीवन उमड़ पड़ा हो। रामविलास भी चैतन्य होकर गाड़ी की ओर बढ़े।

''बाबूजी नमस्ते।''

रामविलास ने दाईं ओर मुड़कर देखा, प्रकाश खड़ा था। उसने झुककर पैर छुए, उन्होंने आशीर्वाद दिया। चाहते थे कि पुत्र को गले लगा लें, पर लगा, बेटे ने जैसे दूर खड़े होकर बीच में एक सीमा रेखा खींच दी हो। तभी कटे बालों को पीछे झटकते हुए बहू आकर खड़ी हो गई। प्रकाश ने परिचय दिया। रामविलास अपने गंदे पैरों के बारे में सोचकर संकोच में गड़ गए। बहू इन गंदे पैरों को छुएगी तो क्या सोचेगी। उनकी तमाम दुविधाओं को विराम देते हुए बहू ने हाथ जोड़कर प्रणाम कर लिया। रामविलास ने देखा तो सनाका खा गए। बहू का वर्ण एकदम स्याह था। उन्होंने बेटे की ओर देखा, जिसने अपना चरित्र सुविधाभोगी बना लिया था।

''माँ नहीं आईं!'' प्रकाश ने पूछा।

''हाँ, बीमार हैं।''

''इलाज तो चल रहा है।''

''हाँ!''

''बाबूजी, आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं लगता। कितने कमजोर हो गए हैं। कोई टॉनिक वगैरह लेते रहें तो ठीक रहेगा। वैसे अंग्रेजी दवाइयों से तो आपको शुरू से ही चिढ़ है।''

माता-पिता के स्वास्थ्य के संबंध में पुत्र की चिंता उचित है। पर जिस बेटे को नौकरीशुदा पिता के घर में नियमित रूप से एक गिलास दूध नसीब नहीं हुआ हो, वही बेटा सेवानिवृत्त, आर्थिक साधनों से विपन्न बूढ़े पिता से टॉनिक लेने के लिए कहे तो इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी।

पुत्र के कथन से उत्पन्न अति विस्मय ने उन्हें अभिभूत कर दिया, अत: क्रोध का कारण होने पर भी उन्हें क्रोध नहीं आया। रामविलास ने सिर झटका, जैसे विचारों की भनभनाती मक्खियों को उड़ा देना चाहते हों।

''अरे, तुम दोनों यहाँ खड़े हो, उधर तुम्हारे बच्चे और सामान...।'' वास्तव में वे बच्चों को देखना चाहते थे।

''बच्चे सो रहे हैं। सामान की रखवाली नौकर कर रहा है।'' ससुर की चिंता को काटकर बहू ने उत्तर दिया।

रामविलास ने बेटे को आँख भर देखा। बालों में अभी से कुछ सफेदी सी झलकने लगी है। लगा, कुछ दुबला हो गया है। हो भी क्यों न! संयुक्त परिवार से छिटकी एकल गृहस्थी का बोझ अकेले ही जो उठा रहा है।

गाड़ी की सीटी में औपचारिकताएँ डूब गईं। बहू-बेटा प्रणाम कर जल्दी-जल्दी अपने डिब्बे की ओर चल दिए। शाख से उड़ा पक्षी यदि आधार और दिशा भूल जाए तो भी उसका उड़ना बंद नहीं होता। गाड़ी चल दी। रामविलास खड़े-खड़े गाड़ी को जाता हुआ देखते रहे। अंतिम डिब्बे के पीछे उन्होंने एक बड़ा-सा 'क्रॉस' का चिह्न देखा। लगा—जैसे

वह प्लेटफॉर्म पर छूटे लोगों की उपस्थिति को नकारते हुआ चला जा रहा हो।

तन-मन दोनों से हारे रामविलास खाली बेंच पर जाकर बैठ गए। पत्नी ने सुदामा बनाकर भेजा था, पर बेटा कृष्ण न बन पाया। वे आशारहित होकर पत्नी के पास तत्काल लौटने का साहस न जुटा सके। लेकिन घड़ी रुक जाने से समय नहीं रुक जाता। जाना तो होगा। पत्नी की तमाम आशाओं का 'क्रॉस' लादे वे घर की ओर चल दिए।

१०४-ए/३१५ रामबाग
कानपुर-२०८०१२
दूरभाष : ९८३९१६४५०७

कविता

बहुत बड़ा नहीं था मेरा सपना

• राजू कुमार विद्यार्थी

पिता के सपने

मेरी माँ को पता है
कि रोटियाँ सेंकते समय
जब फूलकर गोल हो जाती है रोटी
तो उसमें हवा नहीं
हमारी भूख होती है।

पिता जब एकाध रोटी खाकर
सोने जाते थे रात को
तो आँख में पानी की खूब छींटे मारते थे
कि सपना एकदम साफ-सुथरा होगा।

मेरा भाई इंतजार करते-करते
सो जाता है भूखे ही
उसे गरम खाने की आदत है।

सब्जी काटते समय
अकसर कट जाती हैं
माँ की उँगलियाँ
और वह खून को
अपने आँचल में पोंछते हुए
उदास मुद्रा में कहती है
बेटे! शादी कर ले
चूल्हे के पास बैठती हूँ
तो आँख से पानी गिरता है।

मैं मन-ही-मन
जल-भुनकर रह जाता हूँ।
जब हाँफते-हाँफते
थक जाते थे पिताजी
तो गाँव की स्त्रियाँ
आपस में बतियाती थीं
कि कम-से-कम
बेटों की शादी देख लें।

बारिश के दिनों में
जब बिस्तर पर टपकती थी
पानी की बूँदें
तो पिताजी सोचते थे

कि एक दिन हमारे ऊपर भी होगा
टीन का आसमान।

तेल के लिए तड़पकर
जब बुझ जाता था लालटेन
तो पिताजी सुनाते थे
रामायण की कहानी
अपने बचपन की कहानी
शायद हमारे बचपन को
अपने बचपन से बचाना चाहते थे—
उन दिनों
बहुत तारे थे आसमान में
तो तारों से आँगन
जगमगा उठता था
हम भाई-बहन सिर्फ तालियाँ बजाते थे
और तारे गिनने का काम माँ का था।

बहन जब लीपती थी घर-आँगन
गाय के गोबर से
तो रोज देखती थी
माँ और पिता के सपने को
जिसे हर रोज उकेरते रहते थे चूहे।

एक दिन एक भाभी
अपने बच्चे को दूध पिलाते समय
मुझे रोता देख
बेटा कह दी थी अचानक।

जब तक पिताजी थे
बहुत बड़ा नहीं था मेरा सपना
क्योंकि आधे से अधिक सपने
पिताजी देखा करते थे
जिसमें शायद
मैं भी शामिल हो जाया करता था।

प्यासी चिड़िया भटक रही है

धीरे-धीरे खो रही है
जंगल की हरियाली
टिमटिम-टिमटिम तारों वाली
रातें काली-काली।

सबकुछ था उदास वहाँ पर
पेड़-पौधे खलिहान
अपने ऐसे अलग हुए कि
सूना हुआ दलान।

नदी किनारे कर रहे
सब बच्चे आनाकानी
प्यासी चिड़िया भटक रही है
लाए कहाँ से पानी।

इस शहर से अच्छा ही था
मेरा अपना गाँव
चिट्ठियाँ बैठी रो रही हैं
कहाँ पसारें पाँव।

विद्यालय से कल आते ही
चिढ़कर बोली मुनिया
सच्चाई को भी आँख नहीं है
अंधी हो गई दुनिया।

धरती अंबर सूना-सूना
सूना हुआ संसार
एक-दो की बात करूँ क्या
कातिल हुआ बजार।

अब कुछ नहीं है होनेवाला
चाहे बेल लो जितना बेलन
रोज हो हड़ताल
या हो कवि सम्मेलन।

ग्राम-लहेर छपरा, पो. मदारपुर
थाना-भेल्दी, जिला सारण
(छपरा)
बिहार-८४१३११
दूरभाष : ०८७५७९२२९४१

त्रिया चरित्रम्

• ज्योत्स्ना 'प्रवाह'

'त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्, दैवो न जानासि कुतः मनुष्यम्', यह कथन सोचने पर बाध्य करता है कि अवश्य किसी स्त्री की मौजूदगी में यह व्याख्या नहीं लिखी गई है। प्रश्न यह उठता है कि जब पुरुष स्त्री के चरित्र को जानने-समझने में इतना अक्षम है, फिर वह स्त्री के बारे में जो भी लिख देता है, तो समाज उसे ही ज्यों का त्यों क्यों स्वीकार कर लेता है? पुरुष के कार्यों को भाग्य का नाम दिया और स्त्री के कार्यों को उसके चरित्र से जोड़ दिया गया। अंतर्द्वंद्व तो बौद्धिक पुरुष तक के मन में है और वही द्वंद्व स्त्री के मन में भी है। किंतु स्त्री अनेक रास्तों से समाधान तलाश कर लेती है, जिन्हें पुरुष समझ भी नहीं पाता, क्योंकि दोनों के दृष्टिकोण में बहुत अंतर है और यह अंतर प्रकृति ने निर्माण के समय ही डाल दिया है। यदि यह अंतर न होता तो शायद वह एक-दूसरे के पूरक न होते और इसी नासमझी के कारण उसने कह दिया कि दैवो न जानासि··· ? स्त्री की यह व्याख्या करने से पहले स्वयं यह नहीं समझ पाया कि देवता स्त्री के चरित्र से भी परिचित थे और मन से भी, तभी अपनी शक्तियाँ दुर्गा देवी को दीं और प्रार्थना की कि वह असुरों का वध करें और संसार की रक्षा। देवता स्त्री को समझ पाए थे, इसीलिए वे देवी की शरण में आए थे। स्वयं शिव भी आदिशक्ति के क्रोध को शांत करने हेतु उनके समक्ष लेट गए थे, क्योंकि वे जानते थे कि स्त्री का मन कितना भी क्रोध में हो, अशांत हो, किंतु प्रेम को, पुरुष के अहं को समर्पित अवस्था में अपने पैरों तले नहीं आने दे सकती। वह तुरंत करुणामयी हो जाती है।

क्यों हम हमेशा लक्ष्मी को विष्णु के चरणों के पास ही देखना चाहते हैं? शिव के वक्षस्थल पर अपने पाँव रोकती चंडिका क्या स्त्री के चरित्र का विलक्षण पहलू नहीं है? क्यों पुरुष शिव के इस रूप से कुछ नहीं सीख पाता? क्या शिव का वह स्वरूप यह नहीं कहता है कि जब स्त्री का वक्षस्थल धधक रहा हो, तब सिर्फ प्रेम ही है, जो उसे शांत करता है। अपना पद, अपना पौरुष, अहं—सबकुछ भूलकर स्वयं को सती के पैरों के नीचे बिछा देनेवाले शिव शायद इसीलिए विष्णु के लिए भी आराध्य हैं। स्त्री के मन को समझने में असमर्थ पुरुष ही स्त्री के मन को उसके चरित्र से जोड़कर देख सकता है और अंत में यही व्याख्या करता है कि त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्···। स्वयं स्त्री की संवेदनाओं को, स्त्री की भावनाओं के उतार-चढ़ाव को नहीं समझ पानेवाला पुरुष ही उसके चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा देता है। वास्तव में स्त्री चरित्र जटिल नहीं है।

सुपरिचित लेखिका। अब तक कई पत्र-पत्रिकाओं में लेख तथा कहानियाँ प्रकाशित। मुख्य रूप से गृह विद्या में लेखन।

आदिकाल से जब भी पुरुष अहं चोटिल हुआ है तो उसने स्त्री को मानसिक, शारीरिक हानि पहुँचाने की चेष्टा ही की है। क्योंकि प्रकृति ने उसे ऐसा ही बनाया है। यह अहं ही पुरुष की शक्ति है। विद्योत्तमा एक ऐसी स्त्री, जो विदुषी थी, पुरुषों के बराबर बैठकर शास्त्रार्थ करती थी; पुरुष स्वयं को एक स्त्री से पराजित महसूस करते थे। हालाँकि वह स्त्री उन्हें पराजित करने हेतु शास्त्रार्थ नहीं करती होगी, अपितु जिज्ञासावश और ज्ञानार्जन की पिपासा में वह पुरुषों की प्रतिस्पर्धा की शिकार बन गई, और तब उन विद्वानों ने उस स्त्री को सजा देने का विचार कर लिया, उसे सबक सिखाने के लिए एक मूर्ख व्यक्ति की खोज शुरू कर दी, क्योंकि वे यह भी समझते होंगे कि यह ज्ञान की ऊर्जा मूर्ख पति को समझाने और स्वयं के योग्य बनाने में व्यय हो जाएगी तथा कम-से-कम यह बात उन अभिमानी पुरुषों के अहं को तुष्ट करेगी। जिज्ञासा स्त्री या पुरुष का भेद कहाँ जानती है? पुरुष का स्वयं को श्रेष्ठ समझने का जो दृष्टिकोण विकसित हो गया है, वही उसे स्त्री के किसी भी तरह सक्षम होने पर उसे दंडित करने को प्रेरित करता है।

स्त्री यदि स्वयं का विकास करती है तो पुरुष का अहं आहत हो उठता है। आज भी यही हो रहा है। अहं का जन्म कुंठा से होता है और कुंठित पुरुष का ही पुरुष अहं इतना बड़ा हो जाता है कि उसकी संवेदनाओं को समाप्त कर देता है। विवेक का हरण कर लेता है और नारी के गुणों से भी प्रभावित होने, प्रशंसा करने, स्वीकार करने और उनमें वृद्धि करने की अपेक्षा उसे दंड देने की ही सोचता है। उसे हर संभव तरीके से शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना देता है। कभी परोक्ष तो कभी अपरोक्ष रूप में, यह तो मनोविकार है। क्या जिज्ञासा इसके लिए दोषी है कि वह स्त्री-तन में क्यों आ गई? स्त्री के सौंदर्य से कामाहत होनेवाला पुरुष ही तो इंद्र का प्रतीक है, जो स्त्री को जबरदस्ती हासिल करना चाहता है, मौका मिलते ही छलपूर्वक या बलपूर्वक अहल्या का

शोषण करता है और अपने कुकृत्य को भी सती अहल्या के चरित्र से जोड़ देता है। मिथ्या भाषण भी करता है, पर समाज चुप रहता है। क्या इसे स्त्री चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम् कहेंगे? चरित्र किसका रहस्यमयी था—इंद्र का या अहल्या का? अहल्या, जिसका तन से ज्यादा मन क्षत-विक्षत हुआ था, वह अपने पति के लिए भी शिलावत् हो गई थी। आज भी न जाने कितने ही इंद्र अहल्याओं को पाषाण प्रतिमा में तब्दील कर रहे हैं। फिर इसी समाज से कोई पुरुष स्वर कहता है—'त्रिया चरित्रम्' हमारे समाज की यह मानसिकता, जो स्त्री के प्रेम को उसके चरित्र से जोड़कर देखती है, क्या यह सही है? प्रेम और समर्पण—जो प्रेम का अभिन्न अंग है। बिना समर्पण के प्रेम पूर्ण कहाँ है? स्त्री जब भी प्रेम करती है तो वह समर्पित भाव से ही करती है। चाहे पिता से, भाई से, मित्र से, पति से, पुत्र से या प्रेमी से!

पुरुष रूप में उन्होंने प्रेम को स्वीकार करने का ही तो संदेश दिया, पर क्या कोई स्त्री अपने जीवन में प्रेम को इतने रूपों में स्वीकार कर पाती? उसे उसके चरित्र से जोड़ दिया जाता। कृष्ण ने तो बस प्रेम को सर्वोपरि माना। उन्होंने प्रेम को अलग-अलग स्त्री या पुरुष के लिए नहीं रखा, फिर ये सामाजिक मान्यताएँ स्त्री से इतनी डरी हुई क्यों हैं? स्त्री अवतारों की शृंखला में भी या तो स्त्री रूप में अवतरित दुर्गा, काली या चंडी का स्वरूप है या सीता, जो रावण के छूने पर भी पवित्र है, किंतु उसे अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ता है। उसी युग में अहल्या का एक पुरुष के स्पर्श मात्र से ही उद्धार होता है, यह असंतुलन नहीं तो और क्या है? क्या 'स्त्री को त्रिया चरित्रम्' जैसे एक वाक्य से परिभाषित करना न्यायपूर्ण है? प्रेममयी, करुणामयी होना तो स्त्री की प्रकृति है।

वह अपने पास कुछ भी नहीं रखती। यह संपूर्ण देने का भाव केवल प्रेम में ही है, यह समर्पण तो स्त्री की प्रकृति है, फिर स्त्री यदि साथी की तलाश प्रेम के आधार पर करती है तो इसे 'स्त्री चरित्रम्' क्यों कहा गया है? इसे स्त्री के चरित्र की विशेषता के स्थान पर दुर्बलता के रूप में परिभाषित क्यों किया गया है? शायद इसलिए कि यह परिभाषा, यह व्याख्या पुरुषों ने की है। जो यह भी कहते आए हैं कि स्त्री को समझना बहुत ही कठिन है। किसी को हम पूरी तरह नहीं समझ पाते हैं, तब अकसर उसकी गलत व्याख्या ही करते हैं। यदि प्रेम करना ही स्त्री के चरित्र को संदेहास्पद बनाता है तो फिर सती, राधा, सीता, रुक्मिणी और भी न जाने कितने नाम हैं, जिनके प्रेम की पूजा होती है। यानी प्रेम ही सत्य है, यही ईश्वर है और उसे पाने का अधिकार स्त्री व पुरुष दोनों को ही समान रूप से प्राप्त है। यह कैसी दोहरी मानसिकता है स्त्री को लेकर? फिर यह 'त्रिया चरित्रम्' कहाँ से आया? स्त्री की कामना को उसके चरित्र से जोड़कर क्यों देखा जाता है?

ईश्वर को भी अवतार लेना पड़ा तो पुरुष देह ही धारण करनी पड़ी, क्योंकि शायद वह भी स्त्री की नियति के रास्ते में नहीं आ सकता था। श्रीकृष्ण का ही उदाहरण लें, क्या वे स्त्री बनकर प्रेम का जो संदेश देना चाहते थे, दे पाते? पुरुष होकर द्रौपदी को सखा रूप में प्रेम ही तो प्रतिदान में दिया। कुब्जा पर भी अपनी स्नेह वर्षा की। यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से भी प्रेम किया, दया दिखाई। पुरुष रूप में उन्होंने प्रेम को स्वीकार करने का ही तो संदेश दिया, पर क्या कोई स्त्री अपने जीवन में प्रेम को इतने रूपों में स्वीकार कर पाती? उसे उसके चरित्र से जोड़ दिया जाता। कृष्ण ने तो बस प्रेम को सर्वोपरि माना। उन्होंने प्रेम को अलग-अलग स्त्री या पुरुष के लिए नहीं रखा, फिर ये सामाजिक मान्यताएँ स्त्री से इतनी डरी हुई क्यों हैं? स्त्री अवतारों की शृंखला में भी या तो स्त्री रूप में अवतरित दुर्गा, काली या चंडी का स्वरूप है या सीता, जो रावण के छूने पर भी पवित्र है, किंतु उसे अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ता है। उसी युग में अहल्या का एक पुरुष के स्पर्श मात्र से ही उद्धार होता है, यह असंतुलन नहीं तो और क्या है? क्या 'स्त्री को त्रिया चरित्रम्' जैसे एक वाक्य से परिभाषित करना न्यायपूर्ण है? प्रेममयी, करुणामयी होना तो स्त्री की प्रकृति है।

काली के रूप में नृत्य करते हुए शिव के वक्षस्थल पर पैर रखना भी प्रेम था। यह स्त्री चरित्र की विशेषता है कि शिव के प्रेम की अनुभूति होते ही क्रोध का स्थान करुणा ने ले लिया और काली शांत हो गईं। सती का पार्वती रूप में जन्म लेकर अपने प्रेम की तपस्या से शिव को एकाकीपन और वैराग्य से बाहर लाना कठिन कार्य था। प्रेम उन भावनाओं से परिचित करवाता है, जो हमारे भीतर होती हैं, जिनसे हम सर्वथा अनभिज्ञ रहते हैं। अन्नपूर्णा के रूप में क्षुधा को शांत करने में प्रेम है, पार्वती रूप में पति को यह एहसास कराना कि संसार में अपने प्रेमी के अलावा और किसी का वर्चस्व स्वीकार नहीं। यही तो प्रेम है। दुर्गा रूप में संरक्षित करके शिव को संरक्षित करना भी प्रेम है। जब प्रेमी की वास्तविकता को प्रतिबिंबित कर दर्पण का रूप धारण कर लेता है, वही तो प्रेम है।

स्त्री या तो माँ होती है या प्रेम, भावना करुणा, दया से छलकती स्त्री और तभी वह अपने हर स्वरूप में सृजनात्मक होती है। यह स्त्री को ही समझना होगा कि वह पुरुष की प्रतिस्पर्धा में आकर अपना प्राकृतिक स्वरूप खो देगी, फिर भी वह पुरुष नहीं बन पाएगी, बल्कि पुरुष जैसी बनकर विनाश का कारण बन जाएगी। स्त्री अपनी नारी सुलभ प्रकृति के कारण ही पुरुष के अहं को भी पोषित करती है। फिर चाहे वह पुरुष पिता हो, भाई हो, पति हो या बेटा। और यही पुरुष की शक्ति है, पुरुष का आत्मबल है और स्त्री का चरित्र। वास्तव में स्त्री चरित्र की व्याख्या पुरुष के वश के बाहर की बात है, ऐसी स्थिति में यदि स्त्री ही स्त्री के मन की व्याख्या नहीं करेगी तो पुरुष द्वारा की गई अधूरी व्याख्या द्वारा ही समाज व समय उसे जानेगा-समझेगा।

बी-३८/४७ बी-२
गोकुल नगर, महमूदगंज
वाराणसी-२२१०१० (उ.प्र.)
दूरभाष : ०७५०५७९०१७९

ध्वन्यार्थ

मूल : **सरोज पाठक**
अनुवाद : **जेठमन ह. मारू**

ज्वाला प्रसाद रोज सुबह उठकर तुरंत एक ही साँस में भारी आवाज में 'इस तन-धन की कौन बड़ाई...' गाते-गाते नहाकर एक-दो श्लोक गुनगुनाते, 'इदमद्य मया लब्धं इमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्ति इदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।' 'त्रिविधं नरकस्य इदं द्वारं नाशनम् आत्मनः...'

फिर वे अखबार के बड़े-बड़े शीर्षक पढ़ डालते। घर के बाहर काम के लिए निकलते, तब तरह-तरह की आवाजें कानों में पड़तीं। सभी के कुछ-न-कुछ कार्यक्रम होते। उद्घाटन, प्रसंग, उत्सव। 'देर हो रही है,' 'जाना है', 'जाने दो', 'जरूर आऊँगा।' धक्का-मुक्की करके कहीं पहुँचना होता है। समय बहुत महत्त्वपूर्ण है, ऐसा उन्हें लगता है।

'ए बुड्ढे दूर हट।'

और ज्वाला प्रसाद यह झटका सह लेते हैं।

'भई, वह जमाना जाता रहा! आज इनके दिन हैं।'

स्वयं एक आदर्श शिक्षक होने के नाते उनका चरित्र निर्माण हुआ है, ऐसा स्कूल के और गाँव के सभी लोग मानते थे। पर अब सेवानिवृत्ति का समय नजदीक था। ज्वाला प्रसाद को किसी के प्रति कोई शिकायत न थी। उनकी मन-ही-मन प्रत्येक घटना को, प्रत्येक प्रसंग को पुनः-पुनः जाँच लेने की आदत थी और फिर उन्हें मन में ही समाधान भी मिल जाता। जैसे लाल पेंसिल लेकर सब 'चेक' कर लेने की, 'नोट' कर लेने की, हाशिये में 'रिमार्क' लगा देने की, 'अधोरेखा' करके ध्यान देने योग्य हो इसी तरह!

स्कूल के शिक्षकों की अनुपस्थिति के कारण बहुत होते हैं, कोई छुट्टी की अरजी देता है, 'बीमार हूँ', 'विवाह है', 'मेहमानों को छोड़ने जाना है', 'पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं', 'बाहर गाँव जाना है, 'एरोडॉम पर किसी को लेने बंबई जाना है', 'देहावसान हो गया है।' सभी कारणों को वे वजूदवाले मानकर सहानुभूति दरशाते। और मन ही मन कह लेते, 'ओके, जा सकते हैं।'

'जाना चाहिए!'

हाँ, यह इनका जमाना है। हमारा भी एक जमाना था। अपनी जेब में जैसे हमेशा चाँदी का राजा छाप रुपया अभी तक उन्होंने सँभालकर रखा हो और जमाना याद करने के लिए इस चाँदी के रुपए को कल्पना में ही सहला लेते हों। इस तरह वे 'जमाने' और 'रुपए' को लगभग पर्याय जैसा बनाकर जीते थे।

होली का त्योहार इस आँगन में ही रंग-चंग से मनाया जाता। गैरियों की गैर पहले-पहल यहीं हाजिर होकर शकुन मनाती थी! हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि के प्रसंग यहीं अभिनीत होने और इसी आगन में दादा और पिता के नाम पर व्यवस्था होती। यहीं प्रतिष्ठित घर की सलाह ली जाती। विवाह या मृत्यु के समय यह मोहल्ला ही उपयोग में लिया जाता। इसी दालान पर आम सूचना का बोर्ड पहले-पहल लटकाया जाता। शहनाई के स्वर या नगाड़े की ध्रांग-ध्रांग, पतंगबाजी के दिनों या गणपति पूजन के दिन सभी बाजे-गाजे ज्वाला प्रसाद की चौपाल से गुजर गए थे, वह जमाना वे याद कर लेते।

हिंदू-मुसलिम झगड़े के समय समाधान के लिए इस घर के प्रतिष्ठितों ने मीटिंगें कीं। नल-रोशनी के लिए यहीं से ही अर्जियाँ लिखी गईं। पंचायत पालिका को पत्र यहीं से लिखे जाते। कोई मनीऑर्डर, कोई तार, कोई सामाजिक प्रश्न, मिल्कियत का प्रश्न, सभी में यहीं इस घर से ही पंचायती-मध्यस्थता सबको मार्गदर्शन के रूप में मिलते थे।

मैला कोट और पुरानी चप्पलें घिसटते या अपने झूले पर बैठकर राखी की टिक-टिक सुनते हुए ज्वाला प्रसाद को वह पुराना रुपया ही तृप्ति देता।

वर्षों के शिक्षक जीवन से उनकी पत्नी राखी भी विवादों, चर्चाओं, दलीलों, झगड़ों और प्रत्येक बात में अपने अभिप्राय का स्वर प्रस्तुत करना सीख गई थी। उसका ज्वाला प्रसाद को शिकवा न था। राखी के प्रति सहानुभूति ही थी। उनको संतोष था। बेचारी राखी! अर्धांगिनी! स्वयं का ही दूसरा जीव है, वे स्वयं ही हैं, ऐसा वे मन-ही-मन कबूलते।

सुबह के पहले प्रहर में कलेंडर का तारीखवाला पन्ना फाड़ते-फाड़ते ही राखी का दिन शुरू हो जाता। शिक्षक-पत्नी के रूप में एक प्रश्न...एक बात वह कहती और उस पर चर्चा—विरोध पक्ष के मुँहतोड़-करारे उत्तरों सा डिबेट जैसा ही कुछ आरंभ हो जाता।

''अशुभ है।''

''हाँ, बात तो तुम्हारी सच्ची है। ऐसा कर, तू ही हो आ!''

झूले पर बैठकर ज्वाला-प्रसाद 'अशुभ है' डाक पढ़कर जरा चौंकते, कुछ संतोष अनुभव करते, राखी इस विषय पर विस्तारपूर्वक हुज्जत करे, ऐसा वे चाहते। तो भी चर्चा संतोषपूर्वक समेटकर स्वयं कहते—

''ऐसा कर! तू ही जा आ!''

और राखी तिलमिला उठती, ''अरे, आप भी क्या आदमी हैं? व्यवहार निभाने के लिए तो घर के पुरुष को ही जाना चाहिए न! बड़ा बेटा-बहू दूसरे शहर में रहते हैं, इसीलिए आपसे कहते हैं। और उन लोगों

का जमाना अलग! यहाँ होते तो भी किस काम के! पर हमें तो अपने जमाने की मर्यादा रखनी चाहिए कि नहीं?'' राखी अकुलाकर कह उठती।

''हाँ, यह तो सही है! पर उनकी घरवाली मालती को तो तू ही धीरज बँधा सकती है न! औरतजात रसोई के कामकाज में भी भली लगती है।''

''अरे, पर मैं क्या श्मशान तक जा सकती हूँ? पुरुषों में तो पुरुष की ही जरूरत पड़ती है। ब्याह-शादी के मौके पर आप हाथ झटका दें तो चल सकता है, पर मरने के मौके पर तो शुरू से आखिर तक खड़ा रहना पड़ता है या नहीं?''

ज्वाला प्रसाद को राखी की बात से पुराने रुपए को सहलाने जैसा संतोष होता। अभी तक लोगों को हमारी जरूरत मृत्यु के मौके पर तो पड़ती ही है। हाँ, पर फिर तुरंत राखी की बात को समेट लेते—''अरे नहीं, इस जमाने में ऐसा कुछ नहीं। इस जमाने में मेहमान, आगंतुक किसी को भी अच्छे नहीं लगते। उल्टे इस मृत्यु वाले घर में हम भार ही बढ़ाते हैं।'' ऐसा कहकर मन-ही-मन और फिर जोर से 'जाना' या 'नहीं जाना' इसमें हमेशा 'नहीं जाना' के नीचे ही लाइन खींच देते।

आयुष्य के दो-तीन दिन संतोष से राखी की बकझक में निकल जाते। अपने जमाने की अच्छी-अच्छी बातें सुनने को मिलतीं और मन-ही-मन खुश होते। ज्वाला प्रसाद बाहर से निष्ठुर, निस्पृही, एकाकी, कठोर, थके हुए लगते।

''तो क्या जाना चाहिए था? क्या जरूरत हमारी? पत्र से कोई सूचित करे तो दौड़ पड़ें क्या? लोगों को बुरी आदत पड़ गई है, यहाँ-वहाँ जाना है, कहते दौड़े चले जाते हैं। किसे हमारी जरूरत है, हाँ! दूसरों की बातें दूसरे जानें, पर हमारी बात में तो दृढ निर्णय होना चाहिए।''

राघव की इकलौती बेटी की शादी पर वे बुलाते हैं। राघव ने जोर देकर दो बार लिखा था, राखी कुछ समझती नहीं और 'जाना चाहिए' यों रट लगा रखी है! यों तो बेटे-बहू का शहर से, मलय बीमार है, ऐसी सूचना का पत्र आया, तो भी राखी कहती है कि 'जाना ही चाहिए।'

राखी बहू का पत्र बार-बार पति के पास ला-लाकर उसके अर्थ समझाती! ज्वाला प्रसाद भी उस पत्र के संदर्भों को जाँच गए थे।

शिक्षक की पत्नी जैसे शिक्षक को पढ़ाने बैठे!

''अरे, इसे पढ़िए न! यह परिच्छेद तो देखिए!''

ज्वाला प्रसाद पत्र की तह खोलकर फिर से पत्र पढ़ते। संदर्भ संक्षिप्त के लिए ध्वन्यार्थ, व्याकरण की भूल, तात्पर्य के लिए हेतु-कथन आदि परखते हों। इस तरह चश्मा लगाकर सिर हिलाते-हिलाते देख जाते। किसी होशियार विद्यार्थी की सही बात-मुद्दा पकड़कर शिक्षक खुश हो, पर वह ऊपर सवार ही न हो जाए, इस कारण गंभीर रहे, वैसे दूसरा परिच्छेद उन्होंने पढ़ा था।

''मलय दादा-दादी को याद करता है। मलय को ओरी निकली थी। अब तो ठीक है। कमजोर है। हम दोनों तो रोज नौकरी पर जाते हैं, तब पड़ोसन मल्लिका बुआ को उसे सौंपकर जाते हैं। मलय के मामा का पत्र आया है। पूज्य पिताजी से निकला जाता नहीं और तुम्हारा जी लग नहीं रहा होगा। इसीलिए मैं ही चारेक दिन की छुट्टी लेकर आनेवाली हूँ। चिंता न करें हमारी। ऑफिस में भी कठिनाई तो है ही। वर्षांत के हिसाब की धूम, इसलिए छुट्टी न भी मिले! हम तो रसोई भी घर पर नहीं करते। बाहर खाना खा लेते हैं। फुरसत ही मिलती नहीं।''

''देखिए-देखिए, यह क्या सूचित करता है? और कुछ नहीं तो उस बच्चे की ओर तो देखिए! उसे ले आने के लिए बेटे के घर जाना चाहिए। मुझे क्या दिक्कत है? पर मलय आपसे हिला-मिला है, इसलिए बेचारे बेटे-बहू की चिंता है! बस में बैठो कि डेढ़ घंटे में उसकी सोसाइटी आ जाए...।''

''कहाँ फासला है?''

''ऐसा कर, तू ही हो आ! हालाँकि उसे बीमारी में तो अपने ही माता-पिता चाहिए।''

''क्या बेकार की बातें करते हैं आप?''

''आप जाओ तो अच्छा प्रभाव पड़ेगा! उपरांत आपकी आवभगत, एक ही दिन की...इससे बेटा-बहू खुश हो जाएँगे!''

ज्वाला प्रसाद को यह बात कभी गले नहीं उतरती। भले ही अपना ही बेटा हो तो भी। खुश कराने की क्या जरूरत है? यों भावनाएँ लूटने की जरूरत नहीं, स्वयं बीमार पड़ते तब भी कहते कि 'देखना, तू उन लोगों को लिख न देना! बेचारे सकपका जाएँगे! नौकरी और बाल-बच्चों वाले ठहरे! बेटा और बेटी। अपने-अपने घर सुखी। मैं ठीक हो जाऊँ, फिर लिखना। अभी कोई मैं मर नहीं रहा कि झटपट वे लोग देखने-मिलने या कंधा देने के लिए दौड़ आएँ!'

बेटा बहुत सज्जन है। लिखता है कि 'तबीयत को अब काँच के बरतन की तरह ही सँभालकर रखिए। अब बहुत दौड़-धूप मत करिए। और हम तो निभा रहे हैं अपनी, हमारी ऐसी कोई खास चिंता न करना।' ठीक बात है। आखिरकार तो बेटा और बेटी एक शिक्षक की ही संतानें हैं न? भावना-वावना ठीक है, हकीकत तो हकीकत ही है न।'

'चिंता करेंगे नहीं', 'दौड़धूप न करना', यानी उनके वहाँ जाकर भीड़ नहीं करनी है, इतना निष्कर्ष तो शिक्षक माता-पिता निकालें या नहीं? तो फिर?'

पत्नी दलील देती, ''अरे, चिंता माँ-बाप नहीं करें तो कौन करे? और बीमारी मामूली बीमारी ही तो एक प्रसंग है कि जिसमें उस बहाने से जरा मिल सकें। पर आप तो सदा के हृदय-शून्य रहे। आपकी तो बुद्धि सठिया गई।''

''ऐसा-वैसा कुछ नहीं।'' ज्वाला प्रसाद हमेशा 'जाना', 'न जाना' 'बुलाना' बात को समेट लेते।

पर बेटी मंजी का पत्र आया तो सठियाई बुद्धिवाला राखी का कथन उन्हें याद हो आया। ज्वाला प्रसाद ने मंजी के पाँचवें परिच्छेद पर ही नजर टिका रखी। वैसे तो दूसरी-तीसरी बार इन्होंने पूरा पत्र पढ़ लिया था। पर इस बार लाल पेंसिल हाथ में लेनी ही नहीं। बेचारी राखी चाहे जाए।

पाँचवाँ परिच्छेद उनको अनुकूल लगा था। बेटी की माँ बेचारी उनके कारण कैद है। हर बार खुद कहते, ''ऐसा कर, तू ही हो आ!''

इसका ध्वन्यार्थ राखी ठीक निकालती कि जाने जैसा नहीं। और यह समझकर ही जाना स्थगित कर देती। अपनी दलीलें वापस ले लेती। बेटी में माँ का जी रहता ही है। इस बार तो सचमुच राखी जाए ही, उस तरह ही बात करनी है, ऐसा ज्वाला प्रसाद ने तय किया। पत्नी को उन्होंने बहुत सताया है। गलत या सही, उचित या अनुचित···अब पूरा पत्र पढ़ना ही नहीं। अर्थ लगाने ही नहीं। बस राखी को भेज देना है बेटी-दामाद के यहाँ, भले चार-आठ दिन घूम आए। राखी को किस तरह कहना चाहिए?

बस हुकम की तरह ही कहना चाहिए कि अब तो तुम्हें जाना ही चाहिए। और हाँ-न करे तो कुछ नहीं सुनना। अब पत्र पूरा पढ़ने की या परिच्छेद बता-बताकर हुज्जत करने का झंझट ही नहीं रखना है।

रात को लेटे-लेटे सारी दलीलों को ज्वाला प्रसाद ने गाँठ में बाँध दिया। सुबह की पहली चाय पीते-पीते, नहीं अखबार पढ़ लेने के बाद कहना उन्होंने उचित समझा। दाढ़ी बनाने से लेकर नहाने तक डेढ़ घंटा मिलेगा। इसमें राखी आदत के अनुसार सिरपच्ची करे तो स्कूल जाने के समय तक खुद अंतिम आज्ञा-चर्चा का समापन और निर्णय जता देंगे कि 'राखी यह नहीं चलेगा। मंजी बेटी के घर इस बार जाना पड़ेगा! न जाने पर कितना बुरा लगेगा!' माँ का दिल है। झूठी हाँ-न करेगी, पर फिर स्वयं उसके साथ झगड़ा करके भी उसे जाने के लिए राजी करेंगे। वैसे उसका भी जाने का मन तो होगा न? राखी के गले उतारना पड़ेगा कि 'मेरी जरूरत है! मुझे बुलाते हैं।' खुद का मन भी तो तरसता था न कि 'कोई मुझे बुलाए, किसी को सचमुच मेरी जरूरत है।' खुद की आत्मा की भूख उन्हें राखी द्वारा ही तृप्त करनी है।

दाढ़ी पूरी हो गई। ज्वाला प्रसाद नाखून काटते-काटते बोले, ''क्यों पढ़ लिया न पत्र?'' राखी का कुछ भी जवाब नहीं। एक शब्द भी नहीं। ज्वाला प्रसाद को लगा कि वे गले से बोले ही नहीं क्या? उन्होंने फिर से कहा, ''तो फिर मंजी को पत्र लिख दूँ न कि तू परसों रवाना हो रही है?''

राखी इतना ही बोली, ''आपने पत्र ठीक से पढ़ा?'' फिर कदम उठाते-उठाते राखी कहती गई, ''आपको ठीक लगे वैसा!''

और फिर पड़ोसन को राखी कहती सुनाई दी, 'हाँ···आ, जरा मंजी के यहाँ जाने के लिए वे कहते हैं। कहीं भी निकला जाता नहीं। पर वे अब कहते हैं कि हो आ। उन्होंने अब तो लिख भी दिया, इसीलिए जा रही हूँ।''

बाथरूम में बाल्टी रखते, भोजन के लिए फट्टा बिछाते, घड़ी में चाबी भरकर हथेली में थमाते, अलगनी पर से धोया हुआ रुमाल तह करते, बैंच के नीचे से बूट खिसकाकर अपने पल्लू से साफ कर रखते हुए राखी कुछ भी नहीं बोली। एक शब्द भी नहीं, न रोष, न चिढ़, न संतोष, न द्विधा! चेहरे की एक रेखा भी बदली नहीं।

ज्वाला प्रसाद के चेहरे पर सलवटें बढ़ गईं। इनका हाथ जरा अधिक काँप गया।

बाथरूम में बाल्टी रखते, भोजन के लिए फट्टा बिछाते, घड़ी में चाबी भरकर हथेली में थमाते, अलगनी पर से धोया हुआ रुमाल तह करते, बैंच के नीचे से बूट खिसकाकर अपने पल्लू से साफ कर रखते हुए राखी कुछ भी नहीं बोली। एक शब्द भी नहीं, न रोष, न चिढ़, न संतोष, न द्विधा! चेहरे की एक रेखा भी बदली नहीं। ज्वाला प्रसाद के चेहरे पर सलवटें बढ़ गईं। इनका हाथ जरा अधिक काँप गया।

''यह पढ़ो, इसका अर्थ लगा लो!'' किसी भी प्रकार की हुज्जत बिना राखी कैसे तैयार हो गई। इस बार राखी ने भी 'जाना है' का निश्चय किया होगा? खुद का ही दूसरा मन राखी स्वरूप था न? इसीलिए शायद राखी ने भी अधिक बार पत्र पढ़ा नहीं और खुद की ही दलीलें उसने मन-ही-मन में की होंगी।

''तो अब राखी जा रही है!''

ज्वाला प्रसाद रुपया एक बार तो खुल्ला करा ही दे। दलीलें बची हों तो भी अब एक बार तो···लो जाती हूँ, कहकर निर्णय हो गया, फिर क्या?

मंजी के पूरे पत्र को वे भूल ही जाना चाहते थे। केवल पाँचवाँ परिच्छेद ही उनको 'जाने' के लिए योग्य लगा था। कहीं राखी आकर पत्र सामने रख देगी और जाने से पहले चर्चा हो जाएगी, ऐसी धारणा से ज्वाला प्रसाद डरते थे। इस कारण राखी के सामने आना ही टालते रहे थे। राखी तैयारी करती थी। ज्वाला प्रसाद स्वयं ही जाते हों, इस तरह चुपचाप राखी की तैयारी के साथ अपने आपको जोड़कर तैयारी में सम्मिलित होते थे। टीन की संदूक में उसने गरम शॉल रखा। घर में पहनने के स्लीपर को कागज में लपेट लिया और थैली में रखा।

'राखी ने कौन सी दलीलें करके जाना, निर्णय लिया होगा?' यह प्रश्न ज्वाला प्रसाद के मन में कौंध-कौंध जाता। स्वयं की जीभ पर से दलीलें गुजरे बिना ही राखी के गले उतर गई थी जाने की बात। पत्र उसने ठीक तरह से पढ़ा ही नहीं क्या? मंजी में जी समा गया होगा या घूम-फिर आने का मन हुआ होगा!

और नहीं तो क्या, राखी उनका ही दूसरा स्वरूप था। संसार की रही-सही वासना, 'इदमद्य मया लब्ध, इमं प्राप्सये मनोरथम्···' वाला श्लोक वे रोज बोलते थे।

कुछ अजीब सा लगता था। पर ऐसा तो होता ही है। स्वयं के हाथ-पैर ही मंजी के यहाँ जाने की तैयारी करते थे। मंजी के बच्चों के लिए खिलौने तो लेने पड़ेंगे। पचास रुपए राह खर्ची के लिए काफी होंगे। दस रुपए अधिक लेने ही ठीक हैं। दामाद कम बोलनेवाला है, पर मन में कुछ लाना नहीं। मंजी जरा चिड़चिड़ी हो गई है, बार-बार बीमार पड़ती है, इससे।

ज्वाला प्रसाद झूला झूल रहे थे। पैर की रोक लगने से झूला अचानक रुक जाता। 'तो क्या राखी जा रही है न? हाँ, वह जा रही है।' फिर झूला झूलने लगते।

वह पत्र जो जेब में था, वह कहीं रख दिया था। राखी के पास ही होगा। वह फिर न पढ़े तो अच्छा! बेचारी बमुश्किल तैयार हो रही है। नाहक की सिरपच्ची करना। खुद के पास पत्र नहीं यही अच्छा, नहीं तो स्वयं ही पत्र पढ़ने के लिए निकाल बैठते।

दो दिन से घर के वातावरण में अपरिचित हवा दम घोंटती थी।

राखी बरतन पटकती थी, वह कुछ पूछती नहीं थी, ज्वाला प्रसाद के सामने आना भी टालती थी। जैसे वह मन-ही-मन में कुछ बोलती थी। जोर से बोलना टालती थी।

बेटी के घर का माता-पिता खाते नहीं, वह तो ठीक, पर अब इस जमाने में इस ढोंग की कोई जरूरत नहीं। वहाँ पहुँचकर पत्र लिख देना। उन लोगों को बुरा लगे, ऐसा कुछ...नसवार की डिब्बी कहाँ? और पान का डिब्बा रखा। ज्वाला प्रसाद मन-ही-मन ये सूचनाएँ नोट करते थे। नसवारे को सड़ाके यहाँ-वहाँ थूकने की आदत, घुटने दुखने की शिकायत, सिर दुखे तब नीला टुवाल सिर पर बाँध करवट लेकर लेटना, ये सारी अपनी आदतें...दूसरों को असुविधा न हो, जरा ध्यान रखना। मंजी को तो अपनी माँ प्यारी है, वह ऐसी आदतें सह लेगी, पर दामाद तो ठहरा पराया!

''चलो, चलो...अब अधिक माथापच्ची न करो, अब जल्दी निकलो।'' यों जैसे झूला थामकर ज्वाला प्रसाद ने ज्यादा सोचना बंद कर दिया था। इस शाम राखी जानेवाली थी और एक महत्त्वपूर्ण मीटिंग उनकी थी। जाते समय कुछ मुँह से न निकले! पड़ोस का रामू ताँगा ला देगा और तीरथ स्टेशन तक साथ में जाकर टिकट ले देगा। जगह तो मिल ही जाएगी...पाँच बजे तब घर से निकल ही जाना।

वह निकली होगी...टिन की संदूक और एक थैला। बस सामान तो कम होगा। सामने के प्लेटफार्म पर जाना है, इसलिए टीन की संदूक उठाकर तीरथ सीढ़ियाँ चढ़ता होगा...लँगड़ाती सी पैर रखकर राखी पीछे-पीछे घिसटती होगी...लोग दौड़ते होंगे। कटहरा पकड़कर राखी सीढ़ियाँ चढ़ती होगी, शायद चप्पलें उसने हाथ में ले ले होंगी। चप्पल पहने अधिक चलने की आदत नहीं न। ब्लडप्रेशर की शिकायत तो राखी को नहीं है।

ज्वाला प्रसाद की पसली में अचानक दर्द उठ आया। भगवान् न करे राखी की अनुपस्थिति में यह पीड़ा बढ़ जाए तो, तो खुद तार दे...।

'जल्दी आओ...' बेचारी कैसी सकपका जाएगी, पर खुश भी होगी। किसी भी शंका बिना, उसे जीना सार्थक लगे कि 'उसी की ही जरूरत है। उसे ही बुलाया है।'

ज्वाला प्रसाद अपनी बीमारी के विचार से जरा खुश हुए। हाँ, अभी तक पसली का दर्द थमा न था।

'राखी चली गई होगी, अब तो रेल में बैठ गई होगी।' यों मन-ही-मन विचार सहेजकर, मीटिंग समाप्त कर ज्वाला प्रसाद घर आकर झूले पर बैठे।

मंजी का पत्र अब खुद पान चबाते-चबाते निश्चिंतता से पढ़ सकेंगे। नहीं, पत्र तो राखी ले गई थी। तो क्या हुआ? शिक्षक को सारे ही महत्त्व के वाक्य याद थे। वाक्य-रचनाएँ, अर्थ, परिच्छेद, महत्त्वपूर्ण सूचना, अरे और तो और गलत व्याकरण भी और गलत प्रयोग भी याद रहते ही हैं। अब चाहे जितने अर्थ निकालने हों, उतने निकालें। अब सामने कोई दलील करनेवाला नहीं होगा। दरवाजा बंद था। दरवाजे के बाहर राखी 'जाना है' निर्णय करके चली गई थी।

धड़ाक से दरवाजा खुला। ज्वाला प्रसाद की पसली का दर्द कुछ बढ़ गया था। झूले पर जैसे पीड़ा सहते-सहते उनकी आँख लग गई थी। राखी सामने आ खड़ी हुई।

वही बड़बड़ाहट, वही स्वरूप, घर की वही चिर-परिचित हवा। मंजी के पत्र की तहें खुलने लगी थीं। अक्षर फटाफट सामने निशाना लगा रहे थे। मानो मंजी की जीभ पर से ही सीधे आ रहे थे।

''आपकी क्या अक्ल है? मुझे ही बुद्धू बनाते हैं! सठियाई बुद्धि! यह परिच्छेद तो पढ़िए। इसका क्या अर्थ होता है? आप इसे पढ़ने से चूके ही कैसे? मैं तो आपके ही भरोसे रही। कह दिया, 'जाओ!' आपने स्पष्ट नहीं किया, अरे, कुछ तो बोलना था?''

मंजी के पत्र राखी को जोर-जोर से पढ़ा, ज्वालाप्रसाद सुनते रहे।

''पैसों की तो कोई चिंता ही नहीं। मैं तो सदा की तरह बीमार हूँ। पर इस बार हमने माउंटआबू जाने का विचार किया है। घर के सगे-संबंधियों के जंजाल से दूर रहने और स्थान परिवर्तन से जरा मन में भी बदलाव हो जाता है। मेहमान के रूप में किसी के सिर जा पड़ने से तो यह अच्छा!''

''इतनी सारी प्रवास योजनाएँ प्रकाशित होती हैं। माँ आपको भी जाना है। पिताजी कोई मना करें ऐसे नहीं। आपके दामाद की अच्छी जान-पहचान है। चाहें तो इस ढलती उम्र में भी आप दोनों हो आएँ। यहाँ आएँ और ऐसी ही उलझनों में पड़े इसकी अपेक्षा तो वहाँ आनंद आएगा।

''मैं छोटी थी, पर वे दिन क्या अब फिर आनेवाले हैं? माँ के हाथ की गरम-गरम रोटी खाने के दिन तो गए। आप यहाँ चार दिन के लिए भी आ जाएँ तो भी क्या? जंजाल तो रोज का! रोजमर्रा का झंझट तो चलता रहेगा। आप जरा बाहर निकलो तो अच्छा ही है। मेरे यहाँ आओ तो भी एतराज नहीं। पर यह प्रवास-योजना विचारने योग्य है। मेरा तो स्वभाव ही खराब हो गया है। कभी आप लोग बहुत याद आते हैं। जैसे फिर नन्हीं हो जाऊँ, वह जमाना फिर आए...मैं गुड्डे-गुड्डियों का खेल खेलती माता-पिता के पास होऊँ। कभी-कभी अकारण रोना आ जाता है।

''पिताजी तो कहीं भी निकलते नहीं और मुझे कहीं भी अच्छा नहीं लगता, मैं भली और मेरा घर भला। सब अपने-अपने घर सुखी।

''आप आओ तो पहले से ही पत्र लिखना। अचानक आ जाओ, तो यहाँ मुश्किल होगी। छाती में पीड़ा है, पसली का दर्द लगता है।''

''मैं जानती हूँ न, आपका चेहरा-मोहरा ही उतरा हुआ लगता था। मुझे तो मन-ही-मन आशंका ही थी।'' सेंक की थैली के लिए गरम पानी करने रसोई में जाती हुई राखी बड़बड़ाती थी और फिर आवाज सुनाई दी। किसकी थी यह आवाज? क्या ध्वनि थी? क्या अर्थ था?

''दूध मँगा लें अब, हैं खुले पैसे?''

''नहीं।''

''तो कोई बात नहीं।''

२-ए-२ पवनपुरी
बीकानेर-३३४००३ (राज.)
दूरभाष : ०९४६०८९३९७४

व्यंग्य

एक डॉक्टर की कथा

• शशिकांत सिंह 'शशि'

डॉक्टर साहब साहब बाद में हुए, पहले उनका नाम अमर कुमार था। बचपन से ही बच्चे अमर कुमार में डॉक्टरी के कीटाणु कब घुस गए, पता ही नहीं चला। हाँ, उनके पिताजी को जरूर पता चल गया था। बेवजह शांत बैठे मेढकों को पकड़ना और चीड़-फाड़ करने की उत्सुकता दिखाना वे आधारभूत लक्षण थे, जिनके कारण अमर कुमारजी में भारत का भावी डॉक्टर देखा गया। विज्ञान और अमर कुमार में जन्म-जन्मांतर का बैर था, लेकिन पिताजी को 'डॉक्टर अमर कुमार' चाहिए था। मूलत: अमर कुमारजी कविताएँ लिखने और प्रेम करने को अपने जीवन का ध्येय समझते रहे, लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था। भारतवर्ष में दयालु पुरुषों की कमी नहीं है। उन्होंने ऐसी संस्थाएँ बना रखी हैं, जहाँ केवल धनराशि खर्च करने पर ही मनुष्य डॉक्टर या इंजीनियर में तब्दील हो जाता है। अमर कुमारजी बन गए डॉक्टर। डॉक्टर बनने के बाद उनके पिताजी ने समझाया—''बेटा! तुम्हारी पढ़ाई में दस लाख के लगभग धन खर्च हुआ है। खर्च हुआ सो हुआ। दहेज से रिफंड हो जाएगा, लेकिन तुम ऐसी जगह पर डॉक्टरी करो कि हर महीने इतने पैसे आ जाएँ।''

वह दिन है और आज का दिन है, अमर कुमारजी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। हर मनुष्य उन्हें मरीज दिखता है और हर मरीज में पाँच सौ का नोट। उनकी दर्शन-फी पाँच सौ रुपए है, जो समय और संदर्भ को देखकर उछलती भी है। इमरजेंसी की स्थिति में फीस उछाल ले सकती है। इमरजेंसी प्रभु की इच्छा से भी होती है और मानव की इच्छा से भी। प्रभु की इच्छा से होनेवाली इमरजेंसी में मरीज ऊपर जाता है और डॉक्टर की इच्छा से उत्पन्न की गई इमरजेंसी में डॉक्टर साहब को ऊपर की कमाई हो जाती है। शुरू के दिनों में डॉक्टर अमर कुमार को संघर्ष करना पड़ा। उनको गरीबों को देखकर दया आ जाती थी। मरीजों की परेशानी से परेशान हो जाते थे। इमरजेंसीवाले मरीजों की फीस उधार भी कर लिया करते थे। उनके इस पतन से पिताजी तो परेशान थे ही, साथी डॉक्टर भी कम दु:खी नहीं थे। एक डॉक्टर साँवले ने समझाया—

''ब्रदर, क्यों कुल्हाड़ी पर टाँग मार रहे हो? अपनी मारो तो मारो, तुम तो हमारी टाँगों को भी मार रहे हो। डॉक्टर को भगवान् कहा जाता है। भगवान् बनने का प्रयत्न करो। बिना प्रसाद के वरदान मत दो। द्रवित होने की जरूरत नहीं है। गरीबी और अमीरी देखने का काम हमारा नहीं है। हम निष्पक्ष भाव से निश्चल होकर आदमी को मरीज समझें। भावुकता डॉक्टर के लिए अत्यंत घातक रोग है।''

सुपरिचित व्यंग्यकार। अब तक 'समरथ को नहिं दोष' *(व्यंग्य-संग्रह)*, 'ऊधो दिन चुनाव के आए' *(व्यंग्य-काव्य)*, 'बटन दबाओ पार्थ' कृतियाँ चर्चित। उत्कृष्ट लेखन के लिए 'हरिशंकर परसाई व्यंग्य सम्मान' एवं अन्य सम्मान प्राप्त।

इन शब्दों ने रामबाण का काम किया। अमर कुमारजी चेत गए। 'बिन गुरु होय न ज्ञान।' साँवले साहब को अपना गुरु मान लिया। लक्ष्मी तो आने लगी, लेकिन छप्पड़ नहीं फटा। अपने साबुत छप्पड़ को देखकर डॉक्टर अमर कुमार अत्यंत खिन्न हो जाते थे। साथी डॉक्टरों के घर हवेली हो गए। बाइक की जगह कार आ गई। कार से काऽऽऽ···र पर आ गए लोग और अमर कुमारजी अब जाकर ले पाए 'अल्टो'। यही स्पीड रही तो बच्चे अमरीका में कैसे पढ़ेंगे? बीबी को पेरिस घूमने का शौक है, कैसे पूरा होगा? यदि देश में ही घूमना होता तो डॉक्टर बनने की क्या जरूरत थी? गँवई डॉक्टर भी इतना ही कमाता है। अमर कुमार ने किताबों की नई खेप मँगाई। इंटरनेट पर नई बीमारियों की पहचान में समय गँवाने लगे। फेसबुक पर जो विदेशी डॉक्टर दोस्त बने थे, उनसे इनबॉक्स में मशविरा भी करने लगे। मेडिकलवाली पत्रिकाएँ भी मँगवाई गईं। पत्रिकाओं में स्वास्थ्य के आलेखों की कटिंग भी फाइल की। सब धान बाइस पसेरी। आमदनी नहीं बढ़ी तो नहीं बढ़ी। रोज के जहाँ पाँच हजार आ रहे थे तो सवा पाँच हजार आने लगे। उन्होंने मन बना लिया कि किसी और बड़े शहर में जाएँगे। दिल्ली या मुंबई में जाकर प्रैक्टिस करेंगे। यहाँ लोगों के पास पैसे ही नहीं हैं तो खर्च कौन करेगा? उनका मन विद्रोह कर रहा था—इसी शहर में रहकर डॉक्टर वर्मा, शर्मा, दूबे, चौबे सब करोड़पति हो गए। आप खाक छान रहे हैं तो दोष आपके हुनर में है। आपके संस्कारों में खोट है। मामला इतना तनावपूर्ण हो चला था कि उनके पिताजी ने भी उनसे उम्मीद छोड़ दी थी। वे तीर्थयात्रा के लिए अमरीका जाना चाहते थे। जापान जाकर बौद्धधर्म की जड़ों की पड़ताल करना चाहते थे, लेकिन हाय! बेटा ही निकम्मा निकला। अलबत्ता माँ जरूर खुश थी कि बेटा लाखों कमा रहा है तो चिंता की कोई बात नहीं है।

डॉक्टर अमर कुमार नामक व्यक्ति अपने क्लीनिक में विराज रहा था। अत्यंत उदास और परेशान। तभी जंगबहादुरजी का प्रवेश हो गया। जंगबहादुरजी पहले डॉक्टर ही थे, लेकिन अब उन्होंने जनहित में प्रैक्टिस

छोड़ दी है। अब फुलटाइम शायरी और प्रेम करने लगे हैं। आते ही बोले—

ऐ दर्दे दिल तुझे हुआ क्या है?
आखिर इस मर्ज की दवा क्या है?

अमर कुमारजी पहले से ही सुलग रहे थे, ऊपर से इस शेर ने तेल का काम किया। भभके—''जंग साहब, आप भी तंज कसने से बाज नहीं आते। गालिब की कंठी बनाकर गले में लटकाए रहिए। यहाँ जान जाने पर लगी है। आदमी खाई की ओर तेजी से बढ़ रहा है। आप धक्का देने आ गए।''

जंगबहादुरजी मुसकराए और दूसरा शेर कहने जा ही रहे थे कि मौन हो गए। उवाचे—''दोस्त, हमें आपके इस मर्ज की दवा मालूम है। अजी साहब, आपको यह लगता है कि आपके इलाज में कमी है। लाहौलविलाकुव्वत। आप से ज्यादा हुनरमंद डॉक्टर कौन है भला? यह अलहदा है कि हुजूर को कमाने का हुनर नहीं आता। हम बताएँगे आपको अरबपति बनने की तकनीक।''

''नहीं साहब, हम तो करोड़पति बनकर ही खुश हो जाएँगे। आप हमें···।''

''जी···अरबपति तो हम आपको बनाकर ही छोड़ेंगे। तकनीकों पर गौर कीजिए। शहर में कितने एम.आर. हैं, जो आपके भक्त हैं। आपने कितनों का भला किया है? अर्थात् आपने उन बेचारों की बताई गई दवाइयों को मरीजों पर आजमाया है। नहीं न। शहर में कितने मेडिकल स्टोरवाले हैं, जो तीज-त्योहारों में आपके घर आते हैं। आप कितनों के यहाँ जाते हैं? हुजूरेवाला, मेडिकल स्टोर और डॉक्टर में गधे और धोबी जैसा सनातनी संबंध है और आप हैं कि मानते ही नहीं। आप यदि उनकी दवाइयाँ नहीं चलाएँगे तो बेचारों का कल्याण कैसे होगा?''

''कमाल करते हैं आप! अजी साहब, हम यहाँ मरीजों के भले के लिए बैठे हैं। उनके कल्याण की कोशिश कर रहे हैं, एम.आर. और मेडिकलवालों की नहीं। आपको पता है कि शहर में नकली या जेनेरिक दवाइयों की भरमार है। ब्रांडेड दवाइयों का इस्तेमाल करना हमारा फर्ज है।''

''जनाब! फर्ज भी एक मर्ज है। आप जब तक दूसरों का भला नहीं करेंगे, आपका भला कैसे होगा। लाभ के लिए भला करना जरूरी है। दवा तो फायदा करती ही है देर-सवेर। मान लीजिए, जिसे दो दिन में ठीक होना है, वह अगर चार दिन में ठीक होगा तो कौन सा देश का विकास रुक जाएगा। यदि दो सौ रुपए में ठीक होने की जगह तीन सौ में ठीक हो गया तो कौन सा विश्व बैंक दिवालिया हो जाएगा। हुजूर, नजीर अकबराबादी क्या कहते हैं—

अपना मतलब हो तो मतलब की खुशामद कीजे
और न हो काम तो इस ढब की खुशामद कीजे,
औलिया, अंबिया और रब की खुशामद कीजे
अपने मकदूर, गरज सब की खुशामद कीजे।

''अमाँ मियाँ, एक बात बताओ। गांधी बनोगे तो क्या मिलेगा? एक मूर्ति बनेगी चौराहे पर, जो दूसरी मूर्ति से लड़ने के काम आएगी। माल कमाओ, माल बनाओ। यही नारा याद रखो। यों मुँह लटकाकर मत बैठो।''

अमर कुमार का दिमाग चाचा चौधरी से भी तेज चलने लगा। दवा के दुकानदार तो संपर्क कर ही रहे थे। दस से बीस प्रतिशत तक का कमीशन। मरीजों को क्या पता कि सौ रुपए की दवा से मर्ज जाएगा या पाँच सौ की से। पाँच सौ का अर्थ है, सौ रुपए बिना किसी कमाई के आना। मरीज को भला क्या नुकसान है। वह तो ठीक हो ही रहा है। विस्तार से दवा खाएगा तो बिस्तर से जल्दी उठेगा। उनके पास जो दवा के दुकानदार और एम.आर. अपना कार्ड छोड़कर गए थे, उनका नंबर मिलाने लगे।

कमाई तो बढ़ गई, लेकिन वह नहीं हुआ, जो सोचा था। वर्मा, शर्मा की बराबरी पर तो आ गए, लेकिन डॉ. मिश्रा की प्रैक्टिस तो अभी भी लाखों में है। उन तक पहुँचने में तीन जन्म लग जाएँगे। आखिर करता क्या होगा? वह यदि हृदय रोग का स्पेशलिस्ट है तो इधर कौन कम है? दवा दुकानदार और दवा कंपनियों से भी परनाला बहकर आ रहा है। छप्पड़ क्यों नहीं फट रहा। लक्ष्मी को मिश्रा से इतना प्यार क्यों है? वह उल्लू कौन है, जो लक्ष्मी को उन तक लेकर जाता है। पिताजी जापान तो घूमकर आ गए। पूर्वजों के नाम पर एक मंदिर भी बन गया। कार भी बड़ी हो गई, लेकिन मिश्रा···। उनका मन एक बार फिर उदास रहने लगा। हृदय डूबता हुआ सा लगता। क्या करे, कहाँ जाए? आखिरकार एक दिन जंगबहादुर के घर गए। प्यासे का फर्ज है कि वह कुएँ के पास जाए। उन्हें देखते ही चहके जंगबहादुर—

खुदा को पा गया वाईज मगर,
है जरूरत आदमी को आदमी की।

''यह किसने कहा है?''

''जी कहने के लिए तो बंदा अपना नाम भी पेश कर सकता है, लेकिन कहा है, फिराक साहब ने। खैर, आप किस फिराक में आए जनाब। बेवजह तो आदमी अपने अब्बा को भी सलाम नहीं ठोकता। कहिए क्या पेश करूँ?''

''जी नहीं, कुछ नहीं। यार···ये मिश्राजी क्या करते हैं। कैसे इतना कमा लेते हैं, समझ में नहीं आता। सुना है, आप जब शहर में आए तो मिश्रा के पास एक टीन की झोंपड़ी थी, आज महल की तरह क्लीनिक है। बोतल का जिन्न हाथ लग गया क्या?''

''भाईजान, बोतल का जिन्न तो सबके पास है, घिसना भी तो आना चाहिए। आपके पास यदि कोई आदमी बुखार से पीड़ित आए तो आप क्या करते हैं?''

''बुखार यदि पंद्रह दिन से अधिक से है तो खून की जाँच होगी नहीं तो एंटीबायटिक देकर उसे ठीक किया जाएगा।''

''उसकी टाँग का एक्स-रे करवाते हैं आप?''

''नहीं, टाँग का क्यों? अहमकों की तरह बोल रहे हैं आप।''

''जनाब, यही तो। एक्सरे, खून, पेसाब, बलगम, पखाना तथा सी

टी स्कैन हर बीमारी में जरूरी है। मिश्राजी हर बीमारी में ये कार्यक्रम करवाते ही हैं। एक बीमारी पाँच टेस्ट। पाँच टेस्ट आलवेज बेस्ट। एक टेस्ट से एक सौ कम-से-कम, यानी पाँच सौ एक मरीज से। दिन में यदि एक सौ मरीज आ गए तो···। आप कभी पहुँच पाएँगे वहाँ तक?''

''यह तो सरासर लूट है।''

''तो आपको क्या लगता है कि आपके हाथ एक दिन खजाने का नक्शा लगेगा और आप घोड़े पर चढ़कर जाएँगे, निकाल लाएँगे। उल्लू बनाना आएगा, तभी लक्ष्मी मेहरबान होगी। आप देखते नहीं हैं, आजकल स्कूलों में क्या चल रहा है। जितना बड़ा स्कूल, उतना महँगा ट्यूटर। हर विषय को पढ़ाने के लिए अलग-अलग टीचर। साहब, उनसे कोई पूछे कि जब सब विषय के टीचर आ ही रहे हैं तो बच्चा स्कूल क्यों जाता है? नहीं पूछेंगे। लूट पर ही देश टिका है। आपने कुँवर बेचैन साहब को सुना है। कहते हैं—

जो छल की चोटियाँ हैं, उन पर तो कोठियाँ हैं
मेहनतकशों के तन पर, केवल लँगोटियाँ हैं।

''अच्छा साहब, चाय तो आपको पिला नहीं पाऊँगा। बीबी मायके गई है। नौकरानी आई नहीं। आप कहें तो एक-दो शेर और पिला दें।''

अमर कुमार समझ गए कि गेटआउट की तरह की चीज कह रहा है। चल पड़े, लेकिन खुश थे। चाँदी की चाबी हाथ लग गई। तो मिश्राजी यों कमा रहे हैं। तभी कहूँ कि दोनों बेटे यू.एस. से पढ़कर कैसे आ गए। वैसे देखा जाए तो इसमें बुराई भी क्या है? शरीर एक तंत्र है। यदि फेफड़े में बलगम है तो हो सकता है कि पेट में गैस हो और टाँग की हड्डी भी अफेक्टेड हो रही हो। पूरी तरह से जाँच कराने में तो मरीज का ही भला है। डॉक्टर भी तभी किसी बीमारी के बारे में ठीक से बता पाएगा, जब उसे पूरी रिपोर्ट मिलेगी। उन्होंने मन-ही-मन तय किया कि अब 'पाँच टेस्ट ऑलवेज बेस्ट' के सिद्धांत पर चलेंगे। धनलक्ष्मी तेजी से बढ़ने लगी। नगर के सारे डॉक्टर पीछे छूट गए। मिश्राजी दूसरे नंबर पर आ गए। हुनर के साथ जब कलाकारी भी आ गई तो शोहरत और दौलत दोनों चरण चूमने लगीं।

बीबी तो वॉशिंगटन जाकर लौट आई। बच्चे देहरादून में पढ़ रहे थे। पिताजी स्वर्ग सिधार चुके थे। माताजी भी उसी राह पर जा चुकी थीं। डॉक्टर साहब का दिल अब भी उदास हो जाया करता था। राजधानी में एक डॉक्टर हैं—डॉक्टर दास। उनका नाम सुनते ही उदास हो जाते हैं। दास के पास क्या नहीं है। वह देश का माना हुआ डॉक्टर ही नहीं है, बल्कि राजनीति में भी उसकी पैठ है। देश के सभी बड़े शहरों में दास हॉस्पिटल के डंके बजते हैं। वह अपने चार्टेड प्लेन से चलता है। सुना है कि यू.के. में भी उसके दो अस्पताल हैं। यहाँ क्या है? राज्य में जरूर उनका नाम है, लेकिन उनसे बड़े डॉक्टरों की क्या कमी है। महँगी कारों से तो गुंडे भी चलते हैं। उनका जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। जीवन में सुख की आशा लिये ही दुनिया से कूच करना होगा। 'जेहि विधि राखै राम, तेहि विधि रहिए।' उनकी निरंतर बढ़ती जा रही उदासी से पत्नी परिचित तो थी, लेकिन उनकी आदतों से नावाकिफ नहीं थी। उन्हें पता था कि निन्यानबे के चक्कर डॉक्टर साहब को आते रहते हैं। आजकल डॉक्टर दास से अपनी तुलना करके दु:खी रहते हैं। उपाय भी नहीं है।

अमर कुमार समझ गए कि गेटआउट की तरह की चीज कह रहा है। चल पड़े, लेकिन खुश थे। चाँदी की चाबी हाथ लग गई। तो मिश्राजी यों कमा रहे हैं। तभी कहूँ कि दोनों बेटे यू.एस. से पढ़कर कैसे आ गए। वैसे देखा जाए तो इसमें बुराई भी क्या है? शरीर एक तंत्र है। यदि फेफड़े में बलगम है तो हो सकता है कि पेट में गैस हो और टाँग की हड्डी भी अफेक्टेड हो रही हो। पूरी तरह से जाँच कराने में तो मरीज का ही भला है। डॉक्टर भी तभी किसी बीमारी के बारे में ठीक से बता पाएगा, जब उसे पूरी रिपोर्ट मिलेगी।

डॉक्टर अमर कुमार की उदासी जब खतरे का निशान पार कर गई तो पुन: जा पहुँचे जंगबहादुरजी के आवास पर। जंगबहादुरजी तो आजकल जनहित में राजनीति कर रहे थे। विधायक का टिकट मिला था, उसी के विकास हेतु रकम जुटाने में लीन थे। आजकल आवास पर आनेवाले हर आदमी को देशभक्ति के टिप्स दिया करते थे। उन्होंने देखा कि अमर कुमारजी चले आ रहे हैं तो खुशी से उछल पड़े। अमर कुमारजी पार्टी-फंक्शन वगैरह में तो मिलते थे, लेकिन कभी अकेले मिलने-मिलाने का अवसर ही नहीं आया। उन्होंने अपने दिमाग में तौला कि कम-से-कम पाँच लाख का चंदा तो तय है। अधिक भी दे सकता है। उन्होंने पुराने ढंग से ही चहकते हुए कहा—''जनाबेआला आप तो रास्ता ही भूल गए थे। जफर कमाली साहब क्या खूब कहते हैं, आपने सुना ही होगा—

तिजारत जिस तरह बाजार में करता है पंसारी
अदब में भी वही दिन-रात कारोबार होता है

''आप ठहरे इल्मो-अदब के आदमी, हम ठहरे नेता। हमारा आपका क्या मेल-जोल, लेकिन आपके इल्मो-अदब में भी तिजारत कम नहीं है। सियासत वहाँ भी खूब है। कहिए, सुना है, आजकल आप मिश्राजी का अस्पताल खरीदनेवाले हैं।''

''एक-दो पुराने अस्पतालों को खरीदकर कोई अंबानी तो हो नहीं जाएगा। हमारी छाड़िये, अपनी कहिए। कैसा चल रहा है नया धंधा? सुना है, भाजपा की ओर से टिकट मिल रहा है। कांग्रेस छोड़ रहे हैं क्या?''

''राजनीति और धर्म में तो चोला बदलना चलता ही रहता है। भाजपा की ओर से यदि टिकट नहीं मिला तो राजद से दोस्ती में भी परहेज नहीं है। आपका आना अकारण तो होता नहीं है। कहिए, नाचीज क्या खिदमत करे?''

डॉक्टर अमर कुमार ने मुँह लटकाकर कुल किस्सा कह सुनाया। बदले में जंगबहादुर ने समझाया कि आदमी को चादर के अनुसार ही पाँव फैलाना चाहिए। खुदा के फजल से पाँव से बहुत बड़ी चादर हो गई है। दास से तुलना करने के बाद यदि किसी न्यूयॉर्क के डॉक्टर से मुकाबला हो जाए तो। उन्होंने अपनी संतुष्टि का राज भी बताया। संतोषं

परम सुखम् के बाद एक शेर दाग दिया अदम गोंडवी का—

एक जनसेवक को दुनिया में 'अदम' क्या चाहिए
चार-छह चमचे रहें, माइक रहे, माला रहे।

आप भी अपने महल और गाड़ी से ही सब्र कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि उल्टे बाँस बरेली को लद जाएँ।''

डॉक्टर साहब जिद पर आ गए। उन्होंने गुरुजी के पाँव पकड़ लिये।

''आपके मार्गदर्शन से ही आज यहाँ तक आ पाया हूँ। आप यदि मुझे अकेला छोड़ देंगे तो कौन मेरी मदद करेगा।''

अत्यंत जिद करने पर जंगसाहब ने उन्हें अपने एक चेले के पास भेज दिया, जिसने ज्ञान देते हुए कहा—

''अमर कुमारजी, पंछी भी झुंड में रहते हैं। संकट पड़ने पर कौए भी एकजुट हो जाया करते हैं। हमें इनसे सीखना चाहिए। आपके पास यदि कालाजार का रोगी आए तो आप बंगाली बाबू के पास भेज दिया कीजिए। यदि टी.बी. का पेशेंट आए तो अपने डॉक्टर पासवान क्या बुरे हैं। मान लीजिए, आपके पास कोई हड्डी फ्रैक्चर का केस आ जाता है तो बी.के. सिंह के पास भेज दीजिए। आपको तो पता ही होगा कि आपके मरीज से जो ऐंठा जाएगा, उसका दस प्रतिशत आपके एकाउंट में आ जाएगा। यह एक समतावादी फॉर्मूला है। सबका साथ सबका विकास। मरीज को भी सही जगह मिल जाएगी और आपको भी माल की प्राप्ति होगी।''

''यानी कि मरीज से दस प्रतिशत अधिक लिया जाएगा?''

''दस नहीं। उससे पंद्रह प्रतिशत अधिक लिया जाएगा। आपके अलावा भी तो सहयोगी हैं, जो मरीज को डॉक्टर तक पहुँचाते हैं।''

''यह तो मर्डर की किस्म का अपराध है।''

''इलाज के बिना मरने से तो उत्तम है कि इलाज करवा के मरीज मरे। जाते-जाते किसी का भला करके जाएगा। धन लेकर तो कोई जा नहीं पाया है।''

''और एक गरीब आदमी?''

''गरीब जीकर करेगा क्या? उसे तो महँगाई, कुपोषण, अपराध, प्रदूषण कोई-न-कोई मार ही देगा। डॉक्टर मारेगा तो वह सीधा स्वर्ग जाएगा, क्योंकि डॉक्टर धरती का भगवान् है। स्टाफवाली बात होगी तो ऊपरवाला भगवान् ध्यान भी देगा।''

उसके बाद क्या हुआ पता नहीं, लेकिन डॉक्टर अमर कुमार पिछले दो महीने से जेल में हैं। बेल जल्दी ही मिलने की उम्मीद है। उनके मरीज रोज मंदिर में नारियल फोड़ रहे हैं।

जवाहर नवोदय विद्यालय
शंकरनगर, नांदेड़-४३१७३६ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : ७३८७३११७०१

सुधी पाठकों से निवेदन

- जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, कृपया वे सदस्यता का नवीनीकरण समय से करवा लें। साथ ही अपने मित्रों, संबंधियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें।
- सदस्यता के नवीनीकरण अथवा पत्राचार के समय कृपया अपने सदस्यता क्रमांक का उल्लेख अवश्य करें।
- सदस्यता शुल्क यदि मनीऑर्डर द्वारा भेजें तो कृपया इसकी सूचना अलग से पत्र द्वारा अपनी सदस्यता संख्या का उल्लेख करते हुए दें।
- चैक अथवा बैंक-ड्राफ्ट साहित्य अमृत के नाम से भेजे जा सकते हैं।
- ऑन लाइन बैंकिंग के माध्यम से सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एकाउंट नं. १११०७३४३९३ अथवा CBIN ०२८०२९७ में साहित्य अमृत के नाम से शुल्क जमा कर फोन अथवा पत्र द्वारा सूचित अवश्य करें।
- पत्रिका न मिलने पर १५ से २० तारीख तक सूचित कर दें, ताकि वह अंक नए अंक के साथ भेजा जा सके।
- आपको अगर साहित्य अमृत का अंक प्राप्त न हो रहा हो तो कृपया अपने पोस्ट ऑफिस में पोस्टमैन या पोस्टमास्टर से लिखित निवेदन करें। ऐसा करने पर कई पाठकों को पत्रिका समय पर प्राप्त होने लगी है।
- सदस्यता संबंधी किसी भी शिकायत के लिए कृपया कार्यालय दिवस में २ से ५ बजे तक फोन नं. ०११-२३२५७५५५, २३२७६३१६ अथवा **sahityaamrit@gmail.com** पर इ-मेल करें।

गोबरधन

• मनोज श्रीवास्तव मोक्षेंद्र

देवकी आवेश में आपे से बाहर हुई जा रही थी। गुस्से में उसमें से औरत गायब हो चुकी थी। नशे में धुत्त एक मर्द की तरह वह मुट्ठी भींचकर दीवार पर बार-बार प्रहार करती बेतहाशा चीखती जा रही थी, ''उस गोबरधन ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। कितने जतन से लाखों के गहने इकट्ठे किए थे; खूब सहेजकर अपने शौक के मुताबिक जुटाए थे, पर वह धूर्त हमारी आँख में धूल झोंककर चंपत हो गया।''

विभव उसके गुस्से पर लफ्जों का बर्फीला पानी डालते जा रहे थे, ''देवकी, तुम बिल्कुल चिंता मत करो। धीरे-धीरे मैं फिर से तुम्हारे सारे गहने बनवा दूँगा। उस चोट्टे पर ऐसे चीखोगी तो तुम्हारा ब्लड प्रेशर और बढ़ जाएगा; आखिरकार तुम्हें ही नुकसान होगा, उस हरामजादे का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा।''

विभव के समझाने पर वह कुछ पल खामोश सोचती रही, फिर अचानक तेज कदमों से कमरे में टहलते हुए बकबक करने लगी, ''अरे, अब इस बुढ़ापे में तुम मेरे लिए क्या गहने बनवाओ, तुम कुछ कर सकते हो तो बस पुलिस को इस बारे में इत्तला कर दो। हो सकता है, पुलिस की मदद से वह पकड़ में आ ही जाए।''

एक झटके में विभव पूरे बेडरूम में उसके साथ टहलते हुए उससे छिटककर उसकी पीठ सहलाए जा रहे थे, पर वह गरज उठी, ''विभू, तुम्हीं ने तो उसे सिर चढ़ा रखा था। उसके साथ तुम ऐसे पेश आते थे जैसे कि वह तुम्हारा बेटा या कोई रिश्तेदार या दोस्त हो। अरे, अब चुप क्यों बैठे हो, पुलिस को फौरन फोन लगाओ, नहीं तो मैं...।''

फुरती से उसके हाथ से फोन का चोगा छीनते हुए विभव ने उसे दोनों हाथों से अपनी पकड़ में रखने की कोशिश की, ''खाहमखाह, तुम यह लफड़ा मोल ले रही हो। जो हुआ, सो हुआ। अब नाहक पुलिस को बुलाने से कोई फायदा नहीं होने वाला है। उल्टे कचहरी-थाने के चक्कर लगाने पड़ेंगे और फिजूल में फजीहत मोल लेनी पड़ेगी। हासिल कुछ नहीं होनेवाला है।''

पर देवकी कहाँ माननेवाली थी? उसने झट से पर्स में से मोबाइल फोन निकाला और बड़बड़ाती-भागती हुई सीढ़ियों से चढ़कर छत पर चली गई, जहाँ से वह विभव के हस्तक्षेप के बिना थाने में रपट लिखवा सके, पर विभव चिल्लाते जा रहे थे, ''देवकी, पुलिस को फोन मत लगाना। गोबरधन उनकी गिरफ्त में कभी नहीं आनेवाला है। अब गम खाकर बैठ जाओ। समझ लो कि वे गहने तुम्हारे थे ही नहीं।''

लेकिन देवकी उनकी एक भी सुनने वाली नहीं थी। विभव ने असहाय सा सोफे पर बैठते हुए अपना माथा पकड़ लिया। वह समझ गए थे कि देवकी पुलिस को बुलाकर ही दम लेगी। अगर गोबरधन पुलिस के हत्थे चढ़ा तो वह उसे मार-पीटकर उसके हाथ-पैर तोड़ देगी और उसे नाकारा-अपाहिज बना देगी, तब उसके परिवार का क्या होगा? वह गंभीर सोच में पड़ गए।

यद्यपि गोबरधन उनके ढाई लाख के गहने लेकर रफू-चक्कर हो गया था, फिर भी विभव के मन में उसके लिए हमदर्दी ही पैदा हो रही थी। कोई दो साल पहले, हाँ, पिछले के पिछले साल ऑफिस से लौटते वक्त वह उसे अपने साथ लेकर आए थे। जैसे ही उन्होंने शाम को प्लेटफॉर्म पर कदम रखा, एक सुडौल कद-काठी का नौजवान, जिसकी उम्र रही होगी कोई २२-२३ साल की, उनके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, 'सरजी, मैं बी.एस-सी. पास हूँ, मुझे कहीं कोई छोटी-मोटी नौकरी दिला दीजिए तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।'

विभव हक्का-बक्का रह गए। उन जैसे अदने से इनसान से नौकरी की गुहार लगाकर जैसे किसी ने अचानक उनका कद बढ़ा दिया हो। वह तो खुद एक मामूली अफसर हैं, जिनका कार्यक्षेत्र अपने सबार्डिनेट से पेपर वर्क कराने तक ही सीमित है। उन्होंने नौजवान का सिर से पैर तक जायजा लिया और फिर बुदबुदाते हुए आगे बढ़ गए, 'बी.एस-सी. पास हो, हट्टे-कट्टे हो; जवान भी हो, फिर क्यों नहीं किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते?'

वह लड़का फिर उनका रास्ता रोककर उनके सामने खड़ा हो गया और गिड़गिड़ाने लगा, 'सरजी, अब क्या कहें, मैं बहुत हाथ-पैर मार चुका हूँ। अब तो कुछ भी करके अपना और अपने जनों का पेट पालना है। आप अगर किसी प्राइवेट कंपनी में भी काम नहीं दिला सकते तो अपने घर में ही रख लीजिए। मैं सबकुछ कर लेता हूँ, खाना बनाने से लेकर, घर की सफाई, बच्चों की देखरेख, घर की हर व्यवस्था। बस

एक मौका देकर आजमा लीजिए। आपको कोई शिकायत का मौका नहीं दूँगा। आपके बच्चों को पढ़ा भी सकता हूँ। हाँ, पूरी ईमानदारी और लगन से काम करूँगा।'

बोलते-बोलते वह रुआँसा हो गया।

विभव का जी भर आया, क्योंकि वह नौजवान बड़ी आत्मीयता, विश्वास और उसपर अधिकार के साथ बोल रहा था। वह गहन सोच में पड़ गए, अरे हाँ, देवकी अब अधेड़ हो चुकी है। जरा-जरा से काम से वह थककर हाँफने लगती है। महरी तो बस सुबह आकर झाड़ू-पोंछा लगाकर थोड़े से बरतन भर माँजती है, बाकी का काम तो दिन भर देवकी को ही करना पड़ता है। रोज कोई तीन बजे के बाद ही वह घर के काम से फारिग होकर फुरसत ले पाती है। एक अपना बेटा देशराज है, जिसे लायक कहूँ या नालायक; जो बहू को लेकर अमरीका में स्थायी प्रवास कर बैठा है; विरले ही कभी-कभार उससे फोन पर बात हो पाती है, इंडिया आए हुए भी तो उसे चार साल हो चुके हैं। उसके बच्चे कहते हैं कि इंडिया में क्या रखा है? गरमी में घर-बाहर मँडराते मच्छर-मक्खियों और तमाम बीमारियों जैसे कि सर्दी-जुकाम, फोड़े-फुंसियों से आदमी का जीना हराम हो जाता है। ऐसे में अगर किसी ईमानदार और कर्मठ नौजवान को घर के काम-धाम के लिए रख लिया जाए तो इसमें हर्ज ही क्या है? उन्होंने उस लड़के को घूरकर देखा।

'तुम्हारा क्या भरोसा है? कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें अपने घर में पनाह दूँ और तुम मेरे ही घर में सेंध मारकर मुझे चूना लगा जाओ।'

'नहीं, मैं ऐसा कतई नहीं कर सकता', जब विभव चलते बने तो उसने उनके पाँव पकड़ लिये।

'बाबूजी, मेरे पास मेरे स्कूल-कॉलेज के सारे सनद-डिग्री और दस्तावेज हैं, जिन्हें मैं आपके पास गिरवी रख देता हूँ। ये सब मेरी मेहनत की कमाई है। जब तक मैं आपके पास रहूँगा, ये सभी दस्तावेज आपकी तिजोरी में बंद होंगे। आप ही बताएँ, इन्हें आपको सौंपकर मैं निहत्था हो जाऊँगा। मैं चाहकर भी आपके साथ दगा नहीं कर पाऊँगा।'

विभव ने उससे अपलक आँखें मिलाए रखीं। पता नहीं, उन्हें उस क्षण क्यों उस पर इतना भरोसा हो गया। उन्होंने उसकी पीठ पर हाथ हो गया, जितना कि अपने बेकहन बेटे देशराज पर भी नहीं रहा होगा। उन्होंने उसकी पीठ पर हाथ फेरा, 'आओ, बेटा, मेरे साथ चलो।'

□

कुछ ही दिनों में उस लड़के यानी गोबरधन ने विभव और देवकी का दिल जीत लिया। उसका निस्स्वार्थ सेवा-भाव देखकर विभव प्राय: देवकी को ताने दिया करते थे, 'ये देखो, एक पराया खून अपने खून से भी ज्यादा प्यारा है, अपना और भरोसेमंद है।'

पर देवकी को उसकी बात हमेशा बेतुकी लगती। वह प्रत्युत्तर में कह उठती, 'अब अपने खून को ऐसे मत दुतकारो। आखिर उसकी भी अपनी जिंदगी है। विदेश में बस जाने के बाद उसे फुरसत ही कहाँ मिलती है?'

तब विभव तल्ख आवाज में बोल उठते, 'हाँ, दो मिनट की भी फुरसत उसके पास हमारे लिए नहीं है। अपने बूढ़े माँ-बाप का फोन पर हाल-चाल लेने में भला कितना समय लगता है। यह कहो कि उसके दिल में हमारे लिए कोई जज्बा ही नहीं रहा। इतना पढ़ाया-लिखाया, उसपर पानी की तरह पैसा बहाया; पर आज देखो, उसे हमारी याद तक नहीं आती। इससे बढ़िया होता कि हम कोई कुत्ता पाल लेते।'

तभी कहीं से गोबरधन आ टपकता, 'बाबूजी, देशराज भइया को ऐसे मत कोसिए। भइया आएँगे तो मैं उन्हें समझाऊँगा। आखिर वे एक बड़े दिलवाले बाप के बेटे हैं, उनका दिल भी आपकी ही तरह बड़ा और उदार होगा। उनके साथ जरूर कोई मजबूरी होगी, तभी वह आप लोगों का हाल-चाल नहीं ले पाते।'

चुनाँचे, गोबरधन का इस तरह बीच में आ टपकना देवकी को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वह विभव के पास आकर भुनभुनाने लगती, 'तुमने किस कदर इस अजनबी को सिर पर बैठा रखा है कि इसे हमारी बातों में दखलंदाजी करने में भी जरा सी हिचक नहीं होती?'

पर विभव पर उसकी बातों का कोई असर नहीं होता। वह काम से निपटने के बाद धूप सेंक रहे गोबरधन के पास जा बैठते और बतियाने लगते। देवकी का तो दिल ही जल उठता। वह बड़बड़ाने लगती, 'लगता है, बुढ़ऊ इस सड़कछाप लौंडे को गोद लेकर ही मानेंगे।'

इन दो सालों में गोबरधन ने अपने घर की सारी बदहाली किस्तों में विभव के आगे बयाँ कर डाली। उसने बताया कि अम्माँ की असामयिक मृत्यु के बाद अविवाहित बीमार छोटी बहन का इलाज कराने, बड़ी बहन के हाथ पीले करने और दो छोटे भाइयों को नालायक होने से बचाने के लिए उन्हें शिक्षा दिलाने की सारी जिम्मेदारियाँ उसके कंधों पर आ पड़ी हैं। बाबूजी जब तक अध्यापन करके थोड़ी तनख्वाह से गृहस्थी की गाड़ी को घिसट-घिसटकर चलाते रहे, गोबरधन भी बेफिक्री से पढ़ाई में लगा रहा। लेकिन उन्हें अचानक सेवा से मुअत्तल किए जाने के बाद तो जैसे पूरे घर पर कहर बरप गया। वह अपने ईर्ष्यालु स्टाफ द्वारा बिछाए गए षड्यंत्र-जाल में इस कदर फँसते चले गए कि उससे बच पाना उनके वश की बात नहीं रही।

पहले तो उन्हें छात्रों की फीस में हेराफेरी करने के झूठे जुर्म में जेल की हवा खानी पड़ी, फिर मुकदमे के लिए अच्छा वकील न कर पाने के

कारण जोरदार पैरवी के अभाव में उन्हें सेवा से मुअत्तल कर दिया गया। इसके दुष्परिणामस्वरूप वे न तो पेंशन के हकदार बने, न ही फंड से एक धेला भी उन्हें मयस्सर हुआ। चुनाँचे, इस घटना के बाद समाज में अपनी भलमनसाहत और योग्यता के बल पर अच्छी-खासी ख्याति अर्जित करनेवाले दीनदयाल बाबू यानी गोबरधन के बाबूजी को इतनी आत्मग्लानि हुई कि एक रात वे कुछ बताए बिना ही घर छोड़कर कहीं पलायन कर गए। दरअसल, वह जीवन के संग्राम-क्षेत्र से भाग खड़े हुए थे। सालों तक खोज-खबर लेने के बावजूद उनका कहीं नामोनिशान नहीं मिला। एक समय था कि शहर में असामाजिक और सांप्रदायिक तत्त्वों द्वारा तोड़फोड़, हिंसा, बलवा, बलात्कार जैसे आए दिन होनेवाली गतिविधियों का अहिंसात्मक माध्यमों से विरोध-तिरोध करके अमन-चैन कायम करने वाले दीनदयाल बाबू इतने मुँहचोर निकलेंगे, ऐसा कभी किसी ने नहीं सोचा था।

सब-इंस्पेक्टर को पति-पत्नी के बीच तुनक-झुनक सुनकर बड़ी बेचैनी हो रही थी। जब वह चलने को हुआ तो विभव तो सोफे पर ही बैठे रहे, जबकि देवकी उसे छोड़ने गेट तक आ गई। पर तभी देवकी गोबरधन को गेट से घुसते देखकर आश्चर्य से चीख उठी, ''अरे इंस्पेक्टर! देखो, ये गोबरधन ही तो आ रहा है। लो चोर खुद चलकर अपना गुनाह कबूलने आ रहा है। इसे पकड़ो, नहीं तो पुलिस को देख, यह भाग खड़ा होगा।''

बहरहाल विभव को गोबरधन द्वारा कही गई उसकी रामकहानी इतनी हृदय-द्रावक लगी कि उन्होंने ठान लिया कि वह उसकी मदद करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। आखिर इनसानियत भी कोई चीज होती है। अभी तक तो वह सिर्फ अपने लिए जीते रहे, अब उन्हें औरों के लिए भी कुछ करना होगा, ताकि अपना परलोक सुधार सकें। अब उनकी देयताएँ ही क्या हैं? बेटा अमरीका में बस चुका है और उनकी कमाई पर चाचा-भतीजों की कोई दावेदारी नहीं है, वे सब बढ़िया कमा-खा रहे हैं। बचे वह और उनकी बुढ़िया। दोनों के जीवन-निर्वाह के लिए उनके पास पर्याप्त जुगाड़ है।

□

कोई सप्ताह भर का समय गुजरा होगा। ड्राइंगरूम में विभव सोफे पर बैठे हुए देख रहे थे। तभी यक-ब-यक उनका ध्यान भंग हुआ; देवकी के साथ आए स्थानीय पुलिस चौकी के सब-इंस्पेक्टर अर्जुन अरोड़ा को देखकर वे दंग रह गए। उन्होंने देवकी को घूरकर देखा और भुनभुनाने लगे, ''मैंने कई बार कहा था न कि पुलिस को तलब मत करना, लेकिन तुम अपनी हरकत से बाज नहीं आई।''

सब-इंस्पेक्टर को उनकी बात बहुत बुरी लगी, ''हम पुलिसवालों से इतना परहेज क्यों करते हो जी? अब आपके ही यहाँ चोरी हुई है और आपकी ही वाइफ पिछले हफ्ते रपट लिखाने गई थी, तो हमें तो अपना फर्ज निभाना ही पड़ेगा जी। जो इन्क्वायरी मैं करने जा रहा हूँ, उसमें मेरी मदद करो। आखिर यह मामला लाखों रुपए की चोरी का है और वह भी आपके ही नौकर द्वारा, जिसे आप अपने बेटे जैसा मानते थे, जैसा कि आपकी वाइफ ने बताया। जिस पर आपने बेइंतहा भरोसा किया, उसी ने आपकी पीठ में खंजर भोंका है जी।''

सब-इंस्पेक्टर की प्रतिक्रिया सुनकर विभव लुधियानवी लहजे में अपना सिर खुजलाने लगे—''अजी जो पूछना है, पूछ लो। मुझे जितना पता है, बताऊँगा ही।''

सब-इंस्पेक्टर ने उन्हें संदेह से देखा जैसे कि इस चोरी में उनकी भी मिलीभगत हो। फिर पूछा, ''आप अपने नौकर को कब से जानते हो जी?''

विभव को उसका बोलने का लहजा बिल्कुल अच्छा नहीं लगा, ''मैं गोबरधन को नौकर नहीं, अपने बेटे जैसा मानता था। अपने बेटे भी तो नालायक निकल जाते हैं। हाँ, उसे कोई दो सालों से जानता हूँ।'' उनकी बात सुनकर देवकी ने नाक-भौंह सिकोड़ी, क्योंकि उनका इशारा अपने बेटे देशराज की ओर ही था।

सब-इंस्पेक्टर देवकी की ओर देखकर मुसकराया, ''अच्छा जी! गोबरधन कहाँ का रहनेवाला था?''

विभव कान खुजलाने लगे, ''मुझे जहाँ तक पता है, वह बरेली जिले के किसी गाँव का रहनेवाला था।''

''किस गाँव का?'' सब-इंस्पेक्टर पहली बार पुलिसिया अंदाज में बोला।

''हाँ, वह शेरगढ़ का रहनेवाला कोई खानदानी लड़का था।'' विभव के चेहरे पर झिझक साफ दिखाई दे रही थी।

''अच्छा! खानदानी! मतलब यह कि आप उसके खानदान तक से वाकिफ हैं!''

''हाँ!''

''फिर तो आपको उसके बारे में सबकुछ बताना पड़ेगा।''

विभव चुप रहे।

सब-इंस्पेक्टर ने अपनी आँखें उन पर गड़ा दीं, ''अजी, आप पढ़े-लिखे हो। आपको मालूम होना चाहिए कि कोई घरेलू नौकर रखने से पहले उसका बायोडेटा थाने में जमा करना पड़ता है। क्या आपने कराया था?''

''नहीं।'' विभव असमंजस में थे।

''अजी, आप गोबरधन का नाम-पता नोट कराओ। मैं उसके गाँव इन्क्वायरी कराऊँगा।'' उसने जेब से कलम निकाली और उनके बोलने का इंतजार करने लगा।

विभव चुप रहे तो वह फिर बोल उठा, ''अजी, मुझे कहीं और ड्यूटी बजाने जाना है। जल्दी कीजिए।''

''गोबरधन शर्मा, सुपुत्र हेडमास्टर दीनदयाल शर्मा, मकान नं. एस-१९/९५, शेरगढ़, बरेली, उत्तर प्रदेश।'' विभव ने पता ऐसे नोट

कराया जैसे कि उन्हें यह सब जबानी याद हो।

देवकी उनके दवारा दिए गए ब्योरे को सुनकर अवाक् रह गई। वह भुनभुना उठी, ''पहले क्यों नहीं बताया कि गोबरधन किसी स्कूल के हेडमास्टर का बेटा है? एक शरीफ बाप का बदमाश बेटा है। अब देखना, उसे किस तरह जेल की चक्की पीसनी पड़ती है?''

सब-इंस्पेक्टर को पति-पत्नी के बीच तुनक-झुनक सुनकर बड़ी बेचैनी हो रही थी। जब वह चलने को हुआ तो विभव तो सोफे पर ही बैठे रहे, जबकि देवकी उसे छोड़ने गेट तक आ गई। पर तभी देवकी गोबरधन को गेट से घुसते देखकर आश्चर्य से चीख उठी, ''अरे इंस्पेक्टर! देखो, ये गोबरधन ही तो आ रहा है। लो चोर खुद चलकर अपना गुनाह कबूलने आ रहा है। इसे पकड़ो, नहीं तो पुलिस को देख, यह भाग खड़ा होगा।''

पर इसके पहले कि सब-इंस्पेक्टर का जोरदार तमाचा गोबरधन के मुँह पर पड़ता, विभव चिल्लाते हुए वहाँ फुरती से आ धमके, ''इंस्पेक्टर अरोड़ा! इस बच्चे की पिटाई मत करना। इसे अंदर आने दो। दरअसल, यह चोर नहीं है।''

सब-इंस्पेक्टर को बड़ा अचंभा हुआ कि विभव खुद उसे पाक-साफ होने का प्रमाण-पत्र दे रहे थे। गोबरधन ने आते ही विभव के पैर छुए।

सब-इंस्पेक्टर बड़बड़ा उठा, ''ऐसा संस्कारी चोर तो मैंने पहले कभी नहीं देखा।''

जब सभी ड्राइंगरूम में आ गए तो गोबरधन विभव के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, ''सरजी, जिस लड़के से मेरी बहन अनुजा का ब्याह हुआ, वह भी आपकी ही तरह बड़ा खुद्दार निकला। आपने जो गहने उसे दहेज के रूप में देने के लिए मुझे दिए थे, उसने वे सारे गहने मुझे वापस लौटा दिए। उसने मेरी बहन के साथ विवाह भी एक मंदिर में जाकर किया। इसके अलावा जो रुपए आपने विवाह के खर्चे के लिए मुझे दिए थे, वे सारे के सारे बच गए। इसलिए मैं ये सारे गहने और पैसे आपको लौटाने आया हूँ।''

जब उसने थैले में से एक पोटली उन्हें सौंपी तो उन्होंने सब-इंस्पेक्टर और अपनी पत्नी को ऐसे देखा जैसे कि वह कह रहे हों, गोबरधन जैसा लड़का कभी अपराधी हो ही नहीं सकता।

सब-इंस्पेक्टर भुनभुनाने लगा, ''मतलब यह कि इस सारी हेराफेरी में मालिक और नौकर दोनों की मिलीभगत है। वाहेगुरु, इस दुनिया में कैसे-कैसे लोग हैं!''

देवकी तो यह सब देख-सुनकर जड़वत् हो गई। वह अपने पति को कोसे या उसकी तारीफों के पुल बाँधे, उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह बड़ी उधेड़-बुन में थी। सोच रही थी कि अपने पति को फटकारे या गोबरधन की पीठ थपथपाए, जिसने उसके पति के विश्वास को नहीं तोड़ा।

गोबरधन विभव की ओर फिर मुखातिब हुआ, ''सरजी, आप हमारे माई-बाप हैं। आपके पुण्य की कमाई का फल मुझे और मेरे परिवार को मिल रहा है। बाहर मेरी नवविवाहिता बहन अनुजा और बहनोई आदित्य आपका आशीर्वाद लेने आए हैं। क्या दोनों को अंदर बुलाऊँ?''

विभव आगे गेट की ओर बढ़ने लगे तो सब-इंस्पेक्टर भी भुनभुनाता हुआ आगे आ गया, ''अब इस नेक काम में मैं क्यों पीछे रहूँ? चलो, मैं भी इन्हें बधाई दे देता हूँ।''

अब तक देवकी जो मूक दर्शक बनी यह सब सिर्फ देख रही थी, वह भी भुनभुनाते हुए अंदर चली गई, ''लो जी, इन दूल्हा-दुलहन की आव-भगत करने के लिए मुझे भी कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा।''

सा
अ

सी-६६, विद्या विहार नई पंचवटी,
जी.टी. रोड पवन सिनेमा के सामने
गाजियाबाद-२०१००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९९१०३६०२५९

मोबाइल की आत्मकथा

लघुकथा

• **लता कादंबरी**

मैं एक मोबाइल आज आप सभी के सामने अपनी आत्मकथा सुनाना चाहता हूँ। अनेकों ऐसे राज हैं, जो मैं अपने सीने मे दबाए पड़ा हुआ हूँ। जहाँ तक बात कॉल की है, आवाज के जादू के सामने क्या सच्चा है, और क्या झूठा है, कुछ भी समझ में नहीं आता है। चैटिंग के बहाने आदमी क्या-क्या करता है, ऐसी इनसानी फितरत से मैं पूरी तरह से वाकिफ हूँ, पर मैं चुप हूँ। व्हाट्सएप पर तो होली, दीवाली और यह डे, वह डे के शुभकामना संदेश ऐसे आते हैं जैसे कि जानो सारा ब्रह्मांड ही एक हो गया हो। ओ हाँ, आप किसी को पसंद करें अथवा न करें, लेकिन फेसबुक पर तो 'लाइक्स' ऐसे आते हैं जैसे कि बचपन मे कंपट खाने की होड़ लगी रहती थी, और 'कमेंट्स?' जैसे कि कोई बिछड़ा यार मिल गया हो। व्हाट्एप की प्रोफाइल फोटो पर तो लोग ऐसी सुंदर-सुंदर फोटो लगाते हैं कि ऐश्वर्या राय भी अपने सौंदर्य पर शरमा जाए। किसी की उपलब्धियों की फोटो देख बधाई देनेवालों की मुझमें भीड़ लग जाती है, पर सच क्या है, यह तो मैं ही समझ सकता हूँ, इतना सब होने पर भी हर अच्छी-बुरी बातें अपने सीने में दबाए बैठा हूँ।

सा
अ

७/२०२, स्वरूप नगर
कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष : ७६०७३५५६७८

आलेख

हिंदी गद्य साहित्य में बंगाल के रचनाकार

• सुनीता शर्मा

हिंदी गद्य साहित्य का बीजांकुर बहुत पहले से दिखाई देता है। परंतु मूल रूप में भारतेंदु काल से ही हिंदी गद्य का आधुनिक काल माना जाता रहा है। बंगाल के नवजागरण-काल और हिंदी गद्य साहित्य के नवजागरण5काल से भारतेंदु हरिश्चंद्र का गहरा संबंध था। उनके समकालीन परिवेश में हिंदी गद्य की एकरूपता का अभाव था। अतएव हिंदी गद्य साहित्य की अविकसित भाषा को परिमार्जित करने का पहला सफल प्रयास उन्होंने ही किया। हिंदी गद्य साहित्य के विकास के परिप्रेक्ष्य में यदि बात करें तो बंगाल का महत्त्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है। भारतीय नवजागरण का आरंभ बंगाल से होने के कारण सबसे पहले अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार और प्रसार यहीं से प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही बांग्ला साहित्य का विकास भी बंगाल से हुआ। रोजगार के उद्देश्य से राजस्थान और उत्तर प्रदेश के अधिकतर लोग अंग्रेजों के समय से ही कलकत्ता (कोलकाता) आने लगे थे, इसलिए वहाँ हिंदी भाषा का चलन शुरू हुआ।

नवोदित लेखिका एवं शोधार्थी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) तथा बी.एड. एवं एम.ए. (हिंदी)। संप्रति मुंबई विश्वविद्यालय में शोधकार्य में रत।

परिणामस्वरूप बंगाल से हिंदी भाषा के विकास के लिए हिंदी पत्रिकाओं का संपादन-कार्य आरंभ हुआ। आधुनिककाल में बंगाल हिंदी और उर्दू के लिए कार्य का केंद्र बना। अंग्रेजों ने अपने स्वार्थ के लिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। परंतु इस कार्य ने हिंदी की लोकप्रियता और बढ़ा दी। डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का मानना है कि कलकत्ता में ही, आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले हिंदी और उर्दू गद्य साहित्य की नींव डाली गई। इस विषय में उनका यह भी कहना है, ''तारिणीचरण मित्र जैसे हिंदी के बंगाली लेखक ने 'बैताल पचीसी' निकाली, उधर लल्लूलालजी ने 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेत कथा' लिखकर हिंदी के लिए गद्य शैली निर्धारित कर दी।'' हिंदी का पहला पत्र 'उदंत मार्तंड' भी कलकत्ता से निकाला गया था।

हिंदी गद्य साहित्य के शैशव काल में बंगाल के रचनाकारों में बालमुकुंद गुप्त का नाम आता है। अपने जीवन के अंतिम समय के लगभग १५ वर्षों तक उन्होंने बंगाल से हिंदी गद्य साहित्य और पत्रकारिता की सेवा की। चुटीली आलोचनात्मक 'शिवशंभू के चिट्ठे' और निबंधों में उनकी श्रेष्ठ लेखन शैली झलकती है। इनके अलावा दुर्गाप्रसाद मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, पंडित छोटूलाल मिश्र, बनारसीदास चतुर्वेदी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि ऐसे रचनाकार थे, जो बंगाल की पत्रकारिता के साथ ही हिंदी गद्य साहित्य से भी सरोकार रखते थे। बंगाल के आदि उन्नायक राजा राममोहन राय, समाज-सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने भी बंगाल से हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में अपना योगदान दिया। वे हिंदी के अच्छे जानकार थे, इसलिए विद्यासागरजी ने हिंदी के 'वेताल पचीसी' का सुंदर अनुवाद बांग्ला में किया।

आजादी के बाद के वर्षों में आधुनिककालीन हिंदी गद्य साहित्य में बंगाल के प्रमुख रचनाकारों में सबसे पहला नाम ललित निबंधकार डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र का आता है। इनके अलावा अलका सरावगी, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मधु काँकरिया आदि ऐसे रचनाकार हैं, जो बंगाल से सरोकार रखते हैं। इन्होंने हिंदी गद्य साहित्य में अनगिनत साहित्यिक कृतियों की रचना भावनात्मक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष के आधार पर की है। यहाँ पर बंगाल के कुछ प्रमुख रचनाकारों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है—

डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र

डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र का जन्म ५ नवंबर, १९३६ (उत्तर प्रदेश) बलिया जिले के बलिहार गाँव में हुआ है। उनके माता-पिता व्यापार के उद्देश्य से कलकत्ता आ गए। इसके पश्चात् गोरखपुर से उन्हें भी कलकत्ता बुला लिया गया। वहाँ आने के बाद तो वे वहीं के बनकर रह गए। मिश्रजी ने इंटर के बाद की शिक्षा काशी से ग्रहण की। वहाँ जाने के पश्चात् हिंदी गद्य साहित्य की तरफ उनका झुकाव अधिक बढ़ा। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पंडित विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह आदि महान् साहित्यकारों के आत्मीय सहयोग और स्नेह ने मिश्रजी को गद्य साहित्य रचने की प्रेरणा दी। काशी प्रवास ने मिश्रजी को लिखने के साथ-साथ ही डॉक्टरेट करने की प्रेरणा भी दी। सागर विश्वविद्यालय से नंददुलारे वाजपेयी के शोध निर्देशन में वे कार्य करना चाहते थे, परंतु उनका यह कार्य अधूरा रह गया। कलकत्ता वापस लौटने के पश्चात् कल्याणमल लोढ़ाजी के निर्देशन में पत्रकारिता से संबंधित विषय लेकर उन्होंने अपना शोधकार्य संपन्न किया। इनके द्वारा किया गया शोधकार्य 'हिंदी पत्रकारिता जातीय चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण-भूमि' हिंदी गद्य साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुपम कार्य है। इसके अलावा 'आँगन की तलाश', 'अराजकता उल्लास', 'बेहया का जंगल', 'गौरैया ससुराल गई', 'नेह के नाते अनेक',

'कल्पतरु की उत्सव लीला', 'न मेधया', 'माटी महिमा का सनातन राग', 'पत्रकारिता : इतिहास और प्रश्न', 'गणेशशंकर विद्यार्थी', 'राजस्थानी आयोजन की कृति भूमिका' आदि कृतियों से उनका रचना-संसार भरा पड़ा है। उनके विषय में आचार्य विद्यानिवास मिश्र का कहना है, ''कृष्ण बिहारीजी का सपना धुँधला नहीं है, बड़ा ही स्पष्ट है। वे जड़ों की तलाश करते हैं, तो जड़ खोदकर नहीं, अपनी प्राण-नाड़ी का संधान करते हुए करते हैं। इस कारण वे उघरी जड़ों का आह्वान या स्मरण नहीं करते, वे समग्र जातीय चेतना के रसग्राही स्रोत में धँसी हुई जड़ को ध्याते हैं। वे अधूरेपन से परेशान होकर समूचेपन की तसवीर खींचने के लिए स्वप्नाविष्ट होते हैं।''

कृष्ण बिहारी मिश्र ने अपनी रचनात्मक कृतियों के आधार पर एक समाजसेवी का कार्य किया है। स्वभाव से संवेदनशील, यात्राभीरु और गांधीवादी विचारधारा के मिश्रजी उत्तर प्रदेश और बंगाल से सरोकार रखते हैं, परंतु बंगाल में रहते हुए वे वहाँ के प्रसिद्ध हिंदी गद्य रचनाकारों में आते हैं। वर्तमान समय में शारीरिक रूप से वे अवश्य कमजोर हैं, परंतु साहित्यिक गतिविधियों से वे आज भी जुड़े हुए हैं। संवेदना के कालजयी रचनाकार को कोलकतावासियों ने अधिक स्नेह दिया है। इसके साथ ही उनकी रचना 'कल्पतरु की उत्सवलीला' भारतीय ज्ञानपीठ के 'मूर्तिदेवी सम्मान' से सम्मानित भी की गई है।

कृष्णबिहारी मिश्र समाज से सरोकार रखते हैं। अपने बाल्यकाल के गाँव को वे हमेशा याद करते रहते हैं और ग्रामीण व शहरी के परिवेश बदले स्वरूप के प्रति अपनी खिन्नता ललित निबंध में अभिव्यक्त करते हैं। इसलिए उन्हें गँवई संवेदना का साहित्यकार माना जाता है। मिश्रजी ने अपनी रचनाओं में समकालीन समाज का चित्रण किया है। वर्तमान परिवेश के सामाजिक संदर्भ में पाश्चात्य सभ्यता का दुष्प्रभाव राष्ट्रीय परंपरा एव भारतीय संस्कृति पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारतीय परिदृश्य के संदर्भ में बदला हुआ यही स्वरूप उनकी साहित्यिक कृतियों का प्रमुख विषय रहा है। कृष्ण बिहारी मिश्र ने अपनी रचनात्मक कृतियों के आधार पर एक समाजसेवी का कार्य किया है। स्वभाव से संवेदनशील, यात्राभीरु और गांधीवादी विचारधारा के मिश्रजी उत्तर प्रदेश और बंगाल से सरोकार रखते हैं, परंतु बंगाल में रहते हुए वे वहाँ के प्रसिद्ध हिंदी गद्य रचनाकारों में आते हैं। वर्तमान समय में शारीरिक रूप से वे अवश्य कमजोर हैं, परंतु साहित्यिक गतिविधियों से वे आज भी जुड़े हुए हैं। संवेदना के कालजयी रचनाकार को कोलकतावासियों ने अधिक स्नेह दिया है। इसके साथ ही उनकी रचना 'कल्पतरु की उत्सवलीला' भारतीय ज्ञानपीठ के 'मूर्तिदेवी सम्मान' से सम्मानित भी की गई है।

अलका सरावगी

बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न लेखिका अलका सरावगी हिंदी की प्रसिद्ध कथाकार हैं। वे अपनी रचना द्वारा समग्र चेतना को साथ लेकर चलती हैं। इनका जन्म १७ नवंबर, १९६०, कलकत्ता में राजस्थानी परिवार में हुआ है। माता ताई शकुंतला देवी और पिता केशव प्रसाद के स्नेह एवं घर के परिवेश ने उन्हें साहित्यकार बनने की प्रेरणा दी। कलकत्ता के लोरेटो कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् उनकी शादी हो गई। शादी के पश्चात् भी शिक्षा से उनका घनिष्ठ संबंध रहा और उन्होंने आगे की पढ़ाई शादी के कई वर्षों के बाद फिर शुरू की। एम.ए., एम.फिल. करने के पश्चात् सन् १९९६ में 'रघुवीर सहाय के कृतित्व' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिंदी गद्य साहित्य में किए गए उनके निष्ठापूर्वक कार्य के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'कलिकथा वाया बाइपास' उनके द्वारा रचित बहुचर्चित उपन्यास है, जो अनेक भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। उनके इस उपन्यास के लिए उन्हें 'श्रीकांत वर्मा पुरस्कार', 'बिहारी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। 'शेष कादंबरी', 'कोई बात नहीं', 'एक ब्रेक के बाद', 'कहानी की तलाश में', 'दूसरी कहानी' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अलकाजी की साहित्यिक कृतियों में सामाजिक समस्याओं के अलावा नारी विमर्श स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अपने समकालीन परिवेश में नारी पीड़ा का दर्द उन्होंने अनुभव किया था, इसलिए वे नारी विषय को केंद्र में रखकर कहानी का निर्माण करती हैं। वर्तमान समय में अलकाजी स्त्री चेतना से जुड़ी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान को व्यक्त करती नजर आती हैं। पुरुष प्रधान समाज के विषय में वे कहती हैं—''इन पुरुषों का अहंकार कभी खत्म होनेवाला नहीं है, दुनिया के इन्हीं लोगों के कारण यह हालत है। सारे लड़ाई-झगड़े खत्म हो जाएँ, अगर ये लोग अपने को उतना ही काबिल समझने लग जाएँ, जितने कि असल में हैं।''

नवें दशक में भारतीय महिला साहित्यकारों में अलका सरावगी का नाम प्रख्यात महिला रचनाकारों में लिया जाता है। इनकी अधिकतर कृतियाँ नारी जीवन से जुड़ी छोटी-बड़ी समस्याओं से सरोकार रखती हैं।

प्रभा खेतान

हिंदी गद्य रचनाकारों में प्रभा खेतान उन महिला रचनाकारों में आती हैं, जिनके साहित्य में नारी-विमर्श दिखाई देता है। हिंदी गद्य साहित्य में उनका नाम बंगाल के पांक्तेय रचनाकारों में आता है। प्रभा खेतान फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष, नारी विषयक कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदार, 'फिगरेट' नामक महिला स्वास्थ्य केंद्र की संस्थापक, १९६६ से १९७६ तक चमड़े तथा सिले-सिलाए वस्त्रों की निर्यातक, अपनी कंपनी की प्रबंध निदेशिका रहने के साथ वे एक अच्छी उपन्यासकार, कवयित्री तथा समाजसेविका भी थीं। इनका जन्म १ नवंबर, १९४२ में हुआ। दर्शनशास्त्र में एम.ए. करने के पश्चात् ज्याँ पॉल सार्त्र के 'अस्तित्ववाद' पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इनकी प्रमुख रचनाओं में मुख्य रूप से कविताएँ, उपन्यास और लघु उपन्यास हैं। 'अपरिचित उजाले', 'एक और आकाश की खोज में' आदि कविता-संग्रह। 'आओ पेपे घर चलें', 'अग्निसंभवा', 'एड्स', 'छिन्नमस्ता', 'अपने-अपने चहरे', 'स्त्री पक्ष', 'पीली आँधी' के अलावा दो लघु उपन्यास 'शब्दों का मसीहा सार्त्र',

'बाजार के बीच बाजार के खिलाफ' ये सभी रचनाएँ साहित्यिक क्षेत्र में प्रशंसित हो चुकी हैं।

डॉ. प्रभा खेतान के साहित्य-संसार में मूल विषय नारी विमर्श ही रहा है। स्त्री जीवन से जुड़ी छोटी-से-छोटी समस्याओं का चित्रण लेखिका ने भावनात्मक पक्ष के आधार पर किया। बंगाली स्त्री जीवन की पीड़ा और खुशियों को सूक्ष्म तरीके से प्रस्तुत करने का अनुपम कार्य प्रभा खेतान के हाथों हुआ है। साहित्य के उल्लेखनीय कार्य के लिए इन्हें राष्ट्रपति के हाथों 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' दिया गया। इसके अलावा 'प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार' और 'टॉप पर्सनैलिटी अवार्ड' भी प्रदान किया गया। उनके साहित्यिक और सामाजिक कार्य पर दृष्टिपात करने से ऐसा आभास होता है कि वे जीवन के उतार-चढ़ाव भरे अनुभव के आधार पर साहित्य का निर्माण करती रही हैं। अपनी रचनाओं के चरित्रों द्वारा जीवन की अनगिनत कटु सत्यों को पाठक तक पँहुचाना ही उनका उद्देश्य था। प्रभाजी अपने साहित्य-संसार द्वारा नवीन पीढ़ी में सकारात्मक सोच की प्रेरणा निर्मित करती हुई नजर आती हैं।

२० सितंबर, २००८ को उनका दुनिया से चले जाना पूरे भारतीय समाज और साहित्य के लिए दुखद घटना थी। वर्तमान समय में वे स्वनिर्मित साहित्य-संसार द्वारा जानी-जाती हैं और यह बंगाल के लिए गर्व की बात है।

बंगाल के अन्य रचनाकारों में मृदुला गर्ग और मधु काँकरिया का नाम आता है। वर्तमान समय में ये दोनों लेखिकाएँ बंगाल से सरोकार रखती हैं और दोनों ने अर्थशास्त्र में एम.ए. किया है। हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं को नया आयाम देने का महत्त्वपूर्ण कार्य मृदुला गर्ग जी के हाथों हुआ है। उन्होंने अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में लेखन कार्य किया है। नारी कुंठा, अवसाद और आर्थिक समस्याओं को उन्होंने अपनी रचना में चित्रित किया है। 'उसके हिस्से की धूप', 'चित कोबरा', 'वंशज', 'अनित्य', 'मैं और मैं', 'कतार के बाहर', 'कठ गुलाब', 'मिलजुल मन' आदि उपन्यास उनके साहित्य संसार में हैं।

मधु काँकरिया का नाम महिला लेखिकाओं में अग्रणी है। कोलकाता के जैन मध्यमवर्गीय परिवार में २३ मार्च, १९५६ में इनका जन्म हुआ। कोलकाता के परिवेश में उनका बचपन व्यतीत होने से उनके व्यक्तित्व पर वहाँ का प्रभाव होना स्वाभाविक सी बात है। उनकी अधिकतर रचनाओं में सामाजिक परिस्थिति और मानसिक समस्याओं का स्पष्ट चित्रण हुआ है, 'पत्ताखोर' (उपन्यास), 'सलाम आखिरी', 'खुले गगन के लाल सितारे', 'बीतते हुए' आदि कहानी-संग्रह हैं। इनकी रचनाओं में विचार और संवेदनाओं का मिश्रण बखूबी दिखाई देता है। वर्तमान समाज की समस्याओं से ये सरोकार रखती हैं। मुख्य रूप से युवा पीढ़ी में बढ़ती अनगिनत समस्याएँ इनकी रचना का प्रमुख विषय रही हैं।

उपर्युक्त रचनाकार बंगाल से सरोकार रखते हैं। इनके द्वारा किए गए कार्य पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि हिंदी गद्य साहित्य में इन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी अनगिनत साहित्यिक कृतियाँ सामान्य तौर पर विचार पक्ष का एक नवीन आयाम प्रस्तुत करती हैं। डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, अलका सरावगी, प्रभा खेतान, मधु काँकरिया और मृदुला गर्ग बंगाल और हिंदी गद्य साहित्य को सार्थक रूप से जोड़ने का कार्य करते हुए नजर आते हैं। आज भी हिंदी गद्य साहित्य में बंगाल से सरोकार रखनेवाले रचनाकार हैं। यह अहिंदी प्रदेश के लिए गर्व की बात है। हिंदी गद्य साहित्य की आधारभूमि अहिंदी प्रदेश बंगाल ही रहा है और आज भी वर्तमान साहित्यकारों ने वही गरिमा बनाए रखी है। हिंदी गद्य साहित्य के बंगाल के रचनाकारों ने मूल रूप से समाजसेवी का कार्य भी किया है। नारी-विमर्श और वर्तमान समस्याओं से सरोकार रखनेवाले ये रचनाकार समाज के विभिन्न पक्षों का चित्रण अपने साहित्य-संसार में बड़े ही सुव्यवस्थित तरीके से करते हुए दिखाई देते हैं।

ओक्टाक्रेस्ट सी/२०२
लोखंडवाला, कांदिवली (पूर्व)
मुंबई-४००१०१
दूरभाष : ०९१६७७७२८९३

लघुकथा

कबाड़ बीनता बचपन

• लता कादंबरी

वह कबाड़ बीनता बचपन अपनी ही धुन में पिपहरी बजाता चला जा रहा था। न तो उसे अपने गंदे कपड़ों की सुध थी और न ही जूँ पड़े बालों की।

कबाड़ के थैले को गिन्नियों से भरे थैले के समान बड़े जतन से सँभाले वह सुबह-सवेरे ही कूड़ा बीनने के लिए उठ जाया करता था। न तो उसे स्कूल जाने की चिंता थी और न ही बाबू बनने की।

तभी उसे कबाड़ के ढेर में पड़ी एक टूटी लाल गाड़ी दिखाई दी, 'ओ, इतनी सुंदर गाड़ी! लगता है किसी बिगड़े रईसजादे ने यहाँ पर इसे फेंक दिया है, खिलौना भी कोई फेंकने की चीज होती है?' यह सोचते हुए वह आगे बढ़ा। इसे पहले कि कोई उसकी गाड़ी उससे झपट ले, वह तेजी से कूदकर उस गाड़ी को अपनी छोटी बहन के लिए उठा लेता है। और फिर अपने मतलब के एक-एक सामान को हीरे की कणी के समान बीनते हुए उस बचपन को उस क्षण केवल खटिया पर बीमार पड़ी अपनी माँ दिखाई दे रही थी।

और वह पिपहरी बजाता अपनी ही धुन में आगे निकल जाता है।

७/२०२, स्वरूप नगर
कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष : ७६०७३५५६७८

भोर रँगीली, शाम रँगीली

• कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

: एक :

ऐसी चलीं हवाएँ जग में, बहते चले गए।
देता लाखों समय थपेड़े, सहते चले गए॥

आई हार हाथ में अपने
हार नहीं मानी,
उठी कालिमाएँ गगनांचल
भार नहीं मानी;

समय सारथी बना साथ जब, रहते चले गए।
ऐसी चलीं हवाएँ जग में, बहते चले गए॥

आँखों से अंधों के आगे
किसकी कहाँ चली,
सूरज या चंदा की किरणें
निकलीं न निकलीं;

धुन अपनी में धुनकी धुनते, कहते चले गए।
ऐसी चली हवाएँ जग में, बहते चले गए॥

दीवारों के कान हुआ करते
आए सुनते
कितने राज महल रेतीले
बैठ रहे चुनते

भूल गए 'अचूक' सब गिनती ढहते चले गए।
ऐसी चलीं हवाएँ जग में, बहते चले गए॥

: दो :

एक समुंदर मेरे अंदर, फिर भी मैं प्यासा का प्यासा।
थाह नहीं अब तक ले पाया, तट को मैंने खूब तरासा॥

उठती अनगिन रहें तरंगें
और चले भी खूब समीरा,
नित अभिषेक करे शीतलता
आतुरता ने तन-मन चीरा;

मदहोशी के साथ खेलता, उल्टा पड़ा आजतक पासा।
एक समुंदर मेरे अंदर, फिर भी मैं प्यासा का प्यासा॥

हीरे-मोती बड़े कीमती
ढेर सीप के लगे सुहाने,
चमक-दमक ने छीनी खुशियाँ
सहे रोज ताने पर ताने;

भेद-अभेद बना ज्यों का त्यों, स्वयं बन गया एक तमाशा।
एक समुंदर मेरे अंदर, फिर भी मैं प्यासा का प्यासा॥

सुपरिचित कवि, गीतकार एवं समीक्षक। 'फिर भी शेष रह गया', 'बतियाती भोर' (गीत-संग्रह); 'गीत खुशी के गाओ तुम' (बालगीत-संग्रह) के अलावा अब तक लगभग ७ हजार रचनाएँ प्रकाशित। काव्य शिरोमणि, काव्यश्री, साहित्यश्री, गीत शिरोमणि, तुलसी सम्मान, हिंदी सम्राट् सहित दर्जनभर सम्मान प्राप्त।

विश्वासों की नगरी लुटी
लुटता आया जनम-जनम से,
बादल छाए श्यामल वर्णी
चतुर्दिक दिशा-दिशा में तम से;

दमक-दमक दामिनी दमकती, तेज छुपा है अच्छा-खासा।
एक समुंदर मेरे अंदर, फिर भी मैं प्यासा का प्यासा॥

अध्यायों के पन्ने पलटे
चारों वेद-ऋचाएँ रट लीं,
नेम-धर्म-आचरण सब किए
उपवासों की चटनी चट ली;

लाख 'अचूक' जतन कर हारा, पढ़ी कहाँ जीवन परिभाषा।
एक समुंदर मेरे अंदर, फिर भी मैं प्यासा का प्यासा॥

ज्योतिपर्व

अंतर्मन के अंधकार को आओ अब ज्योतिर्मय कर लें।
दसों दिशाएँ दमक उठेंगी, नव प्रकाश से झोली भर लें॥

महक उठे जीवन की बगिया
मुरझाया जो प्राण छंद है,
स्पंदन मानव के मन का
दीवारों में आज बंद है;

दया क्षमा करुणा अंतर में मुदित प्रकृति से शाश्वत स्वर लें।
अंतर्मन के अंधकार को आओ अब ज्योतिर्मय कर लें॥

ग्राम, नगर और भव्य द्वार सब
ज्योति पर्व से ज्योतिर्मय हों,
धवल चाँदनी ओढ़ चुनरिया
रजनी अति मन में सुखमय हो;

शुचि-स्वरूप-समृद्धि-अर्चना घर-आँगन में दीपक धर लें।
अंतर्मन के अंधकार को, आओ अब ज्योतिर्मय कर लें॥

भोर रँगीली शाम रँगीली
रात रँगीली आँखें खोले,
आज अमावस बनी दुलहनिया
घूँघट ही घूँघट में बोले;

मिलने का 'अचूक' अवसर है, अमर सुहाग रहे यह वर लें।
अंतर्मन के अंधकार को आओ अब ज्योतिर्मय कर लें॥

३८ ए, विजय नगर, करतारपुरा, जयपुर-३०२००६
दूरभाष : ०९९८३८११५०६

स्पेन की कहानी

नंगा राजा

मूल : **जॉन मेन्युअल**
अनुवाद : **भद्रसैन पुरी**

बहुत समय पहले की बात है। एक राजा के पास तीन पाखंडी आए। पेशे से वे जुलाहे थे। उन्होंने राजा से कहा कि हम एक विशेष प्रकार का कपड़ा बुन सकते हैं, जिसको वही व्यक्ति देख सकता है जो अपने पिता का असली बेटा हो; परंतु यदि वह असली बेटा नहीं—भले ही यह विश्वास किया जाए कि वह असली है—तो वह उसे नहीं देख सकेगा।

यह सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि इस तरीके से वह अपने राज्य में ऐसे लोगों में भेद कर सकेगा जो वास्तविक बेटे के रूप में रह तो रहे हैं, परंतु अपने पिता के असली बेटे हैं नहीं। इस तरह वह उन्हें धमकाकर, उनपर अतिरिक्त कर लगाकर अपने खजाने में बढ़ोतरी कर सकेगा; क्योंकि मूर जाति में केवल असली बेटे ही अपने बाप की संपत्ति के उत्तराधिकारी होते थे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए और कपड़ा तैयार करने के लिए राजा ने उन जुलाहों को एक महल देने की आज्ञा अपने मंत्री को दी। जुलाहे भी अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए कपड़ा तैयार होने तक महल में ही रहने पर सहमत हो गए। इससे राजा संतुष्ट हो गया।

जब जुलाहों को काफी मात्रा में सोना, चाँदी, सिल्क और दूसरी चीजें दी गईं तो वे महल में दाखिल हुए और अपनी खड्डियों को इस ढंग से लगाया कि कोई समझे कि वे दिन-रात काम करते हैं।

कुछ दिनों के बाद उनमें से एक जुलाहा राजा के पास आया और उसे बताया कि कपड़ा बनना आरंभ हो गया है। उसकी बनावट और डिजाइन के बारे में बताते हुए उसने कहा कि वह दुनिया में अत्यंत अद्‌भुत वस्तु होगी। उसने वहाँ आने के लिए राजा से प्रार्थना की और याचना की कि वह अकेला ही आने की कृपा करे। राजा अति प्रसन्न हुआ, परंतु यह चाहते हुए कि जाने से पहले किसी दूसरे व्यक्ति की सलाह ले ले, उसने लॉर्ड चेंबरलेन को यह देखने के लिए पहले भेजा कि वे कहीं धोखा तो नहीं दे रहे हैं। जब लॉर्ड चेंबरलेन कारीगरों से मिला और वह सबकुछ सुना तो यह मानने का उसका साहस नहीं हुआ कि उसने कपड़ा नहीं देखा था। जब वह राजा के पास लौटा तो उसने बताया कि मैंने कपड़ा देखा था। राजा ने एक दूसरे व्यक्ति को भेजा और उसने भी आकर वही सूचना दी। जिन-जिनको भेजा गया था, उन सभी ने आकर पुष्टि कर दी कि उन्होंने कपड़ा देखा था तो राजा ने स्वयं जाने का निश्चय कर लिया।

महल में प्रवेश करके राजा ने उन लोगों को काम करते देखा। उन्होंने कपड़े की नफासत, बनावट और इस आविष्कार के उद्‌गम का विवरण दिया। साथ-ही-साथ इसके डिजाइन और रंग के बारे में भी बताया, जिसको वे बुनते हुए प्रतीत होते थे, परंतु वास्तव में बुन नहीं रहे थे। राजा ने देखा कि वे काम करते प्रतीत होते थे। राजा ने कपड़े की नफासत का सूक्ष्म विवरण सुना, परंतु वह कपड़ा देख नहीं पाया, भले ही जिनको देखने के लिए भेजा था उन्होंने कपड़ा देखा था। यह देखकर राजा बेचैन हो गया और डरने लगा कि वह कहीं उस राजा का बेटा न हो जिसको अनुमानित तौर पर उसका पिता कहा जाता है, और यदि वह मानता है कि वह कपड़ा नहीं देख रहा तो उसे अपने राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। यह विचार आते ही उसने कपड़े की बनावट इत्यादि, जो उसे बताई गई थी, की प्रशंसा करके कारीगरों की हाँ में हाँ मिलानी शुरू कर दी।

महल में लौटने पर उसने अपने लोगों को बताया कि कपड़ा कितना अच्छा और आश्चर्यजनक था। साथ ही उसे इसमें गड़बड़ी का संदेह हुआ।

दो-तीन दिन की समाप्ति पर उसने अलगुअसिल (न्याय विभाग के अधिकारी) से कहा कि वह जाए और कपड़ा देखे। जब अलगुअसिल अंदर गया और कारीगरों को देखा तो उन्होंने पहले की तरह कपड़े की शक्ल एवं डिजाइन का विवरण यह जानकारी देते हुए दिया कि राजा कपड़ा देखने आ चुका था, फिर भी वह कपड़े को देख नहीं पाया। उसने सोचा कि वह वास्तव में अपने बाप का असली बेटा नहीं है और इसी कारण कपड़ा देख नहीं पा रहा है। अलगुअसिल यह सोचकर भयभीत हुआ कि यदि वह घोषित कर दे कि वह कपड़ा देख नहीं सका तो उसे अपने महत्त्वपूर्ण पद से हाथ धोना पड़ेगा। इस विपदा को टालने के लिए उसने औरों से भी अधिक बढ़-चढ़कर कपड़े की प्रशंसा करना शुरू कर दी।

जब अलगुअसिल राजा के पास लौटकर आया तो उसने बताया कि मैंने कपड़ा देखा है और वह दुनिया में एक अत्यंत अद्‌भुत निर्माण है। राजा बुरी तरह घबरा गया, क्योंकि उसने विचार किया कि यदि अलगुअसिल ने कपड़ा देखा है तो इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि वह राजा का असली बेटा नहीं है जैसाकि प्राय: खयाल किया जाता है। अत: उसने भी कपड़े की उत्तमता की प्रशंसा आरंभ कर दी और कारीगरों के

कौशल को भी सराहा, जिन्होंने कपड़ा बनाया था।

दूसरे दिन राजा ने अपने सभासदों में से एक को कपड़ा देखने के लिए भेजा। उसे लगा कि अन्य व्यक्तियों ने राजा और दूसरे लागों को धोखा दिया था, क्योंकि किसी को भी यह कहने का साहस नहीं हुआ कि उसने कपड़ा नही देखा था।

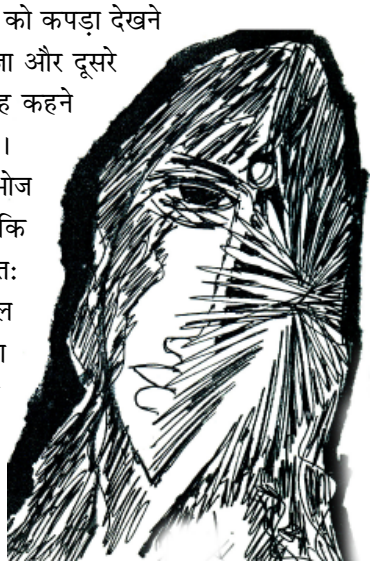

इसी प्रकार यह सब चलता रहा, जब तक महाभोज का दिन नहीं आ गया। सभी ने राजा से प्रार्थना की कि वह महाभोज का दिन कोई भी वस्त्र पहन लें। अत: आज्ञा मिलने पर कारीगर बहुत महीन कपड़े के रोल लाए और राजा से पूछा कि इसमें से कितना कपड़ा काटें। राजा ने आज्ञा दी कि आवश्यकतानुसार इतना काटा जाए। राजा ने यह भी बता दिया कि उसे किस प्रकार से बनाया जाए।

अब जब वस्त्र तैयार हो गए और महाभोज का दिन आ पहुँचा तो जुलाहे उन्हें राजा के पास लाए। उन्होंने राजा को बताया कि पोशाक उसी कपड़े की बनाई गई है जिसके लिए आदेश दिया गया था। इस सारे समय में राजा को यह कहने का साहस नहीं हुआ कि वह उस पोशाक को देख नहीं सकता था।

जब राजा ने यह पोशाक पहने हुए स्वीकार किया तो वह घोड़े की पीठ पर सवार होकर नगर की ओर चला, परंतु उसके लिए सौभाग्यवश यह गरमियों का समय था। लोगों ने जब राजा को इस रूप में आते हुए देखा तो बहुत हैरान हुए, परंतु यह जानते हुए कि जो कोई भी उसके कपड़ों को नहीं देखेगा, वह अपने बाप का असली बेटा नहीं कहलाएगा तथा इस प्रकार की घोषणा उनके लिए अनादर का कारण हो सकती है, उन्होंने अपनी हैरानी को अपने पास ही रहने दिया।

किंतु एक हबशी के साथ ऐसी बात नहीं थी। उसने राजा को इस स्थिति में देखा और यह सोचते हुए कि उसका कोई नुकसान होनेवाला नहीं है, वह राजा के पास गया और बोला, ''श्रीमान्, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं अपने बाप का असली बेटा हूँ या नहीं। अत: मैं आपको सूचित करता हूँ कि आप बिना कपड़े पहने घुड़सवारी कर रहे हैं।''

यह सुनकर राजा ने यह कहकर उसे पीटना शुरू कर दिया कि वह अपने बाप का असली बेटा नहीं है, इसीलिए वह कपड़े नहीं देख सकता।

परंतु ज्यों ही हबशी ने कहा, बाकी लोगों को भी उसकी सचाई का विश्वास हो गया। उन्होंने भी वही कहा। जब तक राजा और अन्य लोगों को सचाई प्रकट होने का डर जाता रहा। अंत में उन्होंने पाखंडियों की चाल को समझ लिया, जिसके वे सभी शिकार हुए थे।

जब जुलाहों को पकड़ने की कोशिश की गई तो पता चला कि वे सारे साजो-समान, जो राजा से पाखंड (कपड़ा बनने) के लिए लिया था, लेकर भाग गए थे।

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

अथश्री जूनागढ़-डाकोर तीर्थयात्रा कथा

• प्रेमपाल शर्मा

'तरति पापादिकं यस्मात्' यानी जिसके द्वारा मनुष्य पापादि से तर (मुक्त) जाए, उसे 'तीर्थ' कहते हैं। अथर्ववेद में तीर्थों का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान करनेवाले पुण्यात्माओं को जो स्थान प्राप्त होता है, शुद्ध मन से तीर्थयात्रा करनेवाले को भी वही स्थान प्राप्त होता है—'तीर्थैस्तरन्ति प्रवति महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति।' महाभारत के वनपर्व में वेद व्यासजी ने तीर्थयात्रा का महत्त्व बताते हुए कहा है कि तीर्थयात्रा पुण्यकार्य है, यह सब यज्ञों से बढ़कर है—'तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते।' वामन पुराण में वर्णन आया है कि तीर्थों का स्मरण पुण्य देनेवाला, तीर्थदर्शन पापों का नाश करनेवाला और तीर्थस्नान मुक्तिकारक है—'तीर्थानां स्मरणं पुण्यं दर्शनं पापनाशनम्। स्नानं मुक्तिकरं प्रोक्तमपि दुष्कृतकर्मण॥' स्कंद पुराण के काशीखंड में उल्लेख आया है कि मन के अंदर यदि दोष भरा है तो वह तीर्थस्नान से शुद्ध नहीं होता। मन यानी चित्त का निर्मल होना जरूरी है। अंतःकरण का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थयात्रा और स्वाध्याय, ये सभी बेकार हो जाते हैं—'दानमिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतं तथा। सर्वाण्येतान्य तीर्थानि यदि भावो न निर्मलः॥' तीर्थ-सेवन भी प्रभुभक्ति का एक मार्ग बताया गया है।

हमारे मित्र आनंद शर्मा नववर्ष में अकसर तीर्थयात्रा पर जाया करते हैं, अकेले नहीं, दल-बल के साथ! सो नववर्ष २०१७ की पाँचवीं तिथि को गुजरात के तीर्थों के भ्रमण का कार्यक्रम बना। इस बार के यात्री-दल में मित्र आनंद शर्माजी के समधी बनवारीलाल शर्माजी, चाचा रवि शर्मा, इनके गाँव रनहेरा के डॉक्टर वेद प्रकाश शर्मा, लाला जयप्रकाश गर्ग तथा मुंबई से आकर जामनगर स्टेशन पर मिले भाई निरंजनलाल शर्मा उपाख्य 'लाला' एवं दिल्ली पुलिस से सेवानिवृत्त चौ. वीरेंद्र सिंहजी। हर बार कुछ नए तीर्थयात्री जुड़ते हैं तो सब तीर्थों पर पुनः-पुनः जाना होता है। पाठक बंधु 'साहित्य अमृत' के मार्च-२०१५ अंक में 'मोक्षपुरी द्वारका में दो दिन' तथा मई-२०१६ अंक में 'सौराष्ट्र की तीर्थ-परिक्रमा' यात्रा-संस्मरणों में यहाँ का विस्तृत वर्णन पढ़ चुके हैं, अतः पिष्टपेषण से बचते हुए एक रात्रि द्वारका तथा एक रात्रि सोमनाथ में ठहरकर हम लोग नौ जनवरी को स्नानादि कर प्रातः साढ़े छह बजे बस द्वारा सोमनाथ से चलकर लगभग साढ़े आठ बजे जूनागढ़ पहुँच गए।

संयोग ऐसा बना कि आनंदजी के मित्र बाबा अगस्त्य गिरीजी भी अचानक तीर्थदर्शन की इच्छा से कल ही जूनागढ़ पहुँचे हैं। बाबाजी का

सुपरिचित लेखक-संपादक। बुलंदशहर (उ.प्र.) के मीरपुर-जरारा गाँव में जन्म। देसी चिकित्सा लेखन में विशेष दक्षता। 'जीवनोपयोगी जड़ी-बूटियाँ', 'स्वास्थ्य के रखवाले, शाक-सब्जी-मसाले', 'सचित्र जीवनोपयोगी पेड़-पौधे', 'घर का डॉक्टर', 'स्वस्थ कैसे रहें?' तथा 'स्वदेशी चिकित्सा सार' कृतियाँ चर्चित। पत्र-पत्रिकाओं में विविध लेख प्रकाशित। श्रीनाथद्वारा (राज.) की सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मंडल' द्वारा 'संपादक-रत्न' की मानद उपाधि। संप्रति 'सवेरा न्यूज' (साप्ताहिक) का संपादन एवं आयुर्वेद पर स्वतंत्र लेखन।

दिल्ली के मोतीबाग में अपना आश्रम है। वे गिरनार की तलहटी में स्थित जूना अखाड़ा आश्रम में ठहरे हुए हैं। यहाँ आम लोगों को रहने की इजाजत नहीं है, केवल बाबा लोग ही ठहरते हैं। बसअड्डा से ऑटो पकड़ हम लोग जूना अखाड़ा आ गए और बाबाजी से मिले, उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। उनके आग्रह पर अखाड़े की 'अन्नपूर्णा रसोई' में चाय-नाश्ता किया। फिर जूनागढ़ दर्शन का कार्यक्रम बनाने लगे कि उसी समय एक ऑटोवाला वहाँ आ पहुँचा, वह जूना अखाड़ा के महंतजी का परिचित है। ऑटो ड्राइवर की उम्र है लगभग साठ वर्ष और उनका नाम है श्रीमान गोस्वामी। बातचीत से पता चला कि वे यहीं के बाशिंदे हैं, उन्हें जूनागढ़ के चप्पे-चप्पे और यहाँ के इतिहास की अच्छी जानकारी है। ड्राइवर के साथ-साथ वे एक अच्छे गाइड भी हैं। पहले तो उन्होंने हमें गिरनार तलहटी में ही श्री सनातन हिंदु धर्मशाला में दो-दो सौ रुपए में दो शानदार कमरे दिलवाए। सो कमरों में अपना सामान रखकर जूनागढ़ दर्शन के लिए निकल पड़े। बाबा अगस्त्य गिरीजी हमारे साथ हैं।

चलते-चलते ही आपको बता दूँ कि पौराणिक काल से ही जूनागढ़ एक तपोभूमि और अध्यात्म का केंद्र रहा है। नगर के पश्चिम में रेलवे स्टेशन तथा पूरब में गिरनार पर्वत है, इसे 'गिरि नगर' भी कहा जाता है। आज भी गिरनार तलहटी में सैकड़ों मंदिर हैं। वृंदावन की तरह यहाँ आठों पहर चहल-पहल बनी रहती है। गिरनार अत्यंत पवित्र पर्वत है। इसका नाम 'रैवत गिरि' तथा 'उज्जयंत' भी है। श्रीकृष्ण के बड़े भ्राता बलदाऊ का यहाँ ससुराल है, रैवतक की पुत्री रेवती से उनका विवाह हुआ। बलराम ने यहीं पर द्विविद राक्षस का वध किया था। लंबे समय तक यह यादवों की क्रीड़ा-भूमि रहा। भगवान् दत्तात्रेय यहाँ गुप्त रूप से आज भी विराज रहे हैं। संसार-प्रसिद्ध नरसी को यहीं पर भगवान् का

साक्षात्कार हुआ। कालयवन के खात्मे के साथ लीलाधारी श्रीकृष्ण को एक नाम 'रणछोड़राय' यहीं पर मिला। जैनियों के लिए भी यह अत्यंत पवित्र स्थान है। बब्बर शेरों के लिए जगन्प्रसिद्ध 'गिरि फॉरेस्ट' यहीं पर है। यहाँ के बारे में कहा जाता है—

सोरठ देश सुहावनो सुंदर गढ़ गिरनार।
वीर, शेर, पर्वत, गुफा योगी तपे निहार॥

हमारा ऑटो वापस जूना अखाड़ा के पास भगवान् भवनाथ महादेव मंदिर पर रुका। भूतेश्वर भोलेशंकर यहाँ स्वयं भवनाथ महादेव के रूप में विराजमान हैं। यह बड़ा ही प्रसिद्ध और भव्य मंदिर है। हम सभी ने पुष्प अर्पित कर भगवान् भवनाथ को दंडवत् प्रणाम किया। साथ में दाईं ओर मृगी कुंड है, जिसका निर्माण राजा भोज ने कराया था। यहाँ माघ की नौवीं से बड़ा मेला शुरू होकर शिवरात्रि तक चलता है। गिरनार की गुफा-कंदराओं में तपस्या-साधना कर रहे सैकड़ों नागा संन्यासी इस दिन यहाँ पूजा-अर्चना करने आते हैं और रात्रि में मृगी कुंड में स्नान कर लौट जाते हैं। इसके ठीक सामने वस्त्रपथेश्वर महादेव का मंदिर है। यह उपेक्षित हालत में है। सड़क के उस ओर अनसूया मंदिर है, यहीं पर माता अनसूया ने त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश को बालक रूप देकर उन्हें नग्नावस्था में भोजन कराया था। यहाँ से चलकर हम दामोदर कुंड पर आ गए। सीढ़ियों से नीचे उतरकर पवित्र जल से आचमन किया, फिर चौरासी खंभों वाले प्राचीन राधा-दामोदर मंदिर में दर्शन किए। यह मंदिर भगवान् श्रीकृष्ण के वंशज वज्रनाभ ने बनवाया था। यहीं पर भगवान् कृष्ण ने अंतिम बार दर्शन देकर नरसी को माला पहनाई थी। इसके ठीक सामने रेवती कुंड है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ इसमें श्रद्धापूर्वक स्नान करती हैं। यहीं पर महाप्रभुन की बैठक है। थोड़ा आगे इसी के सामने मुचकुंदेश्वर महादेव मंदिर तथा मुचकुंद गुफा है। यहीं पर श्रीकृष्ण ने गुफा में सो रहे राजा मुचकुंद से कालयवन को भस्म कराया था। यहाँ मंदिर में गणेश, देवी, पंचमुखी हनुमान, एक ओर नीलकुंठ महादेव और गुफा में कालीजी की मूर्तियाँ हैं। सब लोग गुफा में अंदर घुसे और वापसी में यहाँ के धूना की भभूत का प्रसाद लिया।

नरसी चौरा, जूनागढ़

यहाँ भली प्रकार दर्शन कर हम आगे बढ़े तो थोड़ी ऊँचाई वाले साफ-सुथरे मार्ग पर हमारा ऑटो ठहर गया। गोस्वामीजी ने बताया कि यहाँ पर माता वाघेश्वरी का पाँच सौ साल पुराना मंदिर है। हम लोग सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गए, माता वाघेश्वरी को दंडवत् प्रणाम किया। इसके साथ ही बाईं ओर गायत्री देवी का भव्य मंदिर है, यहाँ नवरात्रों में मेला लगता है। ये दोनों स्थान बिल्कुल पहाड़ के ढलान पर हैं। यहाँ से सीधे चलकर जूनागढ़ का प्रसिद्ध स्वामीनारायण मंदिर देखने आ पहुँचे हैं। बड़ा ही भव्य मंदिर है, राधा-कृष्ण की ऐसी नयनाभिराम झाँकी है कि अपलक देखता रह जाता हूँ, नजर हटती नहीं है, व्यक्ति अपनी सुधबुध भूल जाता है। इसके बाईं ओर इनका संस्कृत विद्यालय तथा सभामंडप है। यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए इनके पास सैकड़ों कमरे हैं। लगभग बारह बज रहे हैं, सो स्वामीनारायण मंदिर की रसोई में भोजन किया। भोजन में आलू-टमाटर की सब्जी, झोल, मीठा दलिया, खिचड़ी, पापड़ और लस्सी है। भोजन बड़ा ही स्वादु, सात्त्विक एवं पाचक है। अब धूप तेज हो गई है, गरमी लगने लगी है, सो जाकेट, स्वेटर आदि उतार दिए।

अब हम जूनागढ़ का किला देखने आए हैं। हमें यहाँ उतारकर ड्राइवर साहब भोजन करने चले गए। यह किला मथुरा के राजा उग्रसेन ने बनवाया था। जब श्रीकृष्ण द्वारका के राजा थे, तब यह यादवों का क्रीड़ा-स्थल रहा। सब लोग आगे निकल गए, मैं थोड़ा पीछे रह गया, किले के प्रवेश द्वार की बाईं दीवार पर मैं यह देखकर ठिठक गया कि वहाँ नन्हे-मुन्ने बच्चों की बहुत सारी फोटो लगी हैं। नीचे ध्यान दिया तो अगरबत्ती भी जल रही है, लेकिन स्थान बहुत गंदा सा है। यहाँ आसपास कोई नहीं है। किले के अंदर से आ रहे एक व्यक्ति से मैंने इस बारे में पूछा तो उसने बताया कि यहाँ पुत्र-प्राप्ति के लिए मन्नत माँगी जाती है, जिनकी मन्नत पूरी हो जाती है, तो वे माताएँ अपने बच्चे की एक फोटो भेंटस्वरूप यहाँ लगा जाती हैं। किले के अंदर देखने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। एक कोने पर छोटी-बड़ी दो तोपें, बीच में पानी के संचय के लिए ३१० फीट गहरी बाव तथा १७१ फीट गहरा कुआँ है तथा ऊपर की ओर मंडपनुमा महल है। बाकी उजाड़ पूरे किले में झाड़-झंखाड़ खड़े हैं। गरमी से थके हम सब ने यहाँ ठंडे तरबूज का आनंद लिया।

यहाँ से निकलकर अब हमारा ऑटो जगमल चौराहे के पास नरसी चौरा आ पहुँचा है। भक्त नरसी अपने परिवार के साथ यहीं रहा करते थे। अब यहाँ भगवान् दामोदर तथा नरसी की मूर्तियाँ विराजमान हैं। इसी के ठीक सामने नरसी अपने कीर्तनियों के साथ हरि-कीर्तन करते हुए सबकुछ भूल जाते थे। यह बड़ा ही पावन तीर्थ है कि यहाँ विभिन्न रूपों में आकर भगवान् कृष्ण बावन बार नरसी के सहाई बने, उनके बिगड़े काम बनाए। यहाँ के पुजारीजी ने यहाँ के माहात्म्य की विस्तृत कथा सुनाई और भगवान् का भोग लगा प्रसाद दिया। उनकी पीड़ा है कि भक्त लोग यहाँ न के बराबर ही आते हैं। इस मंदिर के ऊपर के हॉल में नरसी के जीवन की चित्र-प्रदर्शनी देखी, फिर भक्त और भगवान् को दंडवत् प्रणाम कर हम इंद्रेश्वर महादेव मंदिर देखने के लिए निकल पड़े। यह नगर से लगभग बारह किमी. दूर जंगल में है। जब तक हमारा ऑटो वहाँ पहुँचे, तब तक मैं आपको इस प्राचीन मंदिर के माहात्म्य के बारे में बताए देता हूँ।

कहा जाता है कि सत्युग में जब देवताओं के राजा इंद्र ने गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या के साथ छल से व्यभिचार किया तो ऋषि ने उसे शाप दिया। उस शाप से मुक्ति के लिए इंद्र ने घोर तपस्या कर भगवान् भोलेनाथ को प्रसन्न किया। भोलेनाथ ने उसे शाप से मुक्ति दिलाई। तब इंद्र ने इस स्थान पर शिवमंदिर (शिवालय) बनवाया, इसे ही 'इंद्रेश्वर महादेव मंदिर' कहा जाता है। इस प्रकार से यह पूरा क्षेत्र तप और साधना का क्षेत्र है। कालांतर की विस्मृति के बाद यह फिर प्रसिद्ध हुआ। कुछ सौ वर्ष पहले यानी संवत् १४७० में भक्त शिरोमणि नरसी का जन्म जूनागढ़ में मेहता ब्राह्मण परिवार में हुआ। कुछ लोग उनका जन्म जूनागढ़ के पास ही स्थित 'तलाजा' गाँव में मानते हैं। बाल्यावस्था में उनके माता-पिता का देहांत हो गया तो वे बड़े भाई बणसीधर के आश्रित हो गए। विवाह भी हो गया। पत्नी माणिकबाई दिनभर घर के सारे काम करतीं और नरसी गाय चराने से लेकर पशुधन की देखभाल का जिम्मा सँभालते। थोड़ा समय निकालकर भोलेशंकर की पूजा, साधु-संतों की सेवा तथा सत्संग भी कर लिया करते। उनकी भाभी दुरतिगौरी बड़ी कर्कशा थी, भक्तिभाव वाले नरसी उसे फूटी आँख नहीं सुहाते थे। उनका सत्संग में जाना भाभी की आँखों में खटकता। पूरे दिन कमरतोड़ काम करते के बावजूद उन्हें जली-कटी सुनाने तथा प्रताड़ित करने का कोई न कोई कारण वह ढूँढ़ निकालती।

एक बार उनके भाई किसी काम से बाहर गए थे। भाभी ने खूब खरी-खोटी सुनाकर नरसी को घर से निकाल दिया। पत्नी माणिकबाई बेचारी घर में विलाप करती रह गई। नरसी 'क्या करूँ, क्या न करूँ' की स्थिति में दु:खी मन से जंगल में कोसों दूर निकल गए। भूख-प्यास से बेहाल जब पैर डगमगाने लगे, आँखों के आगे अँधेरा छा गया तो एक वटवृक्ष की छाया में बैठ आँख मूँद विचार करने लगे—'वर्षों से मैं शिवजी की पूजा करता हूँ। सावन भर उन्हें पुष्प, बेलपत्र आदि चढ़ाता हूँ, क्या भोलेनाथ मेरी कोई मदद नहीं करेंगे?' यही सोचते हुए नरसी की दृष्टि पास ही स्थित एक जीर्ण-शीर्ण शिवाले पर पड़ी। वहाँ एक सरोवर भी था। कपड़े उतार सरोवर में स्नान किया और बेलपत्र, पुष्प आदि से शंकर की पूजा की, फिर शिवलिंग पर माथा टेककर फूट-फूटकर रोने लगे—''हे भोलेनाथ! आप प्रसन्न होइए, नहीं तो मैं अन्न-जल का त्याग करते हुए यहीं पर अपने प्राण त्याग दूँगा।'' इसी बेसुध अवस्था में नरसी सात दिन सात रात पड़े रहे। सातवीं रात्रि में भोलेनाथ साक्षात् प्रकट हुए और नरसी के सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ रखते हुए बोले, ''वत्स! मैं तुम्हारी तपश्चर्या से अत्यंत प्रसन्न हूँ। तुम अपनी इच्छा से कोई वरदान माँग लो।'' नरसी भावविभोर होते हुए बोले, ''प्रभु! मैं क्या माँगूँ, आपको जो सबसे प्रिय हो, वही मुझे दे दो।''

भोलेनाथ मुसकराए, ''वत्स, इस चराचर जगत् में श्रीकृष्ण से अधिक प्रिय वस्तु मेरी नजर में दूसरी कोई नहीं है। आओ, मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूँ।'' भोलेनाथ ने भक्तराज नरसी को दिव्य देह प्रदान की और फिर उन्हें लेकर दिव्य द्वारका के लिए प्रस्थान किया। पूनम की रात्रि में सोलह सहस्त्र गोपिकाओं के साथ महारास में भक्त नरसी को मशाल उठाने की सेवा मिली और वे उसे लेकर रासमंडल के बीचोबीच खड़े हो गए। नरसी प्रभुभक्ति में इतने लीन हो गए कि झूमते हुए कब आग कपड़े में लगी और हाथ ही मशाल की तरह जलने लगा, उन्हें पता ही नहीं चला। रास की समाप्ति पर भगवान् कृष्ण की दृष्टि उनके जलते हाथ पर पड़ी, उन्होंने आगे बढ़ आग बुझाई। काफी समय तक नरसी दिव्य द्वारका में रहे। फिर एक दिन भगवान् कृष्ण ने उन्हें जूनागढ़ में जाकर अनन्य भाव से भक्ति करते रहने के लिए राजी कर लिया और अपनी प्रतिमा तथा करताल दे पीतांबर और मयूरपुच्छ का मुकुट पहना दिया, फिर योगेश्वर बोले, ''अपने भक्त मुझे सबसे प्रिय हैं। भक्त, जब भी तुम पुकारोगे, मैं फौरन चला आऊँगा।'' और भगवान् ने अपना वचन निभाया। आज से कुछ सौ वर्ष पूर्व नरसी पर आए संकटों में एक-दो बार नहीं, बावन बार आकर भगवान् श्रीकृष्ण ने मदद की। जीवनपर्यंत नरसी भगवान् दामोदर (श्रीकृष्ण) के भजन-कीर्तन में मस्त रहे। अब तक केवल तीन ही भक्त ऐसे हुए हैं, जो सदेह बैकुंठ धाम गए हैं, वे हैं—कबीर, तुकाराम और नरसी मेहता।

हमारा ऑटो भी मंदिर की सीमा में आ पहुँचा है। आज भी यहाँ जंगल है। यह इंद्रेश्वर महादेव मंदिर पहाड़ी के ढलान पर स्थित है। मंदिर की कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर बारी-बारी से सभी ने शिवलिंग पर दंडवत् प्रणाम किया। मंदिर के बाहर हाल ही में स्थापित धवल-दूधिया संगमरमर की भोलेनाथ की प्रतिमा हर तीर्थयात्री को अपने आकर्षण में बाँध लेती है। प्रतिमा अलौकिक और दिव्य आभा से देदीप्यमान है। इसके पीछे बाईं ओर इंद्र गुफा है, जहाँ बैठ इंद्र ने तपस्या की थी। इसी प्रांगण में दाहिनी ओर कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर एक मंदिर एवं आश्रम है, जहाँ के महंत अगस्त्य गिरीजी के परिचित निकले, सो मीठी-मीठी चाय के साथ स्वामीजी का मधुर प्रवचन भी सुनने को मिला। दर्शन करने के बाद मंदिर के बाहर कुछ साथी धूम्रपान कर सुस्ता रहे थे कि बनवारीलालजी ने बताया कि ड्राइवर साहब के रिश्तेदारी में गमी हो गई, संकोचवश वे कह नहीं पा रहे हैं। तुरंत सब लोगों ने कहा कि ड्राइवर साहब, आप पहले ही बता देते, चलिए, हमें धर्मशाला पर छोड़ दीजिए। लगभग चार बजे हैं, उन्होंने हमें हमारे डेरे पर उतार दिया और हमने उनके द्वारा बताया किराया ग्यारह सौ रुपए देकर उन्हें सधन्यवाद विदा किया।

हमारे ज्यादातर साथी थक गए और घूमने के अनिच्छुक भी थे, सो विचार बना कि शाम को गिरनार पर्वत की चढ़ाई करेंगे। अगस्त्य गिरीजी भी एक-डेढ़ घंटा ठहरकर और सायं आठ बजे जूना अखाड़ा में भोजन पर मिलने को कहकर चले गए। लेकिन भाई लोगों का आराम इतना लंबा खिंचा कि शाम हो गई। कोई भी गिरनार की ओर नहीं गया। मैं और बनवारीलालजी बिना आराम किए इधर-उधर घूमते रहे। हम दोनों सायं को भवनाथ महादेव मंदिर की आरती में शामिल हुए। यहीं पास के एक मंदिर में अखंड कीर्तन चल रहा है। रात्रि को आठ बजे जूना अखाड़ा की अन्नपूर्णा रसोई में भोजन किया और टहलते हुए अपने डेरे पर लौट आए। जहाँ हम ठहरे हुए हैं, यहीं से गिरनार की चढ़ाई शुरू होती है, सो यहाँ खासी चहल-पहल रहती है। आसपास के मंदिरों में हो

रहे भजन-कीर्तन और घंटों की टनटनाहट का मधुर स्वर सुनाई पड़ रहा है। यहाँ का वातावरण बड़ा रमणीक और मन को सुकून देनेवाला है। गिरनार चढ़ाई के रास्ते पर लगाई गई लाइटें दूर से ऐसी प्रतीत हो रही हैं, जैसे गिरनार बाबा के गले में मणियों की मालिका दिपदिपा रही हो!

रात्रि को सब लोग बैठे तो आनंदजी गिरनार के तीर्थों की कथा सुनाने लगे, अब कलियुग का असर कहिए या कुंभकर्ण की कृपा कि जल्दी ही अधिकतर साथी सो गए, मैं भी अपने कमरे में आकर कंबल तानकर सो गया। प्रात: में चौ. साहब, मैं और बनवारी लालजी तो जल्दी ही जाग गए और नहा-धोकर तैयार हो गए। अभी बाहर घुप्प अँधेरा है, कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा है। हम तीनों लोग बाहर गए तो, पर चाय पीकर लौट आए। जब तक उजाला हो, तब तक आपको गिरनार के बारे में बताए देता हूँ। यह अत्यंत पवित्र और पूज्य पर्वत है। जिस प्रकार उत्तर भारत में वैष्णो की चढ़ाई और गोवर्धन की परिक्रमा होती है, उसी प्रकार यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक गिरनार की परिक्रमा होती है। इसकी चढ़ाई में ९९९९ सीढ़ियाँ हैं। आबालवृद्धनारीनर सब श्रद्धा भाव से चढ़ाई करते हैं। दूर-देहात से झुंड-के-झुंड परिक्रमा करने आते हैं। जब हम तड़के जागे थे तो हमारे बराबर वाले कमरों से कितने ही तीर्थयात्री पिट्ठू बैग लादे तथा हाथ में छड़ी लिये चढ़ाई के लिए निकल रहे थे।

इंद्रेश्वर महादेव मंदिर, जूनागढ़

चढ़ाई के शुरू में ही हनुमानजी का मंदिर तथा दूसरी ओर रामदरबार है। ऊपर तक अलग-अलग पड़ावों पर पवित्र स्थान तथा मंदिर हैं। ढाई हजार सीढ़ियाँ चढ़ने पर भर्तृहरि गुफा है, जिसमें भर्तृहरि तथा गोपीचंद की मूर्तियाँ हैं। इस प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ते हुए राजुलजी की गुफा, सातपुड़ा कुंड, जिसमें सात शिलाओं के नीचे से जल आता है। कुंड के पास गंगेश्वर और ब्रह्मेश्वर मंदिर हैं। आगे अंबिका शिखर है, यह गिरनार का प्रथम शिखर है, यहाँ देवी का विशाल मंदिर है, जो ५१ शक्तिपीठों में गिना जाता है। इसके आगे गोरक्ष शिखर है, जहाँ गुरु गोरखनाथ ने तपस्या की थी, यहाँ उनका धूना तथा चरण-चिह्न स्थापित हैं। आगे के दत्त शिखर में भगवान् दत्तात्रेय का तप:स्थान है, यहाँ उनकी चरण-पादुकाएँ हैं। साथ के नेमिनाथ शिखर में स्वामी नेमिनाथजी की काले पत्थर की मूर्ति है और दूसरी शिला पर उनके चरण-चिह्न अंकित हैं। इसके आगे है महाकाली शिखर, यहाँ गुफा में महाकाली की मूर्ति तथा उनका खप्पर विराजमान है। थोड़ा आगे ही पांडव गुफा है, कहा जाता है कि पांडव यहाँ आए थे। नीचे की ओर उतरकर सीतामढ़ी में रामकुंड और सीताकुंड नामक दो कुंड हैं। इसके बाद पोला आम, भरत वन, हनुमानधारा, जटाशंकर आदि तीर्थ हैं।

उजाला हो गया है, पौने सात बज रहे हैं। हमारे बाकी साथियों में कोई अभी लेटा है तो कोई कंबल में ही बैठा है। अत: हम तीनों ही गिरनार तलहटी में आ पहुँचे हैं। गिरनार की प्रथम सीढ़ी पर हमने मत्था टेका। आगे बढ़े तो दाएँ-बाएँ झुंड के झुंड हनुमान बंदर यानी लंगूर दिखाई पड़े। यात्री उनको कुछ न कुछ खिलाते हुए आगे जाते हैं। सीढ़ियों वाले चढ़ाई मार्ग के दोनों ओर प्रसाद, फोटो, किताब, खट्टी-मीठी गोलियों, नीबूपानी तथा जरूरत की अन्य वस्तुओं की अस्थायी दुकानें सजी हैं। कितने ही यात्री आ-जा रहे हैं। प्रकृति का दीदार करते हुए हम लोग ४२५वीं सीढ़ी पर एक ओर बने छतरीनुमा विश्राम-स्थल में थोड़ा बिरमाए। इतनी सी चढ़ाई में ही शरीर में गरमी आ गई, जबकि अभी भी कड़क ठंड है। सूर्य-रश्मियाँ पर्वत की चोटियों पर फैल रही हैं। बनवारीलालजी ने यहाँ हमारे कई फोटो उतारे। थोड़ा सुस्ताकर आगे बढ़े। इस प्रकार हम ६२५वीं सीढ़ी पर, जहाँ से एकदम मोड़ है, गिरनार को प्रणाम कर हम लौट पड़े। अब ज्यादातर टैंटनुमा दुकानें खुल गईं या खुल रही हैं। ४००वीं सीढ़ी पर अभी-अभी एक टैंट का द्वार खुला, यहाँ जोड़ों के दर्द का तेल, मंजन, कब्जनाशक चूर्ण आदि बेचा जा रहा है। भगवा वेशधारी बाबाटाइप इसके मालिक बोल नहीं रहे हैं। उन्होंने वहाँ रखी बड़ी केतली से चाय लेकर पीने का इशारा किया। स्टील की छोटी-छोटी प्लेटों में हमने चाय ले ली। मैंने और चौधरी साहब ने तेल लेकर घुटनों पर मला। उन्होंने मंजन आदि खरीदा। यहाँ से नीचे उतरे तो २००वीं सीढ़ी पर से दर्दनाशक तेल खरीदा। क्योंकि जीतभाई ने हमें यहीं से तेल लेकर आने को कहा था। यहाँ से हम आठ-दस सीढ़ी ही उतरे थे कि आनंदजी और रवि चाचा आते दिखाई दिए। ये ऊपर को गए और हम नीचे की ओर। हम लोग नीचे आए तो देखा कि तीनों आलसी लोग पत्थर की कुरसियों पर बैठे गप्पें हाँक रहे हैं। इन लोगों ने ऊपर जाने की हिम्मत नहीं दिखाई और इन्हीं के चलते हम लोग गिरनार की चढ़ाई करने से रह गए, जबकि इस बार हम चढ़ाई का कार्यक्रम बनाकर आए और इस निमित्त जूनागढ़ में एक रात्रि रुके भी।

यहाँ से हम लोग सीधे जूना अखाड़ा चले आए, यहीं चाय-नाश्ता किया। अगस्त्य गिरीजी जानेवाले हैं और हमें भी डाकोर (गोधरा) के लिए ट्रेन पकड़नी है, सो बाबाजी के चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लिया और यहीं से स्टेशन के लिए ऑटो कर धर्मशाला पर ले आए। लगभग पौने दस बज रहे हैं। यहाँ का हिसाब-किताब कर ऑटो में बैठ स्टेशन आ गए हैं। जूनागढ़ रेलवे स्टेशन के सामने गीता लॉज में खाना खाने गए। गीता लॉज जैसा भोजन पूरी यात्रा में कहीं नहीं मिलता है। मैंने

अपने और आनंदजी के लिए दो थालियाँ पैक करवा लीं। आज का यह भोजन लाला भैया के सौजन्य से है। लगभग साढ़े ग्यारह बजे जबलपुर मेल आ पहुँची और हम सब इसमें सवार हो गए। दिनभर गाड़ी रुकती-दौड़ती रही। लगभग साढ़े आठ बजे वडोदरा स्टेशन पर पहुँच गए, गोधरा पहुँचने तक रात के ग्यारह बज जाएँगे। आनंदजी की एक मित्र वहाँ मिलने आईं, उन्होंने सुझाव दिया कि गोधरा जाने के बजाय वडोदरा से बस पकड़ें तो ग्यारह से पहले ही डाकोर पहुँचा देगी।

तुरत-फुरत सामान उतार लिया गया। अपना-अपना सामान उठा बस अड्डा आ गए। बस अड्डा क्या है, आलीशान मल्टीस्टोरी बिल्डिंग है। साफ-सफाई ऐसी कि मक्खी भी फिसले। सख्त जाँच-पड़ताल, बीड़ी-सिगरेट भी अंदर नहीं ले जा सकते, पीना तो दूर की बात! पूरा परिसर रोशनी में नहाया हुआ, यहाँ दिन और रात का भेद ही मिट गया है। वेटिंग-हॉल में यात्रियों के बैठने की शानदार व्यवस्था है। अलग-अलग दिशाओं में जानेवाली बसें अपने-अपने स्टैंड पर आकर रुकती हैं, यात्रियों को बिठा आनन-फानन में अपने गंतव्य की ओर निकल जाती हैं। इन्क्वारी पर पता किया तो डाकोर जानेवाली बस नौ बजे निकल चुकी है, अब अगली बस रात्रि को ढाई बजे जाएगी। हम सब लोग तो अपने-अपने कंबल निकाल लंबे हो गए, बस रवि चाचा और बनवारीलालजी समय बिताने के लिए ताश खेलते रहे। अंतत: हमने प्रात: साढ़े चार बजेवाली बस पकड़ी। मैं और बनवारीलालजी बाईं ओर की सबसे आगेवाली सीट पर बैठे, बाकी साथी अपनी सुविधानुसार बैठ गए। बस में टी.वी. लगा है, उस पर गुजरात के धार्मिक स्थलों की जानकारी आ रही है। सपाट सड़क पर बस सरपट दौड़ी चली जा रही है। बाहर केवल लाइटें ही लाइटें दिखाई पड़ रही हैं। आकाश में चाँद हमारे बाईं ओर साथ-साथ दौड़ रहा है। कभी वह पीछे रह जाता है तो कभी ओझल और फिर कुछ ही पलों में मेरी खिड़की से झाँकने लगता है। इस तरह चंदामामा बराबर आँख-मिचौली करते रहे। बस अपने गंतव्य की ओर दौड़ रही है, जब तक यह डाकोर पहुँचे, मैं आपको पावन तीर्थ डाकोर के बारे में ही कुछ बताए देता हूँ।

गिरनार परिक्रमा, जूनागढ़

डाकोर गुजरात के खेड़ा जिला में एक छोटा सा कस्बा है। यहाँ की आबादी ३०-४० हजार से ज्यादा नहीं है। इसमें भी ब्राह्मणों की आबादी अधिक है। पहले यह एक गाँव भर था। देशभर में इसकी प्रसिद्धि का एकमात्र कारण है—भगवान् रणछोड़राय का मंदिर। यह वैष्णवों का पावन तीर्थ है। मंदिर से स्टेशन मात्र एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर है। बसअड्डा से एक चौड़ा रास्ता मंदिर तक जाता है। देशभर से तीर्थयात्री डाकोरधाम के दर्शन करने आते हैं। भगवान् रणछोड़राय द्वारका से डाकोर कैसे आए, इसकी बड़ी ही दिलचस्प कथा है। आज से करीब साढ़े आठ सौ वर्ष पहले डाकोर गाँव में भगवद्प्रेमी एक गरीब क्षत्रिय वीरसिंह बोडाणा रहता था। उसकी पत्नी गंगाबाई भी बड़ी धर्मपरायण और पतिव्रता थी। एक बार बोडाणा एक संन्यासी के साथ तीर्थयात्रा पर भगवान् द्वारकाधीश के दर्शन करने द्वारका गया। इसके बाद तो वह हर साल-छह महीने में पैदल ही द्वारकाधीश के दर्शन करने जाया करता। इस तरह निरंतर साठ वर्षों तक वह प्रभु के दर्शन करने जाता रहा। अब उसकी उम्र भी अस्सी वर्ष की हो गई थी, आने-जाने में तकलीफ होने लगी। इस बार भक्त बोडाणा जब भगवान् के दर्शन करने द्वारका पहुँचा तो द्वारकाधीश के समक्ष दंडवत् हो प्रार्थना करने लगा, ''हे नाथ! अब हमसे चला नहीं जाता है और आपके दर्शन के बिना रहा भी नहीं जाता, अत: प्रभु, हमें अपने सान्निध्य में ले लो या भगवन्, ऐसी व्यवस्था करो कि डाकोर में ही आपके दर्शन होते रहें।''

भगवान् द्वारकाधीश अपने इस भक्त पर अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने स्वप्न दिया, 'भक्त बोडाणा, अगली बार तुम पैदल नहीं, एक बैलगाड़ी लेकर आना, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।' भक्त बोडाणा खुशी-खुशी डाकोर लौट आया। अगली बार जैसे-तैसे एक कामचलाऊ बैलगाड़ी की व्यवस्था कर ली और रुकते-चलते द्वारका पहुँच गया। लीलाधारी ने अपनी लीला रची। मध्य रात्रि में बोडाणा को स्वप्न दिया, 'भक्त, सब पहरेदार सोए हुए हैं। बैलगाड़ी पिछले द्वार पर लगाओ, मंदिर से मेरी मूर्ति उठाकर गाड़ी में रख लो।' भक्त बोडाणा ने ऐसा ही किया। द्वारका से कुछ दूर निकलने पर ही बोडाणा को झपकियाँ आने लगीं और नींद की तीव्रता में वह वहीं पर लुढ़क गया। अब भगवान् द्वारकाधीश स्वयं गाड़ी हाँकने लगे। संसार को चलानेवाले के लिए बैलगाड़ी चलाना कौन बड़ी बात थी? सवेरा होते न होते बैलगाड़ी डाकोर की सीमा पर ला खड़ी कर दी। यहीं प्रभु ने नीम की टहनी से दातौन की। भगवान् का स्पर्श पाकर वह नीम भी कड़वाहट त्यागकर मीठा हो गया। उस घटना के ८६० वर्ष बाद आज भी यह नीम खूब स्वस्थ और भला-चंगा है। संवत् १२१२ में कार्तिक पूर्णिमा के दिन भगवान् द्वारकाधीश डाकोर पधारे। गाँववासियों ने उनका बड़ा स्वागत-सत्कार किया और मूर्ति बोडाणा के घर में स्थापित कर दी।

उधर द्वारका में द्वारकाधीश की मूर्ति चोरी होने की खबर से हाहाकार मच गया। मंदिर के पुजारियों ने अनुमान लगाया कि हो न हो, डाकोर का बोडाणा ही मूर्ति चुराकर ले गया है। पूरे दल-बल के साथ पुजारी डाकोर पर आ चढ़े। भगवान् की प्रेरणा से मूर्ति को गोमती तालाब में छिपा दिया गया। बोडाणा ने कह दिया कि मूर्ति मेरे पास नहीं है। लगभग सात दिनों तक दोनों पक्षों के बीच जोर आजमाइश होती रही और उतने दिनों तक भगवान् को गोमती के जल में रहना पड़ा। अंतत: लालची पंडा-पुजारी मूर्ति के बराबर सोना लेने पर राजी हो गए। बेचारे

बोडाणा के पास सोना तो क्या, भरपेट खाने को भी नहीं था। पंचों के फैसले से बोडाणा की जान आफत में आ गई। द्वारकाधीश की प्रेरणा से तराजू के एक पलड़े में मूर्ति तथा दूसरे पलड़े में बोडाणा की पत्नी ने अपनी नाक की बाली तथा तुलसीदल रखा तो पलड़ा बराबर हो गया। भगवान् ने बोडाणा की लाज रख ली। लेकिन खूब सारे सोने की उम्मीद लगाए बैठे लालची पंडा अब तो जार-जार रोने लगे, 'हे द्वारकाधीश! हमारे बाल-बच्चों का पालन-पोषण कैसे होगा? हम तो आप ही के आश्रित हैं। आपके वहाँ न रहने से भक्त लोग अब द्वारका आएँगे ही नहीं तो हमारी गुजर-बसर कैसे होगी?'

भगवान् द्वारकाधीश ने उन्हें प्रेरणा दी कि 'पुजारियो! तुम सब द्वारका लौट जाओ। आज से छह मास के बाद वहाँ स्थित सावित्री बाव में से मेरी मूर्ति निकालकर मंदिर में स्थापित कर देना। द्वारका में मैं द्वारकाधीश के रूप में तथा डाकोर में रणछोड़राय के रूप में भक्तों का कल्याण करने के लिए निवास करूँगा।' खाली हाथ ही पंडा-पुजारी द्वारका लौट गए। जैसे-तैसे कुछ महीने बीते। कोई आमदनी न होने और दान-दक्षिणा के रूप में हो रही धन की हानि को देखते हुए लालची पुजारियों ने छह माह से पूर्व ही मूर्ति को कुएँ से बाहर निकाल लिया। इस मूर्ति में अभी प्रभु की आँखें नहीं खुली थीं। आज भी द्वारका में विराजमान द्वारकाधीश विग्रह की आँखें बंद हैं। लाखों तीर्थयात्री वहाँ दर्शन करने जाते हैं और पंडा-पुजारियों की चार हजार की आबादी उन्हीं के आश्रित पल रही है।

श्रीरणछोड़राय मंदिर, डाकोर

लगभग पौने छह बज रहे हैं और हमारी बस भी डाकोर के बसअड्डे में आ लगी है। अभी भी अँधेरे की चादर तनी हुई है। अखबार के हॉकर इनको व्यवस्थित कर रहे हैं, जिन्हें लेकर पेपर-बॉय अपनी-अपनी दिशा में निकल जाएँगे। हम सब अपना-अपना सामान उठा पैदल ही मंदिर की दिशा में चलते हुए बोडाणा चौक पर आ गए हैं। यहीं पर स्थित 'श्री वल्लभ निवास' में आठ सौ रुपए में एक बड़ा सा कमरा ले लिया गया। झटपट सामान कमरे में रख मंगला आरती में भगवान् रणछोड़राय के दर्शनों के लिए दौड़ पड़े। मंदिर में भक्तों की अच्छी खासी भीड़ पहले से ही है। भगवान् की आरती उतारी जा रही है। भक्तजन, विशेषकर स्थानीय लोग गुजराती में गा-गाकर और हाथ की विभिन्न मुद्राएँ बनाते हुए प्रभु को रिझा रहे हैं। कोई हाथ जोड़े खड़ा है तो कोई ताली बजाते हुए दर्शनों की आनंदानुभूति में मगन है। बड़ा ही अलौकिक दृश्य उपस्थित हो रहा है। स्वर्णाभा से देदीप्यमान प्रभु रणछोड़राय सब भक्तों के केंद्र में हैं। भीड़ में जगह बनाकर हाथ जोड़े मैं प्रभु की दिव्य छवि को अपलक निहारता रह जाता हूँ। पहले से सोचा हुआ सबकुछ भूल जाता हूँ। न कुछ माँगते बनता है, न कुछ कहते बनता है। आनंदातिरेक में बस प्रभु को एकटक देखता खड़ा हूँ, पलकें झपकाना ही भूल गया हूँ। आरती संपन्न होने के बाद सब भक्तजन लौट पड़े।

मैं चौक में खड़ा चारों ओर निहारकर मुआयना कर रहा हूँ। मंदिर में प्रवेश के चार दरवाजे हैं। उत्तर दिशा का दरवाजा दर्शनार्थियों के प्रवेश के लिए है तथा दक्षिण का द्वार भगवान् के चरण-स्पर्श के बाद निकलने के लिए है। मंदिर लगभग १२० फीट ऊँचा है। मुख्य मंदिर ऊँचे चबूतरे पर टिका है। वहाँ तक पहुँचने के लिए चारों ओर से १२ राशियों को इंगित करनेवाली १२-१२ सीढ़ियाँ हैं और २८ नक्षत्रों को इंगित करनेवाले मंदिर के २८ शिखर हैं। मंदिर के ऊपर बड़े-बड़े गुंबद हैं। हर गुंबद पर स्वर्ण के पाँच कलश रखे गए हैं। मुख्य गुंबद पर रेशमी श्वेत ध्वजा फहरा रही है। पूरा मंदिर पत्थर का बना है और मंदिर के चारों ओर एक गलियारा, जिसमें परिक्रमा की जाती है, को छोड़कर ऊँची मजबूत दीवार से मंदिर परिसर की किलेबंदी की गई है। पूरब दिशा में मंदिर की रसोई है, जिसमें भगवान् का भोग-प्रसाद तैयार किया जाता है। गर्भगृह का अग्रभाग स्वर्ण का तथा कपाट चाँदी के हैं। भगवान् रणछोड़राय की काले पत्थर की साढ़े तीन फुट ऊँची तथा डेढ़ फुट चौड़ी चतुर्भुजी मूर्ति पश्चिममुखी है। प्रात: से रात्रि तक प्रभु का आठ बार भोग लगाया जाता है। हर भोग की प्रसादी अलग-अलग होती है। कपड़े और भगवान् का रूप-विन्यास हर बार बदला जाता है और हर भोग के बाद दर्शन खुलते हैं। भोग लगा प्रसाद मंदिर के काउंटर पर बिक्री के लिए रखा जाता है।

मुख्यद्वार के पास एक ५० फुट ऊँचा अष्टकोणीय दीपमाला स्तंभ है। इसके हर कोण में १०० दीपक, यानी कुल ८०० दीपक प्रज्वलित होते हैं। मुख्य द्वार यानी उत्तर के द्वार के ऊपर रखे ढोल-नगाड़े मंगला तथा शयन आरती के समय बजाए जाते हैं। मंदिर की सब व्यवस्था तथा देखभाल ट्रस्ट द्वारा की जाती है। पहली बार मंदिर का निर्माण खंभात के सेठ नंददास ने कराया और बोडाणा से रणछोड़राय की मूर्ति लेकर लक्ष्मीजी के साथ वहाँ स्थापित कराई। लेकिन वर्तमान का यह जो भव्य मंदिर है, इसका निर्माण प्रभु की प्रेरणा से दक्षिण के एक जागीरदार गोपाल राव ने यहाँ जमीन खरीदकर करवाया। मंदिर के दक्षिण में प्रभु का शयनगृह है, जहाँ गोपाल एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ विराजमान हैं। यहाँ एक सबसे सुंदर व्यवस्था मैंने यह देखी कि दर्शनों के समय भक्तों की भीड़ चाहे कितनी भी हो, आपकी भेंट प्रभु के चरणों तक अवश्य पहुँचती है। बाँस की कुछ टोकरियाँ भगवान् के सामने के भाग में रखी रहती हैं, इनमें भक्तगण पुष्प, माला तथा अन्य भेंट सामग्री रख देते हैं।

भगवान् की सेवा में लगे तीर्थपुरोहित इन्हें ले जाकर प्रभु को अर्पण के बाद टोकरियाँ वापस वहीं लाकर रख देते हैं, सब अपनी-अपनी भेंट-सामग्री प्रसाद-स्वरूप उठा लेते हैं। मंदिर के आगे के मंडप में बड़े-बड़े टीवी स्क्रीन लगे हैं, जिनमें भगवान् के दर्शन अधिकाधिक लोगों को भली प्रकार हो जाते हैं। इतना ही नहीं, उत्तर वाले मुख्य द्वार के ऊपर बड़े-बड़े शीशे लगे हैं, चौक में रहनेवाले भक्तों को मंदिर में होनेवाली सब गतिविधियों के साथ-साथ दर्शन भी भरपूर होते हैं। देश के अन्य मंदिरों से अलग यह एक शानदार व्यवस्था है।

मंदिर से लौटकर हममें से कुछ साथी तो सो गए, क्योंकि वे रातभर जागे थे। मैं और चौधरी साहब नहा-धोकर चाय पीने के बाद मंदिर की ओर निकल आए। बाहर ही पुष्प आदि का दोना ले लिया। मंदिर के पट अभी बंद ही हैं। थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि धोती-कुरताधारी एक ठग पुजारी एक ट्रे लेकर आया और बोला, ये सब इसमें रख दो, मैं अच्छे से पूजा-दर्शन करवाता हूँ। हमने मना किया तो दूसरा आकर बोला कि इसे कोई दान-दक्षिणा नहीं चाहिए, फ्री सेवा करेगा। हमने फिर भी मना किया, वह नहीं माना और उसने हमें मंदिर के बाईं ओर ले जाकर, जहाँ तराजू लटकी हुई है, वहाँ के पुजारी के हवाले कर दिया। उसने मान न मान मैं तेरा मेहमान की तर्ज पर नाम-गोत्र पूछकर मंत्रोच्चार शुरू कर दिया, दो मिनट तक न जाने क्या-क्या बकता रहा। अपनी वाणी को विश्राम दे दक्षिणा के दो सौ इक्यावन रुपए माँगने लगा। मैं और चौधरी साहब मूक बन उसकी ओर ताकने लगे। वह कुछ बोले, इससे पहले ही चौधरी साहब ने उसकी अच्छी खबर ली, उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। बेशर्म पंडा मुँह बनाता हुआ अगले शिकार की तलाश में निकल गया।

यहाँ दुष्ट पंडों का यह गिरोह सक्रिय है, मंदिर ट्रस्ट को इस ओर ध्यान देना चाहिए, इससे यहाँ आनेवाले तीर्थयात्रियों का मन खराब होता है, देव के प्रति अनास्था बढ़ती है। खैर, साढ़े आठ बजे बाल-भोग के दर्शन खुले, भीड़ बहुत कम है, सो बहुत तसल्ली से दर्शन हुए। महिलाएँ एकदम आगे से दर्शन करती हैं, बड़ी सहजता से भगवान् की ड्योढ़ी पर मत्था टेक सकती हैं। पुरुष वहाँ नहीं जा सकते। दर्शन के बाद मंदिर की परिक्रमा कर हमने पंचामृत तथा प्रसाद खरीदकर खाया। टहलते हुए डेरे की ओर लौटे। अब बाजार में दुकानें खुल चुकी हैं। गृहस्थ और रसोई में काम आनेवाली वस्तुओं की दुकानें ज्यादा हैं। यहाँ रेहड़ी पर सब्जियों के साथ हमने देखा कि अरहर की हरी फलियाँ भी बिक रही हैं। पूछने पर पता चला कि इनकी सब्जी बनाई जाती है। डेरे पर पहुँचे तो साथी लोग नहाना-धोना कर रहे हैं। होते-करते लगभग साढ़े दस बजे सब लोग दर्शनों के लिए पुनः मंदिर पहुँचे। राजभोग के दर्शन साढ़े ग्यारह बजे खुलने वाले हैं। स्त्री-पुरुष दर्शनार्थियों की अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई है। दर्शन खुलने पर दर्शन किए, साथ ही भगवान् का स्नान भी देखा। यहाँ से निकल मंदिर के सामने स्थित गोमती तालाब में उस स्थान के दर्शन किए, जहाँ भगवान् रणछोड़राय को तालाब के अंदर छुपकर रहना पड़ा था।

तालाब का पानी काफी गँदला है, इसमें छोटी-बड़ी अनेक मछलियाँ तैर रही हैं। घाट तथा तालाब की जगत लाल पत्थर की बनी है। इससे थोड़ा हटकर मंदिर की ओर वह स्थान है, जहाँ भगवान् रणछोड़राय को सोने से तौला गया था। यहाँ एक छोटे से मंदिर में तराजू तथा भगवान् के चरण-चिह्न विराजमान हैं। यहाँ पर दंडवत् प्रणाम कर पैदल ही मीठा नीम देखने निकले। यह स्थान मंदिर से दो-ढाई किलोमीटर दूर तो होगा ही, अतः दो ऑटो कर वहाँ तक पहुँचे। इतने लंबे समय तक मौसम की मार झेलते हुए वृक्ष स्वस्थ हालत में है। यहाँ भगवान् रणछोड़रायजी का एक छोटा सा मंदिर भी है। इसकी यहाँ बड़ी मान्यता है। हमने देखा कि दूर कहीं देहात से बहुत सारे ग्रामीण बड़े गाजे-बाजे के साथ मनौती पूरी होने पर भगवान् का यशगान करने आए हैं।

यहाँ के पुजारीजी ने हमें नीम के पत्ते तोड़कर खिलाए, वाकई पत्तों में कड़वाहट नहीं है। हालाँकि डाकोर में कई पवित्र तीर्थस्थल हैं, सब जगह हमारा जाना नहीं हो सका। दोपहर हो गया है, लगभग एक बज रहा है। यहीं पता चला कि अपराह्न डेढ़ बजे डाकोर से गोधरा के लिए लोकल ट्रेन जाती है। सो जल्दी से यहीं हाइवे पर स्थित कुंकुम रेस्टोरेंट में भोजन करने बैठे। पंजाबी थाली १२० रुपए की है। जल्दी से भोजन निबटाकर इन्हीं ऑटोवालों को स्टेशन छोड़ आने के लिए राजी कर लिया। तुरंत धर्मशाला लौट वहाँ का हिसाब-किताब कर, अपना सामान ऑटो में लाद दस मिनट में ही रेलवे स्टेशन आ गए। गाड़ी आने में अभी पंद्रह मिनट हैं। गोधरा के आठ टिकट ले लिये गए। रुकते-चलते इस गाड़ी ने हमें साढ़े चार बजे गोधरा उतार दिया। गोधरा से दिल्ली के लिए हमारी गाड़ी रात्रि साढ़े आठ बजे है।

हमारे साथी ताश खेलकर समय गुजारते रहे। मैं और बनवारीलालजी स्टेशन से बाहर निकलकर काफी दूर तक घूमने गए। लाला भैया ने सवा छह बजे यहीं से मुंबई के लिए ट्रेन पकड़ ली। उनके जाते ही माहौल में नीरसता छा गई, उनके कारण पूरी यात्रा में खूब मनोरंजन होता रहा! सच, लाला भैया न भुलाए जानेवाले व्यक्ति हैं। हमारी गाड़ी भी समय पर आ गई। गाड़ी में चढ़े, हमारी सीटों पर पहले से ही एक फैमिली ने कब्जा जमाया हुआ है, थोड़ा हील-हुज्जत के बाद वे लोग हटे, हम अपनी सीटों पर बैठ गए। रात्रि का भोजन रेलगाड़ी में ही किया। लगभग ग्यारह बजे सब अपनी सीटों पर लेट गए। कोटा के बाद ठंड से बुरा हाल हो गया। आनंदजी नीचे ही लेटे हुए थे, सो उनकी तो कुलफी ही जम गई। रवि चाचा, सेठजी और डॉक्टर साहब प्रातः मथुरा स्टेशन पर उतर अपने गाँव चले गए। गाड़ी के रुकते-चलते हम लोग भी लगभग ग्यारह बजे निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर उतर गए। हम तीन जन ही बचे थे, सो पहले बस-स्टैंड पर इत्मीनान से चाय पी, फिर बस में सवार हो घर आ गए। नए-नए अनुभव, आचार-व्यवहार, सभ्यता-शराफत, ज्ञान से संपन्न करनेवाली यह यात्रा स्मरणीय बन गई।

जी-३२६, अध्यापक नगर
नांगलोई, दिल्ली-११००४१
दूरभाष : ८५०६८११२८३

नेह भरी एक पाती

• मालिनी गौतम

दम तोड़ती चाहें

मौन की दहलीज पर दम तोड़ती चाहें
फिर उठे हैं पीर के भीषण बवंडर,
कश्तियों की याद में घायल समंदर
वक्त के पनघट पे प्यासी ही रही राहें।
कैमरे की रील पर कुछ चित्र
गहरे बावरे मन पर लगे
सुधियों के पहरे
दंश छलने का लिए बेचैन हैं बाँहें।
ढो रही हैं साँस बस मन की व्यथाएँ,
सज रही हैं ख्वाहिशों की भी चिताएँ
चौखटों पर नेह की नदियाँ भरें आहें।

क्या करें हम

खुल न पाए अर्थ
कितनी चाहतों के, क्या करें हम?
नेह के संबंध टूटे, आसमानी चौखटों पर
दंभ के बादल गरजते प्यास से
व्याकुल घटों पर हौसले टूटे हुए थे
आगतों के, क्या करें हम।
चाँदनी के आवरण में तम बसेरा कर रहा है,
रोशनी को लीलता-सा पग-पसेरा कर रहा है,
ख्वाब भी बेघर हुए हैं
बिन पतों के, क्या करें हम?
जिंदगी ने बाँह पर
बस पीर के ताबीज बाँधे,
मन्नतों को मिल न पाए चाह के मजबूत काँधे
आज भी मन खोजता
टुकड़े खतों के, क्या करें हम?

रोज आता दिन

आस की गठरी उठाए
रोज आता दिन।
रात के उलझे सिरों को ढूँढ़ता सा
कुछ जटिल प्रश्नों के उत्तर बूझता सा
नींद को भी राग बैरागी
सुनाता दिन।
हो रही हैं जर्जरित संवेदनाएँ
मौन सदियों ने सही कितनी व्यथाएँ
बीज खुशियों के दु:खों में
रोप जाता दिन।

साजिशों की जब फसल उगने लगी हो
उत्सवों की लाश भी बिछने लगी हो,
पत्थरों पर दूब-सा फिर
लहलहाता दिन।

तू जाने मैं जानूँ

तेरे-मेरे मन की बातें,
तू जाने, मैं जानूँ।

तारों के दामन को थामे
याद किसी की आती।
बदली बन अंबर पर लिखती
नेह भरी इक पाती।
बदली से अंबर की बातें
तू जाने, मैं जानूँ।

बीती बातों के धागे जब मन को हैं उलझाते,
रेत हुई नदिया के तट पर तुम सागर बन आते।
नदिया से सागर की बातें
तू जाने, मैं जानूँ।

सुपरिचित रचनाकार। अब तक 'बूँद-बूँद एहसास' (कविता-संग्रह); 'दर्द का कारवाँ' (गजल-संग्रह); 'गीत अष्टक तृतीय' (साझा गीत-संकलन) एवं प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। संप्रति एसोसिएट प्रोफेसर (अंग्रेजी), कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, संतरामपुर (गुजरात)।

यादों के जंगल साँसों में अकसर ही उग आते,
सूनी-सूनी पगडंडी पर राह देखते नाते।
साँसों से नातों की बातें
तू जाने, मैं जानूँ।

बेचैनियों के गीत

गा रही है बाँसुरी, बेचैनियों के गीत
इस नदी में ले रहे आकार पत्थर
झर रहे बेबस तटों से अश्रु झर-झर
देखता खामोश बरगद प्रेम की यह रीत।

देह पर रौशन दीयों का साथ पाकर गुनगुनाए थे
नदी ने प्रेम के स्वर,
कागजी नावों ने बाँधी साजिशों की भीत।

नींद में भी थरथराती हर लहर है,
हरहराती बाढ़ में,
डूबा पहर है
सीपियों में बंद है घायल नदी का मीत।

४/४७५, मंगल ज्योत सोसाइटी
संतरामपुर-३८९२६० (गुजरात)
दूरभाष : ०९४२७०७८७११

निमाड़ मालवा अंचल की माँड़ना लोककला

• सुधा तैलंग

निमाड़ अंचल में माँड़ना कला लेखन, स्वागत, भक्ति, स्वच्छता व प्रसन्नता की प्रतीक मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि घर-आँगन में माँड़ने बनाने से सुख-समृद्धि आती है। इसी कारण आज भी निमाड़ अंचल में महिलाएँ अपने घरों को लीप-पोतकर माँड़नों से सज्जित करती हैं। घरों के बाहरी भाग में, आँगन में, कमरे के आलों को सुंदर बनाने हेतु फूल-पत्ते, बेलबूटे, पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों व मानव की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। ग्रामीण नारी अपनी कला-संस्कृति, रुचियों, आंतरिक भावनाओं को माँड़ने के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। रंग व कूची के द्वारा समूचे परिवेश में वे उमंग, उल्लास व खुशियों के रंग बिखेरती हैं।

निमाड़ क्षेत्र में माँड़नों के बारे में एक मिथ कथा प्रचलित है। एक बार शिव व पार्वती में शर्त लगी। शिव ने कहा, ''मैं जब भी घर आऊँ तो घर का आँगन जगमगाता हुआ सुंदर दिखना चाहिए। वरना मैं हिमालय पर्वत चला जाऊँगा।'' पार्वती बोलीं, ''ठीक है, यदि मैंने घर-आँगन को जगमगाकर चमका दिया तो क्या होगा?''

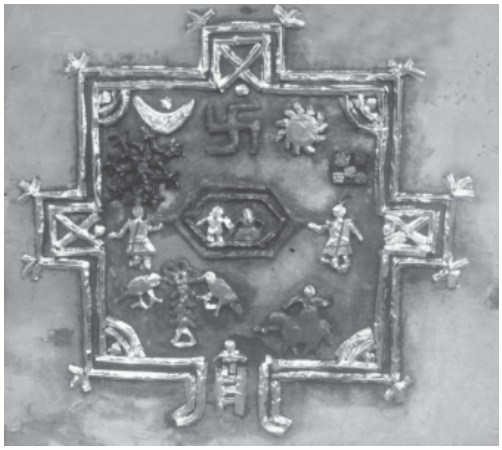

शिव बोले, ''तुम्हारा काम पूरे विश्व में प्रसिद्ध होगा।'' पार्वती ने गोबर मँगवाकर आँगन को लीप दिया। देखा कि आँगन सुंदर तो लग रहा है, पर जगमगा नहीं रहा। तभी शिव आ पहुँचे। उन्होंने भी यही बात कही कि आँगन सुंदर तो लग रहा है, पर जगमगा नहीं रहा। और वे रूठकर हिमालय जाने को तैयार हो गए। तभी पार्वती उन्हें रोकने के लिए दौड़ीं तो ओरल (आटा व रोली) की लीप पर पैर की टक्कर लगी। पार्वती के चरणों की आकृति से आँगन जगमगा उठा। यह देखकर शिवजी प्रसन्न हो उठे और बोले, ''आज से माँड़न पूरे संसार में घरों की शोभा बढ़ाएँगे। जिस घर में ये बनेंगे, वहाँ सुख-समृद्धि व शांति होगी।'' कहा जाता है, तभी से आँगन लीपने के बाद कोरा नहीं छोड़ा जाता। उसमें आटा व रोली से तुरंत माँड़ने बनाए जाते हैं। इन्हें शुभ व कल्याणकारी माना जाता है।

मालवा अंचल में धरती को माता का स्थान देते हुए उसका शृंगार करने की परंपरा है। इसीलिए मालवा क्षेत्र में घर, आँगन, देहलीज व पूजन-स्थल में माँड़ना आकृतियाँ बनाकर धरा का शृंगार कर समूचे

सुपरिचित लेखिका। देश के प्रतिष्ठित समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में कहानी, लेख, साक्षात्कार आदि लगभग ३०० से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित। संप्रति मध्य प्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग में संस्कृत की शिक्षक।

वातावरण को श्रद्धा व सौंदर्य से परिपूर्ण माना जाता है। वहाँ दीवारों पर माँड़नों की आकृतियाँ घर-घर में देखी जाती हैं। लिपे-पुते आँगन, मुख्यद्वार की देहलीज, चबूतरे में बनी रोचक-मनमोहक आकृतियों को देखकर मन पुलकित हो उठता है—

मालवा का मांडणा में, लागी री होड़।
आखी दुनिया में, कोनी मांडणा की तोड़॥

हर तीज-त्योहार, शुभ कार्य पर माँड़ने की परंपरा मालवा की विशेषता है। मान्यता है कि आँगन खाली नहीं रखना चाहिए, क्योंकि अलंकृत धरती देखकर लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। माँड़ना दिन में ही बनाए जाते हैं, रात को नहीं। साथ ही इन्हें एक बार में पूरा बना लिया जाता है, अधूरा नहीं छोड़ा जाता।

सामग्री—गेरू, रामरज, खड़िया, लाल मिट्टी व कूची। माँड़ने का सौंदर्य उँगलियों के पोरों के जादू से नाच उठता है।

दीवाली—दीपावली दीपों व रंगों का त्योहार है। खुशियों के रंग बिखेरते हुए घरों की देहरी व दीवारों, आँगन में माँड़ने सौंदर्य को जगमग कर देते हैं। दीवारों पर कोड़ी-मड़ेले, तोता, मोर, हल, बक्खर, बैलगाड़ी, केले या झाड़, खजूर, दीपक, पगल्या व स्वास्तिक बनाने की परंपरा है।

स्वास्तिक—दीपावली में कुंकुम से स्वास्तिक (सातिया) को निर्मित करती महिलाएँ मन के उद्‌गार कुछ यों अभिव्यक्त करती हैं—

कूँकूँ का साँत्या से चौक पुरावो।
दर्शन के रोज थारा देवरो पे आवाँ।

पगल्या—पगल्या यानी पैरों के चिह्न। दीपावली का शुभ अवसर हो या नववधु का प्रथम बार गृह-प्रवेश हो या प्रथम संतान के जन्म पर

उसके समाचार परिवार जनों के पास पहुँचाने का तरीका, पगल्या मुख्य द्वार की डेल के सामने बनाया जाता है।

लक्ष्मी पूजन—महालक्ष्मी पूजन हो या दीपावली पूजन या फिर देवउठनी एकादशी, लक्ष्मी के चरण-चिह्न बनाने की परंपरा मालवा अंचल में है। माँड़ने शुभ होने के कारण लक्ष्मी को प्रसन्न करते हैं। दीपावली में मुख्य द्वार के बाहर दोनों ओर पूजन स्थल पर लक्ष्मीजी के पगल्या (चरण चिह्न) बनाए जाते हैं। समृद्धि के अंकन के पीछे शुभ-लाभ की ये आस्था सदियों से चली आ रही है।

चालो यो जरणी पग दोई चालो।
कूँकूँ रा पगल्या मंड़ेगा।

विवाह के अवसर पर वधु जब प्रथम बार गृह-प्रवेश करती है तो कुंकुम के घोल में पैर डुबोकर घर में कदम रखती है। लाल पदचिह्नों से घर-परिवार धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है।

पुत्र-जन्म पर कुंकुम के पगल्ये, नवजात शिशु के जन्म पर रिश्तेदारों को शुभ समाचार भेजने के लिए एक कागज पर हलदी, कुंकुम या रोली से पगल्या चिह्न बनाकर भेजे जाते हैं। ये शुभ चिह्न नन्हे शिशु के आगमन से सबको हर्षित करते हैं, साथ ही निमंत्रण का काम भी। सबसे पहले पगल्या दादा, दादी, बुआ व मामा के घर भेजा जाता है।

सामग्री—कागज, रोली, हलदी, कुंकुम व कूची।

विधि—पगल्या चिह्न के साथ कागज में पेड़े, खिलौने (चूसनी व खुनखुना बाजोर (काष्ठ वेदी), व्यानी-व्यान (समधी-समधिन), सातिया, बच्चे का चित्र व पालना भी बनाया जाता है।

गणगौर तीज पर—पांडु सफेद पत्थर पिसा चूर्ण, काजल, कुंकुम या मेहँदी, चावल, हलदी के घोल से दीवार पर गेरू से माँड़ने बनाए जाते हैं। दो औरतें, सूर्य, चंद्रमा व नसैनी, गुलाबी, लाल, काला, हरा, केसरिया, पाँच रंगों की १६-१६ बिंदिया बनाती हैं। ये कुंकुम, गुलाल, काजल तथा मेहँदी से बनाई जाती हैं।

देवउठावनी एकादशी—देवउठनी ग्यादस को तुलसी विवाह में माँड़ने बनाने की परंपरा मालवा अंचल में बखूबी देखी जा सकती है। घरों को लीप-पोतकर दरवाजे व आँगन में तुलसी चौरा के पास पूजन-स्थल पर माँड़ने बनाए जाते हैं। महिलाएँ अपने मन की भावनाएँ व्यक्त कुछ यों करती हैं—

ग्यारस उबीजी, आँगणे धरम उठो डेली माय।

अष्टदल का फूल बनाते हुए चौक पूरा जाता है। लक्ष्मी के चरण-चिह्न पगल्या बनाए जाते हैं, शंख, चक्र, गदा, कमल का फूल भी।

आध्यात्मिक महत्त्व—चार माह तक विष्णु भगवान् का शयन व कार्तिक की एकादशी में उठना तथा तुलसी-विवाह का पौराणिक महत्त्व है। देवों के देव विष्णु के जागने पर घर-आँगन जगमगा उठे, ऐसे में माँड़नों के बनाने की परंपरा है।

विवाह के अवसर पर भी विवाह वेदी के चारों ओर मंडप में माँड़ने बनाए जाते हैं। कुल देवता की स्थापना में भी माँड़नों से उनका स्वागत किया जाता है—

मैं तो नित लित लींपू सैयाँ,
आँगणो अणी अवसरियो हाँ।
मांडू माणक चौक कुलदेवता, पदारिया पायेणा॥

आदिवासी इलाकों में लगन (विवाह) में दूल्हे के आसन के बीच गेरुआ मिट्टी से चौक बनाते हैं—यह आकृति धन चिह्न होती है, जिसके चारों तरफ कई वृत्त, आकृतियाँ बनाकर सज्जा की जाती है।

मित्ति (चित्र)—माँड़ने—बहन के विवाह में माँड़ने बनानेवाले को भाई आमंत्रित करता है, ताकि खुशी, आनंद व सुंदरता से शुभ कार्य का वातावरण बन सके।

बेन्या बाई का ब्यार, में चालो नी चितारा।

चौक पूरना—मालवा क्षेत्र में चौक पूरना किसी भी शुभ कार्य, पूजन, पर्व में शुभ माना जाता है। शुभ कार्य की शुरुआत में गणपति का आह्वान चौक पूरते हुए कितना मंगलकारी लग रहा है—

ए के केसर घोलूँ, बाई म्हारो आँगण लिपाड़।
गज मौतिन को चौक, पुरावो।
ए के वणा चौकज पे बाई म्हारा गणपतजी बैठा,
करो दो बेन्या वीरा की आरती।

कुंकुम चंदन से चौक पूरने का भाव मन को सुरभित कर देता है—

कूंकू से चौक पुरावो म्हारी सजनी, चंदन का पार लगई दो रे!

मालवा में गंगा पूजन, विवाह में गाय माता, जन्म पर पगल्या, शीतला सातें पर हलदी, कुंकुम के हांते, देवउठनी एकादशी पर चौक पूरना, दीपावली पर गेरू, खड़ियाँ के माँड़ने, नागपंचमी में पाँच नागों के चित्र, श्राद्ध पर्व पर संजा का अंकन करती लोक गीतों की मिठास का रंग घोलती हुई ग्राम वधुएँ, बहू-बेटियाँ, कृषक बालाएँ समूचे परिवेश को पावन, मंगलमय बना देती हैं। घर-आँगन खुशियों से महक उठता है, दमक उठता है।

मालवा में गंगा पूजन, विवाह में गाय माता, जन्म पर पगल्या, शीतला सातें पर हलदी, कुंकुम के हांते, देवउठनी एकादशी पर चौक पूरना, दीपावली पर गेरू, खड़ियाँ के माँड़ने, नागपंचमी में पाँच नागों के चित्र, श्राद्ध पर्व पर संजा का अंकन करती लोक गीतों की मिठास का रंग घोलती हुई ग्राम वधुएँ, बहू-बेटियाँ, कृषक बालाएँ समूचे परिवेश को पावन, मंगलमय बना देती हैं। घर-आँगन खुशियों से महक उठता है, दमक उठता है।

मालवा के माँड़नों में चौक, सातिया/पगल्या, फूल छावड़ी जलेबी, दीपक, हीड़ जैसे मांड़नों को अनेक परंपरागत भांते जुआ, बेल चीरण, भँवर, फूल, बिंदी, झाड़ से भरा जाता है। ये माड़ने मांगलिक सुख-समृद्धि व देवताओं के वास के प्रतीक हैं। हमारी आस्था के प्रतीक हैं। पारंपिक लोककला व संस्कृति की अनमोल विरासत हैं।

टी/२, सिमरन अपार्टमेंट-२
अपार्ट त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष : ०९३१०४६८५७८

बाल-कहानी

जगह

• दया दीक्षित

निखिल वॉशरूम से बड़ी तेजी के साथ अपनी क्लास की ओर जा रहा था। भूख के मारे उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। हाफटाइम हो चुका था। वह हाफटाइम होने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। इतना कि हाफटाइम से ठीक पहले लगनेवाले मैथ के पीरियड में उसका ध्यान न पढ़ने में था, न ही ब्लैकबोर्ड पर हल किए सवाल के फॉर्मूले पर। दरअसल, रात में उसने ठीक से भोजन नहीं किया था। घर में जब भी लौकी की सब्जी बनती थी, वह बेमन से एकाध रोटी खा पाता था। मम्मी का कहना था—'सबकुछ खाने की आदत डालो, यह क्या कि लौकी-कद्दू नहीं खाएँगे! भूख लगी होगी, तो ये फायदेमंद सब्जियाँ बुरी नहीं, अच्छी लगेंगी। न खाने के सौ बहाने!'

सो एक तरह से रात का खाना उसने खाया ही नहीं था। देर रात तक पढ़ाई करने के कारण उसे प्रात: उठने में रोज से अधिक समय हो गया था। पर हाँ, सुबह वह इस बात पर प्रसन्न था कि मम्मी ने नाश्ते में उसकी पसंद के गोभी-आलू के पराँठे और नीबू का मीठा अचार टिफिन में रखा था। उसकी भूख जाग उठी थी, मगर देर से उठने की वजह से इतना समय नहीं था कि वह एक-दो पराँठे खा सके। किसी तरह जल्दी-जल्दी दूध पीकर तेज-तेज साइकिल चलाता स्कूल आया था।

इस समय तेज कदमों से जैसे ही निखिल ने क्लासरूम में प्रवेश किया, तो सन्न रह गया। ऋषभ उसके बस्ते के पास बैठा, उसका टिफिन खोलकर पराँठे खा रहा था। वह दौड़कर आया और ऋषभ से टिफिन छीन लिया! मगर यह क्या? आधे से ज्यादा टिफिन खाली था! एक पराँठा ही बचा था, वह भी पूरा नहीं था, और अचार पूरा ही गायब! भूखे निखिल की आँखों में आँसू आ गए। उसे ऋषभ पर बेहद गुस्सा आया, पर वह चुप रह गया। उसे मम्मी की हिदायत याद आ गई। जब तेज गुस्सा आए, तब मुँह बंद कर लेना चाहिए। कभी भी गुस्से का जवाब गुस्से से नहीं देना चाहिए। वे खुद भी ऐसा ही करती थीं। निखिल मन मसोसकर रह गया। किसी तरह उसने बचा हुआ पराँठा खाकर पानी पिया और ऋषभ से बिना कुछ बोले वह बाहर निकल आया।

दूसरे दिन लंचटाइम में निखिल ने बस्ते से अपना नाश्ता निकाला और बगीचे के उस ओर पड़ी बेंच पर जा बैठा, जहाँ पेड़ों की घनी छाँव थी। अभी लंच शुरू करता कि उसने ऋषभ को अपनी ओर आते देखा। सशंकित हो उसने टिफिन खोला और जल्दी-जल्दी खाने लगा। आज मम्मी ने वेज बिरयानी रखी थी नाश्ते में। चारों ओर वेज बिरयानी की भीनी खुशबू फैल गई। अब तक ऋषभ आकर निखिल के बिल्कुल सामने खड़ा था। बिना कुछ कहे उसने पूरी ताकत से टिफिन खुलवाया और कुछ ही मिनटों में वेज बिरयानी चट कर गया।

निखिल बेबस सा बैठा रह गया। गुस्से से उसका मुँह लाल हो गया। मुट्ठियाँ भिच गईं। इतने पर भी उसने ऋषभ से कुछ नहीं कहा। आज भी निखिल कल की तरह भूखा ही रह गया।

घर आकर उसने अपनी मम्मी को सबकुछ बता दिया कि किस तरह से ऋषभ उसका खाना छीनकर खा जाता है। निखिल की बात सुनकर मम्मी को बहुत गुस्सा आया। किंतु संयत होकर उन्होंने निखिल से कहा, ''तुम्हें अपनी क्लास टीचर से ऋषभ की करतूत बता देनी चाहिए थी।'' मम्मी की बात सुनकर निखिल ने कहा, ''मम्मा, ऋषभ बहुत लालची और बेशर्म है। दो दिन पहले उसने मेरे दोस्त अर्पित का टिफिन खाया था। अर्पित ने उसे बहुत मारा था। क्लासटीचर मैम से शिकायत भी कर दी थी! मैम ने पूरे टाइम ऋषभ को क्लास से बाहर खड़े होने की सजा दी थी। लेकिन अगले दिन ऋषभ ने फिर से अर्पित का टिफिन खा लिया।'' सुनकर मम्मी ने कहा, ''ओह! यह तो खराब बात है! खैर, तुम चिंता मत करो, कल से तुम भूखे नहीं रहोगे। मैं कुछ करती हूँ, और हाँ, अभी ऋषभ से अच्छा या बुरा कुछ भी मत कहना। तुम हाथ-मुँह धोओ, कपड़े बदलो। चलो, जाओ जल्दी करो, खाना खाकर तुम्हें कोचिंग भी जाना है।''

यह सुनकर वह हाथ-मुँह धोने चला गया। निखिल हाथ-मुँह धोकर

सुपरिचित लेखिका एवं प्राध्यापिका। अब तक एक कथा-संग्रह, चार संपादित एवं पाँच कृतियाँ समीक्षात्मक। नौ सम्मान तथा एक पुरस्कार प्राप्त। दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण। छोटे-बड़े दस सम्मान प्राप्त।

जब तक आया, तब तक मम्मी ने भोजन परोस दिया था। खाना खाकर वह कोचिंग चला गया। कोचिंग से आने के बाद निखिल अपनी पढ़नेवाली मेज पर बैठकर होमवर्क करने लगा। यह शाम का समय था। अँधेरा अभी नहीं हुआ था। जहाँ निखिल पढ़ रहा था, उसके ठीक सामने की खिड़की घर के छोटे से आँगन में खुलती थी। पक्के फर्श के आँगन के बीचोबीच 'तुलसीघरा' था। तुलसी के पौधों के साथ गेंदा, गुलाब और बारामासी के फूलों से लदे पौधे हवा में झूमते ऐसे लग रहे थे मानो निखिल को अपनी ओर बुलाने का इशारा कर रहे हों! तुलसीघरा के चारों ओर अचारवाली लाल मिर्चियाँ सूखने के लिए पड़ी थीं। कुछ ही देर में पूरा आँगन सोनचिरैया, गौरैया और सुआ-सुग्गों के मधुर कलरव से भर गया। तरह-तरह की अलग सी आवाजें! पढ़ना छोड़कर निखिल इस मनोरम दृश्य को देखने में तल्लीन हो गया। कब माँ उसके पास आकर खड़ी हो गईं, उसे पता ही नहीं चला।

स्नेह से सिर पर हाथ फेरते हुए मम्मी ने निखिल के हाथ से कलम लेकर एक ओर रखी। फैली हुई कॉपी-किताबें समेट दीं। फिर निखिल से कहा, ''बस, अब बहुत हुआ पढ़ना। सुबह से पढ़ ही रहे हो। जाओ थोड़ा खेल लो। तुम्हारे दोस्त बहुत पहले से पार्क में खेल रहे हैं।''

''पर मुझे होमवर्क करना है मम्मी, अभी बहुत काम बाकी है।'' निखिल ने अनमने स्वर में कहा। उसका खेलने का बिल्कुल मन नहीं था। कल से उसके टेस्ट भी तो हैं। उसकी भी तैयारी करनी है।

किंतु मम्मी ने एक नहीं सुनी, जबरन उसे कुरसी से उठा दिया, वत्सल भाव से बोलीं, ''ज्यादा नहीं, लेकिन थोड़ा-बहुत खेलकूद जरूरी है बेटा। खेल से ही शरीर का अच्छा-खासा व्यायाम हो जाता है। ताजगी आ जाती है, मन प्रसन्न हो जाता है खेलने के बाद!''

''लेकिन कल से मेरे टेस्ट हैं।'' निखिल अभी भी बाहर नहीं जाना चाहता था।

पर मम्मी नहीं मानी बोलीं, ''होने दो टेस्ट! घंटा-आधा घंटा खेल लोगे तो कोई हर्ज नहीं होगा। फिर दादी भी तो बैठी हैं तुम्हारे साथ जाने के लिए, उन्हें टहलाने की, पार्क में लेकर जाने की जिम्मेदारी तुम्हारी है बेटा। जब तक पापा टूर से नहीं आ जाते, तुम्हें उन्हें लेकर जाना होगा। अब देर न करो। जाओ। दादी कब से तैयार हुई बेचैन सी हो रही हैं। उनका भी वक्त हो गया है पार्क में जाने का। पार्क जाकर उनका जी बहल जाएगा और तुम भी खेल लोगे।''

मम्मी की बात मान निखिल दादी को लेकर पार्क की ओर चल पड़ा। यह तो उसे मालूम ही था कि चैतन्य और साक्षर पार्क में क्रिकेट खेल रहे होंगे। इन लोगों ने उससे स्कूल में ही कहा था कि शाम को क्रिकेट खेलेंगे। मगर उस वक्त निखिल ने मना कर दिया था। चलो अच्छा है, अब उन लोगों के साथ खेल भी लूँगा। पार्क पहुँचने पर सचमुच वे लोग क्रिकेट खेलते दिखे। निखिल को वहाँ देख वे लोग खुश हो गए। निखिल उनके साथ मिलकर खेलने लगा। दादी को उसने वृक्षों के नीचे पत्थर की बेंचों में से एक पर बैठा दिया। वहीं उनकी छड़ी भी रख दी। साथ में पानी की बोतल भी। दादी के लिए मम्मी पापा को हमेशा पानी की बोतल देती थीं। आज पापा की जगह वह आया था, सो उसे भी दी थी। दवाइयों की वजह से दादी का मुँह सूखता है, एक घूँट ही सही, लेकिन थोड़ी-थोड़ी देर में वे पानी जरूर पीती थीं।

□

हैरानी और अविश्वास से ऋषभ निखिल की ओर देखने लगा। उसे अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ! मगर सच यही था कि निखिल लंच होते ही उसे टिफिन लेने के लिए अपने पास बुला रहा था। आश्चर्य और अविश्वास से देखते ऋषभ के हाथों में निखिल ने लंचबॉक्स पकड़ा दिया और कहा, ''यह तुम्हारे लिए मम्मी ने दिया है'' और दूसरा डिब्बा बस्ते से निकालकर लंच करने लगा। फिर तो हर रोज लगातार यही क्रम चलने लगा। एक हफ्ता बीत गया। इस बीच ऋषभ निखिल के पास ही बैठने लगा था। कभी जब निखिल को स्कूल आने में देर हो जाती थी, तब ऋषभ उसके लिए डेस्क पर अपना बस्ता रखकर सीट भी रोक लेता था। एक दिन जब निखिल ने उसे लंचबॉक्स दिया, तो ऋषभ ने अपने बस्ते से खूबसूरत सा डिब्बा निकालकर निखिल को देते हुआ कहा, ''निखिल, मेरी मम्मी ने यह तुम्हारे लिए दिया है। मना मत करना। खाकर देखो, बहुत टेस्टी है। और हाँ, कल से मेरे लिए टिफिन मत लाना। मैं अपना टिफिन लाऊँगा अब।''

निखिल ने केक खाया। वाकई बहुत अच्छा बना था। ऋषभ ने बताया, ''मम्मी एक छोटी सी बेकरी शॉप चलाती हैं। उनके हाथ का बना फ्रूट केक हो या स्ट्राबेरी या कीवी या किसी भी दूसरे फ्लेवर का केक हो, बहुत ही स्वादिष्ट होता है। इसीलिए बहुत प्रसिद्ध है। लोग ऑर्डर पर बनवाते हैं। तुम्हारे जन्मदिन पर मैं तुम्हारी पसंद का केक लेकर आऊँगा।'' और सचमुच निखिल के जन्मदिन पर ऋषभ और उसकी माँ निखिल के घर आए। अपने साथ लाया हुआ बड़ा सा केक उन्होंने मेज पर रख दिया और धूमधाम से सबने निखिल का जन्मदिन मनाया।

जब वे लोग जाने लगे, तब ऋषभ की माँ ने निखिल की मम्मी से कहा, ''मैं आपको कैसे शुक्रिया कहूँ? यूट्रेस के ऑपरेशन के कारण मैं तो पूरे तीन हफ्ते तक बिस्तर से उठ नहीं पाई। चलना-फिरना तक मना था। ऋषभ की दादी को गठिया और साँस की शिकायत है। जनवरी की इस ठंड में दस बजे के बाद वे किसी तरह उठ पाती थीं। जैसे-तैसे करके जो कुछ बन पाता था, उसी से हमारा काम चलता। बेकरी के बिस्कुट खा-खाकर रिशू तंग हो गया था। अघा गया था। उसे बिस्कुटों से इतनी अरुचि हो गई कि उसने बिस्कुट देखना तक बंद कर दिया। उसका पेट भी खराब हो गया था। दो-दो दिन तक लैट्रिन ही नहीं जा पाता था। आपने ऋषभ के

लिए बराबर लंच भेजा, यह बहुत बड़ी बात है। न जान, न पहचान, फिर भी आपने संकट के समय हमारी बहुत मदद की। शायद पिछले जन्म में हम बहनें रही होंगी।''

निखिल की मम्मी ने हँसकर कहा, ''इस जन्म की बहन नहीं हूँ क्या?'' इसी तरह के खुशनुमा माहौल में ऋषभ और उसकी माँ ने उनके यहाँ से विदाई ली।

अब निखिल और ऋषभ बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। ऋषभ बहुत बदल गया था। उसने बताया था कि निखिल मुझे पहले, दूसरों की सहायता करने की बजाय उन्हें तंग करने में मजा आता था। लेकिन जब से तुम्हारे संपर्क में आया, तब से सोचने पर मजबूर हो गया। मम्मी की बीमारी ने भी बहुत कुछ सिखा दिया। उस दिन जब मम्मी ने केक का डिब्बा दिया था, तो झल्लाकर उसने मम्मी से कहा था, ''एक तो इतना भारी बस्ता, उस पर इतनी सारी कॉपी-किताब के बीच एक ही डिब्बा नहीं घुस पा रहा है, तो निखिल के लिए दूसरा कैसे ले जाऊँ?'' तब जानते हो मेरी मम्मी ने क्या कहा था? उन्होंने कहा था—''अगर निखिल भी ऐसा करता, तो हफ्तों तक तुम लंच कैसे कर पाते? जितनी तुम्हारी कॉपी-किताबें हैं, उतनी ही उसकी भी तो होंगी? जब वह तुम्हारे लिए इतना कर सकता है, तो तुम्हारा भी उसके प्रति कुछ फर्ज बनता है। बेटे, उसको भी अपने जैसा समझो, पहले दिल में जगह बनाओ, फिर बस्ते में अपने आप जगह बन जाएगी।'' मम्मी की बातों ने जैसे मेरा विवेक जगा दिया। मेरी समझ खुल सी गई। पहली बार मुझे लगा कि ''जिस उदार हृदय लड़के ने मेरे लिए इतनी जहमत उठाई है, मुझे भी उसके लिए सोचना चाहिए। कुछ करना चाहिए। मैंने तुरंत बस्ता खोला, उसमें से वे कॉपी-किताबें हटा दीं, जिनका पीरियड नहीं था और इतना करते ही बस्ते में पर्याप्त जगह हो गई।''

ऋषभ की ये बातें सुनकर निखिल मुसकरा दिया, बोला, ''यार, यही तो मैंने भी किया था। तभी तो आसानी से बैग में दो-दो लंच बॉक्स की जगह बन पाई थी।''

ऋषभ ने कुछ सोचते हुए धीरे-धीरे कहना शुरू किया—''निखिल, जब मैंने दो दिन जबरन तुम्हारा टिफिन खा लिया था, तो तुमने मुझे कुछ भी नहीं कहा था, तुम्हारे इस व्यवहार ने मेरे मन में हलचल मचा दी थी। तुम चाहते तो मुझे मार-पीट सकते थे, मैम से मेरी शिकायत कर सकते थे, मगर तुमने ऐसा कुछ नहीं किया। मैं जितना इस बारे में सोचता, उतना ही दु:खी होता था। ऐसे में जब तुम मेरे लिए टिफिन लाने लगे, तब तो मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया था शर्म और संकोच के मारे। मैंने दादी को सब बताया था, यह भी कि 'अब से भूखा रह लूँगा, मगर किसी से भोजन नहीं लूँगा,' आखिर मम्मी और दादी भी तो ऐसे समय, असमय भोजन कर पाती हैं। इस पर दादी ने समझाया था। उन्होंने कहा था—''तुम निखिल को लंच के लिए मना मत करना। वह अत्यंत समझदार, अच्छे और दयालु परिवार का बच्चा है। तुम घर से सुबह ही चले जाते हो। यहाँ तो किसी तरह से, देर से ही सही, हम नाश्ता और खाना बनाकर खा लेते हैं, मगर तुम तो शाम तक घर आ पाते हो, शाम को एक समय ही तुम्हें खाना मिल पाता है। जब तुम्हारी मम्मी ठीक हो जाएँगी तो सबकुछ सँभाल लेगी, तुम्हें भी और तुम्हारे दोस्त को भी।''

''निखिल, हमारी दादियाँ कितनी समझदार होती हैं!'' ऋषभ की बात पर निखिल ने सिर हिलाकर सहमति जताई।

दोनों मित्र बातें करते स्कूल के बरामदे में टहल रहे थे। सुनहरा भविष्य बाँहें पसारे इन भावी नागरिकों की सुखद प्रतीक्षा कर रहा था।

१२८/३८७ वाई वन ब्लॉक,
किदवई नगर, कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९४१५५३७६४४

लघुकथा

कमल

• लता कादंबरी

आज कमल का फूल उदास था। रह-रह कर उसके कानों में आवाज गूँज रही थी, 'कीचड़ में ही कमल खिलता है, कीचड़ में ही कमल खिलता है।' ये शब्द हथौड़े के समान उस पर प्रहार कर रहे थे, आहिस्ता-आहिस्ता वह कुम्हलाने लगा और उसकी रंगत बदलने लगी, उसने खुद से ही सवाल किया, 'क्या पाप किया था मैंने, जो नियति ने मेरा जन्म कीचड़ के गर्भ में कर डाला?'

तभी उसे एक आवाज सुनाई दी—मैली सी पतलून पहने एक आदमी कमल की तरफ उँगली दिखाता हुआ अपने बच्चे को समझा रहा था—''बेटा, यह देखो, कीचड़ में ही कमल खिलते हैं। इसी प्रकार तुम्हें भी जीवन की हरेक बाधाओं को पार कर आगे बढ़ना है।''

तभी कमल तल पर पानी की कुछ बूँदें उभर आईं। बच्चा बोला, ''वह देखो, पापा, मोती!'' पिताजी बोले, ''नहीं सूरज की रोशनी में चमकते ये तो हीरे के कण हैं।''

तभी बरसात में टर्राते मेढकों ने उनका ध्यान भंग किया, कमल जन्म से ही कीचड़ का सान्निध्य पाने की वजह से विकल था, पर उसकी यह तड़प देखनेवाला वहाँ कोई न था। पत्ते पर पड़े पानी ने प्रतिक्रिया की, ''हे पुष्पदल! तुम तो शिव के मस्तिष्क का शृंगार, शरद नायिका का परिहार, लक्ष्मी का निवासस्थान तथा राष्ट्र का सम्मान हो।'' वह इस बात पर प्रतिक्रिया करता कि इस बीच जलकण पुन: बोल उठे, ''पर यह भी सच है कि ऐसे तपस्वी का सान्निध्य पाकर हम तो धन्य हो गए।'' यह बात सुन कमल का अवसाद कुछ कम हुआ। उधर पूर्व की तरफ फैली लालिमा सूरज के आने का संदेश दे रही थी। कमल ने भी आहिस्ता से अँगड़ाई ली और सूरज के आगमन के लिए उठ खड़ा हुआ। अब वह अपनी पूर्ण ऊर्जा के साथ सूर्य से आँखें मिलाने के लिए तैयार था।

७/२०२, स्वरूप नगर
कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष : ७६०७३५५६७८

'साहित्य अमृत' का मई अंक प्राप्त हुआ। हर माह के पहले सप्ताह से ही बेसब्री से इसका इंतजार रहता है। हर अंक की भाँति संपादकीय समसामयिक एवं प्रासंगिक था। प्रतिस्मृति, कहानियाँ, आलेख, निबंध, लघुकथाएँ, कविताएँ, व्यंग्य, यात्रा-संस्मरण साहित्य की समस्त विधाओं का बेजोड़ संगम कहा जा सकता है, जिनमें राजेंद्र टेलर 'राही' के दोहे, गोपाल चतुर्वेदी का 'राम झरोखे बैठ के', गोपाल नारायण आवटे की कहानी 'जीवन की सार्थकता', घमंडीलाल अग्रवाल के दोहे 'बोले यही कबीर', रमेश नैयर का निबंध 'सूरा सो पहचानिए', उषा यादव की कहानी 'ठीकरे का मोल' तुलनात्मक ज्यादा भाए।

—माणक तुलसीराम गौड़, बेंगलुरु

'साहित्य अमृत' का मई अंक मिला। आपका बेबाक और सामयिक संपादकीय जिस प्रकार से गद्दारों की बखिया उधेड़ता है, वह आपकी प्रखर संपादकीय दृष्टि का परिचायक है। गोयनकाजी का आलेख एवं कहानियाँ, लघुकथाएँ, कविताएँ और करुणजी के गीत अच्छे लगे। रमेश चंद्र का व्यंग्य और घमंडीलाल के दोहे ठीक-ठीक रहे।

—विज्ञान व्रत, नोएडा

'साहित्य अमृत' का जून अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाश मनु द्वारा रचित आलेख 'विष्णु प्रभाकर : खुले मन के बड़े लेखक' में प्रभाकरजी के उच्च शिखर तक पहुँचने की वास्तव में अचरज भरी कहानी है। एक अति सामान्य घर में जन्मे और टाट-परदा पर बैठकर शिक्षा प्राप्त करने और शनैः-शनैः एक अन्यतम लेखक एवं विचारक बनने की सारी प्रक्रिया वास्तव में अनुकरणीय है। 'आवारा मसीहा' का यह रचयिता स्वयं भी तजिंदगी एक असामान्य मसीहा के रूप में रहा। रामदरशजी की गजलें अच्छी लगीं। तिरानबे वर्ष की आयु में भी इतना सुंदर सृजन अचंभित कर गया। श्री प्रकाश सिंह के गीतों ने भी इस अंक की शोभा बढ़ाई है। 'जिसके पास जमीर नहीं है, सचमुच वह अमीर नहीं है', गीत का मुखड़ा दिल को छू गया। संपादकीय में लाल बत्ती चर्चा सामयिक लगी। बरकती जैसे घमंडी और सिरफिरे इमामों को भी अब मुँह की खानी पड़ी है। दरअसल मोदी सरकार ने वी.आई.पी. कल्चर को समाप्त कर सच्चे मायनों में जनता की माँग पूरी की है। 'उनका फैसला' और 'अब माँ का क्या होगा' दोनों कहानियाँ स्तरीय लगीं। घर-घर में पैसे पर कलह और स्वार्थ को दरशाती ये कलापूर्ण रचनाएँ हैं। लेखिका आभा पूर्वे और लेखक विपुल ज्वाला प्रसादजी को पाठकीय बधाई।

—बी.डी. बजाज, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का जून अंक मिला। आद्योपांत पढ़ा। राजनीतिक शुचिता लाने के लिए लालबत्ती का बंद किया जाना सराहनीय कदम है। प्रतिस्मृति में गुरुदत्त की कहानी 'क्या उसकी मौत हो गई' अनोखी लगी। विष्णु प्रभाकर पर प्रकाश मनुजी का आलेख शोधपरक एवं पठनीय है। कहानियों में मायाराम पतंग की 'पंचायत का फैसला', सुषमा मुनींद्र की 'दो फुट जमीन', आभा पूर्वे की 'अब माँ का क्या होगा' बेहद पसंद आईं। श्री प्रभात झा ने पर्यावरणविद् और राजनेता श्री अनिल माधव दवे को बड़ी शिद्दत से याद किया है। कुलदीप चंद अग्निहोत्री का आलेख जानकारीपरक लगा। कविताएँ सब अच्छी लगीं, पर बालकवि बैरागी की 'युग बीते', रामदरश मिश्र की 'धूप की उष्मित छुवन से', मालती शर्मा की 'बिन पानी सूनी सब दुनिया', यश मालवीय की 'दर्द जुलाहे का···' बेहद पसंद आईं। उपन्यास अंश पढ़कर पता चलता है कि अश्विनी कुमार दुबे का यह उपन्यास काफी रुचिकर होगा। भारतीय परिपार्श्व में दाशरथि भूयाँ की कहानी 'वही लड़की' बेहद मनोरंजक है एवं पठनीयता से भरपूर है। राजेश्वर उन्याल ने 'छुँयाल' के बारे में अच्छी जानकारी दी है। मणिपुर का लोक साहित्य बड़ा संपन्न मालूम पड़ता है, वीरेंद्र परमार ने खूब लिखा है। कुलभूषण सोनीजी ने कविता के माध्यम से गरमी को साकार कर दिया है। कुल मिलाकर संपूर्ण अंक अपना स्तर बनाए हुए विविधता से भरपूर है।

—रामप्रकाश राय, गोरखपुर

'साहित्य अमृत' का जून अंक प्राप्त हुआ, जिसमें 'देव, दवेजी को अभी नहीं बुलाना था' प्रभात झा जी द्वारा प्रस्तुत श्रद्धेय अनिल माधव दवे जी को श्रद्धांजलि स्मरण मर्मस्पर्शी लगा। इससे दवेजी के जीवन के कई अनजाने पहलुओं से रूबरू होने का मौका मिला। आपने संपादकीय में लालबत्ती पर सटीक टिप्पणी की है। इससे जुड़े अपव्यय एवं प्रदूषण को समाप्त करना आवश्यक है, परंतु थोड़ा कठिन। शशि थरूर के बहुचर्चित व्याख्यान एवं ब्रिटिश राज की भारत जैसे देशों के प्रति देनदारी को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना ब्रिटिश लोगों के लिए सच का आईना है। श्री रमेश चंद्र शाह एवं डॉ. गोयनका की नवीन कृतियों की उत्सुकता एवं प्रतीक्षा रहेगी। श्रद्धेय रामदरश मिश्रजी एवं ब्रजेश मिश्राजी की प्रकृति से जुड़ी कविताएँ मन को छू गईं। कहानियाँ तो सभी अच्छी लगीं। विशेषतः विपुल ज्वाला प्रसाद की 'उनका फैसला', राजा सिंह की 'एक हमसफर' एवं दाशरथि भूयाँ की उड़िया कहानी 'वह लड़की' सामयिक एवं पठनीय हैं।

—अखिल रायजादा, दुर्ग (छ.ग.)

'साहित्य अमृत' का जून अंक प्राप्त हुआ। सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं। 'अब माँ का क्या होगा' कहानी संवेदनशील होने के साथ-साथ वर्तमान समय का आईना है। आज के समय में बच्चे स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने माता-पिता का फायदा उठाने से भी नहीं चूकते। 'बिन पानी सूनी सब दुनिया', 'ढूँढ़ते जल जीव प्यासे' तथा 'पानी से प्यार करो' कविताएँ जल के महत्त्व को रेखांकित करती हैं। मायाराम पतंग की 'पंचायत का फैसला', सुषमा मुनींद्र की 'दो फुट जमीन', विपुल ज्वाला प्रसाद की 'उनका फैसला' तथा मेघा दुग्गल मेहरा की कहानी 'विस्मयकारी विश्वास' कहानियाँ बेहद पसंद आईं। पत्रिका में प्रयुक्त रेखाचित्र अत्यंत प्रभावशाली हैं। नवीन कलेवर व आकर्षण लिये पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी काफी मनमोहक है। 'मेरी कच्छ यात्रा' यात्रा संस्मरण से गुजरात की संस्कृति की झलक मिलती है। इसके अतिरिक्त प्रतिस्मृति, राम झरोखे बैठ के, लोक-साहित्य तथा बाल-संसार सभी स्तंभ रोचक व ज्ञानवर्धक हैं।

—लक्ष्मी रूपल, बिजनौर (उ.प्र.)

वर्ग पहेली (१४२)

*अगस्त २००५ अंक से हमने **'वर्ग पहेली'** प्रारंभ की, जिसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं ज्ञान–विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा–*

१. *प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।*
२. *कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।*
३. *प्रविष्टियाँ ३१ जुलाई, २०१७ तक हमें मिल जानी चाहिए।*
४. *पूर्णतया शुद्ध उजरवाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें दो सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।*
५. *पुरस्कार विजेताओं के नाम–पते सितंबर २०१७ अंक में छापे जाएँगे।*
६. *निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।*
७. *अपने उजर **'वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–२** के पते पर भेजें।*

वर्ग पहेली (१४०) का शुद्ध हल

१ प	रा	२ धी	३ न	■	४ न	५ व	जा	६ त
द	■	७ मा	न	■	८ जा	र	■	वा
९ त्या	१० गी	■	११ दो	ए	क	■	१२ का	य
१३ ग	र	१४ मा	ई	■	१५ त	१६ क	ली	फ
■	■	म	■	■	■	हा	■	■
१७ ह	१८ वा	ला	१९ त	■	२० सं	र	२१ क्ष	२२ क
२३ स्त	र	■	२४ र	ज	क	■	२५ ति	ल
क	■	२६ का	की	■	२७ ल	२८ त	■	र
२९ ला	ज	वा	ब	■	३० न	र	दे	व

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **श्री आलोक चौहान**
१३९/बी, धर्मपुर
पुरानी शिवमंदिर गली
देहरादून–२४८००१ (उत्तराखंड)

२. **श्रीमती विमला शर्मा**
ग्रा.–पखरोल, डा.–सेरा
जिला–हमीरपुर–१७७०३८
(हि.प्र.)

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई !

वर्ग–पहेली १४० के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं— सर्वश्री मोहन उपाध्याय (अजमेर), रामकिशन पंवार (हनुमानगढ़), सुनीता वर्मा (दुर्ग), माणक तुलसीराम गौड़ (बेंगलुरु), मोहन जगदाले (उज्जैन), देवकीनंदन कांडपाल (रानीखेत), फकीरचंद ढुल (कैथल), संतोष शर्मा (गाजियाबाद), सुशील कुमार सिंहल (पिलखुवा), कविता जैन, पुखराज वार्ष्णेय, संतोष कुमार सिंह (दिल्ली) ।

बाएँ से दाएँ—

१. परोक्ष, अज्ञात (४)
४. देश का शासन करनेवाली सत्ता (४)
७. परिषद् (२)
८. सिर्फ (३)
१०. शतरंज में मात (२)
११. प्रत्यक्ष (२,३)
१३. प्रचुर मात्रा में (३)
१५. इसलाम में मान्य एक अरबी वाक्य (३)
१७. बैठने युक्त बनी ऊँची चौकी (३)
१८. ऊपरी तल (३)
१९. घुटन भरी गरमी (३)
२१. पन्ना (३)
२३. ऊँचा–नीचा (५)
२६. बोलनेवाला (२)
२८. घेरा (३)
२९. गीत (२)
३०. जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो (४)
३१. मददगार (४)

ऊपर से नीचे—

१. सामान (४)
२. दीप्ति (२)
३. समर्थ (३)
४. सचेत (३)
५. अगर ऐसा होता तो! (२)
६. पथ–प्रदर्शक (४)
९. दस सौ (३)
११. किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए उत्कट इच्छा (१,४)
१२. शक्तिशाली (५)
१४. आज्ञा (३)
१६. तरंग (३)
१९. हड़बड़ी मचानेवाला (४)
२०. जलाशय में उगनेवाला एक प्रसिद्ध फूल (३)
२२. कहानी का सारांश (४)
२४. तीव्र लालसा (३)
२५. काक, कौआ (३)
२७. औषधि (२)
२९. गौ (२)

वर्ग पहेली (१४१) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (१४२)

१	२		३	■	४		५	६
७		■	८	९		■	१०	
	■	११				१२	■	
१३	१४		■		■	१५	१६	
■	१७			■	१८			■
१९			■	२०	■	२१		२२
	■	२३	२४		२५		■	
२६	२७	■	२८			■	२९	
३०				■	३१			

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

'हँसी की चीखें' कृति विमोचित

विगत दिनों उज्जैन में विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर श्री संतोष सुपेकर के चौथे लघुकथा संग्रह 'हँसी की चीखें' का विमोचन किया गया, जिसमें सर्वश्री पंकज सुबीर, संजय नागर, सूर्यकांत नागर, संजीव मेहता, श्रीराम दवे, अनिल सिंह चंदेल, शैलेंद्र कुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री राजेंद्र देवधरे 'दर्पण' ने किया तथा आभार श्री परमानंद शर्मा 'अमन' ने ज्ञापित किया। □

'समय कठिन है' गीत-कृति लोकार्पित

विगत दिनों अलवर के सृजक संस्थान में श्री रामकुमार कृषक की अध्यक्षता में श्री रामचरण राग के गीत-संग्रह 'समय कठिन है' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री परमानंद आनंद, रंजीता सिंह 'फलक', जयप्रकाश त्रिपाठी, जीवन सिंह मानवी, विनय मिश्र, परमानंद झा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री खेमेंद्र सिंह चंद्रावत ने किया तथा धन्यवाद श्री बाला प्रसाद सैनी ने व्यक्त किया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

विगत दिनों नई दिल्ली के हिंदी भवन में वरिष्ठ साहित्यकार श्री शेरजंग गर्ग की अध्यक्षता, प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री नरेंद्र कोहली के मुख्य आतिथ्य एवं प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. कमलकिशोर गोयनका के विशिष्ट आतिथ्य में व्यंग्य यात्रा द्वारा आयोजित व्यंग्य-लेखन के मूर्धन्य हस्ताक्षर स्व. श्री रवींद्रनाथ त्यागी की बैठक में डॉ. कमलकिशोर गोयनका द्वारा संपादित एवं वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'रवींद्रनाथ त्यागी रचनावली' तथा श्री प्रेम जनमेजय द्वारा संपादित एवं दिल्ली पुस्तक सदन द्वारा प्रकाशित 'खुली धूप में नाव का यात्री : रवींद्रनाथ त्यागी' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री हरिपाल त्यागी, हरीश नवल, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, सुरेश कांत, सुरेश उनियाल, सुभाष चंदर, फारुख अफरीदी, आशा रावत, इंदु त्यागी, आशा कुंद्रा, एम.एम. शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

७ मई को लखनऊ के सिटी मांटेसरी स्कूल में श्री राजीव शर्मा की अध्यक्षता में ज्ञान प्रसार संस्थान के तत्त्वावधान में श्रीमती नीरजा द्विवेदी की पुस्तक 'कुछ अपनी कुछ जगबीती' एवं श्री महेश चंद्र द्विवेदी के व्यंग्य-संग्रह 'चुनिंदा व्यंग्य' का लोकार्पण किया गया। सर्वश्री के. विक्रम राव, वेद प्रकाश आर्य, संजीव जायसवाल 'संजय' ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. उषा सिन्हा ने किया। □

'अपनी शर्तों पर' कृति लोकार्पित

११ अप्रैल को नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय सभागार में श्री शरद पवार की आत्मकथा 'अपनी शर्तों पर' का लोकार्पण सर्वश्री सीताराम येचुरी, के.सी. त्यागी, गुलाम नबी आजाद, प्रफुल्ल पटेल, नीरज शेखर, सतीश चंद्र, डी. राजा, सुप्रिया सुले की उपस्थिति में किया गया। □

'जिंदगी का क्या किया' कृति लोकार्पित

१४ अप्रैल को मुंबई के प्रेस क्लब में वरिष्ठ पत्रकार-कथाकार श्री धीरेंद्र अस्थाना की आत्मकथा 'जिंदगी का क्या किया' का लोकार्पण सर्वश्री राहुल देव, विश्वनाथ सचदेव, सुधा अरोड़ा, विजय कुमार, अशोक महेश्वरी, सुंदर चंद ठाकुर व चित्रा देसाई की उपस्थिति में किया गया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

९ जून को नई दिल्ली के राष्ट्र-किंकर संस्था के तत्त्वावधान में हिंदी भवन में डॉ. विनोद बब्बर की अध्यक्षता में श्री धीरेंद्र प्रसाद सिंह की तीन कृतियों 'नीहारिकाओं में खो गई परियाँ', 'हरे पेड़ के सूखे पत्ते' एवं 'साधु चंचलदास' का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. सुंदरलाल कथूरिया एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. गंगाप्रसाद विमल व डॉ. सुरेशचंद्र शर्मा थे। इस अवसर पर सर्वश्री ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश', हरीश अरोड़ा व महेश दर्पण ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. राहुल ने किया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

विगत दिनों साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था संधान के तत्त्वावधान में श्री हिमांशु जोशी की अध्यक्षता में डॉ. जीवन प्रकाश जोशी की कृति 'एक अधूरी आत्मकथा' का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. दिविक रमेश एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा थे। इस अवसर पर प्रो. रणजीव सिंह एवं डॉ. घई सहित मंचस्थ अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सर्वश्री बलराम अग्रवाल, धीरेंद्र प्रसाद सिंह, हरनाम शर्मा, संजीव कुमार, सुशील कुमार को 'साहित्य श्री' से सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. राहुल ने किया। □

'एक शाम व्यंग्य के नाम' आयोजित

विगत दिनों नई दिल्ली में गांधी शांति प्रतिष्ठान में 'एक शाम व्यंग्य के नाम' का आयोजन किया गया, जिसमें 'व्यंग्य : मूल्यांकन की समस्याएँ' विषय पर सर्वश्री वागीश सारस्वत, विवेक मिश्र, आलोक पुराणिक, श्रवण कुमार उर्मलिया, सुशील सिद्धार्थ, हरीश नवल, सुरेश कांत, अर्चना चतुर्वेदी, आलोक खरे, कमलेश पांडेय, सुनील जैन राही, मीना अरोड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. रमेश तिवारी ने किया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

५ जून को नई दिल्ली के झंडेवाला माता मंदिर सभागार में डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक 'पर्यावरण दर्शन' का लोकार्पण वरिष्ठ समाजधर्मी तथा अर्थवेत्ता डॉ. बजरंग लाल गुप्त के मुख्य आतिथ्य में किया गया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

विगत दिनों नई दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान सभागार में अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रिका संपादक संघ, यू.एस.एम. पत्रिका एवं उद्योग नगर प्रकाशन के संयुक्त तत्त्वावधान में पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि के मुख्य आतिथ्य में '१५वाँ साहित्यिक पत्रकारिता दिवस' समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सर्वश्री निधि वर्मा, ईभा प्रसाद, ऋतु जैन, मैत्री मेहरोत्रा, सुनीता सिंह, मनीषी सिन्हा, हरिसिंह पाल, उमाशंकर मिश्र, रामशरण गौड़, रामअवतार शर्मा, राजकुमार सचान 'होरी', भावना शुक्ला, सरोज गुप्ता,

सतीश सागर ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आठ पुस्तकों 'मुझे कुछ कहना है', 'तलाश जारी है', 'ॐ शिवांजलि', 'अनकहा', 'गंगा हजारिका', 'प्रयास', 'नई सुबह की आस' तथा 'ऐसा भी होता है' का लोकार्पण किया गया। संचालन डॉ. हरिसिंह पाल ने किया तथा आभार श्री उमाशंकर मिश्र ने ज्ञापित किया। ☐

लोकार्पण समारोह संपन्न

२७ मई को नई दिल्ली के साहित्य अकादेमी सभागार में बहुचर्चित लेखक डॉ. सच्चिदानंद जोशी के प्रभात प्रकाशन द्वारा सद्य:प्रकाशित कहानी संग्रह 'सच्चिदानंद जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ' का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल द्वारा वरिष्ठ समालोचक डॉ. कमल किशोर गोयनका की अध्यक्षता एवं श्रीमती मालती जोशी के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री अनंत विजय एवं यतींद्र मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

लोकार्पण संपन्न

५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर कोलकाता प्रेस क्लब में प्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल की पुस्तक 'जल प्रदूषण एवं गंगा-निर्मलीकरण' का लोकार्पण किया गया, जिसमें सर्वश्री दिनेश बाजपेयी, अजय मेहता व विजयानंद ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री सम्मानित

विगत दिनों जयपुर में महात्मा हंसराज जयंती के अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति द्वारा आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री को विपुल लेखन एवं देश-विदेश में वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए 'वैदिक विद्वान्' के रूप में सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें शॉल, प्रशस्ति-पत्र, तुलसी की पौधा व ३१ हजार रुपए की राशि भेंट की गई। ☐

काव्य-संध्या आयोजित

विगत दिनों इंद्रधनुष साहित्य परिषद्, फारबिसगंज द्वारा यूनेस्को के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर काव्य-संध्या आयोजित की गई, जिसमें सर्वश्री अजित दत्त, उमाकांत दास, माँगन मिश्र, हर्ष नारायण दास, हेमंत यादव, नागेश्वर प्रसाद मधुप, विजय बंसल व राजू विद्यार्थी ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री विनोद कुमार तिवारी ने किया। ☐

कवि सम्मेलन संपन्न

विगत दिनों में सौजन्य से साहित्य समिति के तत्त्वावधान में उमरावमल पुरोहित हॉल में सुश्री चंपा वर्मा की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री इंद्रबिहारी सक्सेना, महेंद्र नेह, रघुराज सिंह 'कर्मयोगी', वीरेंद्र सिंह विद्यार्थी, फरीद अहमद, भगवत सिंह मयंक ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री मुकेश गालव थे। इस अवसर पर श्री रघुराज सिंह 'कर्मयोगी' द्वारा लिखित नाटक-संग्रह 'देहदान' का लोकार्पण किया गया। ☐

हिंदी सेवी सम्मान समारोह संपन्न

३० मई को राष्ट्रपति भवन में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा आयोजित हिंदी सेवी सम्मान समारोह में माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने सम्मानित विद्वानों को हिंदी सेवी सम्मान से अंलकृत किया। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री तथा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के अध्यक्ष मान. श्री प्रकाश जावड़ेकर की उपस्थिति में यह सारस्वत समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर हिंदी प्रचार-प्रसार एवं हिंदी प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री एस. शेषारत्नम्, एम. गोविंदराजन, हरमहेंद्र सिंह बेदी व एच. सुवदनी देवी को 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार'; हिंदी पत्रकारिता तथा जनसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री बल्देव भाई शर्मा व राहुल देव को 'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार; विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री गिरीश चंद्र सक्सेना व फणि भूषण दास को 'आत्माराम पुरस्कार'; सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री सूर्य प्रसाद दीक्षित व चंद्रकांता को 'सुब्रह्मण्य भारती पुरस्कार'; हिंदी माध्यम से ज्ञान के विविध क्षेत्र, पर्यटन एवं पर्यावरण से संबंधित किसी भी क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान के लिए सर्वश्री जयप्रकाश कर्दम व चित्रा मुद्गल को 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार'; विदेशी हिंदी विद्वान् को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं लेखन में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री फुजिइ ताकेशि व गब्रिएला निक. इलिएवा को 'डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार'; आप्रवासी भारतीय विद्वान् को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं लेखन कार्य के लिए सर्वश्री पद्मेश गुप्त व पुष्पिता अवस्थी को 'पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार'; कृषि विज्ञान एवं राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए सर्वश्री बी.आर. छीपा व दयाप्रकाश सिन्हा को 'सरदार वल्लभ भाई पटेल पुरस्कार'; मानविकी के क्षेत्र में एवं कला, संस्कृति एवं विचार की भारतीय चिंतन परंपरा के क्षेत्र में उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए सर्वश्री महेश चंद्र शर्मा व राकेश सिन्हा को 'दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार'; भारतविद्या के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सर्वश्री श्रीधर पराड़कर व श्रीरंजन सूरिदेव को 'स्वामी विवेकानंद पुरस्कार'; शिक्षाशास्त्र एवं प्रबंधन में हिंदी माध्यम से उल्लेखनीय लेखन कार्य के लिए सर्वश्री नित्यानंद पांडेय व जगदीश प्रसाद सिंघल को 'पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार' तथा विधि एवं लोक प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी भाषा में उल्लेखनीय कार्य के लिए सर्वश्री शिवदत्त शर्मा व अशोक कुमार शर्मा को 'राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। माननीय राष्ट्रपतिजी ने राष्ट्रपति भवन में ताम्रपत्र देकर सम्मानित हिंदी सेवियों को विभूषित किया। सायंकाल इंडिया इंटरनेशनल सभागार में केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री मान. डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय ने सम्मानित हिंदी सेवियों को पाँच लाख रुपए की राशि, उत्तरीय प्रदान किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर गोयनका व निदेशक डॉ. नंदकिशोर पांडेय की उपस्थिति में गरिमामय कार्यक्रम संपन्न हुआ। ☐

डॉ. स्नेह ठाकुर को 'नागरी सम्मान'

५ मई को नई दिल्ली में नागरी लिपि परिषद् की ओर से परिषद् कार्यालय में डॉ. परमानंद पांचाल की अध्यक्षता, डॉ. श्यामसिंह शशि के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. सी.ई. जीनी के सान्निध्य में कनाडा में रहकर नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार की दिशा में किए गए उल्लेखनीय अवदान के लिए

डॉ. स्नेह ठाकुर को 'नागरी सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें उत्तरीय, प्रशस्ति-पत्र, नागरी साहित्य और दैनंदिनी भेंट कर सम्मानित किया गया। डॉ. हरिसिंह पाल ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर डॉ. स्नेह के सद्य:प्रकाशित काव्य-संग्रह 'श्रीरामप्रिया सीता' तथा हिंदी साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का मंचस्थ अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। साथ ही श्रीमती नीतूसिंह राय के सद्य:प्रकाशित काव्य-संग्रह 'हौसलों की उड़ान', डॉ. इंद्र सेंगर की पुस्तक 'भारतीय नोबल पुरस्कार विजेता' एवं श्री नत्थीसिंह बघेल की कृति 'श्रीखुशाली बाबा की महिमा' का भी लोकार्पण किया गया। □

संगोष्ठी संपन्न

३० मई को नई दिल्ली में द्वारका के मॉडर्न इंटरनेशनल स्कूल सभागार में राम जानकी संस्थान द्वारा श्रीमती कमलजीत सहरावत की अध्यक्षता में 'लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की मजबूती में हमारी भूमिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री हरिसिंह पाल, संजीव शेखर झा, एस.के. डोगरा, हेमराज मीणा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री उदय कुमार मन्ना ने किया। □

श्री श्रीकांत व्यास का एकल काव्य पाठ संपन्न

विगत दिनों पटना के कामता सदन स्थित डॉ. शंकरदयाल सिंह स्मृति पुस्तकालय में श्री रूपेश दिग्विजय की अध्यक्षता में हिंदी और अंगिका के कवि श्री श्रीकांत व्यास के एकल काव्य पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें उन्होंने अपनी एक दर्जन से अधिक कविताओं का पाठ किया। संचालन श्री संजय कुमार ने किया तथा धन्यवाद श्री वीरेंद्र कुमार सिंह ने व्यक्त किया। □

राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित

३० मई को भोपाल के माधवराव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान में डॉ. राकेश कुमार पालीवाल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. नरोत्तम मिश्र द्वारा श्री विजय मनोहर तिवारी को 'माधवराव सप्रे पुरस्कार' एवं श्री विनय उपाध्याय को 'महेश सृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसार पर वरिष्ठ पत्रकार श्री चंद्रहास शुक्ल पर केंद्रित पुस्तक का विमोचन भी किया गया। □

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा 'पं. प्रतापनारायण मिश्र स्मृति-युवा साहित्यकार सम्मान' हेतु विभिन्न विधाओं काव्य, कथा-साहित्य, बाल-साहित्य, पत्रकारिता, संस्कृत, नाटक तथा अन्य भाषा के साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। प्रत्येक विधा में से एक साहित्यकार का चयन किया जाएगा। सभी चयनित युवा साहित्यकारों को न्यास द्वारा सम्मान में प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिह्न, अंग-वस्त्र एवं १०,००० रुपए की नकद राशि भेंट की जाएगी। २३वें सम्मान-समारोह हेतु प्रविष्टि सम्मिलित करने के लिए ०१ अगस्त, २०१७ को ४० वर्ष तक की आयु के साहित्यकार अपनी छायाप्रति, आत्म-कथ्य, अपनी संपूर्ण कृतियों का समीक्षात्मक परिचय तथा प्रकाशित नमूने की किसी पुस्तक के साथ ३१ जुलाई, २०१७ तक भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-९१, निरालानगर, लखनऊ-२२६०२० पर भेज सकते हैं। □

सृजनोत्सव कार्यक्रम संपन्न

२८-३१ मई को अलीगढ़ में 'अभिनव बालमन' एवं बालमन फाउंडेशन द्वारा रामघाट रोड स्थित मॉडर्न कॉन्वेंट इंटर कॉलेज में रचनात्मक सृजन की कार्यशाला 'सृजनोत्सव २०१७' का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री योगेश भारद्वाज, रावेंद्रकुमार 'रवि', रामसनेही, दिलीप, कृति माहेश्वरी, गीतेश, पीयूष, निश्चल, हिमांशी, राजीव अग्रवाल, सूर्यप्रकाश, मानस जिंदल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। संचालन सुश्री नूरेनिशां ने किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

१७ मई को नई दिल्ली के हिंदी भवन के सभागार में दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा के मुख्य आतिथ्य में भारतीय संस्कृति तथा शहीदों के जीवन एवं शौर्य लेखन के लिए दिए जानेवाले सम्मान के अंतर्गत श्री सोहनलाल रामरंग व श्री तेजपाल धामा को 'संस्कृति मनीषी सम्मान-२०१६' एवं श्री रविचंद्र गुप्ता को 'महर्षि दधीचि सम्मान-२०१६' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें एक लाख पचास हजार रुपए की राशि, अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किए गए। श्री शिवदास पांडे को एक लाख रुपए के 'साहित्य श्री कृति सम्मान-२०१६' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. रमेश पांडे ने अपने विचार व्यक्त किए। □

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों अकोला में पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, शिलांग के तत्त्वावधान में हिंदी विकास सम्मेलन का त्रिदिवसीय आयोजन राजस्थान विश्रांति गृह में सर्वश्री उर्मि कृष्ण, शंकरलाल गोयनका, मानस रंजन महापात्रा, बिमल बजाज, पुरुषोत्तम दास चोखानी, अकेला भाई की उपस्थिति में आयोजित किया गया, जिसमें १८ राज्यों के १२३ रचनाकारों ने भाग लिया। □

सम्मान समारोह संपन्न

२६-२८ मई को शिलांग में पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी के तत्त्वावधान में राजस्थान विश्राम भवन में श्रीमती उर्मि को 'श्रीमती इंदिरा देवी हिंगड़ स्मृति सम्मान' तथा डॉ. अकेला भाई को 'श्री अंबालाल हिंगड़ स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र, अंगवस्त्र, माला, राजस्थानी पगड़ी, नगद राशि भेंट की गई। □

लेखक मिलन एवं पर्यटन शिविर संपन्न

२६-२८ मई को भोपाल में पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी के तत्त्वावधान में हिंदी विकास सम्मेलन का त्रिदिवसीय 'लेखक मिलन एवं पर्यटन शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी के प्रचार-प्रसार, लेखन, संपादन, संचालन एवं हिंदी लेखकों को प्रोत्साहन देने के उल्लेखनीय कार्यों के लिए श्रीती कीर्ति श्रीवास्तव को 'जीवनराम मुंगीदेवी गोयनका स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य समीर दस्तक' के जून २०१७ अंक का लोकार्पण किया गया। □

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी संपन्न

२५-२६ मई को राजस्थान के श्रीनाथद्वारा में डॉ. अंबेडकर प्रतिष्ठान के सौजन्य से 'साहित्य मंडल' एवं 'राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना' के तत्त्वावधान में 'महात्मा बुद्ध के सिद्धांतों की वर्तमान सामाजिक परिवेश में उपादेयता' विषय पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर १७ विद्वानों को 'अभिनंदन उपाधि'; २५ विद्वानों को 'हिंदी सेवी सम्मान'; ३ विद्वानों को 'ब्रजभाषा सेवी सम्मान'; १२ विद्वानों को 'संपादक उपाधि'; १५ विद्वानों को 'श्रीनाथद्वारा रत्न' एवं ९ विद्वानों को 'विद्यार्थी रत्न' से सम्मानित किया गया। यह दो दिवसीय कार्यक्रम प्रथम दिन आठ और दूसरे दिन के पाँच सत्रों में संपन्न हुआ। अंतिम सत्र में नाथद्वारा के पंचम ग्रुप द्वारा संगीत संध्या प्रस्तुत की गई। इस सारस्वत समारोह में शताधिक लेखक, कवि, पत्रकार एवं हिंदी-सेवी उपस्थित रहे। ☐

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों प्रख्यात रचनाकार श्रीमती सूर्यबाला को महाराष्ट्र साहित्य अकादमी का 'डॉ. राममनोहर त्रिपाठी अखिल भारतीय सर्वोच्च, जीवन गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सर्वश्री विनोद तावड़े, राज पुरोहित, नंदलाल पाठक द्वरा उन्हें शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न व मानपत्र भेंट किया गया। श्री संजय भारद्वाज व डॉ. एस.पी. दुबे ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री संजय भारद्वाज व श्री सुरेश नियास ने किया। ☐

श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा सम्मानित

विगत दिनों लखनऊ में सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें श्री शिवमूर्ति की अध्यक्षता एवं श्री यतींद्र मिश्र के मुख्य आतिथ्य में प्रसिद्ध कथाकार श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा को 'सेतु साहित्य सम्मान-२०१७' से सम्मानित किया गया। द्वितीय सत्र में साहित्य संवाद एवं लघुकथा विमर्श भी आयोजित किया गया, जिसमें सर्वश्री महेंद्र भीष्म, विवेक मिश्र व मैत्रेयी पुष्पा ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

श्री सुदर्शन वशिष्ठ सम्मानित

विगत दिनों शिमला में हॉलीडे होम सभागार में श्री सुदर्शन वशिष्ठ को साहित्य के क्षेत्र में आजीवन उत्कृष्ट योगदान के लिए 'शिखर सम्मान-२०१६' से सम्मानित किया गया। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह द्वारा उन्हें शॉल, टोपी, प्रतीक-चिह्न एवं एक लाख रुपए की राशि भेंट की गई। इस अवसर पर उन्हें अमर उजाला द्वारा 'अमर उजाला हिमाचल गौरव सम्मान-२०१७' से भी सम्मानित किया गया। ☐

नाटक पाठ संपन्न

विगत दिनों नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रसिद्ध नाटककार श्री नरेंद्र मोहन के नाटक 'अंबरहब्शी' के पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री असगर वजाहत, सादिक, मीरा सीकरी, सुमन कुमार, आर.एस. विकल व सुमन पंडित ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री कुमार अनुपम ने किया। ☐

संगोष्ठी संपन्न

१२ जून को दिल्ली में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, चाँदनी चौक के प्रांगण में अमीर खुसरो सभागार में दिल्ली के पुराने साहित्यकारों की स्मृति में साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन प्रो. पूरनचंद टंडन की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें सर्वश्री रामशरण गौड़, घनानंद, लाला श्रीनिवास दास, सुधीर शर्मा, कुमुद शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार श्रीमती सुधा मुखर्जी ने ज्ञापित किया। ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

साहित्य, कला और संस्कृति की प्राचीन नगरी उज्जैन की साहित्यिक संस्था शब्द प्रवाह साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मंच द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर कविता, व्यंग्य-संग्रह एवं लघुकथा-संग्रह की प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। सन् २०१३ से २०१७ के बीच प्रकाशित उपरोक्त विधाओं की पुस्तकों की एक-एक श्रेष्ठ कृति के रचनाकार को प्रथम पुरस्कार स्वरूप ११०० रुपए की राशि, आकर्षक सम्मानोपाधि प्रशस्ति-पत्र, स्मृति चिह्न प्रदान कर सारस्वत सम्मान किया जाएगा। द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को आकर्षक सम्मानोपाधि प्रशस्ति-पत्र डाक द्वारा प्रेषित किए जाएँगे। साथ ही सभी प्रविष्टि प्रेषकों को एक वर्ष तक 'शब्द प्रवाह' पत्रिका और 'शाश्वत सृजन' मासिक प्रेषित की जाएगी। सम्मानार्थ प्रेषित कृति की ३ प्रति के साथ तीन सौ रुपए प्रविष्टि शुल्क, रचनाकार का परिचय, दो रंगीन छायाप्रति के साथ ३१ जुलाई, २०१७ तक शब्द प्रवाह साहित्य मंच, ए-९९, वी.डी. मार्केट, उज्जैन-४५६००६ के पते पर भेज सकते हैं।

साथ ही ५१०० रुपए के स्व. बालशौरि रेड्डी स्मृति बाल साहित्य सम्मान व डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय स्मृति खंड काव्य सम्मान तथा २५०० रुपए के श्रीमती सत्यभामा सुखदेव त्रिवेदी स्मृति गीतकार सम्मान व इंजीनियर श्री प्रमोद शिरढोणकर विरहमन स्मृति हिंदी कविता सम्मान हेतु भी प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं, जिसमें चयनित रचनाकार का आकर्षक सम्मानोपाधि, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति चिह्न प्रदान कर सारस्वत सम्मान किया जाएगा। शब्द साधक सारस्वत सम्मान, शब्द कला साधक सारस्वत सम्मान, श्रीमती सरस्वती सिंह स्मृति साहित्य सेवा सम्मान, श्रीमती माया मालवेंद्र बदेका शब्द प्रवाह गौरव सम्मान एवं साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान हेतु कोई भी व्यक्ति योग्य साहित्यकार का नाम सुझा सकता है। ☐

कथासंधि कार्यक्रम संपन्न

१० जून को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी में 'कथासंधि' का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें हिंदी एवं मराठी लेखिका श्रीमती मालती जोशी ने अपनी तीन कहानियों—'नो सिंपैथी प्लीज', 'यातना शिविर' एवं 'यशोदा माँ' का पाठ किया। ☐

सरस युवा कवि गोष्ठी संपन्न

९ जून को पटना के डॉ. शंकरदयाल सिंह स्मृति पुस्तकालय में राजभाषा अधिकारी डॉ. कुणाल कुमार की अध्यक्षता में सरस युवा कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री सिद्धेश्वर, उदय कुमार मिश्र, आलोक कुमार, हरिशंकर सिंह, नसीम अख्तर, दीप श्रेष्ठ, संजीव कुमार वियोगी, भार्गवी, अप्सरा, रामानंद यानपुरी, विजया प्रसाद, सरिता सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद श्री वीरेंद्र कुमार सिंह ने ज्ञापित किया। ☐